श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के 300 वर्षीय पावन ताजपोशी को समर्पित

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

कई लोग कहते हैं कि हमारी गुरु पर बहुत श्रद्धा है, इन ग्यारह निशानियों में से अपने आप पर नजर डालो कि यह निशानियां हम में आई हैं।

1. वह माया के पृभाव से ऊपर उठ जायेगा
2. वह कभी भी अकेला नहीं होता वह अपने गुरु को सर्वदा अंग संग महसूस करता है
3. उसके भीतर गुरु के लीए निर्मल भउ आ जाता है
4. वह अपने गुरु में से ही परमेश्वर के र्दशन करता है
5. उसको सेवा-सिमरन, गुरुबाणी पढ़ने-सुनने की भुख लगनी शुरु हो जाती है
6. वह अपने गुरु को १ नम्बर पर दुनिया को २ नम्बर पर रखेगा
7. उसकी संसारी पकड़ निकल जाएगी, निरंकारी पकड़ आ जाएगी
8. उसको एकांत में जुड़ने की भुख लगनी आरंभ हो जाती है
9. वह अपने प्यारे के वैराग्य में में रहता है
10. उसको गुरु की समर्था पर विश्वास आ जाता है
11. वह हुक्मी बन जाता हैं, हुक्म को पहचानने लग पड़ता है

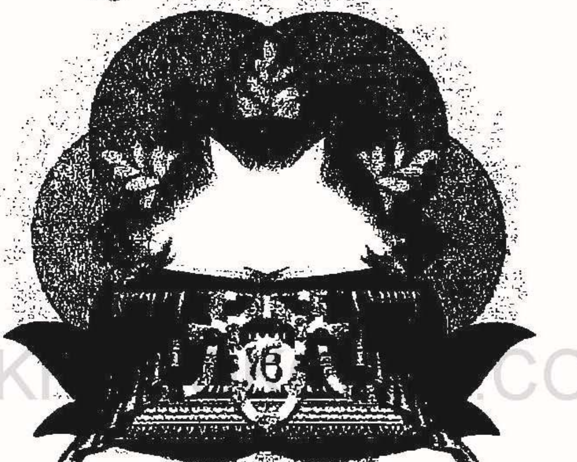


भाई गुरइकबाल सिंघ

मुख्य दफ्तर : माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट),
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर। फोन: 0183-3292255, 98765-25850

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां



श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के ३०० वर्षीय
पावन ताजपोशी दिवस को समर्पित

लेखक :

भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ
माता कौलां जी भलाई केन्द्र वाले

प्रकाशक:

भा. चतर सिंघ जीवन सिंघ
अमृतसर।

ISBN 978-93-80323-63-3

द्वितीय संस्करण 2012

भेटा : 200-00

अनुवादक : जतिन्द्र कुमार

प्रकाशक :

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाज़ार माई सेवां, अमृतसर। (इंडिया)

फोन : 91-183-2542346, 2547974, 5011003

फैक्स : 91-183-5017488

E-Mail : csjssales@hotmail.com, cjentindia@gmail.com
csjspurchase@yahoo.com

website: www.csjs.com

(Printed in India)

मुद्रक : जीवन प्रिंटर्ज, अमृतसर। फोन : 2705003, 5095774

Email : jeewanprinters@gmail.com

समर्पण !

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के ३०० वर्षीय
पावन ताजपोशी दिवस को

दोहरा॥

आगिआ भई अकाल की, तबी चलायो पंथ॥
सब सिक्खन को हुकम है, गुरु मान्यो ग्रंथ॥

आशीष



श्री गुरु नानक देव जी की अपार कृपा एवं धन्य बाबा नंद सिंघ जी, धन्य बाबा ईशर सिंघ जी और धन्य धन्य बाबा कुंदन सिंघ जी की आशीषों के पात्र भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी जो कि निष्काम कीर्तनिए के रूप में जहां देश-विदेश में भूले-भटके लोगों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से जोड़ रहे हैं और कई प्रकार की सामाजिक सेवाएं-अस्पताल, विद्यालय एवं सरायों के रूप में भी पथप्रदर्शक पंक्ति में काम कर रहे हैं, वहां गुरमुख प्यारे कलम के धनी भी हैं। ''मै दसिहु मारगि संतहु'' और ''नौ विशेषताएं श्री सुखमनी साहिब जी'' नामक दो पुस्तकें जो इन्होंने पाठकों को प्रदान की हैं, वह एक बेमिसाल प्रचार का माध्यम है। जिसका लाभ पूरे संसार में विद्यमान संगतों ने प्राप्त किया है।

आज उनकी कलम से ''श्रद्धा की ग्यारह निशानियां'' नामक प्रस्तुत पुस्तक भी एक मील पत्थर सिद्ध होगी।

क्योंकि गुरु नानक की सिक्खी खड़ी ही श्रद्धा पर है। बहुत ही सूक्ष्मताओं में श्रद्धा की निशानियों की भरपूर खोज करने के उपरांत उन्होंने किताब का रूप दिया है। दास को आस ही नहीं दृढ़ निश्चय है कि यह श्रद्धा की ग्यारह निशानियां पुस्तक संगत की झोली में गुरु प्रेम, भउ-भावना और गुरमति के धारणी होने में सहायक होगी। नानकसर संप्रदा द्वारा दास भाई साहिब जी को बधाई देता है और विनती करता है कि आगे भी भाई साहिब जी प्रयास करते रहें।

द्वारा :

बाबा कुन्दन सिंघ जी के सेवक

दास बाबा हरभजन सिंघ (नानकसर कलेरां)

आशीष



गुरु-घर के महान व निष्काम कीर्तनिए भाई गुरइकबाल सिंघ जी संस्थापक माता कौलां जी भलाई केन्द्र श्री अमृतसर जहां सिक्ख संगतों को गुरुबाणी कीर्तन द्वारा गुरु-घर से जोड़ते हैं। वहां उनके द्वारा बच्चों की विद्या के लिए स्कूल, रोगियों के लिए अस्पताल, गरीब विधवाओं के लिए निशुल्क राशन जैसे अनेक समाज भलाई के कार्य किए जा रहे हैं। वहां श्री अमृतसर के दर्शनों के लिए आने वाले यात्रियों हेतु दो सरायें भी तैयार करवाई गई हैं। उनके द्वारा गुरु-घर के प्रेमियों के लिए अपनी हस्तलिखित यह तीसरी पुस्तक ''श्रद्धा की ग्यारह निशानियां'' श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के ३०० वर्षीय गुरुगद्दी के अवसर पर प्रकाशित करवाई गई है।

मेरी सतिगुरु के समक्ष प्रार्थना है कि भाई गुरइकबाल सिंघ जी की यह पुस्तक पढ़कर हम सब की गुरु से श्रद्धा और भी परिपक्व हो और हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के उपदेशों से जुड़कर अपना जीवन सफल कर सकें।

हार्दिक बधाइयों सहित।

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ

जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब

श्री अमृतसर।

आशीष



सिक्ख धर्म विश्वास एवं श्रद्धा पर खड़ा है–

जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ॥

....

सतिगुर की जिस नो मति आवै
सो सतिगुर महि समाना॥

भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी जो स्वयं श्रद्धा से भरे हुए हैं, अनेक गुरु नानक नामलेवां संगतों को कीर्तन में श्रद्धा की कथाएं सुनाकर गुरु से झोली भरवा रहे हैं। यह पुस्तक जो ''श्रद्धा की ग्यारह निशानियां'' भाई साहिब जी संगत को भेंट कर रहे हैं। दास को आस है यह संगतों के लिए मील पत्थर सिद्ध होगी।

दास :
सिंघ साहिब ज्ञानी जसविन्द्र सिंघ,
मुख्य ग्रंथी सच्चखंड श्री हरिमन्दिर साहिब,
श्री अमृतसर।

विषय सूची

धन्यवाद

जहां प्रेम है, श्रद्धा है, वहां टिकाऊ होता है, भटकन नहीं होती। प्रेम बिना टिकाऊ नहीं। एक डेरे से दूसरे डेरे, एक आश्रम से दूसरे आश्रम, एक गुरु से दूसरे गुरु की ओर वह भटकेगा, जिसे अपने गुरु पर श्रद्धा नहीं। जिस दिन श्रद्धा पैदा हो जाएगी, भटकन बंद हो जाएगी। उसे प्रेमी कहते हैं जो सदा टिका रहता है। श्रद्धा है क्या प्रेम है क्या? इसकी निशानियां हैं, जिससे हमें पता लग सके कि हमें यह दात मिली है कि नहीं। क्योंकि हर चीज़ की निशानी होती है।

सतिगुरु जी ने बाणी में साधु की भी निशानी बताई है :-

इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ॥

(अंग ३२०)

सिक्ख की भी निशानी बताई है :-

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै॥

(अंग ३०५)

पण्डित की भी निशानी बताई है :-

सो पंडितु जो मनु परबोधै॥
राम नामु आतम महि सोधै॥

(अंग २७४)

ब्राह्मण की भी निशानी बताई है :-

सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता॥

(अंग ६८)

योगी की भी निशानी बताई है :-

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाईऐ जोगु न सिंङी वाईऐ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ १॥

(अंग ७३०)

यदि इस तरह जीवन में श्रद्धा व प्रेम आ गया है तो इसकी भी कुछ निशानियां हैं। कई बार व्यक्ति पहली में होता है और समझता है मैं तो एम.ए. में हूं। हम भी कहीं जीवन में भ्रम में न रह जाएं कि हमारे जैसा प्रेमी कोई नहीं है। इन निशानियों को पढ़कर अपने मन से तौल लें तो सच्चाई सामने आ जाएगी। हम कहां खड़े हैं यह श्रद्धा की ग्यारह निशानियां गुरु साहिब ने अपनी कृपा से लिखवाई हैं। आस है कि इनको पढ़कर अपना नक्शा जरूर सामने आएगा कि हम कहां खड़े हैं और पढ़कर अवश्य आगे बढ़ना। आप जी का जीवन गुरु की तरफ और आगे बढ़े तो ही गुरु साहिब द्वारा यह किताब लिखने का करवाया हमारा छोटा-सा प्रयास सफल होगा। इस किताब को लिखने में जो बहिन जी हरवीन कौर, ग्रीन एवेन्यु ने सहयोग दिया है, वह कथन से परे है। इसके साथ भाई हरविन्द्र सिंघ (डी.सी. वीर जी), भाई जसविन्द्र सिंघ जी पटियाला वाले, भाई पाल सिंघ जी, भाई तेजपाल सिंघ जी और भाई जसविन्द्र सिंघ जी सिविल लाईन वाले कम्प्यूटर और संशोधक सभी भाइयों का बहुत आभार है। आप सबका आशीर्वाद इसी तरह बना रहे।

लेखक :

दासनु दास भाई गुरइकबाल सिंघ

भूमिका

'श्रद्धा' के बिना गुरु-सरोवर में से मोती नहीं खोज सकते, पर श्रद्धा है क्या ? श्रद्धा का अर्थ है- 'बेमिसाल प्रेम'। प्रेम का जो परम रूप है, उसका नाम है 'श्रद्धा'। गुरु और शिष्य के मध्य जो संबंध हैं, वह श्रद्धा का है, प्रेम का है। पति-पत्नी का संबंध, भाई-भाई का संबंध, यह सभी संबंध शरीर के हैं, आत्मा के नहीं पर गुरु से शिष्य का संबंध शरीर के साथ-साथ आत्मिक भी है और जिससे आत्मा का संबंध है, उससे ही परमात्मा की प्राप्ति संभव हो सकती है। गुरु पर श्रद्धा के बिना परमात्मा की मौजूदगी का बोध हो ही नहीं सकता।

सतिगुरु के प्रति श्रद्धा, जीवन को सही दिशा देती है, मंज़िल की प्राप्ति में सहायक होती है। सफलता मिलती है। परमात्मा की प्राप्ति विश्वास से होती है और विश्वास-भरोसा तब ही पैदा होगा यदि श्रद्धा होगी। यह भरोसा ही जोड़ता है, यह भरोसा ही फिर चलाता है। जिसके मन में भरोसा हो जाता है, उसके भीतर ब्रह्म-ज्ञान प्रगट हो जाता है।

श्रद्धा ही शक्ति है। अगर श्रद्धा नहीं तो साधना सम्पूर्ण नहीं हो सकती। जिनको भी प्राप्ति हुई, जिनका भी जीवन सार्थक हुआ, उसके पीछे कारण था साधना। जीवन जीने का वास्तविक क्या ढंग है। जहां से हम सीखते हैं कि जीवन में कैसे चलें, यही साधना है।

गुरु युक्तियां बताता है, विधि बताता है। हमने साधना करके उनके अनुसार चलना है।

अथाह प्रेम, भरोसा व श्रद्धा के फलस्वरूप ही भाई लहणा जी को, गुरु नानक की आज्ञा में रहने के कारण, गुरु-पदवी की प्राप्ति हुई। प्रेम व श्रद्धा के फलस्वरूप ही बाबा अमरदास जी को गुरु अंगद देव जी से वर प्राप्त हुए और गुरुगद्दी की बख्शिश प्राप्त हुई। गुरु पर श्रद्धा और प्रेम-प्यार के कारण ही एक घुंगनियां बेचने वाला भाई जेठा, एक अनाथ बालक, गुरु रामदास जी की पदवी पर पहुंच गए। प्रेम-भावना, सच्ची लगन देखकर गुरु अमरदास जी

ने भाई जेठा जी को अपना दामाद बना लिया। अपनी उम्र देकर गुरुगद्दी प्रदान कर दी, किस कारण? श्रद्धा और प्रेम के कारण।

गुरु अर्जुन देव जी ने गर्म रेत सिर पर डलवाई, उबलती देग में बैठे भी अडोल रहे, किस कारण? गुरु रामदास जी के चरणों के प्रेम के कारण।

रहदे गुरु दरीआउ विचि मीन कुलीन हेतु निरबाणी।
दरसनु देखि पतंग जिउ जोती अंदरि जोति समाणी।
सबदु सुरति लिव मिरग जिउ भीड़ पई चिति अवरु न आणी।
चरण कवल मिलि भवर जिउ सुख संपट विचि रैणि विहाणी।

(वार २४, पउड़ी २३)

गुरु पर श्रद्धा, प्रेम व विश्वास के कारण ही अनेक सिंघ-सिंघनियों ने खुशी-खुशी शहीदियां प्राप्त कीं। संसारिक लोगों की दृष्टि में उन्होंने बहुत कष्ट सहन किए, पर उन्होंने प्रेम निभाया, क्योंकि साधक के लिए गुरु का प्रेम ही सब कुछ है। भक्त प्रहलाद पिता के अत्याचारों से विचलित नहीं हुआ। जिनका प्रभु से सच्चा प्रेम हो गया है, फिर वे रह नहीं सकते, बड़े-बड़े लालच उनको तोड़ नहीं सकते। जिनको सच्चा इश्क लग गया, उन्होंने जोड़-जोड़ कटवा लिए परन्तु गुरु के चरण नहीं छोड़े।

एक बात याद रखना कि जब तक आपकी श्रद्धा नहीं बनी गुरु पर, तब तक खतरा ही खतरा है। कीर्तन सुनना बड़ा महान है, पर यदि श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई, खतरा है। सुनने के बाद मानने की अवस्था है। अगर पूर्ण श्रद्धा भावना नहीं बनी तो मानने वाला टूट भी सकता है। मानने के बाद भरोसे की अवस्था है। यदि भरोसा आ गया, पर श्रद्धा नहीं तो भरोसे वाला भी टूट सकता है। जैसे एक वार्ता भी है कि किसी प्रेमी गुरमुख प्यारे ने किसी गुरुद्वारे में अखण्ड पाठ करवाया। वहां सेवा के रूप में गुरु साहिब के लिए नया चंदोया, सुन्दर रुमाले, हाल के लिए दरियें और गलीचा भी बनाया। गुरुद्वारे की इमारत की सेवा के लिए भेंट भी दी। कोई एक सप्ताह बाद उस शरीर की अदालत में तारीख थी और वह केस हार गया। केस हार जाने के बाद उस शरीर के वचन थे,

अखण्ड पाठ भी करवाया, दरियों-गलीचे की सेवा भी की, इमारत की लिए बड़ी भेंट भी दी पर फिर भी हम केस हार गए। हमारा तो गुरु घर से भरोसा ही टूट गया है। यदि गुरु पर पूर्ण श्रद्धा नहीं तो भरोसे वाला, सुनने वाला, मानने वाला भी टूट सकता है। पर यदि श्रद्धा है, भावना है, फिर चाहे लाखों आंधियां भी आ जाएं, उसको तोड़ नहीं सकतीं। आप कभी नोट करो, जब आंधी आए तो तिनके को कई बाज़ारों में उड़ाती है, पर पहाड़ अपनी जगह पर टिके रहते हैं। जिनकी गुरु पर श्रद्धा बन जाए, वे टिके रहते हैं। चाहे करोड़ों तोड़ने वाले मिल जाएं, वे नहीं टूटते। जो विश्वास से, भरोसे से, गुरु पर पूर्ण श्रद्धा से प्रेम के रास्ते पर चलते हैं, उनके रास्ते पर कोई रुकावट नहीं बन सकता। उनको न कोई डर तोड़ सकता है, न मुसीबत और न कोई लालच।

प्रेम भरा उत्तम नाम है 'नानक प्रेम'। इस प्रेम ने जिस हृदय में थोड़ा-सा भी निवास किया है, वह हृदय धन्य है। गुरु नानक प्यारा लगे, चाहे थोड़ा-सा लगे, पर लगे प्यारा और रात-दिन मंद-मंद धुन प्रियतम के प्रेम की चलती रहे। रात को अगर आंख खुले तो हृदय में गुरु नानक चल रहा हो। चलते-फिरते काम करते प्रेम की सूत बंधा जाए। धन्य वह शरीर है और धन्य है वह मन जिसके अन्तर में वह थोड़ा-सा बसा है। यदि महीने में एक क्षण भी ऐसा आ जाए कि रसना से कहे धन्य गुरु नानक और आंखें जल से भर जाएं शरीर के रोम खड़े हो जाएं और हृदय में गुरु नानक को मिलने की इच्छा की बूंद दे जाए तो जन्म सफल है। जिसे एक बार भी ऐसा समय मिल गया, उसके भीतर प्रेम अवश्य बसेगा। यदि आवश्यकता है तो एक ही, चाह है तो एक ही, वह क्या ? गुरु नानक प्रेम मन में बस जाए। काश ! वह घड़ी आए और फिर खो न जाए, प्रेम रस आ जाए। मुक्ति भी कुछ वस्तु नहीं, स्वर्ग-वैकुण्ठ भी किसी काम का नहीं। पापों से छूटने का संकल्प और ऊंचा होने की इच्छा भी माया का जाल है। सार वस्तु यही है ''नानक प्रेम।'' यह लग जाए और इसी धुन में मगन रहें। पूरी मैं-मेरी और सोच छोड़कर एक ही लगन में रहें कि ''गुरु नानक'' अपना प्रेम लगा दो।

प्रभु के मिलाप का केवल और केवल माध्यम है 'प्रेम'। जैसे कागज़ को जोड़ने वाली गूंद है, लकड़ी को जोड़ने वाली सरेस है, वैसे ही आत्मा परमात्मा से जोड़ने वाली गूंद है 'प्रेम'। प्रेम की डोरी अद्भुत जादू रखती है जो परमेश्वर को भी आकर्षित कर देती है। प्रेम एक ऐसी शक्ति है जो वाहिगुरु को भी वश में कर लेती है। पूरी दुनिया निरंकार के वश में है, पर निरंकार अपने भक्तों के वश में है। वह वाहिगुरु-निरंकार प्रेम करने से वश में आता है।

बाणी वही है, 'वाहिगुरु शब्द वही है, मूलमंत्र वही है, कई तो उसे जप कर परमात्मा की प्राप्ति कर लेते हैं पर कई लोगों को कई-कई वर्ष बीत जाते हैं पढ़ते और जपते, परन्तु आगे नहीं बढ़ते, प्राप्ति नहीं होती। प्राप्ति किसको, जिसने प्रेम किया।

भक्त नामदेव जी की पंक्तियां हैं–

सुइने की सूई रुपे का धागा॥ नामे का चितु हरि सउ लागा॥ (अंग ४८५)

बाबा नंद सिंघ जी, इन पंक्तियों के अर्थ इस तरह करते थे, कहते थे, सुई क्या है, रसना से वाहिगुरु-वाहिगुरु जपना। हमें समझाने के लिए एक दृष्टांत भी देते थे। कहते, कोई महिला मशीन पर कपड़ा सिलाई कर रही थी, साथ ही एक अन्य महिला भी बैठी हुई थी। कपड़ा सिलाई करते-करते क्या देखती है कि सिलाई बंद हो गई है। मशीन भी चल रही है, सुई भी हिल रही है, फिर क्या कारण है कि पहले तो कपड़ा सिलाई किया जा रहा था पर अब कपड़ा सिलाई होना बंद हो गया है। पास बैठी महिला समझदार थी, कहती धागा टूट गया है। जब धागा टूट गया है तो फिर कपड़ा कैसे सिलाई किया जाए।

सुई क्या है। रसना से वाहिगुरु-वाहिगुरु जपना। कहते थे कि यदि साथ प्रेम का धागा डालेंगे फिर बात बनेगी, फिर पाप दूर हो जाएंगे, फिर दुख मिट जाएंगे, फिर अवगुण कट जाएंगे। वाहिगुरु भी जपना है। गुरु गोबिंद सिंघ जी के भी वचन हैं-

वाहिगुरू नाम जहाज है चढ़े सु उतरै पार॥
जो शरधा करि सेंवदे गुर पार उतारनिहार॥

दोहरे की द्वितीय पंक्ति में सतिगुरु ने फैसला किया है, शर्त रखी है कि हमारे वाहिगुरु-वाहिगुरु जपने में श्रद्धा भी हो।

9 प्रकार की भक्ति है—श्रवण-भक्ति, मनन-भक्ति, सेवा-भक्ति, कीर्तन-भक्ति, सिमरन-भक्ति, लेखन-भक्ति, दान-भक्ति, त्याग-भक्ति, प्रेम-भक्ति। इन में से कोई भी भक्ति तब तक साकार नहीं होती जब तक इनमें सबसे प्रमुख भक्ति 'प्रेम-भक्ति' शामिल न हो जाए। प्रेम-भक्ति से ही प्रभु चरणों में लीन हुआ जा सकता है। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो पक्की मोहर लगा दी है—

साच कहौं सुन लेहु सभै जिन प्रेमु कीओ तिन ही प्रभु पाइओ॥

हम लगभग सभी कहते हैं कि मेरी अपार श्रद्धा है गुरु-घर पर, बड़ा प्रेम है गुरु से, बड़ी श्रद्धा है बाणी पर। कोई एक पाठ जपुजी साहिब का नित्य करता है, वह भी धन्य है। एक-दो पाठ जपुजी साहिब के करने, सप्ताह उपरांत अथवा मास उपरांत गुरुद्वारे जाना अथवा जो कुछ भी अन्य धार्मिक कार्य करते हो, मुबारक है, पर इसे कहीं प्रेम मत समझ लेना। श्रद्धा क्या है, प्रेम क्या है, इसकी कुछ निशानियां हैं। गुरु साहिब जी ने कृपा करके, स्वयं आशीर्वाद देकर, भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी से लिखने की सेवा ली है। हमने इन निशानियों को पढ़कर अपने अंतर्मन में ध्यान देना है, अपने आप से विचार करना है कि यह निशानियां हम में आईं हैं कि नहीं। जो निशानियां सतिगुर की कृपा से मिली हों, उनका धन्यवाद करना है कि हे सतिगुरु ! शुक्र है, कृपा की है और जो नहीं मिलीं, उनके लिए सतिगुरु के चरणों में अरदास करनी है कि हे सतिगुरु ! आप ही कृपा करो। विचारों को पुनः पुनः पढ़कर अपने मन की अवस्था से तौलना है, जीवन को ऊंचा उठाना है, कमियों को निकालना है।

श्रद्धा क्या है, मुझे भ्रम तो नहीं, मेरे पास श्रद्धा है। इसकी 11 निशानियां हैं। आप जी पढ़ो, आनंद करो और जीवन बनाओ।

द्वारा

बहिन हरवीन कौर

321, ग्रीन एवेन्यु, श्री अमृतसर।

300 ਸਾਲ

ਦੇ ਨਾਲ

ਗੁਰਤਾਗੱਦੀ-ਨਾਂਦੇੜ 2008

ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਤਖ਼ਤ ਸਚਖੰਡ ਸ੍ਰੀ ਹਜ਼ੂਰ ਸਾਹਿਬ

श्रद्धा की पहली निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :

वह 'माया' के प्रभाव से ऊपर उठ जाएगा।

श्रद्धा वाला, गुरु की कृपा को माया से नहीं तौलेगा, गुरु के कार्य माया के लिए नहीं करेगा।

अधिकांश लोग धार्मिक कार्य भी माया की प्राप्ति के लिए करते हैं। यदि कोई थोड़ा ऊपर उठे तो उसके धार्मिक कार्यों के पीछे मूल होता है मकान मिले, पुत्र, धन, बहुत बड़ी कृपा हो तो कोई इन्सान धार्मिक कार्य करता है। ऐसी कामनाओं को लेकर सतिगुरु मैं तेरे चरणों में लीन हो जाऊं, मेरा तेरे चरणों से प्रेम हो जाए। महात्मा बुद्ध जी को एक दफा किसी ने प्रश्न किया, "आप इतना प्रचार करते हो धर्म का, ईश्वर से जोड़ने का, ईश्वर की प्राप्ति का, पर बताओ, क्या कोई आज तक जुड़ा भी है? किसी को प्राप्ति हुई भी है? महात्मा बुद्ध कहने लगे, मेरे उत्तर देने से तेरी संतुष्टि नहीं होनी। यदि तू अपने इस प्रश्न का उत्तर चाहता है तो एक कार्य कर, जितने भी घरों में तेरी जाने की हिम्मत है जाकर पूछ कर आ कि वे धार्मिक कार्य क्योंकर करते हैं? धर्म स्थलों पर किस मकसद से जाते हैं? उसने ऐसा ही किया। जिस घर में जाकर उसने यह प्रश्न किया कि आप धार्मिक स्थान पर किस मकसद के लिए जाते हो? किसी का उत्तर था, धन की बहुत कमी है, थोड़ी कमी दूर हो जाए, नित्य धार्मिक स्थान पर जाते हैं। किसी का उत्तर था, अपना मकान नहीं, किराए के मकान में रहते हैं, रोज़ मन्दिर इसलिए जाते हैं कि हमें अपना मकान मिल जाए। किसी ने कहा, "पुत्र की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करने जाते हैं।" किसी ने कहा,

"हमारे घर औलाद नहीं, हमारे घर भी पौधा लग जाए।'' जितने भी घरों में वह गया, उसे ऐसे ही उत्तर मिले और जाकर महात्मा बुद्ध जी को कहने लगा, "मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया है।'' महात्मा बुद्ध जी ने कहा, हे भद्रपुरुष! मेरे समझाने से तू समझ नहीं सकता था, यों तू सहज समझ गया है कि भगवान को मांगता ही कोई कोई है। प्राप्ति क्या हो, मैं क्या जोड़ूं, सौदा क्या दूं, यदि कोई ग्राहक ही न हो। सो यह पहली निशानी है। यदि प्रेम है तो माया के प्रभाव से ऊपर उठ जाएगा।

सांसारिक जरूरतें पुत्र, माया यह भी गुरु से ही मांगनी हैं। सांसारिक मांगों को लेकर प्रभु का ध्यान करना कोई गुनाह नहीं। वाणी पढ़ने के पीछे पुत्र की मांग है, घर की गरीबी खत्म हो जाए, घर का कलेश खत्म हो जाए, यह भी मुबारक है पर निष्कामता बहुत बड़ा दान है यदि मिल जाए। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे, यदि दुकानदार से सौदा लिया जाए और पैसे दे दिए जाएं तो न हमारा उस पर कोई एहसान न उसका हम पर। महापुरुष वचन करते थे, कहते थे, हम नित्य प्रेम करें, अधिकाधिक पाठ करें, पर साथ ही साथ नित्य गुरु से मांगे भी मांगते जाएं तो यह उस मज़दूर की मानिंद है जो नित्य काम का पारिश्रमिक ले लेता है।

एक भक्ति होती है कामना युक्त, एक होती है कामना-रहित। कामना रहित भक्ति क्या है? उसके मिलाप के लिए भक्ति करना, उसके दर्शानार्थ भक्ति करना। बंदगी की बख्शिश मिल जाए, अतः जप तप करना, उसकी प्रसन्नता पाने के लिए वाणी पढ़ना, प्रभातकाल की अमूल्य देन झोली में पड़ जाए, इस मांग को लेकर संगत के जोड़े साफ करना। इशारा समझो, वाणी पढ़ना संगत के जोड़े साफ करना, चार प्रहर काटना, इस मांग को लेकर मेरी सतिगुरु के चरणों से प्रीति पड़ जाए, मैं नाम के रंग में रंग जाऊं, यह उत्तम भक्ति है। श्रद्धा की पहली निशानी है कि इस पंक्ति की खुशबू तेरे जीवन में आनी शुरू हो जाए।

काहू फल की इछा नही बाछै॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै॥ (अंग २७४)

श्रद्धा की पहली निशानी

एक माई भिराई जी हुई हैं, गुरु नानक साहिब के समय। उस पर भी यह बख्शिश थी, यह उत्तम-भक्ति की दात उसे प्राप्त थी। माई भिराई जी ने करतारपुर जाकर संगत के जूठे बर्तन साफ करने, संगत के जोड़े साफ करने, किसी सांसारिक उपलब्धि के लिए नहीं, अपितु इसलिए कि मेरी गुरु नानक साहिब के चरणों से प्रीति पड़ जाए।

संत अतर सिंघ जी मस्तुआना वाले गोदावरी के तट पर 101 टुकड़े बजरी के रख लेते। एक-एक पाठ जपुजी साहिब का करके बजरी के टुकड़ों की दूसरी ढेरी बना लेते। गणना यूं करते। सवा-सवा लाख पाठ जपुजी साहिब के दो बार किए पर पीछे मनोरथ क्या? गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज आप जी के दीदार हो जाएं।

बड़ी अमूल्य दात है जो गुरु को ही मांग लें। वाहिगुरु के पास सब कुछ है पर हमने सब कुछ छोड़कर वाहिगुरु को ही पाना है। जब मां ही मिल गई तो खिलौने एवं दूध स्वयं ही मिल जाएगा। यदि गुरु ही मिल गया तो सबकुछ स्वतः ही मिल जाएगा। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे, यदि नित्य के नेम के साथ-साथ उसके रंग में रहने का तरीका आ जाए, उसके प्रेम में मन भीग जाए, उसकी रज़ा में मन प्रसन्न रहे तो एक दिन चलकर वह स्वयं ही सब बख्शिशें प्रदान कर देता है। बाबा जी फुरमाते थे–

पदार्थ इन्सान को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, पर हमें पदार्थों वाले को पकड़ना चाहिए। स्वयं निरंकार को चिंता है। ख्याल ही न बने कि पदार्थ मिले, पदार्थ वाले के बन जाएं।

हमने माया को प्रियतम बनाया हुआ है। हम माया को कहते हैं, यदि तू न हो तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा। गुरु को प्रियतम बनाओ। जिसके हुक्म में सब कुछ है, उससे दोस्ती करो, सबकुछ पीछे लगा रहेगा। स्वयं अनुमान लगा लो, जिसके हुक्म में समूची सृष्टि है, माया है, यश है, यदि आप उसके बन जाओगे तो कौन-सी चीज़ को वह हुक्म करके आपके चरणों में नहीं ला सकता।

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

एक राजा था, उसने एक पंच-मंज़िला महल बनवा कर उसकी चार मंज़िलों में बहुमूल्य चीज़ें, हीरे-जवाहरात इत्यादि रखवा दिए और स्वयं पांचवी मंज़िल में जाकर बैठ गया और ऐलान करवा दिया कि जो भी कोई दिन छिपने से पूर्व उसे ढूंढ लेगा, उसे राजा की प्रसन्नता मिलेगी। बहुत सारे लोग यह ऐलान सुनकर महल में पहुंचे और राजा को ढूंढने में लग गए परन्तु जब गए तो चीज़ें देखकर विस्मित हो गए। हीरे-मोती, सोने-चांदी के अमूल्य आभूषण खुले ही पड़े थे, कोई पहरेदार भी नहीं था। ऐसी हालत में लोभ उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। लोभ ने ऐसा दिमाग पर पर्दा डाला कि सोचने लगे, अभी पूरा दिन पड़ा है राजा को ढूंढने के लिए, पहले आभूषण, हीरे-जवाहरात कीमती चीज़ें तो संभाल लें, पर उन में से एक व्यक्ति था जो राजा की तलाश में था। शेष सब को हीरे-मोतियों की चमक ने ऐसा अंधा कर दिया था कि एक दूसरे को धक्के मारकर अधिकाधिक धन व आभूषण एकत्रित करने लगे। कहते हैं राजा को क्या करना है। पर एक था, जिसने कीमती चीज़ों की चमक की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और अंतिम मंज़िल पर पहुंच कर राजा को ढूंढ लिया। राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बाहर सबको बताया कि मैंने तो यह सब खेल यह देखने के लिए किया था कि किस को मुझसे प्रेम है और किस को मेरी दौलत से। आप में से सिर्फ एक व्यक्ति लोभ के बन्धन तोड़कर मुझ तक पहुंचा है, इस पर मैं बहुत खुश हूं। मैं इसे अपना आधा राज्य दे रहा हूं। यह बात सुनकर वह व्यक्ति राजा के चरणों में गिर पड़ा। कहता है, मुझे राज भाग नहीं चाहिए, मुझे तो आपकी प्रसन्नता चाहिए। राजा ने उस पर खुश होकर उसे गले लगा लिया और कहने लगा, "अब मैं पूरे राज्य की चाबियां ही तुझे सौंप देता हूं।" भाव यदि प्रियतम प्रसन्न तो पदार्थ सभी स्वयं ही आ जाएंगे। गुरु नानक साहिब ने भी कौतुक रचा था। लम्बा चोला डाल लिया, हाथ में छड़ी पकड़ ली। रास्ते में कहीं धन के ढेर लगा दिए और कहीं सोने-चांदी के। बारी-बारी सभी चले गए थे। आखिर एक ही रह गया था "भाई लहणा"। सतिगुरु कहते हैं, तू नहीं गया। कोई धन

लेकर चले गए, कोई सोना-चांदी तो कोई हीरे-जवाहरात लेकर चले गए, तू क्यों नहीं जाता? भाई लहणा ने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया, मुझे तो एक आप जी की ज़रूरत है। आप जी के अलावा मेरा अन्य कोई है ही नहीं, मुझे तो आप जी का ही आसरा है। यह हमारे लिए शिक्षा है। आपको भी कभी गुरु कह दे, मैं तुझे करोड़पति, अरबपति बना देता हूं, पर मेरा पीछा छोड़ दे, कभी ना मानना, गुरु के चरण कदापि ना छोड़ना।

यह श्रद्धा की पहली निशानी है। जिनकी गुरु पर श्रद्धा हो, वे माया के प्रभाव से ऊपर उठ जाते हैं। उनके लिए गुरु का प्रेम ही सबकुछ है, गुरु ही सबकुछ है। बाबा नंद सिंघ जी को भी जब फिरोज़पुर गुरुद्वारा सारागड़ी गुरु नानक साहिब जी के दर्शनों की प्राप्ति हुई, सतिगुरु कहते हैं, कुछ मांग लो। बाबा जी कहते हैं, आपके दर्शन हो गए अन्य कुछ नहीं चाहिए। सतिगुरु कहते हैं, वचन अस्वीकार नहीं करना चाहिए, कुछ मांग लो। बाबा जी ने हाथ जोड़कर विनती की, जी मांगने का तरीका तो नहीं आता पर यदि प्रसन्न हुए हो तो एक कृपा करो, अपना बना लो। गुरु नानक पातशाह मुस्कुराए, एक तो कहते हो कि मांगने का तरीका नहीं आता और साथ ही वह मांग लिया है, जिसमें सब कुछ ही आ गया। जिसे गुरु ने अपना ही बना लिया, फिर अन्य रह क्या गया, फिर किसी किस्म की कमी नहीं रहती। बाबा जी वचन करते थे, "यदि पुत्र पिता से उसकी जायदाद में से कुछ मांगता है तो प्रेम की बात नहीं रहती, भिन्नता हो जाती है। परन्तु यदि पुत्र पिता से कहे कि मैं तेरा ही हूँ, मुझे तेरी ही आवश्यकता है तो प्रेम में वृद्धि हो जाती है और पिता की हर चीज़ का वह स्वयं ही मालिक बन जाता है।

गुरु प्रसन्न हो तो कई लोग दुनियावी चीज़ें मांगते हैं, महल, घर, कोठियां, धन-दौलत, पुत्र-पुत्रियां। पर ऐसे विरले होते हैं जो मोह-माया से, दुनियावी ख्वाहिशों से ऊपर उठ कर परमात्मा की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहते हैं और परमात्मा के मिल जाने पर भी उससे उसका प्रेम ही चाहते हैं। उनको नरक का भय नहीं होता और स्वर्ग की चाह नहीं होती। भक्त कबीर ने भी कह दिया-

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि॥
चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि॥

(अंग १३७०)

गुरु से प्रेम करने वाले माया से ही ऊपर नहीं होते, वे तो स्वर्ग को भी ठुकरा देते हैं। दैत्यों व देवताओं के कितने युद्ध हुए, केवल इस कारण कि स्वर्ग पर हमारा राज हो जाए परन्तु गुरु के प्यारे स्वर्ग को जूती की नोक पर समझते हैं। उनके लिए गुरु के चरण, गुरु का प्रेम ही सबकुछ है। ज्ञानी भगत सिंघ जी अपनी पुस्तक "कुज्जे विच समुंदर" में एक जगह लिखते हैं कि माता भागभरी को जिस दिन छठे गुरु के दर्शन हुए, उस रात सपने में उसको शिव जी के दर्शन हुए और कहते हैं, तेरी जीवनावधि पूरी हो गई है, चल तुझे शिवपुरी ले जाऊं। वह कहने लगी, मुझे तो गुरुपुरी ही चाहिए।

बाबा ईशर सिंघ जी से भी किसी ने पूछा था कि आप मांगते क्या हो गुरु नानक से? बाबा जी कहते हैं, हम मुक्ति भी नहीं मांगते। यह भी नहीं मांगते कि जन्म-मरण कट जाए, हम तो यही कहते हैं कि गुरु नानक सच्चे पातशाह! जितनी बार मर्ज़ी भेज, जितनी बार मर्ज़ी बुला, पर हमारी यही गुज़ारिश है कि यहां रख, वहां रख, रखना चरणों के पास।

भक्त बेणी के इतिहास की ओर दृष्टि करें। वह जितनी भी बंदगी करता था, बंदगी करके कोई धन नहीं था मांगता, कोई दुनियावी पदार्थ नहीं था मांगता अपितु यह मनोरथ लेकर कि हे परमेश्वर! मेरे दामन में अपनी बंदगी की, प्रेम की और दात डाल। भाई गुरदास जी की पंक्तियां भी हैं–

गुरमुखि बेणी भगति करि जाइ इकांतु बहै लिव लावै।

(वार १०,पउड़ी १४)

बेणी की भक्ति के पीछे क्या है? परमेश्वर का प्रेम, उसका मिलाप, बंदगी।

श्रद्धा की पहली निशानी

उस दिन आप भी किसी खाते में आ जाओगे, जिस दिन ईश्वर को मिलने की आकांक्षा लेकर वाणी पढ़ो, सेवा करो, सिमरन करो। यद्यपि उम्र भर दुनियावी मांगों को लेकर ही वाणी पढ़ते रहे, निष्कामता में नहीं आए तो यह प्रेम नहीं, यह श्रद्धा नहीं। हर वक्त ही इतने पाठ जपुजी साहिब के अमुक दुख के लिए, इतने पाठ सुखमनी साहिब के, अमुक दुख के लिए, अच्छी बात है, बुरी नहीं, यह भी करो पर अगली श्रेणी की अरदास भी करो कि सतिगुरु कृपा करो मुझे अपने चरणों से लगा लो, चरणों का प्रेम प्रदान करो।

संगत में से एक बहिन आई दास के पास अपनी बेटी को लेकर, कहने लगी, कारोबार बहुत ढीला है, कोई नेम दीजिए। साथ ही कहने लगी, मेरी बेटी भी पढ़ाई में कमज़ोर है, इसे भी कोई नेम दीजिए। दास ने जब नेम दिया तो वह पूछने लगी, कब तक करना है यह नेम, दास ने कहा, 13 सप्ताह। कुछ दिनों के उपरांत वह महिला फिर आई दास के पास, कहने लगी कृपा हुई है। कारोबार भी ठीक हो गया है, बच्ची को भी परीक्षा में सफलता मिली है। फिर कहने लगी, मेरा और मेरे लड़के का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, उसके लिए भी कोई नेम दीजिए। स्वास्थ्य हेतु भी नेम दे दिया। 3-4 मास उपरांत नैसर्गिक उस महिला से किसी शादी पर मेल हो गया। स्वाभाविक पूछ लिया कि कितना नेम करती हो? वह महिला कहने लगी, अब तो मैं कोई नेम नहीं करती। सभी कार्य सम्पन्न हो गए हैं, अब नेम की क्या आवश्यकता है? बारीकी समझना, मांग पूरी नेम खत्म। अपने अन्तर्मन में झांक कर देखो। यदि हम भी इस अवस्था में हैं तो समझ लेना श्रद्धा नहीं, प्रेम में नहीं आए। बाबा कुंदन सिंघ जी (नानकसर वाले) के जीवन से सीख प्राप्त करें। 50 वर्ष श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को प्रत्यक्ष मान कर सेवा की, एक भी अनुपस्थिति नहीं। यह है नेम। जहां गुरु से धन-दौलत, पुत्र एवं अन्य दुनियावी चीज़ें मांगते हो, यह भी मांगा करो-

मै नालहु कदे ना विछुड़ै हरि पिता सभना गला लाइक ॥

(अंग ११०२)

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

सिक्ख का गुरु से ऐसा प्रेम हो कि जहां आवश्यकतानुसार दुनियावी चीज़ें मांगे, वहां परमेश्वर को भी मांगें, भक्ति सफल हो जाएगी। एक बात ध्यान में रखना। केवल दुनियावी मांग को लेकर की हुई भक्ति गुरु से नाता तोड़ सकती है, क्योंकि यदि मांग पूरी हो गई तो भी नाता खत्म, और यदि न पूरी हुई तो भी नाता खत्म कि मेरी मांग तो पूरी हुई नहीं, मैंने क्या करना है नेम करके या वाणी पढ़कर, परन्तु यदि ऐसे प्रेम की अवस्था में आओगे और गुरु को ही मांग लोगे, तो फिर लगे रहोगे। अतः उसके मिलाप की चाह न छोड़ना।

दास को कई ऐसे मिलते हैं जो कह देते हैं, हम नित्य सुखमनी साहिब का पाठ करते हैं, नितनेम भी करते हैं, हमारा दुख तो निवृत्त नहीं हुआ। ईश्वर को शिकायत करते हैं। जो परमात्मा ने नियामतें प्रदान की हैं, उनको भूल जाते हैं। कभी सोचा करो कि जो उसने नियामतें प्रदान की हैं, यदि वह एक भी वापिस ले ले तो क्या कर लोगे। उसकी नियामतें गिना करो। योग्य पति मिला है, यह भी उसकी कृपा है, सुयोग्य पत्नी, नेक औलाद, भला पड़ौसी, अपना मकान सब उसकी नियामतें ही तो हैं। उसकी नियामतों की गणना करो तो समाप्त नहीं होतीं। यदि एकाध नियामत नहीं मिली, कोई कमी है तो उस खातिर गुरु को नहीं छोड़ना चाहिए। दास की यह बात लिखने का यह भाव नहीं कि कोई दुख के लिए विनती नहीं करनी अथवा दुख के लिए नेम नहीं करना। विनती करनी है, दुख दूर हो जाए परन्तु अगर दूर नहीं हुआ मैं तो भी तेरा हूं।

एक दिन भलाई केंद्र बैठे थे, कोई शरीर आया, कहने लगा-जब से अमृत ग्रहण किया है, हम पर दुख आना आरम्भ हो गया है। दास ने कहा कि यह बात जितनी दफा कहते जाओगे, आप पर भार पड़ता जाएगा, क्योंकि इस तरह आप गुरु का तिरस्कार कर रहे हो। यह हमारी आंख देख नहीं सकती। यह तो गुरु ही जानता है कि कितना आना था और कितना कट कर आया है। यह है श्रद्धा की पहली निशानी। जिसके मन में श्रद्धा है, वह लेन देन की बातों से ऊपर उठ जाता है, उसका गुरु के साथ अन्तर्मन से प्रेम होता है।

श्रद्धा की पहली निशानी

आजकल तो माया का प्रभाव बहुत अधिक है। ऐसा समय आ गया है कि अधिकांश जगह उसका नाम बेचा जा रहा है। कथा-कीर्तन को माया से तौला जा रहा है। कई करते तो कथा हैं, करते तो कीर्तन हैं, करते तो गुरु की वाणी का विचार हैं, पर भीतर लपट माया की है। अनेक लोगों का रोज़गार होता है। कीर्तन करना, भेंट लेकर कीर्तन करते हैं, कोई निषेध नहीं, करो, क्योंकि धंधे की सिक्खी भी परवान है। बाबा जी वचन करते थे—कोई माया लेकर कीर्तन करे, वह भी परवान है, परन्तु गुरु गोबिन्द सिंघ जी के रहतनामे की पंक्तियां याद रखे,

अधिक होवे तां जह कह देवाहि

(रहतनामा)

कीर्तन करता है, माया लेता है, घर इस्तेमाल करता है, जो खर्च घर का है, उससे अधिक आ जाए तो दान पुण्य में लगा दे। एक बार गुरु गोबिंद सिंघ जी माया के टोकरे भर-भर कर सतलुज में बहाते जा रहे थे। माता गुजरी ने कहा, सिंघों को इतनी तंगी में रखा हुआ है, उनको खुला धन दो, माया को दरिया में क्यों बहा रहे हो? गुरु साहिब जी माता जी की यह बात सुनकर कहने लगे,"माता जी! मुझे थोड़ा-सा संखिया ला दो।" माता जी ने कहा, संखिया क्या करना है, वह ज़हर होता है। सतिगुरु ने कहा, मैंने सेवन करना है। माता जी ने कहा कि मैं आपको संखिया खाने के लिए कैसे दे सकती हूं। आप मेरे पुत्र हो। सतिगुरु ने कहा, यदि आप मुझे अपने हाथों से संखिया नहीं दे सकते तो मैं अपने सिंघों को कैसे संखिया प्रदान करूँ। माता जी ने कहा, मैं उनको संखिया थोड़ा माया देने के लिए कह रही हूं। सतिगुरु ने कहा, गुरु-घर की माया भी लिमट तक अमृत है, लिमट से बाहर विष है, ज़हर है। इनको उतनी देनी है, जितनी जरूरत है अन्यथा बुद्धि भ्रष्ट हो जाएगी। धन का भलाई के कार्यों में ही इस्तेमाल उचित है। यदि छठे गुरु का इतिहास पढ़ा जाए तो, उनका एक सिक्ख हुआ है भाई गढ़िया जी, जिसको प्रचार करने के लिए सतिगुरु जी ने कश्मीर भेजा था। उसके पास जितनी भी वहां माया इकट्ठी होती थी, उससे किसी

निर्धन की आवश्यकतानुसार मदद कर देता था। भूखे को अन्न, नंगे को कपड़ा, निर्धन को शादी के लिए। सिक्खों ने शिकायत की कि कश्मीर से भाई गढ़िया कार भेंट लेकर नहीं आया, खाली आया है। छठे गुरु जी कहने लगे, यह बाद में आया है। इसकी माया मुझे पहले ही पहुंच गयी है। देख लो ज़रूरतमंदों में लगाने से माया गुरु के पास पहुंच जाती है तो सतिगुरु की खुशी है, भलाई के कार्यों में लगने पर यह दास ने किंचन-सा विचार लिखा है तांकि गुरु साहिब के, महांपुरुषों के इतिहास को पढ़कर हमारे मस्तिष्क में यह बात भलीभांति साफ हो जाए।

समय घोर कलियुग का है, माया का प्रभाव बहुत अधिक है। कुछ समय पूर्व की बात है, कहीं कोई मीटिंग थी, उन्होंने दास को भी मीटिंग में आमंत्रित कर लिया। वे प्रति वर्ष कीर्तन दरबार करवाते थे। वे दास को कहने लगे, हमारी सोसायटी के सदस्यों का मन बहुत नाखुश है। दास ने कहा, वह क्यों? कहने लगे, इस बार कीर्तन दरबार में बचा कुछ नहीं। पहले हमेशा पचास, साठ हज़ार रुपया बच जाता था, इस बार कुछ नहीं बचा। सभी अब देख लो करवा कीर्तन दरबार रहे हैं, परन्तु मन कहां खड़ा है, माया के प्रभाव पर। बचा कुछ नहीं है, मन खिन्न है, यह श्रद्धा नहीं है। दास के साथ भी कई बार ऐसा घटित होता है। जो माया आए कीर्तन की, वह जानी तो सबकुछ भलाई केंद्र में होती है, गुरु साहिब की कृपा से विभिन्न सेवाएं चल रहीं हैं। मन में आ जाता है कि अमुक शहर कीर्तन करने जाना है, चलो आकर सीमेंट सरिया आ जाएगा अथवा कोई कर्जा उतर जाएगा। हम किसी शहर में गए तीन दिन के लिए कीर्तन करने। उन्होंने कोई भेटा प्रदान नहीं की। जब वापिस लौट रहे थे तो मार्ग में सोचा कि यहां तो ऐसा हिसाब किताब हो गया है कि किराया भी खुद देना पड़ गया है। ध्यान देना, जो बात दास बताना चाहता है तीन दिन कीर्तन करके वापिस लौटे और रेलगाड़ी में हमारा ख्याल माया की ओर चला गया। रात को 11-12 बजे घर पहुंचे। सुबह जब गुरु साहिब का प्रकाश घर में किया तो हुक्मनामा आ गया—

दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥
दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥

(अंग ७०६-१०)

जब यह हुक्मनामा आया तो दास को वाणी की पंक्ति द्वारा मुंह पर तमाचा पड़ा कि गुरु साहिब कहते हैं कि तू कीर्तन की ओर ध्यान कर, माया के साथ न लिप्त हो, यह जग लीला है।

कभी ध्यान देना इतिहास में। मरदाना ने कितना कीर्तन किया पर कभी यह नहीं पढ़ा-सुना होगा कि मरदाना को गुरु साहिब ने कभी कुछ कहा हो कि तूने इतनी जगह कीर्तन किया है, इतनी माया ले लो। सत्ता-बलवंड जी ने एक बार लोभ किया; (बहन के विवाह पर भेंट मांग ली) और कितनी बड़ी परीक्षा को भोगना पड़ा। यह भी सुनना पड़ गया कि इनके साथ कोई नाता न रखा जाए। फिर जब आंख खुली, माया के प्रभाव से ऊपर उठे और आप कहा, हमने देख लिया है कि माया बड़ी नहीं, गुरु की कृपा, गुरु की मेहर बड़ी है। फिर वही सत्ता बलवंड की वाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में स्थान मिल गया। सृष्टि रहने तक, जब तक दुनिया श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को नमन करेगी, उनको भी साथ ही नमन होगा। यह है भी पक्की बात, माया बड़ी नहीं, उसकी मेहर बड़ी है, उसकी कृपा, उसकी बख्शिश बड़ी है। माया एक दिन समाप्त हो सकती है, पर जहां मेहर है वहां कदापि कमी नहीं आती। सूर्य की ओर मुख किया जाए तो परछाई पीछे आ जाती है। गुरु की ओर मुख किया जाए तो दुनिया के तमाम पदार्थ पीछे चले आते हैं। जिसकी गुरु पर श्रद्धा है, वह गुरु के साथ प्रेमावस्था में आकर कीर्तन करता है। वह हर पक्ष से माया के प्रभाव से ऊपर उठ जाता है और गुरु की प्रसन्नता लेने के लिए कीर्तन करता है। एक बात स्मरण रखना, ऐसे पुरुष के घर में दीवारें फांद कर पदार्थ गिरते हैं। एक समय आ जाता है, लोग कहते हैं कि हमारे पदार्थों की इसके पास किसी तरीके से हाज़िरी लग जाए। यह माया के प्रभाव से ऊपर उठ गया है।

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

दास के पिता जी मरदान (पाकिस्तान) क्षेत्र के हैं। उन्होंने एक दिन एक वचन सुनाया। कहते थे कि हमारे मरदान में एक कीर्तनिया थे, उनका बहुत मान-सम्मान था और बहुत सारी संगत उनके जीवन से अनुसरण कर शिक्षा लेती थी। पिता जी बताते थे कि उन्होंने जहां कीर्तन करना, तदोपरांत एक पाठ सुखमनी साहिब का करना फिर कोई अन्य काम करना। स्वयं अन्तर देख लो। कहीं कीर्तन के उपरांत धन्यवाद के लिए सुखमनी साहिब का पाठ किया जा रहा है कि सतिगुरु शुक्र है आप ने कीर्तन की सेवा ली है और कहीं कीर्तन को माया से तौला जा रहा है। माया के प्रभाव से उठना इतनी बड़ी बख्शिश है—

सेवा करत होइ निहकामी॥
तिस कउ होत परापति सुआमी॥

(अंग २८६)

यहां एक बारीकी का ध्यान रखना। यदि कोई किसी के घर अखण्ड पाठ की निष्काम भूमिका अदा करने जाए और भीतर यह हो कि मैं घर के सदस्यों पर एहसान कर रहा हूं तो भी अभी मंज़िल दूर है। अन्तर्मन से धन्यवाद निकले भूमिका अदा कर कि सतिगुरु शुक्र है, शुक्र है जो मेरा कुछ समय आपने अपने चरणों में बिताया है, बाहर आग लगी हुई है। घर वालों पर एहसान समझकर नहीं, धन्यवाद में जाना चाहिए।

बाबा नंद सिंघ जी कहते थे कि पाठी सिंघ श्रद्धा से पाठ करने वाले हों और घर के श्रद्धा से पाठ करवाने वाले हों तो 12-12 कोस तक यमदूत भी निकट नहीं आ सकते। पाठ करवाने वाले पाठियों की श्रद्धा से सेवा करें, गुरु साहिब को स्वयं खड़े होकर घण्टा-घण्टा चंवर साहिब करें, पास बैठ कर वाणी श्रवण करें, जितने दिन अखण्ड पाठ चल रहा हो, ज़मीन पर आराम करें, ऐसा प्रेम व श्रद्धा देखकर गुरु खुश हो जाएगा, उसे फिक्र हो जाती है कि इसकी झोली कैसे भरनी है, इसके दुख कैसे काटने हैं, इसके अशुभ कर्म कैसे मिटाने हैं। इसके विपरीत यदि कोई केवल माया से अखण्ड

पाठ को तौल रहा है, अन्तर्मन में कोई श्रद्धा नहीं, एक कमरे में पाठ चल रहा हो और दूसरे में टी.वी., कोई हाथ से सेवा नहीं, वह गुरु की प्रसन्नता से वंचित रह जाता है।

इसके विपरीत श्रद्धा वालों का भी ज़िक्र कर लिया जाए तांकि बात स्पष्ट हो जाए और हमें अपने लिए सीख मिल जाए। एक बार सतिगुरु ने देहरादून सेवा ली कीर्तन की। देहरादून की धरती पर महापुरुष बाबा ईशर सिंघ जी नानकसर वालों के भी चरण पड़े हैं। वहां एक बड़ा गुरुद्वारा है "गुरुद्वारा सिंघ सभा"। वहां के एक प्रबंधक ने हमें बाबा जी के समय का ज़िक्र सुनाया। वह कहने लगा, एक दिन बाबा जी 15-20 दिन के लिए देहरादून आए। दीवान चल रहे थे। उसने बताया हम 5-6 शरीरों ने भी जाकर बाबा जी के चरणों में विनती की कि बाबा जी, कृपा करो, 2-3 दिन हमारे गुरुद्वारे में भी दीवान लगाओ। उधर भी संगतों को निहाल करो। अब ध्यान देना श्रद्धा वाले की निशानी, बाबा ईशर सिंघ जी कहते हैं कि तीन दिन पक्के, पर हमारी भेटा है। वे सभी प्रबंधक कहते हैं, क्या भेटा है बताओ? बाबा जी कहते हैं आपके गुरुद्वारे में तीन दिन तो दीवान लगवाएंगे यदि आप अपने गुरुद्वारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सुखासन के लिए सुन्दर पलंघ तैयार करवाएंगे, क्योंकि हमें पता चला है कि आपके गुरुद्वारे में गुरु साहिब को अलमारी में विराजमान किया जाता है। सभी प्रबंधक एक दूसरे का हैरानी से मुंह देखने लग पड़े कि हमने तो सोचा था कि पता नहीं कितनी माया की भेंट मांगेंगे। देखो! जिसे गुरु पर श्रद्धा हो वह भेंट भी मांगता है और ऐसी जिससे गुरु के सम्मान में वृद्धि हो। प्रबंधकों ने बताया कि फिर हमने बाबा जी के कथन पर गुरु साहिब के विराजमान के लिए सुन्दर पलंघ तैयार करवाया। कहने लगे, हमारे गुरुद्वारे में पलंघ बना देख अन्य गुरुद्वारों में यह परम्परा चल पड़ी। इशारा लेना, जहां नहीं श्रद्धा, वे रेट करते हैं, आएंगे और कितनी माया प्रदान करोगे परन्तु जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए, वह माया के प्रभाव से ऊपर उठ जाता है।

दुनिया में सामान्य उन लोगों की संख्या अधिकतर है जो

धन-माल, शान-शौकत, सांसारिक झंझटों के लिए लालच कर रहे हैं। सत्यपुरुषों, गुरु प्रेमियों, श्रद्धा वालों में भी एक लालच होता है। वह क्या? जो कोई मुख्य धारा से टूटा है, उसे कैसे इससे जोड़ा जाए और वे हर साधन से जोड़ ही देते हैं। बाबा ईशर सिंघ जी नानकसर वाले, जिन्होंने पूरा जीवन गुरु-घर की सेवा और गुरमत प्रसार में लगा दिया, घर-घर, ग्राम-ग्राम, दूर-सुदूर जाकर संगतों को गुरु-घर से जोड़ा और सिंघ बनाकर गुरु गोबिंद सिंघ जी के बेड़े में विराजमान किया। आपने दूर-सुदूर जाकर गुरमत का प्रचार किया। अल्पकाल में अनोखा काम साढ़े सात लाख प्राणियों को अमृतपान करवा कर गुरु गोबिंद सिंघ जी के संग लगाया। आप जी सब को यही उपदेश देते थे कि अमृतपान कर गुरु वाले बनो, नितनेम करो, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को प्रगट गुरु की देह मानो और जितना अधिकाधिक हो सके सतिगुरु का अदब और पूर्ण सम्मान करो। उन्होंने लोगों को गुरु साहिब को पेटियों और अलमारियों में बंद करने से वर्जित किया और गुरु साहिब के स्वरूप सुखासन पलंघ पर विराजमान करवाए और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को साक्षात् मान सेवा करने का उपदेश दिया। लाखों प्राणियों को जीवन शिक्षा, सिमरन का दान प्रदान किया और गुरु से जोड़ा। अपनी अंतिम सांसों तक इस तपते संसार को अमृत वचनों से ठंडा करते रहे और शीतलता वितरित करते रहे। दीन-दुनिया की सेवा करते रहे, परन्तु किसी माया अथवा शोभा की खातिर नहीं।

दास को बाबा ईशर सिंघ जी का एक ज़िक्र याद आ गया। बाबा जी एक बार कोलकाता गए। वहां 5-7 दिन के लिए कथा-कीर्तन के दीवान थे। उन दीवानों में बाबा जी ने अमृतवाणी की वर्षा की, बहुत आनंद आ रहा था। जब कोई जुड़ा हुआ महापुरुष कथा-कीर्तन करे तो सचखण्ड का नज़ारा होता है, क्योंकि उस वक्त महापुरुष के अन्दर स्वयं परमात्मा स्थित होता है। कोलकाता की संगत ने बड़े रस में आनंद प्राप्त किया। जिस दिन दीवान का अन्तिम दिन था, सभी प्रबंधकों ने मिलकर बैठक की कि दीवानों का बड़ा आनंद आ रहा है। यह शुभावसर

पुनः पुनः नहीं मिलना, क्यों न बाबा जी को 2-4 दिन और दीवान लगवाने की विनती की जाए। बख्शी सिंघ, जो नगर का प्रमुख साहूकार था, ट्रांसपोर्ट का मालिक, ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन का प्रधान था और क्षेत्र में उसका अच्छा प्रभाव भी था, सभी ने उनको ज़िम्मेदारी सौंपी कि वही विनती करें। रात को दीवान के उपरांत बख्शी सिंघ ने खड़े होकर कोलकाता की संगत द्वारा विनती की कि बाबा जी के चरणों में बहुत आनंद आ रहा है, अमृत बरस रहा है, कृपा करो, 2-4 दिन और समय दीजिए, और कुछ दिन वर्षा करो कथा-कीर्तन की। बाबा जी कहने लगे, है तो बहुत मुश्किल, क्योंकि आगे भी हमारा कार्यक्रम है, पर बख्शी सिंघ यदि तू चाहता है तो हम 2-4 दिन और रुक जाते हैं पर आपको इसके लिए भेंट देनी पड़ेगी। बख्शी सिंघ सोचने लगा, महापुरुषों की अनेक सेवाएं चलती हैं, कहीं गुरुद्वारे, कहीं अस्पताल, कहीं विद्यालय, उसके लिए माया की भेंट मांग रहे होंगे। मन में सोचता है कि 50,000 प्रदान कर दूंगा। बाबा जी कहते हैं कि यह भेंट थोड़ी है। वह बड़ा आश्चर्यचकित कि मैं तो मुंह से कुछ बोला ही नहीं, मन में ही सोचा था, बाबा जी ने मेरे मन की बूझ ली है। फिर मन में सोचने लगा, यदि यह कम है तो फिर दुगुना कर दूंगा, पर बाबा जी को रोकना अवश्य है। बाबा जी अन्तर्यामी कहते हैं, दुगुना भी थोड़ा है। बख्शी सिंघ की अब और श्रद्धा हो गई कि यह तो अन्तर्यामी हैं, बिना बोले ही जान जाते हैं। अब नम्रतापूर्वक विनती की, बाबा जी! आप और समय अवश्य दीजिए। जो भेंट कहोगे मैं दे दूंगा। बाबा जी कहते, बख्शी सिंघ कही मुकर न जाना। बख्शी सिंघ कहने लगा, जी मैं पूरी संगत में खड़े होकर वचन कर रहा हूं कि जो भेंट कहोगे, मैं प्रदान करूँगा। इशारा समझना, श्रद्धा वाला भेटा भी मांगता है और कौन-सी। नगर का प्रमुख साहूकार है, मुँह मांगा देने को तैयार है, परन्तु बाबा जी कहते हैं कि तूने मन में भेंट सोची है माया की, पर हमने तेरी माया का क्या करना है, हमें माया की भेंट नहीं चाहिए, हमारी भेटा तो यह है कि कल सुबह खण्डे बाटे का पाहुल लेकर गुरु वाला बन जा। बाबा जी का यह वचन सुनकर फूट फूट

कर रो पड़ा। बख्शी सिंघ कहता है कि बड़े महापुरुष आए कोलकाता में, किसी ने विद्यालय के लिए माया मांगी तो किसी ने अस्पताल के लिए तो किसी ने गुरुद्वारे के लिए पर आप प्रथम हो जिन्होंने मेरे जीवन संवारने की, मेरे भले की, मेरी टूटी जोड़ने की भेंट मांगी है। अगले दिन उसने स्वयं भी अमृतपान किया और उसका नगर में बहुत प्रभाव होने के कारण अन्य भी अनेक लोग दशमेश गुरु के बेड़े पर सवार हो गए। यह श्रद्धा है, माया के प्रभाव से ऊपर उठकर। यह लालच है कि कोई टूटा हुआ जुड़ जाए। जिस पर भी आपका प्रभाव हो, उसे प्रेरणा देकर गुरु से जोड़ना। यह श्रद्धा की निशानी है। हमें भी जब कोई कीर्तन का कार्यक्रम बुक करने के लिए कहता है, हम तारीख दे देते हैं, समय बता देते हैं और जब वह पूछे भेट क्या लोगे? फिर हम भी मौका नहीं खोने देते। कह देते हैं कार्यक्रम से पूर्व 500 पाठ जपुजी साहिब अथवा 200 पाठ सुखमनी साहिब के पूरा परिवार हाज़िरी लगाए। क्योंकि चाहे बांधकर ही कोई करे, इसमें उसका भी भला और हमारा भी क्योंकि बाबा नंद सिंघ जी के वचन हैं कि जो टूटे को जोड़ता है, वह जितनी भी कमाई करे, गुरु नानक के घर से जोड़ने वाले को 10 प्रतिशात मिलता है। यहाँ एक बात याद रखना, दूसरों को जोड़ना उसी का सफल है, जो स्वयं जुड़ा हो। वाणी में इस संबंध में पंक्तियां हैं :-

अवर उपदेसै आपि न करै॥ आवत जावत जनमै मरै॥

(अंग २६९)

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु॥

(अंग १३६९)

बाबा नंद सिंघ जी के जिसने भी दर्शन करने जाना, बाबा जी ने हरेक को यही पूछना कि बता भाई तेरा नितनेम कितना है, कब तक लीन होता गुरु नानक के चरणों में? फिर जिसका कम होना, उसे नितनेम बढ़ाने के लिए कहना, जो न करने वाला हो, उसे करने की प्रेरणा देना। एक बार दिल्ली में बाबा ईशर सिंघ जी के

यह भी तो किसी के लाडले हैं!

क्या

इनकी परवरिश में
आपका कोई
योगदान है...



यह वो बच्चे

घर में गरीबी

पिता का साया नहीं

रोटी कहां से खाएं

स्कूल किस तरह जाएं

4165 विधवा स्त्रियां, 9360 इनके बच्चे,
22 शहरों में हर महीने सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।
आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।

दास भाई गुरइकबाल सिंघ

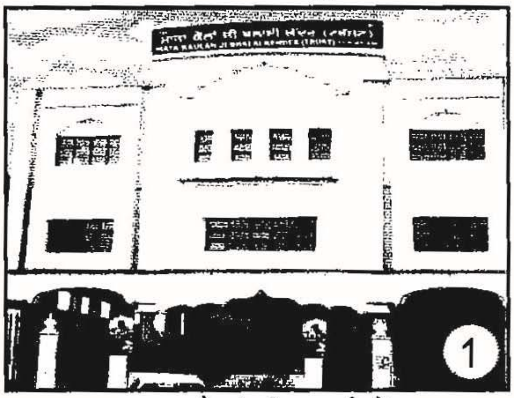
संपर्क नं :- 0183-3294659, 98765-25828/20/30 Website :- mkbktrustamritsar.org
www.matakaulanjibhalaikendertrust.com, E-mail:-mkbkt_amritsar@yahoo.com

भला ही भला कोई व्यापार नहीं

माता कौलां जी भलाई केंद्र (ट्रस्ट) के अधीन चल रहे सभी युनिटों के विवरण

भला ही भला कोई व्यापार नहीं

ट्रस्ट अधीन चल रहे 22 विधवा स्त्रियों के केन्द्र



माता कौलां जी भलाई केंद्र
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर की इमारत

1. यहां 1625 विधवा स्त्रियों को हर महीने पांच लाख पचास हजार का राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन जरूरतमंद स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. इन स्त्रियों की ही बेटियों और अन्य जरूरतमंद बच्चियों को कम्प्यूटर, सिलाई- कढ़ाई का छः महीने का कोर्स बिलकुल फ्री करवाया जाता है। हमारी इच्छा है कि इन स्त्रियों की बच्चियां अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।
4. इन स्त्रियों को सर्दियों-गर्मियों के सूट, रजाइयां, तलाइयां, सिलाई मशीनें, प्रैशर कूकर, रैबर कूलर आदि सामान साल में चार बार फ्री दिया जाता है।

इस भलाई केंद्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई मोहन सिंघ जी (भोला वीर जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नं: 98765-25815,98765-25830,0183-3292255

लुधियाना में बीबी भानी जी भलाई केंद्र



बीबी भानी जी भलाई केंद्र
1219/22-B, हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना

1. यहां 595 विधवा स्त्रियों को हर महीने दो लाख रुपए का राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन जरूरतमंद स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. राशन के अलावा समय-समय पर वस्त्र एवं अन्य घरेलू सामान भी दिया जाता है।

आप जी के सहयोग की जरूरत है।

इस भलाई केंद्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरभजन सिंघ जी, भाई अरविंदर पाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नं. 0161-2429900, 98157-93713, 9872634013

ट्रस्ट अधीन चल रही तीन सरायें

गुरधामों के दर्शन करने आई संगत के लिए



माता कौलां जी संगत निवास सराय
पताः संगल वाली गली,
निकट गुः बाबा अटल राए साहिब जी, श्री अमृतसर।

1. माता कौलां जी संगत निवास सराय में गुरधामों के दर्शन करने आई संगत के आराम के लिए 22 A.C. कमरे और 3 बड़े A.C. हाल हैं।
2. सराय में बुकिंग के लिए 98765-25859, 98765-25811 पर संपर्क करो।



बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय
पताः नजदीक ब्रहम बुटा मारकीट श्री अमृतसर

1. बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय में संगतों के आराम के लिए 29 A.C. कमरे हैं।
2. सराय में बुकिंग के लिए 98765-25832, 98765-25835 पर संपर्क करो।

माता कौलां जी संगत निवास सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई प्रितपाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है। इन दोनों सराय में निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध हैं।

1. हर कमरे में डबल बैड, अलमारी, अटैच बाथरूम (सर्दियों में गर्म पानी की सुविधा), इंटरकोम, TV में Live कीर्तन श्री दरबार साहिब और सारा दिन कथा-कीर्तन चलता है।
2. संगतों के लिए U.S.A. से पांव दबाने वाली मशीन, जोड़े पालिश करने वाली मशीन, लिफ्ट की सुविधा है।
3. सराय के अंदर ही सामान्य मूल्य पर कैन्टीन की सुविधा।
4. आप जी किसी भी जगह से 6 दिन पहले फोन पर भी अपने कमरे की बुकिंग करवा सकते हो।
5. सबसे बड़ी बात, सुविधाएं सब पर कोई बिजनैस नहीं। एक ही चाव है कि आप श्री गुरु रामदास जी के दर पर आकर नाम का रस लो और आपकी सेवा हो सके।

बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई अमरजीत सिंघ (सिलकी वीर जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है। आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।

तीसरी सराय (निर्माणाधीन)

(साहिबजादा अजीत सिंघ जी संगत निवास सराय)

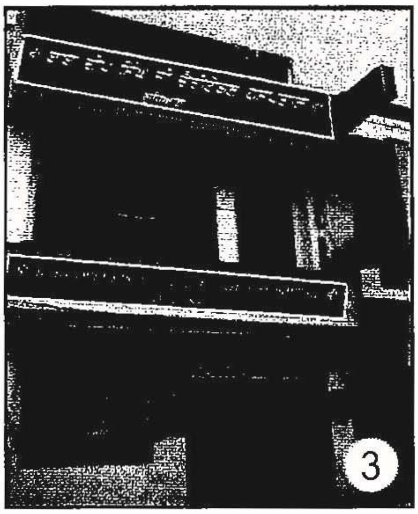
सतिगुरु जी की कृपा से ट्रस्ट द्वारा तीसरी सराय श्री हरिमन्दिर साहिब जी से सिर्फ 2 मिनट का पैदल रास्ता, 260 गज जगह में 45 A.C. कमरे, बड़े हाल, बाहर से आई संगतों की सुविधा के लिए, जो कि शीघ्र ही तैयार की जा रही है।

इस सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरमिन्द्र सिंघ जी (बाबा जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 98765-25847, 98765-25848, 0183-3292255

लुधियाना में बाबा दीप सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल
पता : 1219/22, हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना

दांतों के अस्पताल और होम्योपैथिक का समय सुबह 10 से 1 बजे तक जरनल डाक्टर और आंखों के अस्पताल का समय दोपहर 2 से 4 बजे तक



1. यहां दांतों का इलाज बिलकुल फ्री किया जाता है।
2. होम्योपैथिक की दवाई बिलकुल फ्री दी जाती है।
3. केवल 5 रुपए की पर्ची पर आंखों के टैस्ट और दवाई बिलकुल फ्री।
4. यहां पर (M.D.) डाक्टरों से मरीज लाभ प्राप्त करते हैं।
5. विधवा औरतों को पर्ची का कोई पैसा नहीं और दवाई बिलकुल फ्री।
6. लगभग 125 मरीज रोज़ाना लाभ प्राप्त कर रहे हैं, आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।

इस अस्पताल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरभजन सिंघ जी, भाई अरविंदर पाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क न: 0161-2429900,98157-93713, 98726-34013

4. भाई घनईया जी चैरिटेबल अस्पताल, देहरादून
संचालक : भाई बलविन्द्र सिंघ (कथवाचक)

ट्रस्ट अधीन चल रही गु: साहिब जी की कार सेवा

कलगीधर के लाडले, प्यारे, बहुत प्यारे, महान तपस्वी, महान जरनैल, यति-सति, पूर्ण ब्रह्मज्ञानी, प्रेम करने और सिखाने वाले अनोखे अमर शहीद, महान योद्धा, धन्य धन्य बाबा दीप सिंघ जी का इस जगह पर आगमन हुआ।



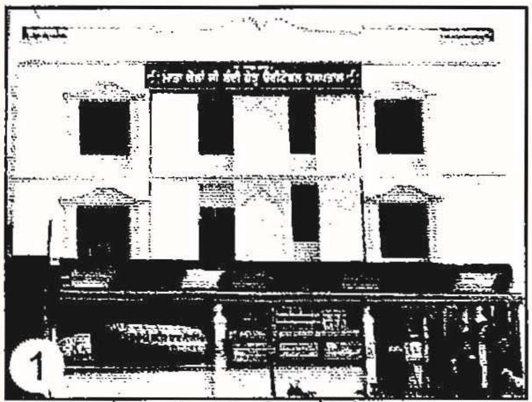
गु: श्री पहूविंड साहिब

1. 2000 शरीर के बैठने वाला प्रकाश स्थान का हाल, सोने के दरवाजे और सोने की बारियों वाला सुख आसन स्थान।
2. 5000 शरीर के बैठने वाला बड़ा लंगर हाल, लंगर बनाने वाला बड़ा रसोईघर, प्रबंधकी ब्लाक, सुंदर बाग, कार पार्किंग आदि तैयार हो चुकी है।
3. बड़ी पानी की टैंकी, बाबा दीप सिंघ जी डे-बोर्डिंग स्कूल, अजायब घर, संगतों के लिए सराय, यह सब निर्माणाधीन है। आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।
4. कर्नल जी. एस. संधू जी और गु: साहिब जी की कमेटी की पूर्ण आशीष है।

इस स्थान की कार सेवा की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरमिन्द्र सिंघ जी (बाबा जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

ट्रस्ट अधीन चल रहे 4 अस्पतालों का विवरण

1. यहां X-ray, Ultrasound, Heart, Ortho, Skin, Eyes, Physio, Pseychiatry, Dental E.N.T., T.B. और सभी शारीरक टैस्ट होते हैं। सबसे बड़ी बात यह सारे टैस्ट No Profit, No Loss पर किए जाते हैं।
2. यहां पर T.B. के टैस्ट और दवाई बिलकुल फ्री।
3. यहां गुरु की मेहर से रोज़ाना 1200 मरीज लाभ पा रहे हैं।
4. एक ही छत के नीचे लगभग सभी इलाज केवल 5/-की पर्ची से। दो दिन की दवाई और चैक-अप बिलकुल फ्री।
5. चाय मरीज के पास फ्री पहुंचती है, पानी मरीज के पास पहुंचता है, पांव दबाने की मशीन की सुविधा फ्री है, जोड़े पालिश की सुविधा फ्री है और टी.वी. पर धार्मिक प्रोग्राम चलता रहता है।


1
माता कौलां जी बंदी छोड़ चैरिटेबल अस्पताल, तरन तारन रोड, श्री अमृतसर

इस अस्पताल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरविन्द्र पाल सिंघ जी (लिटल जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 97795-99990,98765-25865,98725-95910,0183-2485920

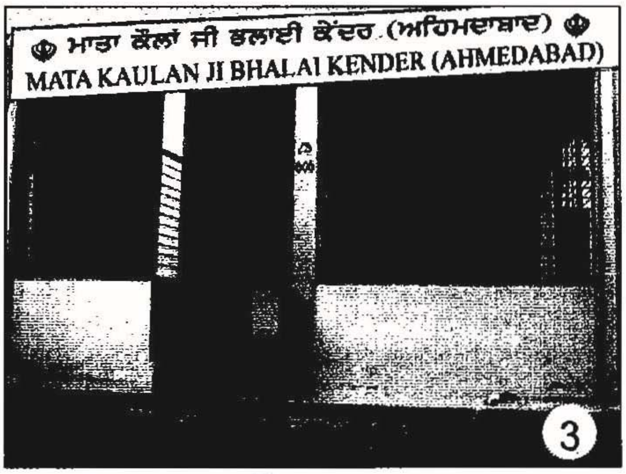
बाबा दीप सिंघ जी बाबा कुंदन सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल,
पताः बाबा दीप सिंघ जी कालोनी, अंदरून चाटीविंड गेट, श्री अमृतसर

1. यहां 10 रुपए की पर्ची पर चैक-अप किया जाता है और दो दिन की दवाई फ्री मिलती है।
2. M.D. डाक्टरों से मरीज लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
3. अस्पताल में ही लैब (Lab.) सभी टैस्टों के लिए उपलब्ध है।
4. यह शाम 5 बजे से रात 8 बजे तक खुलता है। लगभग 125 मरीज रोज़ाना लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
5. यह अस्पताल मौजूदा महापुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी नानकसर वालों की आशीष से खोला गया है और माता ज्ञान कौर जी की प्रेरणा से चल रहा है।


2

संपर्क नः 0183-2546277,98725-95910

अहमदाबाद में माता कौलां जी भलाई केन्द्र



पता: 87/706 पुष्पक अपार्टमैंट, नरनपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)
संपर्क न: 98240-21654

1. यहां 96 स्त्रियों को हर महीने राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. राशन के अलावा समय-समय पर वस्त्र एवं अन्य घरेलू सामान भी दिया जाता है।
4. यहां गुजराती विधवा स्त्रियां साड़ी पहन कर राशन लेने आती हैं और उनके मुख से निकलता है... "हमारे पति चले गए, हमें किसी गुजराती ने तो पूछा नहीं, ये सिक्ख कौन हैं जो हमारे पति की मृत्यु के बाद हमारी सार ले रहे हैं? (धन्य सिक्खी)

इस भलाई केन्द्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई कन्वरबीर सिंघ जी, भाई सुखबीर सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

अन्य शहरों में चल रहे विधवा स्त्रियों के प्रेरणा केन्द्र

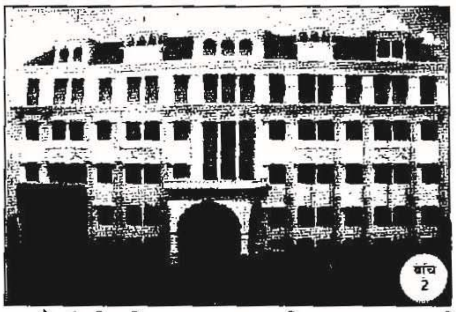
4.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	मेरठ (यू.पी.)
5.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	नासिक (महाराष्ट्र)
6.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	फरीदाबाद (हरियाणा)
7.	माता कौलां जी विधवा बहन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	सूरत (गुजरात)
8.	माता साहिब कौर जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	चण्डीगढ़
9.	माता नानकी जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	सैदां गेट, जालंधर
10.	माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	तिलक नगर, दिल्ली
11.	बाबा दीप सिंघ जी सेवा सिमरन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	पटियाला
12.	बाबा दीप सिंघ जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	ग्वालियर (म.प्र.)
13.	बाबा जवाहर सिंघ जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	होशियारपुर
14.	बाबा दीप सिंघ जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	निकट नेपाल बार्डर, नतनवा
15.	गुरु नानक भलाई केन्द्र (बेवा औरतें) गु: इमली साहिब	इन्दौर (म.प्र.)
16.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें) कौशलपुरी गुमटी न:5, (दशमेश सेवक सभा)	कानपुर (यू.पी.)
17.	माता मनमोहन कौर जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	तुगलकाबाद, दिल्ली
18.	माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	रजिन्द्र नगर, दिल्ली
19.	माता साहिब कौर जी अशीष भलाई केन्द्र	ईस्ट आफ कैलाश दिल्ली
20.	माता कौलां जी वैल्फेयर सोसाइटी भलाई केन्द्र (राजा जी पूरम)	लखनऊ (यू.पी)
21.	मदर कौलां जी वैल्फेयर सैंटर	मैरीलैंड, अमेरिका
22.	मदर कौलां जी *निष्काम* वैल्फेयर सैंटर	कैलिफोर्निया, अमेरिका

ट्रस्ट अधीन चल रहे दो स्कूल

1. यह स्कूल C.B.S.E. हो चुका है।
2. पंजाब में पहली बार सारा स्कूल A.C. है।
3. गुरमति और अंग्रेजी दोनों का खजाना बच्चों को मिले, यह चाव है।
4. रोटी खाने से पहले अरदास, बाद में अरदास, स्कूल छुट्टी के समय अरदास कैसे करनी है, कैसे बोलना है, सारी गुरमति का प्रशिक्षण।
5. गतका, कीर्तन, तबला, पुराने तंती साज, कम्प्यूटर, खेलों के विशेष प्रबंध।
6. पांचवीं का बच्चा अमेरिका की एम्बैसी (Embassy) में अंग्रेजी में बात कर सके, यह हमारी इच्छा है।
7. बच्चा बाणी कंठ करे, रोज गुरुद्वारे जाए, 15 मिनट सेवा करे, इसके अलग नम्बर हैं।
8. इस स्कूल पर आपके दिए दसवंध में से लगभग 10 करोड़ रुपए की लागत आई है।
9. यह सब कुछ होते हुए फीस केवल 375/- रुपए और 425/- रुपए है। कोई व्यापार नहीं, इच्छा है कि आम आदमी भी अपने बच्चों को दोनों विद्या दे सके। ऐसे और स्कूल खुलें इस लिए आप जी के सहयोग की जरूरत है।
10. यह दोनों सकूलों में अभी होसटल की सुविधा नही है



माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, तरन तारन रोड, श्री अमृतसर
संप्रक नः 0183-2484920, 98151-18476



माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, नजदीक गु: टाहला साहिब
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर
(संप्रक 0183-2484922, 98765-25806)

तीसरी ब्रांच निर्माणाधीन

तीसरी ब्रांच दाता बंदी छोड़ पब्लिक स्कूल, निकट गांव भिटेवड, राम तीर्थ रोड, ज़िला अमृतसर में निर्माणाधीन है।

इस स्कूल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई अमनदीप सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है। संपर्क नः **98765-25824,98150-89513**

माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट के समूह कीर्तनी जथों के संपरक नंबर।

मुख्य कीर्तनीए भाई गुरइकबाल सिंघ जी	
भाई गुरपाल सिंघ जी (उस्ताद जी)	098765-25825
भाई हरविंदरपाल सिंघ जी (लिटल)	097795-99990
भाई अमनदीप सिंघ जी	098765-25824, 098150-89513
भाई हरदेव सिंघ जी (दीवाना जी)	098765-25822, 0183-2493213
भाई जसविंदर सिंघ जी (सिवल-लाईन)	098765-25809
भाई गुरदीप सिंघ जी (बसंत एवेन्यु)	099152-82913
भाई अंतरप्रीत सिंघ जी	097791-12513, 098553-46036
भाई जतिंदर सिंघ जी (बिटू जी)	098150-29312
भाई तेजपाल सिंघ जी	095010-13678
भाई सुरिंद्रर सिंघ जी (मनी जी)	094641-18919
भाई अरविंद्रर सिंघ जी (लौंग मास्टर)	098765-25840
भाई हरमिंदर सिंघ जी (कथा वाचक)	098765-25847, 098765-25846
बीबी परमजीत कौर जी (पम्मा बहन जी)	098765-25833
बीबी हरवीन कौर जी (बिनू बहन जी)	099150-33901
भाई हरभजन सिंघ जी (लुधियाना)	098157-93713, 098720-07184
भाई तजिंद्रर सिंघ जी जोश (लुधियाना)	098760-58304
भाई केवलजीत सिंघ जी (दिल्ली)	098106-22413, 011-26220372
भाई बलविंदर सिंघ जी (कथा वाचक) (देहरादून)	092196-01313, 099277-22464
भाई गगनजोत सिंघ जी (जालंधर)	098154-13138

जरूरी विनती:- सभा के समूह प्रेमियों एवं देश-विदेश की संगतों को हाथ जोड़ कर विन्ती की जाती है कि उपरोक्त सारे जत्थे माता कौलां जी भलाई केन्द्र की प्यार भरी कमांड में निष्काम सेवा निभा रहे हैं। विनती है कि दास सहित इन सभी जत्थों को कोई भी घरेलु वस्तु जैसे कि दस्तार, सूट, कुर्ता पजामा, जर्सियां, घड़ी, मोबाइल, बच्चों के कपड़े इत्यादि कोई भी घरेलु वस्तु न दी जाए। यदि आप जी का मन सेवा करना चाहे तो कछहरों का कपड़ा, सिलाई कछहरे, कृपानें, गातरे, गुटके, केसकी के लिए कपड़ा, माला या चल रहे विधवा स्त्रियों के केन्द्र के लिए माया या राशन का सहयोग दिया जाए जी। हमारी भावना है कि आपकी दी वस्तु संगत के काम आए, जिससे सब का भला हो।

आशा है विनती स्वीकार करते हुए आशीषें प्रदान करोगे जी धन्यवाद।

माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट द्वारा 4 अनुपम लहरें

300 साल गुरबाणी कंठ दे नाल' के अब तक 3 भाग हो चुके हैं, इस लहर में क्रमवार 3,23,207,/4,12,820/11,32000 बच्चों ने भाग लिया ।

दूसरी लहर '300 साल लिखन भक्ति दे नाल' इस लहर में 2,81000 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया ।

तीसरी लहर '300 साल सिक्खी सरुप दे नाल' इस लहर में 3,24,804 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया ।

चौथी लहर '300 साल सिक्ख इतिहास दे नाल' इस लहर में 19,32,536 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया ।



भला ही भला कोई व्यापार नहीं

यह जो भी सबकुछ चल रहा है, सारी आशीष नदरि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, बाबा कुंदन सिंघ जी (नानकसर कलेरा) और मौजूदा महांपुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी नानकसर वालों की है। यह उपरोक्त संस्थाएं आप स्वयं आकर देखो, आप दर्शन दो, हमें और सुमति दीजिए, लगभग हर सिक्ख दसवंध निकालता है। वह दसवंध लग कहां रहा है, यह देखना आपकी ड्यूटी है, दसवंध सही जगह लगाना, सही संस्था में देना, यह हमारा फर्ज है। ध्यान रखना ऐसे भलाई केंद्र, ऐसे अस्पताल, ऐसी सराएं, ऐसे स्कूल और खुलें, संगत जी आप जी की आशीष और सहयोग की जरूरत है।

आपकी विश्वास पात्र संस्थाः–

इन चल रहे कार्यों के लिए यदि आप जी अपने दासवंध में से सेवा हित (चैक या ड्राफ्ट) भेजना चाहो तो निम्नलिखित नाम पते पर भेजना जी:-

नाम :- माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)

पता:- माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट) तरन तारन रोड श्री अमृतसर साहिब ।

आप जी अपना पूरा पता एवं मोबाइल फोन साफ-साफ अक्षरों में लिखकर साथ जरूर भेजना जी ताकि रसीद एवं सत्कार आप जी के दिए पते पर पोस्ट किया जा सके । ट्रस्ट को दी हुई सेवा में इन्कम टैक्स के कानून 80-G अनुसार छूट है जी ।

यदि आप जी ने दसवंध की सेवा सीधी बैंक में ट्रांस्फर करके भेजनी हो तो हमारे दोनों बैंकों के आन लाइन एकाऊंट नंबर (ONLINE ACCOUNT NO.) निम्नलिखित है जी:-

नाम: माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)	नाम: माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)
खाता नंबर : 3398000100114013	खाता नंबर : 02631770000020
बैंक : पंजाब नैशनल बैंक	बैंक : एच.डी.एफ.सी बैंक
ब्रांच : कोट मित सिंह, तरन तारन रोड, अमृतसर	ब्रांच : आर एस टावर अमृतसर

जरूरी विनती : आन लाइन बैंक खाते में सेवा डालकर मोबाइल नंबर 98765-25820 या 98765-25828 पर जरूर सूचित करो ताकि आप जी को रसीद एवं सत्कार पोस्ट किया जा सके ।

जरुरी सुचना
संगत सावधान रहे

कई लोक माता कौलां जी भलाई केंद्र ट्रस्ट का नाम लेकर जां भाई गुरईकबाल सिंघ जी का नाम लेकर चन्दा (सेवा) ईकठा करने आते है संगत सावदान रहे

नोटः- अगर आप के पास कोई अनजान व्यकती हमारा नाम लेकर सेवा लेने आता है तो तुरंत इस नंबर पर संपरक करेः-

M: 98765-25815, 98765-25830, 98765-25821

धन्यवाद सहित दासन दास **भाई गुरइकबाल सिंघ**

एवं सहयोगी

कीर्तन के दीवान चल रहे थे। एक रात सभी बाबा जी को कहने लगे कि कल सुबह एक बहुत बड़े साहूकार ने आना है। जब अगले दिन वह साहूकार आया तो बाबा जी कहते हैं, हमने सुना है तू बहुत बड़ा साहूकार है, पर एक बात तो बता तेरा नितनेम कितना है। वह मुस्कुरा कर बोला, नितनेम क्या होता है, बाबा जी कहते, कितना समय गुरु के लेखे लगाता है, कोई जपुजी साहिब, कोई सुखमनी साहिब? वह कहने लगा, मेरे पास इतना समय कहां? बाबा जी कहते, सभी यहां तेरी बड़ी तारीफ कर रहे थे कि यह बहुत बड़ा साहूकार है, पर हम कई शहरों में गए, दीवान लगाए, कई लोगों को मिले परन्तु हम तो कहेंगे कि तेरे जैसा कंगाल कोई नहीं देखा। वह कहने लगा, पहली बार कोई ऐसा मिला है, जिसने मेरे जीवन पर नज़र डाली है, माया पर नहीं। वह शरीर बाबा जी से इतना प्रभावित हुआ कि स्वयं कहकर नितनेम लिया।

किसी ने पूछा तेरा कारोबार कितना है,

किसी ने पूछा तेरा घर बार कितना है,
किसी ने पूछा तेरा परिवार कितना है,
पर किसी विरले ने पूछा तेरा गुरु से प्रेम कितना है?

ऐसा वही कर सकता है जो स्वयं गुरु के प्रेम में रंगा हो और स्वयं माया के प्रभाव से ऊपर हो। वह स्वयं हर वक्त गुरु-चरणों का रस पाता है, सिमरन-विनती करता है और उसकी यही कोशिश होती है कि शेष भी जुड़ जाएँ। जैसा भी हो, कोई सांसारिक जुड़ जाए, कोई विमुख हुआ गुरु के साथ लग जाए। हमें आम जीवों को अपनी-अपनी दौड़ लगी रहती है। अपने ही कार्यों से फुर्सत नहीं मिलती परन्तु पूर्ण संत-महापुरुष का, श्रद्धा और प्रेम वालों का यही प्रयास होता है, यही लक्ष्य होता है। कोई विरले संत-महापुरुष ही इतनी बख्शिश वाले होते हैं, जो माया से निर्लिप्त होते हैं और प्रत्येक को गुरु से जोड़ने का यत्न करते हैं।

बाबा कर्म सिंघ जी होती मरदान वालों के जीवन में भी यही गुण था कि वे भी माया के प्रभाव से ऊपर उठ चुके थे। उनके

पास यदि कोई धन-दौलत लेकर उपस्थित होता था तो उसमें कोई दिलचस्पी नहीं रखते थे। भांति-भांति के लाचार लोग उनकी शरण में आते थे। जहाँ शारीरिक कष्ट दूर होते थे, मनोकामनाओं की पूर्ति होती थी, वहां अन्तर्मन में भजन-बंदगी की चाह भी लग जाती थी। जम्मू का महाराजा प्रताप सिंघ किसी रोग से पीड़ित था और घर में औलाद भी नहीं थी। बाबा जी के सहज स्वभाव वचनों से ही शरीर आरोग्य हो गया और पुत्र का वर भी प्राप्त हुआ। आभार के रूप में बेशुमार धन-दौलत वह कितनी ही जागीर बाबा जी को भेंट करने के लिए लेकर आया परन्तु बाबा जी ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया और कहा, हमें तेरी दौलत अथवा ज़मीन नहीं चाहिए, तू अपना नितनेम बढ़ा, हमें उसमें खुशी मिलेगी।

एक संत जवाहर सिंघ जी हुए हैं मिठे टिवाने वाले। उनको एक बार भाई सुजान सिंघ नामक साहूकार ने विनती की, महापुरुषो ! हमारे घर में प्रसाद ग्रहण करो? महापुरुषों ने कहा, भेंट लगेगी। वह कहने लगा, कोई बात नहीं जो भेंट कहोगे अदा करूँगा। महापुरुषों ने दिन नियत कर दिया। नियत दिन महापुरुष उसके घर गए, साथ 8-10 संगी भी थे। सभी बैठ गए। घर वालों ने हाथ शुद्ध करवाए, थालियां वितरित करना शुरू कीं। जब प्रसाद लाने लगे तो महापुरुषों ने कहा, रुक जाओ भाई, अभी प्रसाद नहीं बांटना, पहले हमने भेंट लेनी है। उस साहूकार ने जेब में से चैक निकाल कर महापुरुषों के चरणों में रख दिया और आग्रह करने लगा, यह लीजिए चैक, मैंने हस्ताक्षर कर दिए हैं, स्वेच्छा से रकम भर लेना। महापुरुषों ने चैक के 8-10 टुकड़े करके फैंक दिए और कहा, पूछ तो लेना था हमारी भेंट है क्या? महापुरुष कहने लगे, यह माया की भेंट नहीं चाहिए। तू हमें बता तेरा नितनेम क्या है? वह कहने लगा, नितनेम क्या होता है? बाबा जी ने कहा, तुझे इतना भी पता नहीं कि नितनेम क्या होता है? फिर हमारी यही भेंट है कि तू एक पाठ सुखमनी साहिब का प्रतिदिन किया कर। वह कहने लगा, यह मैं नहीं कर सकता, मैं बहुत व्यस्त हूं। महापुरुषों ने पुनः कहा हमारी तो यही भेंट है। यदि नहीं दे सकता तो फिर हम भी

तेरे घर प्रसाद नहीं ग्रहण कर सकते। इशारा समझना, साहूकार ने खाली चैक दे दिया है कि स्वेच्छा से जितनी मर्ज़ी रकम भर लो पर जो माया के प्रभाव से ऊपर उठ चुका है, चैक के टुकड़े-टुकड़े करके उसका जीवन बनाने का यत्न कर रहा है। साहूकार कहने लगा, प्रसाद ग्रहण करना है तो कीजिए, नहीं ग्रहण करना तो मत करें, परन्तु मैं प्रतिदिन सुखमनी साहिब का पाठ नहीं कर सकता। महापुरुष उठ कर बाहर की ओर चल दिए। सुजान सिंघ की पत्नी सूझवान थी। उसने अपने पति के पैर पकड़ लिए और आग्रह करने लगी, यह जो कारोबार, धन-दौलत है, सब कुछ खत्म हो जाएगा यदि अतिथि महापुरुष नाराज़ होकर चले गए। यह तो अपने ही भले के लिए कह रहे हैं। बात सुजान सिंघ जी के हृदय पर लगी और उसने दौड़कर महापुरुष के चरण पकड़ लिए, क्षमा याचना की और वचन किया कि मैं प्रतिदिन एक पाठ सुखमनी साहिब का किया करूँगा, आप अवश्य कृपा करके प्रसाद ग्रहण करो। यह है माया से ऊपर उठना। चैक के टुकड़े किए और मांगा क्या? कोई गुरु से जुड़े और यह है श्रद्धा। सत्यशील व पूर्ण महापुरुष होते ही ऐसे हैं जो इन्सान के जीवन का रंग ही बदल देते हैं, वास्तविक जीवन-आचरण का मार्ग बता देते हैं, कोशिश करते हैं कि दूसरों का जीवन संवर जाए, उसके अवगुण निकल जाएँ, विकार निकल जाएँ।

एक अन्य वार्ता स्मरण आई। एक सच्चे संत को किसी ने अपने घर प्रसाद ग्रहण करने की विनती की। नाम के जो रसिया होते हैं, वे अन्तर की बूझ लेते हैं। वे कहने लगे, अवगुण तो तुझमें अत्यधिक हैं, पर तीन बहुत बड़े हैं, एक तो तू दाढ़ी काटता है, दूसरा मांस सेवन करता है और तीसरा मदिरापान करता है। इन में से एक अवगुण की भेंट प्रदान कर दे, हम तेरे घर प्रसाद ग्रहण करने आ जाएंगे। देखो ! भेंट भी क्या मांगी है और ऐसी की किसी की ज़िंदगी में से अवगुण निकल जाएं, किसी का जीवन सँवर जाए। यह है श्रद्धा वालों की निशानी। पहले तो वह शरीर बड़ा चकित हुआ कि कैसी भेंट मांग रहे हैं परन्तु फिर मन बनाकर कहने

लगा, महापुरुषो! मैंने आज से दाढ़ी काटना छोड़ दिया। संत-महापुरुष कभी यकायक चोट नहीं करते, इस तरह व्यक्ति डर कर भाग जाता है। धीरे-धीरे प्रेम से, ज्ञान की रोशनी देकर, सीख देकर सन्मार्ग लगाते हैं। वह दाढ़ी काटना छोड़ने को मान गया। महापुरुष उसके घर गए और प्रसाद ग्रहण किया। ऐसी बख्शिश की, ऐसी कृपा की कि शनैः शनैः सब बुरी आदतें उसके जीवन में से निकल गईं और वह एक दिन अमृतधारी गुरसिक्ख सुशोभित हो गया।

पूर्ण संत माया से निर्लिप्त होते हैं, उनको माया का लोभ नहीं होता अपितु यही लोभ होता है कि टूटे हुए गुरु नानक के चरणों से जुड़ जाएँ। पूर्ण संत है ही वह जो गुरु से जोड़ दे।

यह है पहली निशानी। जिसे श्रद्धा का कण मिला है, वह माया के प्रभाव से ऊपर उठ जाएगा। दास को बाबा ईशर सिंघ जी राड़ा साहिब वालों का एक ज़िक्र याद आ गया। बाबा जी इंगलैंड बहुत जाते थे प्रचार के लिए, शरीर भी वहां ही त्याग दिया था। उनका फिर शरीर जहाज में यहां लाया गया था अन्तिम संस्कार के लिए। एक बार का ज़िक्र है, बाबा जी इंगलैंड गए उनके बाजे के आगे जगह भर गई पौंडों से वहाँ रुपयों की जगह पौंड होते हैं। किसी ने पांच पौंड रखे, किसी ने दस। लगभग दस दिन वहाँ दीवान थे, संगत बेअंत और ढेर लग जाना पौंडों का। जिस समय समापन होना दीवान का, बाबा जी ने सेवक को संकेत करना कि पौंड के सब ढेर गुरुद्वारे की गोलक में डाल दो। जिस दिन अन्तिम दिन था, प्रबंधकों ने परस्पर विचार-विमर्श किया कि महापुरुष ने पास तो माया रखी ही कोई नहीं, सारी माया गुरुद्वारे की गोलक में डलवा देते हैं, चलते समय महापुरुषों को 50 हज़ार पौंड भेंट के रूप में प्रदान कर देंगे। जब चलते समय प्रबंधक बाबा जी को माया देने लगे तो बाबा जी ने कहा कि यह क्यों दे रहे हो? प्रबंधक ने कहा, जिस स्थान से आप आए हो राड़ा साहिब, वहाँ के लिए। देखो कितना माया के प्रभाव से ऊपर। वे कहने लगे, वहाँ भी गुरु की गोलक है और यहाँ भी गुरु की गोलक है। ऐसी बात कोई आम

व्यक्ति नहीं कर सकता। वही कह सकता है जिसने मन को मारा है।

माया के भी कई रूप हैं, केवल पैसे को ही नहीं माया कहा। ऋद्धि-सिद्धि भी माया का ही रूप है। बहुत दुनिया नाम की ओर चलती है पर गुरु चरणों तक नहीं पहुंच पाती। ऋद्धियों-सिद्धियों पर रुक जाती है। ज्यों-ज्यों अभ्यास बढ़ता है, यह ऋद्धियां-सिद्धियां करामातें अभ्यासी को आकर्षित कर परमानंद की पदवी में स्थिर होने से रोकती हैं। यह अभ्यासी को अपने जलवे दिखाकर अपनी ओर प्रेरित करती हैं। यदि अभ्यासी करामातों में लग जाए तो उसकी आत्मिक प्रगति रुक जाती है। बहुत दुनिया इसमें ही फंस जाती हैं गुरु के चरणों से प्रेम, यह सर्वोत्कृष्ट भक्ति है।

बाबा नंद सिंघ जी के पास भी आईं थी यह गुप्त शक्तियां। बाबा जी कहने लगे, आप कौन हो? उन्होंने कहा, आप जिस शब्द का निरन्तर जाप करते हो, उसका जो भी कोई निरन्तर जाप करे, हमें उसकी सेवा में पहुँचने का हुक्म है।

प्रियतम भी बड़ा बेपरवाह है। खुद से पीछा छुड़ाने के लिए कई किस्म के डर भी देता है और लालच भी। परन्तु जिसको प्रियतम से सच्चा इश्क लगा हो, उसको प्रियतम के सिवा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। जिन्होंने दिल में आकर्षण पाया हो, जिनका प्रेम सच्चा हो, वे कहते हैं, मुझे ऋद्धियों-सिद्धियों की आवश्यकता नहीं, पर इश्क हकीकी के इस मर्तबे तक पहुँचना हरेक के वश की बात नहीं। गुरु की कृपा से विरला गुरमुख माया को बिल्कुल ही त्याग कर, माया के प्रभाव से पूरी तरह ऊपर उठकर ब्रह्म में विलीन हो जाता है। उसके प्रेमियों को धन-दौलत, ऋद्धियां-सिद्धियां कोई भी चीज़ मोह नहीं सकतीं। बाबा जी ने इनसे पीछा छुड़ाने के लिए कहा कि कल आना। बाबा जी अपने मुरशिद बाबा हरनाम सिंघ जी भूचों वालों के पास गए और जाकर आग्रह किया, जो आप ने जाप दिया था, उसके जाप से यह अजीब चीज़ें आ गई हैं। यह शब्द संगत की जानकारी के लिए देते हैं। यह जाप था—

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

जा कै वसि खान सुलतान॥ जा कै वसि है सगल जहान॥

(अंग १८२)

यह पूरे शब्द का जाप विधि से प्रदान किया था, भूचों वाले बाबा जी ने। कहते, फिर शक्तियां पास आ गईं, सेवा मांग रही हैं, फिर और क्या चाहते हो? बाबा नंद सिंघ जी वैराग्यवान् कहते हैं, यह नहीं चाहिए, गुरु नानक चाहिए।

धन्य हैं वे जो इस राह पर चले। मार्ग पर चलते यदि कहीं रसना पर सत्य आ गया या अन्य नियामतें उपयोग होने लग पड़ी तो उनमें भी फंसे नहीं, आप भी जुड़े और अन्यों को भी जोड़ा। एक बार बाबा नंद सिंघ जी को एक शरीर पूछने लगा, "क्या आपके पास कोई शक्ति है ?" बाबा जी ने कहा, तेरे पास कौन-सी है? उसने कहा,"आप आश्चर्यचकित्त हो जाओगे सुनकर, मेरे पास ऐसी शक्ति है कि पतीले में पकते समय जो चीज़ मर्ज़ी आप डाल दो, जो आप मुँह से कहोगे, मैं वही निकाल कर दिखा सकता हूँ। मैंने 45 वर्ष लगाकर यह शक्ति हासिल की है।" बाबा जी ने कहा तेरे जैसा बेवकूफ कोई नहीं। यही तूने अगर 45 वर्ष नामदेव, कबीर की मानिंद नाम जपने में लगाए होते, ईश्वरनिष्ठ होते, तुझे देने वाला परमेश्वर ही मिल जाना था।

शोभा, बड़ाई, वाह-वाह यह भी माया का ही रूप है। यह भी गुरु से तोड़ देती है। पढ़ो इतिहास। रामराय को गुरु-घर से बेदखल क्यों किया गया? गुरु हरिराय साहिब जी ने, कितनी कृपा व बख्शिशें देकर औरंगज़ेब के दरबार भेजा था। वहाँ की शान-शौकत ने ऐसी बुद्धि भ्रष्ट की कि वाणी कि पंक्ति ही बदल दी। जब औरंगज़ेब ने पूछा, क्या यह सच है कि वाणी में लिखा है—

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर॥

(अंग ४६६)

दिमाग पर ऐसा माया का प्रभाव पड़ा और सोचते हैं शहनशाह के दरबार में बैठा हूँ, इतना मान-सम्मान मिला है, यदि यह कहा

कि यह सच्चाई है, यह पंक्ति दर्ज है वाणी में तो कहीं बादशाह नाराज़ ही न हो जाए। अगर बादशाह नाराज़ हो गया तो यह सब शान-शौकत, शोभा, बड़ाई छीन ली जाएगी। वह कहने लगा, पंक्ति लिखने में भूल हो गई है। पंक्ति बदल कर "मिटी बेईमान की" कर दी। गुरु साहिब को जब इस बात का पता लगा तो उन्होंने संदेश भेज दिया। हमारे सम्मुख मत आना। आज तक सिक्खी में रामरायों व धीरमलियों से नाता निषेध है। सिक्खी से भी निकाल दिया। ज़रा सोचो! पीछे कारण क्या था? कारण था माया का प्रभाव, शोभा का, बड़ाई का, वाह-वाह का प्रभाव।

गुरु के प्यारों के जीवन से शिक्षा प्राप्त करें। भाई नंद लाल जी दशमेश पिता के प्यारे, कितने गुणी ज्ञानी, कितनी कला के स्वामी, कितने बुद्धिमान, कितनी बोलियों के ज्ञाता! बड़े-बड़े राजाओं से संदेश आते थे कि तू इतना गुणी ज्ञानी है, इतना बड़ा लेखक है, गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर पर जूठे बर्तन मांज कर और झाड़ू देकर क्यों अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर रहा है, हमारे पास आ जा, सुन्दर सफेद चादरों में विराजमान करेंगे, अच्छा वेतन प्रदान किया जाएगा। इशारा लेना। भाई नंद लाल को माया, शोभा पुकार रही थी, परन्तु अपने दशमेश गुरु के चरण नहीं छोड़े, अपितु कहते हैं कि जो स्वाद, जो आनंद, जो रस गुरु पिता के दर पर जूठे बर्तन मांजने और झाड़ू देने में है, वह सफेद चादरों, उच्च पदों और माया में नहीं।

यह है श्रद्धा की पहली निशानी। पढ़ने के उपरांत अपने आप को चैक करो, मैं कहां खड़ा हूं। जिस सिक्ख के पास श्रद्धा है, वह माया के प्रभाव से ऊपर उठ जाएगा।

☆☆☆

जो तूं करावहि सो करी पिआरे
अवरु किछु करणु न जाइ॥

श्रद्धा की दूसरी निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :

वह कभी भी अकेला नहीं होता, वह अपने गुरु को सर्वदा अंग संग महसूस करता है।

जिसे श्रद्धा की दात मिल जाए, वह कभी भी अकेला नहीं होता। गुरु को सर्वदा अंग संग महसूस करता है। परमात्मा की कुदरत न्यारी है। उसने लकड़ी में भी अग्नि छिपाई है, परन्तु हम देख नहीं सकते। जिनको युक्ति आती हो, वे लकड़ी में से अग्नि को प्रकट कर लेते हैं। दूध में माखन है, परन्तु युक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है। ठीक इसी तरह रब्ब, परमेश्वर भी हमारे भीतर ही है, बहुत निकट, हाथों-पैरों से भी निकट परन्तु प्राप्ति के लिए युक्ति की आवश्यकता है। हम लोग परमात्मा को तीर्थों और वनों में ढूँढते-फिरते हैं, पर वह तो हमारे अंदर ही विद्यमान है। कबीर जी के वचन हैं–

कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरु॥ (अंग १३६६)

भाव जिसको तीर्थों पर खोजते-फिरते थे, कबीर जी कहते हैं, उसे सत्संग द्वारा हृदय रूपी ठौर में से पा लिया।

मन शीशा है। इस द्वारा हम परमात्मा को देख सकते हैं, परन्तु इस मन को जन्म-जन्मांतर की मैल लगी हुई है।

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु॥

(अंग ६५१)

श्रद्धा की दूसरी निशानी

महापुरुषों की, सत्यपुरुषों की, प्रभु के उपासकों की संगत में जाकर मन को मांजा जाए और जब मन का शीशा साफ हो जाए तो अपने अन्दर का परमात्मा दृष्टिगत हो जाता है। इस संबंध में श्री गुरु अर्जुन देव जी के वचन हैं–

बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि॥
नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि॥

(अंग ४५५)

परमात्मा सर्वव्यापी है। सर्वव्यापी का अभिप्राय है न वह हमसे और न हम उससे कभी बिछुड़े हैं और न ही बिछुड़ सकते हैं। जैसे पानी से बुलबुला अथवा लहर कभी बिछुड़ नहीं सकती, उसी तरह हम भी परमात्मा से कभी अलग नहीं हो सकते। वह हर स्थान पर मौजूद है। सब चीज़ों के अन्दर-बाहर मौजूद है। हर व्यक्ति के हृदय में व्याप्त है, हम घर हों, बाहर हों, वह हमारे साथ है। हर वक्त, हर जगह, भीतर-बाहर हमारे अंग संग मौजूद है। हम सोएं, जागे, खाएं-पीएं, घर हों, बाहर हों, कहीं भी जाएं, वह हमारे साथ होता है। जिस तरह का सांसारिक पति पूरा-पूरा दिन घर से बाहर ही रहता है, कई बार शहर से बाहर भी चला जाता है, कई बार या स्त्री से पूर्व ही मृत्यु हो जाए तो सदैव बिछुड़ जाता है। यह पति की भी आवश्यकता है, पर यदि जीव-स्त्री साथ परमात्मा को भी पति बना ले तो वह छोड़कर कहीं नहीं जाता और न ही मरता है। मिट्टी के कण-कण में उसकी ज्योति आलोकित हो रही है। वह स्वयं ही अनेक रूप होकर सर्वत्र रमण कर रहा है।

एको एकु एकु हरि आपि॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि॥

(अंग २८६)

परमात्मा निर्गुण व सगुण दोनों रूपों में ही इस संसार में रमण करता है। एक बार पंचम गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी को, 4-5 सिक्खों ने पूछा था कि उपासना सगुण की करनी चाहिए कि निर्गुण की। सतिगुरु ने कहा कि आपका यह संशय व्यर्थ है, क्योंकि सगुण

व निर्गुण में कोई अंतर नहीं।

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही॥
कला धारि जिनि सगली मोही॥

(अंग २८७)

परमात्मा स्वेच्छानुसार अपना सगुण रूप धारण कर गुरु के रूप में आता है।

जैसे वायु चलती है, हम उसे अनुभव करते हैं, इससे श्वास भी लेते हैं परन्तु एक मृत शरीर वायु को महसूस नहीं कर सकता, क्योंकि वायु को महसूस करने वाले जंतु, उसके फेफड़े इत्यादि काम नहीं कर रहे होते। इसी तरह वाहिगुरु सब जगह है, परन्तु गुरु पर श्रद्धा से विहीन इन्सान भी लाश की मानिंद है। गुरु पर श्रद्धा के बिना उसके अस्तित्व को महसूस नहीं किया जा सकता।

कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै॥
हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा॥

(अंग ६२४)

यह दास विस्तारपूर्वक नहीं लिख सकता क्योंकि यह तो अनुभव की बात है। मरदाना ने एक बार कहा था बाबा नानक को, सतिगुरु! आप कहते हो, प्रभु हर जगह है, पर मुझे तो नज़र नहीं आता। ऊपर देखता हूं तो आकाश है, नीचे देखता हूं तो धरती, मकान, पेड़, इमारतें नज़र आती हैं। सतिगुरु ने कहा, यह अनुभव की बात है मरदाना। मरदाना ने कहा, मैं समझा नहीं। सतिगुरु ने पुनः कहा, जब तेरे अन्दर आता है कि मैंने दरबारी राग बजाना है, उस वक्त तू कोई कापी तो नहीं निकालता, पर तेरे रबाब पर दरबारी राग के स्वर आरम्भ हो जाते हैं। बस दिमाग में आने की बात है। फिर तूने उस राग की सरगम कैसे निकालनी है, उसके लिए कोई कापी नहीं देख सकता। अगर तेरे दिमाग में आ जाए बिहागड़ा राग, तू वह शुरु कर देता है, यदि आए भैरवी राग, तू वह प्रारम्भ कर देता है, तेरा हाथ उधर चल पड़ता है। यह अनुभव की बात है। तेरे भीतर अनुभव आता है। आप कभी नोट करो,

महिलाएं, बहनें, कभी सब्ज़ी या अन्य कोई पदार्थ इत्यादि बनाते वक्त मिर्च मसाला इत्यादि तौल कर नहीं डालतीं। अन्दर एक अनुभव आ जाता है, चम्मच पकड़ती हैं और डाल देती हैं। चाय बनाओ कभी पत्ती, चीनी इत्यादि तौल कर नहीं डालते, जब डालते हो, अन्दर एक अनुभव आ जाता है कि इतना डालना है। इसी तरह परमात्मा का अस्तित्व भी एक अनुभव की बात है। दिखाई तो आकाश, धरती, पेड़, इमारत इत्यादि ही देते हैं परन्तु यह अनुभव की बात है। जिनको अनुभव हो जाए, फिर वह परमात्मा को अपने अंग संग महसूस करते हैं।

परमेश्वर सर्वव्यापक है। वह हमारे तन, मन व प्राणों में रमण कर रहा है, पर हम सिर्फ इस बात को भुला बैठे हैं। वह हमारे शरीर में हर वक्त साथ है, सब कुछ देखता है, सुनता है, ज़रूरत है सिर्फ इस बात को याद रखने की। जैसे घर में रुपए हों और हम भूल जाएं और लेनदार को न दे सकें तो अपमान होता है, पर यदि यह याद आ जाए तो प्रतिष्ठा रह जाती है। प्रभु हमारे अंग संग है। हमने केवल इस बात को स्मरण रखना है। परेशानी तभी होती है, जब हम यह बात भूल जाते हैं। परमात्मा तो हमारे अन्तर्मन में ही है। वह तो हमारे भीतर ही बैठा है, कहीं दूर नहीं, केवल हम भूल जाते हैं, ज़रूरत है इस भूल को मिटाने की। उसका नाम स्मरण निरंतर करने से यह भूल दूर हो जाती है। भाई वीर सिंघ जी के वचन हैं कि "मैंने जीवन से यही सीखा है कि सिमरन की उमंग से यह लगे कि वाहिगुरु मेरे साथ है और यदि कभी ऐसा न भी लगे तो भी सिमरन जारी रहे।"

हमने वाहिगुरु से प्रेम करना है। वाहिगुरु का सिमरन करना, उससे प्रेम करना ही है। जब प्रियतम पास हो तो उसके दीदार करते हैं और जब वह दूर हो तो उसे याद करते हैं। परमात्मा हमें याद नहीं आता, अतः उसे स्मरण करना है और स्मरण से हजूरी में रहना है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि हर वक्त आत्मा में सुरति लगाकर समाधि में जीवन बिताएं। हमने कामकाज करके उसकी हजूरी में, प्रेम में रहना है। सिमरन का भाव यह है कि अन्तर्मन

में वाहिगुरु की हजूरी प्रतीत हो, फिर वह अंग संग महसूस होता है, उसकी हजूरी का एहसास होता है। उस मार्ग पर चलने वाले को जब अन्तर्मुख होने का ढंग आ जाता है, उसका मन सिमरन में लीन होता है तो उसको परमात्मा का स्पर्श महसूस होता है। यह सुख, यह आनंद सर्व सुखों से स्वादिष्ट होता है, मीठा होता है।

कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ ॥

(अंग ३३४)

जैसे गूंगे ने गुड़ खाया हो और उससे कोई उसका स्वाद पूछे तो बता नहीं सकता, उसी तरह इस रस के स्वाद को बताया नहीं जा सकता।

जैसे कुर्सी के साथ कमर लगा कर बैठा जाए तो कुर्सी की मौजूदगी महसूस होती है, इसी तरह परमेश्वर का भी अस्तित्व महसूस होता है। हम उसको देख नहीं सकते परन्तु उसके अस्तित्व की अनुभूति होती है। संत अत्तर सिंघ जी को एक बार उनके करीबी सेवक ने पूछा कि जब आप चलते हो, कई बार यों लगता है जैसे आपके साथ कोई है। पहले तो संत जी बात को टालते रहे, क्योंकि—

जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥

(अंग ७१८)

अर्थात् जिन गुरमुख प्यारों ने हरि को पाया है, वह इस बात को गोपनीय रखते हैं परन्तु सेवक के अधिक हठ करने पर उन्होंने बताया कि दशमेश गुरु स्वयं हर वक्त अंग संग होकर कार्यशील हैं, रक्षा करते हैं और यदि किसी समय मर्यादा में न रहे तो सावधान भी करते हैं।

गुरु नानक हमारे पिता हैं, हम उनके अंश हैं। हमारी यह प्रतीत बन जाए, भावना बन जाए कि वे हमारे साथ हैं और हम उनके आसरे चलते फिरते हैं। दास का आम अनेक लोगों से विचार होता है। कई कह देते हैं मैंने अमुक जगह अकेले नहीं जाना। फिर दास जवाब देता है, अभी बड़ी-छोटी दृष्टि है तेरी, तू अकेला नहीं

है, तेरे साथ कोई है। जिसकी गुरु पर श्रद्धा हो वह कभी भी अकेला नहीं होता, वह अपने गुरु को अपने अंग संग महसूस करता है।

बाबा नंद सिंघ जी के समय की एक वार्ता है कि एक दफा कीर्तन का बहुत सुन्दर समय बंधा हुआ था। संगत कीर्तन रूप हुई लवलीन थी।

समापन पर एक प्रेमी बाबा जी को कहने लगा कि बाबा जी! आज कीर्तन के दौरान एक खास मीठी व सुरीली ध्वनि कानों में रस घोल रही थी, बहुत आनंद आ रहा था। बाबा जी ने कहा, अरे प्यारे! वह मीठी और रसीली ध्वनि गुरु नानक जी की थी जो आप संगत में विराजमान होकर कीर्तन करते व सुनते हैं।

जिनके पास श्रद्धा का कण है, वे संगत में विराजमान हों और उन्होंने भावना बनाई होती है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में मेरा मालिक विद्यमान है। आप भी हरिमंदिर साहिब में बैठे हों, संगत में बैठे हों अथवा जहाँ भी प्रकाश हो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का, यदि उसे पृष्ठ स्याही समझो तो वह बात नहीं बनेगी। यदि समझो गुरु नानक, स्वयं कलगीधर पातशाह (जोत एक ही है, जहाँ भी आपकी वृत्ति लगी हो, जिस गुरु का भी ध्यान करते हो।) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में आसन पर पालथी मार कर बैठे हैं, आपके बैठने में रस भर जाएगा। गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय, एक बड़ा ही प्यारा सिक्ख भाई सुजान, जिसको गुरु साहिब ने आनंदपुर के रास्ते में हकीम की दुकान खोलकर आते-जाते यात्रियों का उपचार, सेवा करने का दायित्व सौंपा था, वह भी प्रभातकाल उठकर स्नान कर सन्मुख शुद्ध चादर का आसन बिछाकर नितनेम में तल्लीन होता था और भावना बनाता था कि दशमेश गुरु साक्षात् विद्यमान हैं। गुरु हरिराय साहिब जी को जब काबुल की संगत ने बहुत अनुरोध किया गुरु जी को काबुल में कुछ दिन दीवान आयोजन का तो गुरु साहिब ने कहा था कि भाई गोंदा जी को ले जाओ, इनमें आपको हमारे दर्शन होंगे। यह बात सुनकर भाई गोंदा जी ने विनती की कि सच्चे पातशाह! संगत तो मुझमें आपके दर्शन कर लेगी, पर मुझे आपके दर्शन कैसे होंगे? तो सतिगुरु ने वचन

किया था, नितनेम में जुड़ते वक्त सन्मुख शुद्ध चादर का आसन बिछा लेना, हम उसी आसन पर नित्य दर्शन प्रदान करेंगे। माता साहिब कौर जी को जब गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वचन किया था दिल्ली जा कर रहने का तो उन्होंने गुरु साहिब जी का हुक्म सिर मस्तक पर स्वीकार तो कर लिया परन्तु साथ ही विनती की थी कि मेरा तो रोज़ नितनेम के उपरांत आपके दर्शन करके कुछ खाने का नियम है, वह कैसे पूरा होगा? तो सतिगुरु ने अपना निजी शस्त्र देकर कहा था कि हमारे इस शस्त्र को सन्मुख आसन पर रखना, इसमें से आपको हमारे दर्शन होंगे। दीपालपुर के कुष्ठी को भी जब गुरु नानक साहिब ने दर्शन दिए, उसका कुष्ठ निवृत्त किया और जब वहाँ से चलने लगे तो दीपालपुर के कुष्ठी ने प्यार में वचन किया था कि सतिगुरु! आपने जब जाना है तो मैंने शरीर त्याग देना है, क्योंकि आपके दर्शनों के बिना अब मैं जी नहीं सकूंगा। गुरु नानक साहिब ने वचन किया था कि शरीर का त्याग मत करना, यह मर्यादा नहीं, पर हम तेरे प्यार को देखकर तेरे साथ यह वचन करते हैं कि जब तू नितनेम के बाद अरदास किया करेगा, उसी घड़ी पर तुझे दर्शन दिया करेंगे। दास का यह कुछ गुरु प्रेमियों की उदाहरणें देने से भाव है कि श्रद्धा वाले कदापि अकेले नहीं होते, वह गुरु को हर वक्त अंग संग महसूस करते हैं। दास को एक गुरमुख प्यारे का ज़िक्र याद आ गया, आप जी से व्यक्त कर रहा हूं। बात थोड़ी प्रेम वाली है। दास और तीन शरीर किसी गुरमुख को मिलने के लिए उसके घर गए, सर्दियों के दिन थे। उनकी पत्नी ने कहा, वे छत पर धूप का आनंद ले रहे हैं। हम सभी ऊपर चले गए। वे कुर्सी पर बैठे धूप का आनंद ले रहे थे। समीप ही दो कुर्सियां खाली पड़ी थीं, साथ ही एक बैंच भी विद्यमान था। वे जहाँ बैठे थे, उनके बिल्कुल साथ ही एक अन्य कुर्सी थी, जिस पर तह लगाकर एक स्वच्छ सुंदर चादर बिछी पड़ी थी। हम 4 शरीर थे, दो कुर्सियों पर बैठ गए और एक शरीर बैंच पर बैठ गया। उस बैंच पर अभी अन्य शरीर के बैठने की जगह थी, पर चौथा शरीर वहाँ पर न बैठा। उसने सोचा कि जहाँ चादर

बिछी है, उस कुर्सी पर मैं बैठ जाता हूं, बैठने के लिए चादर उठाने लगा तो साथ ही वह गुरमुख प्यारा भीगी हुई आवाज़ में उस शरीर को कहने लगा, इधर बैंच पर बैठ जाओ। वह शरीर कहने लगा, यहाँ कुर्सी पर ही बैठ जाता हूं, यह भी तो खाली ही है। वह गुरमुख प्यारा बड़े प्रेम और भावनात्मक लफ्ज़ों में कहने लगा, भाई यह तुझे खाली नज़र आ रही है, मैं यहाँ अकेला बैठ कर धूप का आनंद नहीं ले रहा, सुरति से इस कुर्सी पर मालिक को विराजमान किया हुआ है। बात बहुत ऊँची है, बहुत प्रेम वाली है, इसको वही समझ सकता है, जो इस श्रद्धा की अवस्था तक पहुँचा है, वह कभी अकेला नहीं होता, उसके गुरु अंग संग है।

गुरु साहिब भी वाणी में चकवी व सूर्य की प्रीत की उदाहरण देकर हमें गुरु को अंग संग समझने का उपदेश देते हैं—

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर॥

(अंग ६०)

भाव कि परमात्मा से ऐसी प्रीत करो जैसे चकवी की सूर्य से है। जब सूर्यास्त हो जाता है और चकवी की नज़रों से ओझल हो जाता है तो चकवी एक पल भी नहीं सोती और सूर्य चाहे उससे दूर है फिर भी उसको निकट मानती है, अपने अंग संग समझती है।

एक बार हम किसी बाहर के शहर गए। वहाँ एक बड़ी सुन्दर बात देखी। वहाँ कोई महापुरुष आए हुए थे। वह जब भी कार में बैठते थे तो पहले हाथ से उसके हैंडल पर १ ओअंकार लिख देते थे। फिर मुँह में प्रथम पउड़ी पढ़ने के बाद ड्राईवर को कहते थे, अब गियर डाल। इस तरह ओट लेकर, मालिक को साथ लेकर चलना।

यह है श्रद्धा की दूसरी निशानी। जिसे श्रद्धा की दात प्राप्त है, वह कभी भी अकेला नहीं होता, गुरु को सर्वदा अंग संग महसूस करता है। एक भाई सहज राम जी हुए हैं। जब भी कीर्तन करते थे, व्याख्या करते थे, कई-कई घण्टे प्यार में लीन रहते थे। एक बार किसी ने पूछ लिया कि इतने-इतने घण्टे निरंतर आप कैसे

कथा-कीर्तन कर लेते हो? उन्होंने बताया कि जब आंखें मूंदकर वाणी पढ़ना शुरू करता हूं तो गुरु की कृपा का हाथ अपने सिर पर महसूस होता है। अब बात समझना। कथा बहुत शरीर करते हैं और यह महसूस करना कि हाथ गुरु का सिर पर है, यह श्रद्धा है। भाई सहज राम जी कहते हैं, वे हाथ ही कई घण्टे सेवा लेता है। रघुबीर सिंघ बीर की किताब "बंदगी नामा" में उनका भी गुरु के अस्तित्व को अंग संग महसूस करने का बड़ा प्रेम वाला ज़िक्र मिलता है। वह अपनी किताब में लिखते हैं कि मैं एक बार अर्धरात्रि के समय बंदगी में बैठे किसी मुश्किल का हल न हो सकने के कारण फूट फूट कर रो रहा था। अश्रुओं से मेरी आत्मा में से एक तरंग सी उठी और शनैः शनैः बड़ी होती गई, जिसने मेरी आत्मा को अपने आलिंगन में लपेट लिया और प्रेम से अपने साथ लगा लिया। लिखते हैं कि मैंने यों महसूस किया कि इस आत्मिक तरंग ने मुझे प्रेम आलिंगन डाला हुआ है। इस आलिंगन में वह आनंद था कि बचपन में माता-पिता के आलिंगन को मात कर रहा था। यह आत्मिक तरंग मेरे आंसू पोंछती, सिर पर हाथ फेरती और दिलासा देती जाती थी। आगे लिखते हैं कि इसी अवस्था में ही मैं सो गया अथवा यों कह लो कि पूरी रात सुख निद्रा की अवस्था में पड़ा रहा। सुबह होते ही मेरी तमाम मुश्किल भी हल हुई पड़ी थी। इस मुश्किल का हल होना मेरी इन्सानी अक्ल के लिए एक भारी अचंभा था। जिस बात को मैं दो दिन पूर्व असंभव समझता था, वह बात मेरी आंखों के समक्ष संभव हुई पड़ी थी। वे कहते हैं, उस दिन मुझे महसूस हुआ कि मैं अकेला नहीं हूं, कोई मेरे साथ है।

गुरु नानक सूक्ष्म भी हैं और स्थूल भी। स्थूल उसको कहते हैं जो चीज़ सामने दिखाई दे रही है पर जो चीज़ सामने दिखाई नहीं दे रही, सर्वदा आसपास महसूस हो रही है, वह है सूक्ष्म। जो दिखाई नहीं दे रही पर उसके अस्तित्व का एहसास हर वक्त है, हर पल है, वह सूक्ष्म है। वह स्थूल भी कार्यशील है और सूक्ष्म भी कार्यशील है। जो अमृतधारी हों, 7 वाणियों, 5 वाणियां प्रभातकाल

की, जपुजी साहिब, जाप साहिब, सवैये, चौपई साहिब, अनंद साहिब, सायंकाल को रहरासि साहिब और रात्रिकाल को कीर्तन सोहिला का नितनेमी हो, सुखमनी साहिब की वाणी का नित्य पाठ करे, कम से कम आधा घण्टा नित्य सिमरन में तल्लीन हो, किसी का बुरा न करे, उसके साथ गुरु सदैव अंग संग है। जो भी उसके बनें, उससे प्रेम करें, वह प्रत्यक्ष होकर व्याप्त होता है, एक-एक कार्य अपने सेवकों का संवारता है। वह पत्ते पत्ते में मौजूद है, सिर्फ जरूरत है, उसका मार्ग अपनाने की, उसका बनने की, उसकी बताई मर्यादाओं में रहने की, वह जीवन भर चौबीस घंटे अंग संग रहेगा। यह कोई छोटी डयूटी नहीं। जितने भी नौकरियों वाले हैं, लगभग आठ घंटे के पश्चात् कलम छोड़ देते हैं कि हमारी डयूटी खत्म पर गुरु 24 घण्टे, पूरी ज़िन्दगी अंग संग होकर डयूटी देता है।

हमारे घर में 2-4 मिस्त्री लगे हों तो घबराहट मची होती है कि उसके सिर पर बैठना है, बाज़ार से सामान भी लाकर देना है परन्तु यह प्रत्यक्ष आंखिन देखी बातें हैं। बाबा कुंदन सिंघ जी नानकसर वालों ने अनेक गुरुद्वारे, विद्यालय, महाविद्यालय, धर्मशाला बनाईं। आप वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सेवा में होते थे, पर उनके सभी कार्य आप गुरु नानक साहिब व्याप्त होकर संवारते रहे हैं। बाबा जी की भावना थी, गुरु नानक साहिब हमारे अंग संग हैं। हम अकेले नहीं हैं।

एक बार दास को एक गुरमुख प्यारा मिला। बहुत ही वैराग्य में था, कहने लगा, क्या मुझे गुरु नानक के दर्शन नहीं होंगे। दास ने कहा, यदि अभी नहीं तेरी इतनी कमाई, इतनी अवस्था कि प्रत्यक्ष दर्शनों की प्राप्ति हो पर वह है तो तेरे निकट ही, सर्वदा तेरे पास, तेरे अंग संग। दास ने कहा, मुझे बता क्या तेरा कोई काम रुका है? कहता नहीं। मैंने कहा, वह जो तेरे सभी कार्य संवार रहा है, सदैव तेरे अंग संग है, तू अनुभव कर कि तू अकेला नहीं, गुरु तेरे साथ है। समय पर प्रत्यक्ष दर्शन भी हो जाएंगे।

ज़रा देखो, तिब्बत में अनेकों तिब्बती गुरु नानक साहिब को कितना सर्वत्र महसूस करते हैं। किसी तिब्बती ने दास को वचन

सुनाया। वह कहता है, हमें तिब्बत में किसी बात की दुविधा हो जाए, यह प्लाट लें या नहीं, यहाँ लड़की का रिश्ता करें या नहीं, हम हर काम गुरु नानक से पूछकर करते हैं। दास ने कहा, वह कैसे? क्या गुरु नानक साक्षात् रूप होकर बताते हैं कि कर लो या न करो? वह कहने लगा कि हमारी इतनी कमाई नहीं, कि गुरु नानक साक्षात् दर्शन प्रदान करें। हमारे देश तिब्बत में एक रिवाज़ है कि जब कोई दुविधा हो, वहाँ एक सिंध नदी है, जिसमें कमर तक पानी होता है। उसमें दो रंगों के पत्थर होते हैं सफेद और काले। हम उस नदी में खड़े होकर भावना बनाते हैं कि गुरु नानक साक्षात् हैं और विनती करते हैं गुरु नानक लांबा (नोट; तिब्बत में गुरु नानक देव जी को गुरु नानक लांबा कहते हैं) यह दुविधा है, यह मुश्किल है। फिर विनती करके प्रार्थना करके गुरु नानक साहिब जी को अंग संग समझकर हम नदी में से हाथ नीचे करके एक पत्थर उठाते हैं। यदि हमारे हाथ में सफेद पत्थर आ जाए तो हम समझते हैं कि गुरु नानक साहिब ने हां कर दी है और यदि काला पत्थर आ जाए तो गुरु नानक साहिब ने मना कर दिया है। वह कहने लगा कि हमारा दृढ़विश्वास है कि गुरु नानक सर्वव्यापक है, हमारे साथ हैं और वे हमारे हाथ में वही पत्थर देंगे जो हमारे लिए हितकर है। इशारा लेना, श्रद्धा की दूसरी निशानी, गुरु को अंग संग समझना इनके पास उपलब्ध है। "भाई रूपे" को केवल अढ़ाई मिनट संगत हुई थी गुरु नानक की। ऐसा छींटा पड़ा, ऐसी मेहर हुई, ऐसा गुरु साहिब के वचनों के साथ रंग गया कि अन्तर्मन में एक अटूट विश्वास बन गया कि गुरु नानक सर्वदा मेरे साथ हैं, गुरु अंग संग महसूस होने लग गया। जैसे एक गाथा भी है, एक ईश्वर के भक्त की। बहुत विश्वास था उसे कि मेरा स्वामी मेरे अंग संग है। वह सर्वदा उसको अपने साथ अनुभव करता था। एक दिन वह समुद्र के किनारे अपने परमेश्वर के रंग में चला जा रहा था। चलते-चलते जब वह अपने पीछे देखता था तो दो व्यक्तियों के पदचिन्ह देखकर शुक्रिया करता था कि हे निरंकार! तू मेरे अंग-संग है, एक मेरे पदचिन्ह हैं और दूसरे तेरे पदचिन्ह हैं। तू

मेरे साथ चल रहा है। अचानक समुद्र में से पानी की एक लहर आई और उसमें वह पूर्णरूपेण ही डूब गया। एक दो गोते आए, क्योंकि उसे तैरना नहीं आता था। एक दो मिनट के बाद पानी की लहर चली गई। वह सोचने लगा कि मैं डूब भी सकता था, बड़ी मुश्किल से बचा हूं, पानी की लहर मुझे समुद्र में बहाकर भी ले जा सकती थी, पता नहीं परमेश्वर ने कैसे स्वयं हाथ देकर बचा लिया है। यह सोच ही रहा था कि अकस्मात ख्याल आया कि मेरा परमात्मा तो मेरे साथ ही चल रहा था पर पीछे झांका तो क्या देखा जहाँ पहले दो व्यक्तियों के पदचिन्ह बन रहे थे, पर जहाँ लहर आई थी वहाँ एक ही व्यक्ति के पदचिन्ह थे। वह थोड़ा उदास हो गया। वह कहने लगा, वाह प्रभु! तू भी दुनिया के आम लोगों की मानिंद ही निकला। वे दुख में साथ छोड़ देते हैं परन्तु जब मुझ पर मुश्किल की घड़ी आई, तूने भी उन लोगों की तरह मेरा साथ छोड़ दिया। यह सुनकर निरंकार प्रगट हुए और अपने भक्त की शंका दूर करने के लिए कहा, हे प्रिय! मैं कहीं नहीं था गया, मैं पहले भी तेरे साथ था और जब दुख की घड़ी बनी तब भी तेरे साथ था और अब जब तू मुझसे शिकवा कर रहा है, इस समय भी तेरे साथ हूं। जब समुद्र में लहर आई, उस मुश्किल की घड़ी के समय मैंने तुझे अपनी गोद में उठा लिया था तांकि वह लहर तुझे समुद्र में डुबो न दे। जो एक के पैरों के चिन्ह तूने देखे, वे तेरे पैरों के नहीं, वह मेरे पैरों के थे क्योंकि तुझे तो मैंने अपनी गोद में उठाया हुआ था। एक गाथा है, श्रद्धावान अनुभव करते हैं कि मैं अकेला नहीं, मेरे साथ गुरु है। संत अत्तर सिंघ जी मस्तुआने वाले फौज में नौकरी करते थे और सर्वदा गुरु साहिब के चरणों में मग्न रहते थे। एक बार अपनी दिनचर्या अनुसार प्रभातकाल नदी के किनारे बंदगी के लिए गए। इत्तफाक ऐसा हुआ कि उस दिन ऐसा मन लीन हुआ कि पता ही नहीं चला कि कब दोपहर हो गई। जब नेत्र खोले तो देखा कि आज तो बहुत लेट हो गए हैं, परेड में शामिल न होने वाले का तो कोर्ट मार्शल हो जाता है। अगले दिन डयूटी पर पहुंचे, जाकर कमांडर से कल की परेड में शामिल न हो सकने

के लिए माफी मांगी। कमांडर ने हैरान होकर कहा, आप तो कल परेड में सबसे आगे और सचेत थे। आपकी तो कल की परेड में खुश होकर बड़े अफसर ने तरक्की कर दी है। उसने संत अत्तर सिंघ जी को हाज़िरी वाला रजिस्टर भी दिखाया जिस पर उनके हस्ताक्षर भी मौजूद थे। संत जी समझ गए कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज, जिनके चरणों में वह तल्लीन थे, ने स्वयं उनका रूप धारण कर उनकी जगह पर डयूटी दी है। उस दिन से संत जी अनुभव करने लग पड़े कि वह अकेले नहीं, गुरु सर्वदा उनके अंग संग है।

गुरमुख पुण्यात्माओं से जब ऐसी बातें घटित हों, वह गुरु से प्रेम में और वृद्धि करती हैं कि सतिगुरु! तू इतना निकट है। संत अत्तर सिंघ जी इस घटना से इतना प्रेम में आए और कहते हैं अब फौज में नौकरी नहीं करनी है।

भाई जोगा जी की भी यह आंख तब खुली जब आनंदपुर साहिब कहता है, महाराज! झोंका ले रहे हो सोए नहीं? कलगीधर जी ने कहा, हे जोगे! जगाए भी आप और पूछे भी आप। फिर वैराग्य में आ गए। पांचवें जन्म में गर्म तवी पर बैठे सिक्खी खातिर, नौवें जन्म में चांदनी चौंक शीश कटवाया पर नहीं था पता कि दसवें जन्म में सिक्खी खातिर वेश्या के द्वार पर भी पहरा देना पड़ना है। उस वक्त आंख खुली। महाराज! वे आप थे? अब गुरु कितना अंग संग है, फिर श्रद्धा ऐसी उत्पन्न हुई कि सदा के लिए अपने आपको बेच दिया। फिर श्रद्धा ऐसी बनी कि मैं अकेला नहीं, गुरु अंग संग है। यह आंख प्रेम की हमारी भी गुरु बनाए। एक अन्य वचन स्मरण आया। भाई शालो जी की कुल में से जिनके पास मजीठा में, भाई शालो जी के गुरुद्वारे की सेवा है, बाबा गुरदयाल सिंघ जी, उन्होंने एक बार कुछ वर्ष पूर्व भी अपनी आपबीती सुनाई। कहते हैं, एक बार श्री दरबार साहिब गए, देग करवाई और अरदास के समय नैसर्गिक चंदोए साहिब पर ध्यान पड़ गया जिस पर सोने के झब्बे लगे हुए हैं। वह सोने के झब्बे देखकर सहज स्वभाव प्रेम में अन्तर्मन से अरदास निकली, "गुरु रामदास जी!

आपने इतने सारे सोने के झब्बे लगाए हैं, अपने सिक्ख भाई शालो के गुरुद्वारे भी एक लगवा दो। एक अरदास होती है लफ्ज़ों की, एक है सहज स्वभाव अपने आप हो जाती है अरदास। यह अरदास कोई लोभवश नहीं, प्रेमवश है। दास यह ज़िक्र केवल इसलिए लिख रहा है कि कैसे वह अपने प्यारों के अन्दर यदि कोई सहज स्वभाव भावना भी बन जाए और कैसे उसको पूरी करने की विधि बनाता है, कितना निकट होकर सुनता है। उन्होंने बताया, कहते हैं अगली ही रात किसी ने रात्रिकाल 1:30 पर उनका द्वार खटखटाया क्योंकि वहां भाई शालो जी के स्थान मजीठा के बिल्कुल करीब ही उनकी रिहायश है। जब उन्होंने उठकर दरवाज़ा खोला और पूछने लगे, कौन है भाई और इस वक्त क्या काम पड़ गया? यह गुरमुख प्यारा कहने लगा, मैंने गुरुद्वारे के दर्शन करने हैं। बाबा गुरदयाल सिंघ जी कहने लगे, किवाड़ खोलने का समय तो तीन बजे का है, अभी तो 1:30 हुआ है। वह शरीर जिसने कहीं विदेश जाना था, कहने लगा, मैंने तो जहाज़ पकड़ना है, मैं नहीं रुक सकूंगा। बाबा जी कहने लगे, हम भी विवश हैं, क्योंकि समय की पाबंदी है, भीतर मालिक व्याप्त है, अतः मर्यादा में रहना अनिवार्य है। यह नहीं जिस समय इच्छा हो द्वार खोल दिया जाए। (यहां अपने लिए भी शिक्षा लेना, आपके भी घरों में यदि गुरु साहिब का प्रकाश हो, मालिक को व्याप्त समझकर उसके निर्मल भउ में, मर्यादा में रहा करो, क्योंकि यदि हम व्याप्त समझें फिर मर्यादा भी है) वह गुरमुख प्यारा कहने लगा कि मैंने कुछ भेंट करना था, वह आप रख लो और जब किवाड़ खोलोगे, यह मेरी गरीब की छोटी-सी भेंट की बाबा जी के चरणों में हाज़िरी लगवा देना। सुबह होने पर जब बाबा जी ने उसकी भेंट खोलकर देखी कि क्या चीज़ है तो देखते ही गुरु के प्रेम में भीग गए, वैराग्यपूर्ण आंखों में आंसू आ गए कि गुरु रामदास जी ! आप इतने करीब हो। एक मन में ख्याल ही बना था कि एक झब्बा सोने का भाई शालो जी के स्थान पर भी लगे और कैसे पूरा किया, क्योंकि जो गुरमुख प्यारे ने भेंट दी थी वह कुछ अन्य नहीं बल्कि 16 तौले सोने का झब्बा था, जो एक दिन पूर्व गुरु

रामदास जी के दर लगे चंदोए में लटकते देखकर उनके मन में भी भावना आ गई थी कि कहीं ऐसा ही एक झब्बा बाबा भाई शालो जी के स्थान पर भी लग जाए। परमेश्वर ने तो विधि बनानी होती है किसी न किसी से। वे कहते हैं, हमारी उस दिन से श्रद्धा में बढ़ोत्तरी हो गई कि हम अकेले नहीं, गुरु रामदास हमारे बहुत समीप हैं। हमारी भी प्रतीत बने कि गुरु सर्वदा सर्वव्यापी है, हर वक्त हमारे अंग संग है। हमारी यह प्रतीत बने–

तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ॥

(अंग ४३८)

यह पंक्तियां पढ़ना और पढ़कर गुज़र जाना बात कुछ और है, इस चीज़ का स्वाद लेना कि मेरा गुरु सर्वत्र मेरे साथ है। आम-आम सभी कहते हैं, पर जब कोई आम का छिलका उतार कर, उसका रस लेता है, गुदा खाता है, उसका स्वाद कुछ और है। यह पंक्तियां रसना से उच्चारण करना कि–

गुरु मेरै संगि सदा है नाले॥ *(अंग ३९४)*

बात कुछ और है। पर यह बात सचमुच ही अंतः करण में महसूस होती है कि सचमुच ही मेरा गुरु सर्वदा मेरे अंग संग है और साथ होकर सहाई होता है, इसका आनंद कुछ और ही है। इस रस को तो वही जानता है जो इस रस को पाता है। गुरु साहिबान के इतिहास का अध्ययन किया जाए तो यह प्रकाश मिलता है कि कैसे श्री गुरु रामदास जी ने गुरु अमरदास जी को अंग संग समझा। (गुरु रामदास जी जब अभी सेवा में थे गुरु पदवी अभी प्राप्त नहीं हुई थी) उनको एक बार लाहौर अकबर बादशाह की कचहरी में तारीख भुगतने जाने के लिए कहा, क्योंकि पण्डितों ने कोई झूठी शिकायत कर दी थी। भाई जेठा जी ने नम्रतापूर्वक विनती की, आपका हुक्म शिरोधार्य, परन्तु मैं अनपढ़ घुंगनियां बेचने वाला, कचहरी में विद्वानों के सवालों के जवाब कैसे दे पाऊँगा। उनको कैसे संतुष्ट कर सकूंगा? अब गुरु अमरदास जी ने जेठा जी को जो वचन कहे, वे गौर करना, सतिगुरु कहते हैं, कचहरी आरम्भ

होने से पूर्व अरदास करना, हम तुम्हारे साथ वचन करते हैं कि आपके दाईं तरफ खड़े होंगे। (देख लो गुरु साहिब स्वयं ढंग बता रहे हैं, रास्ता दिखा रहे हैं गुरु को अपने साथ रखने के) भाई जेठा जी गुरु साहिब के हुक्म अनुसार लाहौर गए, उनके वचनानुसार अरदास की और ऐसे अन्तर्मन से जवाब आए कि सब की तसल्ली हो गई, क्योंकि गुरु अमरदास जी स्वयं उनके हृदय में बैठकर बोल रहे थे, जवाब दे रहे थे।

यह है श्रद्धा की दूसरी निशानी, जिसे श्रद्धा की दात मिल जाए, जिसके दामन में गुरु साहिब की कृपा से श्रद्धा का कण पड़ा हो, उसकी यह अवस्था बन जाती है कि वह सर्वदा गुरु को अपने अंग संग महसूस करता है।

दास को एक वार्ता याद आ गई। दास उल्लेख करे, शायद आपको भी अपने लिए कोई उपदेश मिल जाए। कोई महापुरुष थे। उनके दो चेले थे। दोनों ही बहुत तन मन से सेवा करते थे। उन्होंने अपनी देह त्याग का समय निकट जान कर सोचा कि किसको अपनी गद्दी का दायित्व सौंपा जाए। म्यान में दो तलवारें तो पड़ नहीं सकतीं भाव गद्दी तो एक को ही मिल सकती थी। अतः महापुरुष ने दोनों की परीक्षा लेने के लिए दोनों को एक-एक कबूतर दिया और वचन किया कि दोनों अलग-अलग दिशा में चले जाओ और ऐसी जगह पर जाकर कबूतर को मारकर हमारे पास लेकर आओ जहाँ कोई भी देखता न हो। दोनों सत्य वचन कहकर चल पड़े। पहला कबूतर को मारने के लिए जंगल की ओर चला गया और जंगल में जाकर जब कबूतर को मारने लगा तो मन में सोचता है कि यहाँ इन्सान तो कोई नहीं देख रहा पर जंगल के जानवर, पक्षी, जीव-जंतु, देख रहे हैं और महात्मा ने कहा था कि कोई नहीं देख रहा हो। यह सोचकर वह आगे चल दिया, कोई एकांतवास ढूँढने के लिए, जहाँ कोई पशु-पक्षी भी न हो। थोड़ा आगे जाकर उसकी दृष्टि एक गुफा पर पड़ी। वह उस गुफा के भीतर चला गया और मन में यह धीरज हो गया कि यहाँ न कोई इन्सान है और न ही कोई पशु-पक्षी, अतः यहाँ देखने वाला कोई नहीं, यह सोचकर

कबूतर की गर्दन मरोड़कर उसे मार दिया और लेकर महात्मा के पास वापिस पहुँच गया।

अब दूसरा सेवक भी कबूतर को किसी ऐसी जगह पर मारने के लिए जहाँ कोई न देख रहा हो, एकांतवास को ढूँढता-ढूँढता बहुत दूर निकल गया। आखिर जब ऐसे स्थान पर पहुंचा, जहाँ कोई भी नहीं था परन्तु जब वह उस कबूतर को मारने लगा तो सोचता है, यहाँ अन्य तो कोई नहीं देख रहा पर यह कबूतर तो मुझे देख रहा है। यह सोचकर उसने कबूतर की आंखों पर पट्टी बांध दी। अब जब कबूतर की गर्दन मरोड़ने के लिए हाथ उठाया, साथ ही मन में ख्याल आ गया कि अब अन्य तो चाहे कोई नहीं देख रहा, पर मैं तो देख रहा हूँ। यह विचार आने पर उसने अपनी आंखों पर भी पट्टी बांध ली और निश्चिंत हो गया कि अब देखने वाला कोई नहीं, अब इसको मार देता हूँ, पर अभी उसने कबूतर को मारने के लिए हाथ उठाया ही था कि महात्मा का वचन याद आ गया कि महात्मा वचन करते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापक है, सृष्टि के कण कण में मौजूद है, हमारे अन्दर भी मौजूद है, सर्वदा हमारे अंग संग है, हमारे हर बुरे भले कर्म को वह देख रहा है। इस विचार के मन में आते ही सोचता है कि महात्मा ने वचन किया था कि कबूतर को वहाँ मारना है जहाँ कोई भी न देख रहा हो, परन्तु ऐसी जगह तो कोई भी नहीं हो सकती क्योंकि परमात्मा, सम्पूर्ण सृष्टि का मालिक तो हर जगह पर मौजूद देख रहा है। इस विचार के आते ही उसी वक्त अपनी आंखों से पट्टी खोली और कबूतर को जीवित ही लेकर महात्मा के चरणों में पहुँचा और जाकर विनती की कि मुझे कोई भी जगह ऐसी नहीं मिल सकी जहाँ कोई भी न देख रहा हो, अतः मैं आपके दिए हुए कबूतर को मार नहीं सका, क्योंकि आपका उपदेश था कि कबूतर को ऐसी जगह पर मारना है, ज़हाँ कोई भी न हो परन्तु आप जी के ही वचन हैं, आप जी की ही दी हुई शिक्षा है कि परमात्मा से खाली कोई भी जगह नहीं, वह हमारे करतबों को सदा देखता है, सब बातों को सुनता है। वाणी की पंक्तियां भी इस बात का प्रमाण हैं—

श्रद्धा की दूसरी निशानी

"ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि॥
सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि॥

(अंग ४२६)

महात्मा उसकी यह बात सुनकर सुप्रसन्न हुए और कहा कि मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। आज तू उत्तीर्ण हो गया है। अब मेरी गद्दी की जिम्मेदारी को संभालने के लिए तू पूरी तरह योग्य है, क्योंकि जिसको सर्वत्र परमात्मा की, गुरु की मौजूदगी का एहसास हो गया है, उससे किसी भी अशुभ कर्म अथवा गलत निर्णय की उम्मीद नहीं की जा सकती। इशारा लेना। दास का यह वार्ता लिखने से केवल इतना ही भाव है कि जो परमात्मा को, गुरु को सर्वत्र, अपने अंग संग महसूस करता है, उसका मन निर्मल हो जाता है। वह किसी से भी छल, कपट, धोखा, फरेब कर ही नहीं सकता। करना तो दूर रहा, किसी का बुरा करने की सोच भी नहीं सकता।

यह है श्रद्धा की दूसरी निशानी। जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए, वह कदापि अकेला नहीं होता, गुरु को सर्वदा अपने साथ अनुभव क़रता है। उसके भीतर यह पंक्तियां बस जाती हैं—

जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी॥

(अंग १६७)

अवश्य अपने मन में ध्यान देना कि क्या यह निशानी हमारे भीतर आई है कि नहीं।

निकट जीअ कै सद ही संगा॥
कुदरत वरतै रूप अरु रंगा॥

(अंग ३७६)

जल थलि महीअलि रहिआ भरपूरि॥
निकटि वसै नाही प्रभु दूरि॥

(अंग ७३६)

सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है
जिथै किथै मैनो लए छडाई

(अंग ५८८)

उपरोक्त पंक्तियों को हम केवल पढ़ने तक ही सीमित हैं अथवा इन पंक्तियों का इस्तेमाल शुरू हो गया है। यदि हां तो सतिगुरु की कृपा है, यदि नहीं तो अवश्य अरदास करो कि यह कृपा हो। यह श्रद्धा की दूसरी निशानी है। जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए वह कदापि अकेला नहीं होता। गुरु को सर्वदा अपने साथ महसूस करता है।

भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु॥
सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि॥

(अंग ७८८)

☆☆☆

श्रद्धा की तीसरी निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :

उसके भीतर गुरु के लिए निर्मल भउ उत्पन्न हो जाता है।

वाणी की इन पंक्तियों से यह बात साफ स्पष्ट हो रही है कि परमेश्वर का भय धारण किए बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति के बिना "नामि" से भाव है—नामी-परमात्मा से प्रेम नहीं पैदा होता और जब तक प्रेम नहीं पैदा होता, तब तक प्राप्ति संभव नहीं। उस परमेश्वर के निर्मल भउ को मन में अवस्थित कर अंतः करण को संवारा जाए तो ही रंग चढ़ता है, तो ही वास्तविक रंग की प्राप्ति होती है। उसका निर्मल भउ ही प्रेम के रंग को संवार सकता है। परन्तु उस परमात्मा का निर्मल भउ तो ही प्राप्त होता है, अगर अपने गुरु पर पूर्ण निष्ठा हो और मन में यह विश्वास हो कि वह सर्वव्याप्त है और सब कुछ देख रहा है।

एक होता है—किसी को झिड़क कर डराना ताकि वह आपके डर में रहे, आप से डरकर आपका आदर करे (यह बुरा है)। एक है—निर्मल भउ। गुरु के लिए निर्मल भउ की जरूरत है।

जिनके पास श्रद्धा का कण है, जिनके हृदय में गुरु के प्रेम का कण बसा हो, वह गुरु को सर्वव्यापी मानकर सर्वदा गुरु के निर्मल भउ में रहते हैं। जिनको श्रद्धा का कण मिला हो, उनको कहने की जरूरत नहीं पड़ती कि गुरु का आदर करो, प्रेम वालों का तो रोम-रोम गुरु के वंदन में भीगा होता है। जितना कोई गुरु का आदर करता है, उतना ही भाग्यशाली होता है। जो भी कोई गुरु के निर्मल भउ में रहे, उसको गुरु की प्रसन्नता मिलती है। दशमेश गुरु के काल का एक प्रत्यक्ष वाकया भी है—सच्चे पातशाह

की सेवा में रात को आठ पहरेदार खड़े थे। निकटवर्ती किसी ग्राम में रास था। उन में से चार पहरेदार रास देखने चले गए और चार वहीं खड़े रहे अपनी डयूटी पर। अब जो (रास) देखने गए थे वे मन में सोचते हैं, यदि गुरु जी बाहर आ गए तो हमें अपनी डयूटी पर उपस्थित न देखकर हम पर नाराज़ होंगे और हमें बहुत डांट मिलेगी। सोचते हैं, हम से बहुत बड़ी भूल हो गई है, हमें रास देखने नहीं था आना चाहिए। गुरु साहिब के पास रहकर अपनी डयूटी को निभाना चाहिए था, जबकि दूसरी ओर जो पहरेदार डयूटी पर खड़े थे, वे सोच रहे थे कि कलगीधर पातशाह बाहर तो आए ही नहीं। उनको पता ही नहीं लगना था, हम यूं ही भय में रास देखने नहीं गए। पर गुरु साहिब तो पत्ते पत्ते में व्यापक हैं, सर्वत्र विद्यमान हैं, यह भावना नहीं थी। अगले दिन जब सुबह हुई तो गुरु साहिब ने सभी पहरेदारों को अन्दर अपने पास बुलाया और वचन किया– उपस्थित अनुपस्थित, अनुपस्थित उपस्थित। यह क्या थे वचन। गुरु अन्दर की पट्टी पढ़ता है। जो रास देखने गए थे वे देख तो रास रहे थे परन्तु वहाँ बैठे भी उनके अन्दर निर्मल भउ बस रहा था कि हमने बहुत बड़ी भूल की है। उनके अन्दर निर्मल भउ होने के कारण उनका मन हमारे चरणों में था पर जो शरीर से तो यहाँ हमारे पास रहकर डयूटी निभा रहे थे पर वे मन में यही सोचते रहे कि हमने गुरु की सेवा में रहकर भूल की है, यदि हम चले जाते तो गुरु साहिब को क्या पता लगना था। उनके भीतर निर्मल भउ नहीं था, वे उपस्थित भी अनुपस्थित हो गए। अतः निर्मल भउ का होना अति आवश्यक है।

इस समय गुरु नानक साहिब की गद्दी के मालिक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हमारे गुरु हैं। दशमेश गुरु के वचन हैं कि अगर चाहते हो कि हमारे घरों के आंगन में सुखों के पौधे लग जाएं और दुखों के पौधे उखड़ जाएं तो इसके लिए अति आवश्यक है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर पूर्ण श्रद्धा रखें। इनका जितना अत्याधिक अभिवादन हो सके करें। उनको प्रगट गुरां की देह जानकर निर्मल भउ में रहें।

बाबा नंद सिंघ जी जिन्होंने पहचाना श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को, वचन करते थे—''कोई श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को कागज़ कहता है, कोई स्याही और कोई जिल्द, पर मेरी रसना जल जाए यदि मैं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को कागज़, स्याही व जिल्द कहूं।'' बाबा जी वचन करते थे कि कोई प्रेम की आंख से देखे तो सही, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का एक-एक अक्षर गुरु नानक का नेत्र है। बाबा जी के हृदय में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रति निर्मल भउ था। वे पृष्ठ, स्याही पा जिल्द नहीं समझते थे, प्रत्यक्ष ज्योत समझते हुए निर्मल भउ में रहते थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को पृष्ठ न समझें, कागज़ न समझें, जिल्द न समझें, क्या समझें—"प्रगट गुरां की देह"। गुरु ग्रंथ साहिब जी को प्रगट गुरां की देह जानकर सेवा करें। सेवा भी तीन प्रकार की होती है—उत्तम सेवा, मध्यम सेवा, कनिष्ठ सेवा। एक होता है अपने से अधिक आदर, भाव अपने घर में अपने कमरों से कई गुणा अधिक सुन्दर कमरा गुरु साहिब का बनाना, पलंघ पर विराजमान करना, गुरु साहिब को प्रत्यक्ष जानकर तीन समय भोग लगाना, प्रगट गुरां की देह जानकर शिशिर ऋतु में गर्म रुमाले, और ग्रीष्म ऋतु में गुरु साहिब के कमरे के लिए पंखे का, ए.सी. का प्रबंध, इसको उत्तम सेवा कहते हैं, अपने कमरों के लिए ए.सी का प्रबंध चाहे न कर सकें, पर गुरु साहिब के कमरे में अवश्य लगवाएंगे। जो अपने जैसा सम्मान करते हैं, वह मध्यम सेवा में आते हैं। जैसे कमरे में स्वयं रहते हैं, वैसा ही सतिगुरु का। यदि अपने कमरों के लिए ए.सी. का प्रबंध नहीं तो गुरु साहिब के कमरों के लिए भी नहीं। पर कई इससे भी निम्न स्तर में आते हैं जिसको कहते हैं, कनिष्ठ सेवा। अपने लिए सुन्दर, आलीशान, ए.सी. कमरे और गुरु साहिब के लिए छोटा-सा कमरा बनवा देते हैं और गुरु साहिब को अलमारी में विराजमान करते हैं। अब आप स्वयं अंदाज़ा लगा लो क़ि जो गुरु के लिए छोटा-सा कमरा बना देते हैं और गुरु साहिब को अलमारी में बंद कर देते हैं, क्या उनके मन में गुरु के प्रति निर्मल भउ है?

दास को एक ज़िक्र याद आ गया। दास एक बार किसी के

घर गया, अच्छे-बड़े साहूकार, पांच सौ गज की उनकी आलीशान कोठी। दास ने स्वाभाविक वृद्ध माता को पूछ लिया कि आपकी कोठी में कितने कमरे हैं? उस वृद्ध माता ने बताया, सत्रह कमरे। दास ने पुनः पूछा, क्या घर में गुरु साहिब का प्रकाश भी है? उसने बड़े मान से कहा, हां हमने अपने घर में गुरु ग्रंथ साहिब जी रखे हुए हैं। (माता के कहे इन लफ्ज़ों पर ज़रा गौर करना, इन लफ्ज़ों को जब ध्यान से समझोगे तो पता लग जाएगा कि क्या भावना है? बाबा जी वचन करते थे, कभी यह नहीं कहना चाहिए कि हमने अपने घर में गुरु साहिब रखें हैं, बल्कि हमारी भावना यह हो कि हम गुरु साहिब के प्रदान किए घर में रह रहे हैं) दास ने स्वाभाविक पूछ लिया कि गुरु साहिब का कमरा कहां है? वह माता कहने लगी, चौथी मंज़िल पर। आप स्वयं ही सोचो कि चौथी मंज़िल पर जो कमरा हो, वहां ग्रीष्म ऋतु में एक मिनट खड़ा होना भी मुश्किल होता है। दास इतनी सी बात पर ही समझ गया कि इनके घर में गुरु साहिब का प्रकाश तो है पर गुरु का आदर तृतीय श्रेणी का है। दास ने पुनः पूछा, क्या गुरु साहिब का प्रकाश सुखासन आप स्वयं करते हो या फिर आपकी बहुएं करती हैं? उस माता का जवाब था, मेरे तो घुटनों में दर्द रहता है, मेरे लिए तो सीढ़ियां चढ़ना उतरना बहुत ही कठिन है और बहुओं के बच्चे छोटे होने के कारण उनके पास इतना समय नहीं होता। दास ने कहा, फिर पुत्र करते होंगे गुरु साहिब की सेवा? वृद्ध माता कहने लगी, पुत्र तो रात 10-11 बजे थके हुए दुकान से आते हैं, दिन भर की थकावट के कारण सुबह 8 बजे उठते हैं, 9 बजे पुनः दुकान को खोलना होता है, उन बेचारों के पास कहां फुर्सत होती है। दास बड़ा विस्मित होकर पूछने लगा, बहुओं के पास बच्चों के कारण समय नहीं, पुत्रों के पास कारोबार से फुर्सत नहीं, आपके घुटनों में दर्द होने के कारण आप सीढ़ियां चढ़कर ऊपर गुरु साहिब के कमरे में जा नहीं सकते तो फिर गुरु साहिब के स्वरूप की सेवा कौन करता है? उस वृद्ध माता ने जो जवाब दिया, वह सुनकर दास की आंखों में आंसू आ गए कि सतिगुरु का स्वरूप घर में है, पर भीतर कोई गुरु के

लिए प्रेम नहीं, श्रद्धा-भावना नहीं। कोई गुरु के लिए मन में निर्मल भउ नहीं। उस माता का जवाब था कि एक पाठी नियुक्त किया हुआ है तनख्वाह पर, वह स्वयं ही आकर प्रकाश भी कर जाता है और सुखासन भी कर जाता है। हम सभी परिवार के सदस्य संग्रांद वाले दिन गुरु साहिब के कमरे में जाकर माथा टेक आते हैं। अब आप स्वयं अंदाज़ा लगा लो, क्या उनके मन में गुरु के प्रति कोई आदर है? भउ है? क्या वे गुरु को सर्वव्यापी मान कर सेवा कर रहे हैं? क्या वे गुरु साहिब को प्रगट गुरां की देह मानते होंगे? आपके घर में कोई वृद्ध हो, पिता हो, ससुर हो, आप उसको एक तरफ कोने में कोई कमरा प्रदान कर दो, न उसको भोजन पानी पूछो, न उससे कोई बातचीत करो, न उसको मिलो जाकर, तो क्या आपको उसकी आशीष मिलेगी? क्या वह आप पर कभी खुश होगा? अहोभाग्य तो श्रद्धा भावना को लगते हैं, प्रेमपूर्वक सेवा करने वाले के उदय होते हैं। जब तक गुरु पर भावना ही नहीं बनाओगे, भाग्योदय कैसे होगा।

गुरु नानक साहिब जब शरीर धारण कर आए, उन पर भी जिनकी भावना नहीं थी, उन्होंने पत्थर भी मारे, भूतना बेताल भी कहा, और वे भी थे जिनकी भावना थी कि गुरु नानक तुझ से परे कोई परब्रह्म, परमेश्वर नहीं है, तू ही परब्रह्म है, उनके प्रत्येक हुक्म को सहर्ष माना। यहां तक कि यदि उन्होंने मुर्दा खाने के लिए कहा तो उस हुक्म के आगे भी सत्य वचन किया। जितनी भावना उतने ही भाग्य। आज भी बहुत सारे शरीर ऐसे हैं जिनकी गुरु साहिब पर भावना नहीं। वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को एक किताब का दर्जा देते हैं। कभी सोचा करो, अगर गुरु ग्रंथ साहिब जी एक किताब हैं तो फिर पलकें क्यों लगाते हो, रुमाले क्यों डालते हो, चंवर साहिब क्यों करते हो, चंदोए क्यों लगाते हो? अरे प्यारो! श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अन्य किताबों की मानिंद एक किताब नहीं, स्याही नहीं, जिल्द नहीं, एक-एक अक्षर गुरु नानक का नेत्र है।

दास को बाबा नंद सिंघ जी का एक ज़िक्र याद आ गया। एक बार संत बाबा हरनाम सिंघ जी भुच्चों वाले जो बाबा नंद सिंघ

जी के मुरशिद हुए हैं। उन्होंने बाबा नंद सिंघ जी को अखंड पाठ रखवाने के लिए संदेश भेजा। बाबा जी ने अपने मुरशिद का हुक्म जानकर अखंड पाठ रखवा दिए। उन दिनों बिजली की सुविधा नहीं थी होती, अतः गैस जलाए जाते थे। अखंड पाठ चल रहे थे। रात्रिकाल का लगभग 9-10 बजे का समय होगा। अचानक इतनी तेज़ आंधी आई, इतने तेज़ आंधी के झोंके आए कि सभी गैस बुझ गए। बाबा नंद सिंघ जी जहां अखंड पाठ चल रहे थे, उस कमरे की तरफ दौड़े-दौड़े आए कि गैस बंद न हो जाए। गैस बंद होने के कारण अंधेरा हो जाना है और पाठ खंडन हो जाएंगे परन्तु जब अखंड पाठ वाले कमरे में पहुँचे तो अजीब कौतुक देखकर हैरान हो गए। वह अजीब कौतुक क्या था, जितने भी पाठी भूमिका अदा कर रहे थे, सभी उच्च स्वर पाठ कर रहे थे। बड़े विस्मित कि इतने अन्धेरे में पाठी पाठ कैसे करते जा रहे हैं। जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के स्वरूप जिन पर पाठ चल रहे थे, के समीप गए तो देखा एक-एक अक्षर लाईट की तरह जग रहा था। (यह पूरा बाबा जी के मुरशिद महापुरुष बाबा हरनाम सिंघ जी भुच्चों वालों ने उनकी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर पूर्ण भावना बनाने के लिए कौतुक रचा था) उस दिन से बाबा जी की यह परिपक्व भावना बन गई कि यह अक्षर या स्याही नहीं, एक-एक अक्षर गुरु नानक का नेत्र है। गुरु नानक व श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में, गुरु नानक की ही ज्योति विराजमान है, अतः जो भी बख्शिशें हैं, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से ही प्राप्त होंगी। कलगीधर पातशाह जी ने ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में टिका कर हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संग लगाया और हुक्म किया—

सभ सिक्खन को हुकम है गुरु मान्यो ग्रंथ॥
गुरु ग्रंथ जी मानीऐ प्रगट गुरां की देह॥

दास गरीब की, गुरुघर के कूकर की हाथ जोड़कर विनती है सबके चरणों में कि जिनके भी घरों में गुरु साहिब का प्रकाश है, जितना अधिकाधिक सम्मान कर सकते हो, किया करो। यदि अपने से अधिक नहीं कर सकते तो अपने जैसा ज़रूर करो। (यदि सेवा

नहीं कर सकते तो सैंचियां रख लो, सैंचियों से पाठ कर सकते हो। सैंचियों को आप कैसे भी शुद्ध, साफ रूमाले में लपेट कर रख सकते हो। उसके लिए अन्य पलंघ न भी हो तो कोई बात नहीं पर यदि 1430 अंगों का पूरा स्वरूप है, फिर वह प्रगट गुरां की देह है और उसके लिए पूर्ण मर्यादा भी अति अनिवार्य है। जितना गुरु साहिब का अधिकाधिक सम्मान करोगे, उतना ही भाग्य जागेगा। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का जितना कोई अदब करेगा, उससे दस गुणा ज्यादा अदब दुनिया उसका करेगी। कहने को तो लगभग हर कोई कह देता है कि मेरे दिल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के लिए बहुत सम्मान है, हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु नानक की ज्योत मानते हैं, परन्तु अधिकांश की वास्तविक जीवन में एक किताब से अधिक समझने वाली वृत्ति नहीं होती। सर्वव्यापी मान कर गुरु साहिब के प्रति अन्दर निर्मल भउ नहीं रखते। कोई विरले ही हैं जो हृदय में से गुरु साहिब को प्रत्यक्ष गुरु नानक जानकर अर्चना करते हैं, सेवा करते हैं और विद्यमान जानकर निर्मल भउ में रहते हैं और निर्मल भउ में रहना ही श्रद्धा है।

महापुरुष भाई आया राम जी हुए हैं। बहुत सम्मान करते थे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का। यदि कोई भी उनकी दृष्टि में गुरु साहिब का अदब रखने में ज़रा-सी भी उपेक्षा करता था तो उसे बहुत डांटते थे। एक बार आप जी नूरपुर के किसी गुरुद्वारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सन्मुख बैठे हुए थे कि एक व्यापारी आया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को शीश निवाकर वहां पास ही बैठ गया। बैठते ही अपनी पगड़ी के लड़ में से एक पत्र निकाल कर पढ़ने लग पड़ा। महापुरुष यह देखकर उठकर बाहर चले गए और जाकर महंत को कहा कि हम यहां नहीं ठहर सकते, क्योंकि यहां गुरु साहिब का पूर्ण सम्मान नहीं किया जाता। जहां बैठकर संसारिक प्रपंच, माया की चिट्ठियों का वाचन किया जाए, वह गुरुद्वारा नहीं, चबूतरा हो गया। महापुरुष कहने लगे, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सन्मुख तो अदब व अनुशासन रूपी भय से बैठना चाहिए, टहल सेवा करनी चाहिए तो ही लाभ है।

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

संत करतार सिंघ जी भिंडरांवाले भी गुरु साहिब जी का पूर्ण सम्मान करते थे। यहां तक एक बार उनके जत्थे के एक सिंघ ने उनको कहा कि मैं "ग्रंथ साहिब" का सुखासन कर आया हूं। संतों ने उसके लफ्ज़ सुनकर उसे बहुत डांटा और कहने लगे, "श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी" क्यों नहीं कहा। यही नहीं, उस सिंघ को इस निरादर के लिए 101 पाठ जपुजी साहिब के दंड के रूप में करने के लिए भी कहा और शिक्षा दी कि आगे से गुरु साहिब के लिए पूर्ण सम्मान के लफ्ज़ इस्तेमाल करने हैं।

एक बार लुधियाना में "गुरु तेग बहादुर चैरिटेबल अस्पताल" की आधारशिला रखने के लिए संत करतार सिंघ जी को बुलाया गया। जब आप जी बस द्वारा वहां पहुंचे तो 15-20 प्रबंधक दीवान में से उठकर सेहरे लेकर उनके सम्मान के लिए उनके पास गए। संत जी ने जब उनको अपनी ओर आते देखा तो वह उसी वक्त वापिस चल दिए। जब पीछे जाकर प्रबंधकों ने उसका कारण पूछा तो संतों ने कहा कि गुरु साहिब की हजूरी में से उठकर किसी व्यक्ति का आदर करना गुरु का तिरस्कार है, गुरु के सम्मान में अन्तर वाली बात है। उन्होंने वचन किया कि चाहे कोई कितना बड़ा व्यक्ति या नेता क्यों न आ जाए, आप गुरु साहिब के आदर को पहल दिया करो।

गुरु साहिब का जितना अधिकाधिक हो सके सम्मान किया करो। हमारे लफ्ज़ों में भी गुरु साहिब के प्रति आदर हो। कई बार हम गुरु साहिब के लिए "बीड़" लफ्ज़ इस्तेमाल करते हैं। बीड़ जंगल को कहते हैं। महापुरुष वचन करते थे कि बीड़ लफ्ज़ नहीं इस्तेमाल करना चाहिए, "स्वरूप" कहना चाहिए। कई पन्ना लफ्ज़ इस्तेमाल करते हैं। महापुरुष सुमति देते थे कि पन्ने तो किताबों के होते हैं, "अंग" लफ्ज़ इस्तेमाल करना चाहिए, अंग जैसे हमारे शरीर के अंग। हमारी रसना में से सतिगुरु के प्रति सम्मानीय लफ्ज़ निकलें।

हमारे द्वारा गुरु के प्रति की जाने वाली क्रियाओं में भी आदर हो। जब भी गुरु साहिब को नवीन रूमाला खरीद कर चढ़ाओ तो

धोकर चढ़ाओ, क्योंकि जहां रूमाले सिलाई किए जाते हैं, किनारी इत्यादि लगती है। तैयार करते वक्त कारीगरों के हाथ शुद्ध नही होते, पैरों वाली मशीन और सिलाई करते समय कई बार पैर भी लगते हैं। अपने घर में भी जब गुरु साहिब के रूमाले धोते हो तो वैसे न धोया करो जैसे अपने वस्त्र धोते हो। गुरु साहिब के रूमाले धोते समय पानी शुद्ध, बालटी शुद्ध, साबुन शुद्ध लिया करो और यह भावना बनाया करो कि यह रूमाला नहीं गुरु नानक का चोला धो रहा हूं। दास गुरु नानक के भरोसे से लिख रहा है। यदि इस तरीके से, इस भावना से गुरु साहिब के रूमाले धोएंगे तो आपके जन्म-जन्मांतर के पाप धुल जाएंगे।

बात चल रही थी कि हमारी गुरु के प्रति की जाने वाली क्रियाओं में भी आदर हो। जो भी कार्य करो, गुरु साहिब को प्रत्यक्ष मान कर करो। बाबा हरभजन सिंघ जी (बड़े) नानकसर वाले सुमति देते थे कि जब भी श्री गुरु ग्रंथ जी का अभिनन्दन करते हो, मन में यह भावना हो कि गुरु साहिब प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान हैं। मन में यह विश्वास हो कि गुरु साहिब मेरे गुनाहों को क्षमा करने वाले क्षमाशील पिता हैं। यदि इस तरह श्रद्धा से नमन करोगे, शीश निवाओगे तो आपको यों महसूस होगा कि सदैव क्षमाशील पिता ने आप पर कृपा कर दी है, स्वयं को चिन्तामुक्त अनुभव करोगे। यह विनती है दास द्वारा। जब भी माथा टेको, गुरु साहिब को कदापि पहले माया नहीं चढ़ानी चाहिए। पहले नमन करो फिर माया चढ़ाओ इसमें बारीकी है। अगर कोई पहले माया चढ़ा रहा है फिर तो वह दाता बन गया है। यदि पहले नमन करते हो, इसका भाव यह है कि आपके मन में गुरु साहिब के लिए मालिक की भावना है, फिर आप जो प्रदान करोगे वह भेंट बन जाएगी। इसके अलावा जो भी माया भेंट करनी है, बाहर से ही निकाल कर अपनी मुट्ठी में पकड़कर लाओ। गुरु साहिब को माथा टेकते समय, वहां खड़े होकर जेब में बटुए में से पैसे निकालना यह भी आदर की निशानी नहीं, अहम् की निशानी है। जो भेंट करनी है, पहले ही बटुए से निकालकर हाथ में रखो। जब शीश नवाते हो, यह भावना बनाया

करो कि सतिगुरु के चरण आपके माथे को स्पर्श किए हैं। यह सब क्रियाएं हैं। हमारी क्रियाओं में भी गुरु के प्रति प्रेम निष्ठा हो। हमारी यह भावना हो कि यह किताब नहीं, प्रत्यक्ष गुरु साहिब व्याप्त हैं। जब भी गुरु साहिब के कमरे में जाना हो, द्वार खोलने से पूर्व, सतिनाम श्री वाहिगुरु की आवाज़ देकर जाओ।

एक शहर हम किसी के घर गए। उस घर के बुजुर्ग कहने लगे, पहले गुरु साहिब के कमरे में जाकर गुरु साहिब के दर्शन कर लो। कोई जब कहे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के दर्शन करने को, फिर हमें चाव उत्पन्न होता है, हमारे भी पैर नहीं रुकते। वह बुजुर्ग हमें लेकर सीढ़ियों की ओर आगे चल दिया, क्योंकि गुरु साहिब जी का कमरा ऊपर था द्वितीय मंज़िल पर। जब सीढ़ियां चढ़ गया तो उसने आगे होकर कमरे का कुण्डा खोला और भीतर चला गया और दास को भीतर से कहने लगा, भीतर आ जाओ। दास ने उसको बाहर से आवाज़ दी कि पहले आप बाहर आ जाओ। वह बुजुर्ग कहने लगा, यही गुरु साहिब का कमरा है, भीतर आ जाओ। दास ने हाथ जोड़कर कहा कि मेरे मन की भावना है कि पहले आप गुरु साहिब के कमरे में जाने का तरीका सीख लो।

दास की यह बात सुनकर बुजुर्ग बड़ा चकित हुआ और कहने लगा, क्या गुरु साहिब के कमरे में जाने का भी कोई ढंग होता है? दास ने विनती की कि आपने कमरे के द्वार की कुण्डी खोली और भीतर चले गए, इसका मतलब है कि आपके भीतर गुरु साहिब के प्रति निर्मल भउ वाली कोई बात नहीं। गुरु के लिए भीतर निर्मल भउ धारण करना है कि मालिक भीतर बैठे हैं। बाबा जी द्वारा मिली सुमति अनुसार दास ने कहा कि गुरु साहिब के कमरे का द्वार खोलने से पूर्व आवाज़ देना है (सतिनाम श्री वाहिगुरु जी) जिस तरह किसी विद्यार्थी ने हैडमास्टर साहिब के कमरे में जाना हो तो वह कमरे के बाहर खड़े होकर पहले बड़े अदब से द्वार के बाहर खड़े होकर कहता है (May I come in sir) भाव क्या मैं अंदर आ सकता हूं। फिर कमरे में दाखिल होता है। क्योंकि उसके भीतर अपने हैडमास्टर के प्रति भउ होता है। आप भी किसी बड़े अफसर

को मिलने जाओ या अपने बच्चे के स्कूल उसके प्राध्यापक को मिलने जाओ तो अफसर भी सोचेगा कि इसको कमरे के भीतर दाखिल होने का ढंग नहीं और मैं इसका काम क्या करूँ। फिर गुरु साहिब तो सम्पूर्ण सृष्टि के मालिक हैं। भाव जैसे हमने किसी अफसर के कमरे में जाना हो तो दरवाज़े के बाहर खड़े होकर आदरपूर्वक पूछते हैं, इसी तरह जब अफसरों को बनाने वाले सम्पूर्ण सृष्टि के कर्ता श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के कमरे में जाना हो तो पहले सम्मानपूर्वक सतिनाम श्री वाहिगुरु जी की आवाज़ दो, फिर वृत्ति से शीश नवाओ फिर भीतर जाओ, वह निर्मल भउ है। निर्मल भउ व भावना ने ही भक्ति बन जाना है।

यह तो हम लगभग सब जानते हैं कि गुरु साहिब के कमरे में जाने से पूर्व हाथ-पैर धोना अनिवार्य है, परन्तु इस तरह दरवाज़े पर आवाज़ देकर जाना, यह भी एक आदर की निशानी है। कई शरीर मोजें डालकर गुरु साहिब जी की हाज़िरी में बैठ जाते हैं, यह भी एक बहुत भारी अनादर है। दास कुछ समय पूर्व अमेरिका गए, कीर्तन का कार्यक्रम था। दास ने देखा, वहाँ एक बुजुर्ग गुरु साहिब जी की हाज़िरी में बैठा हुआ था। उसने मोजें धारण किए हुए थे। दास से रहा नहीं गया। विनती की कि गुरु साहिब की हाज़िरी में मोजें धारण कर नहीं बैठना चाहिए, क्योंकि मोजें जूतों से लगे होने के कारण जूठे होते हैं और साथ ही पैर के पसीने की बदबू भी होती है। वह शरीर दास को कहने लगा, जी आप कीर्तन करो, यहाँ यह ही चलता है। दास ने विनती की, बात यह नहीं कि यहाँ सब कुछ चलता है। हमारा गुरु रामदास जी का घर श्री दरबार साहिब अमृतसर, क्या आप कभी वहाँ गए हो? वह कहने लगा, 3-4 बार गया हूं श्री हरिमन्दिर साहिब के दर्शन करने के लिए। दास ने कहा, फिर तो आप यह बात जानते ही होंगे कि मोजें डालकर बैठना तो एक तरफ रहा, वहां तो परिक्रमा में भी मोजें धारण कर जाओ तो वहां के सेवादार मना करते हैं, परिक्रमा में भी मोजें उतार कर पैर धोकर जाना पड़ता है। इस दलील से बुजुर्ग मान गए कि मुझसे भूल हुई है, मोजें डालकर बैठना निर्मल भउ

नहीं है। बहुत आवश्यकता है शुद्धता की भी, क्योंकि सफाई, सच्चाई पर खुदाई का मेल है। जहां सफाई व सच्चाई, वहां खुदा। शेष गुरु साहिब जी की हाज़िरी में बैठने वाले को तो अगर हो सके तो केश-स्नान भी करना चाहिए। यदि नहीं तो स्नान तो नित्य करना अनिवार्य है।

बाबा ईशर सिंघ जी ने एक बार किसी शहर 10 दिन समागम का आयोजन रखा। उनके पास तीसरे दिन 4-5 प्रबंधक आकर कहने लगे कि हमारे गुरुद्वारे में भी प्रोग्राम दीजिए। बाबा जी ने कहा कि गुरु साहिब से हुक्मनामा ले लेते हैं, यदि गुरु साहिब द्वारा स्वीकृति मिल गई तो अवश्य देंगे। अभी बातचीत चल ही रही थी कि बाबा जी की दृष्टि अकस्मात उन प्रबंधकों के खड़े होने के तरीके पर पड़ गई। उन में से 3 प्रबंधक पीठ पीछे हाथ रखकर खड़े थे और खड़े भी गुरुद्वारे के भीतर हाल में जहाँ प्रकाश था महाराज का। बाबा जी ने उनको कहा कि आप प्रबंधक हो, गुरु साहिब के सन्मुख किस तरह खड़े होना चाहिए, भाई यह अदब तो सीख लो। बाबा जी ने कहा कि इस तरह पीछे हाथ तो पुलिस वाले उनके करते हैं जिनको हथकड़ी लगी हो। लफ्ज़ थोड़े कठोर थे। बाबा जी ने कहा कि यमदूत भी इसी तरह ले जाते हैं। बाबा जी ने उनको समझाया कि गुरु साहिब के सन्मुख यों पीछे बाजू खड़ी करके खड़े होना अहम् की निशानी है, हमें निर्मल भउ में रहना चाहिए।

ये भावनाएँ गुरु साहिब के आदर भउ की हमें महापुरुषों से मिलती हैं। भक्त रविदास जी लिखते हैं–

"साधसंगति बिना भाउ नहीं ऊपजै
भाव बिनु भगति नही होइ तेरी॥"

(अंग ६६४)

बाबा नंद सिंघ जी कभी भी बैठकर चंवर साहिब नहीं थे करते, क्योंकि भावना बनाते थे कि मालिक विद्यमान है। कहते थे कि बैठकर चंवर साहिब करने से, चंवर मालिक की दस्तार पर लगती है। हमारे लिए भी शिक्षा है कि सदैव खड़े होकर चंवर साहिब करना

चाहिए। यदि बैठकर करना भी हो तो हाथ ऊँचा उठाकर करो, अंदर यह भावना हो कि गुरु साहिब पालथी मारकर बैठे हैं। कभी नोट करो, हरिमंदिर साहिब, सिंघ साहिब हाथ को पूरा ऊपर उठाकर चंवर साहिब करते हैं। एक बार कोई शरीर बिना हाथ ऊँचा उठाए ही बैठकर गुरु साहिब को चंवर साहिब कर रहा था। बाबा नंद सिंघ जी सम्मुख बैठे थे। कहते हैं, हाथ को ऊँचा करके चंवर साहिब कर, पुनः पुनः सतिगुरु के शीश पर चंवर साहिब लग रहा है। यह है निर्मल भउ और निर्मल भउ वहाँ ही होगा जहाँ भावना होगी, जहाँ नहीं, वह जो मर्ज़ी करे। दास गुरु साहिब के भरोसे से लिख रहा है कि कोई बड़ी से बड़ी मुश्किल भी हो, यदि कोई श्री गुरु ग्रंथ साहिब को खड़े होकर प्रेम से चंवर साहिब करे, साथ जपुजी साहिब या मूलमंत्र का पाठ करे, लगभग आधा घंटा नित्य हाज़िरी लगाए तो गुरु को बड़े से बड़े बन्धन भी काटने पड़ते हैं। ऐसे भी कई केस दास के समक्ष आए हैं कि जहाँ कोई उम्मीद भी नहीं थी, पर खड़े होकर प्रेमपूर्वक चंवर साहिब करने के फलस्वरूप गुरु साहिब जी ने बन्धन काट दिए।

महापुरुष बाबा नंद सिंघ जी प्रभु दरबार से डयूटी लेकर आए थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का आदर प्रगट करने का उन्होंने खुद उद्यम कर पूरी दुनिया को ढंग सिखाया। बाबा जी ने 12 वर्ष हजूर साहिब गागर की सेवा की। वहाँ आकाशवाणी हुई कि बहुत सारे शरीरों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को अलमारियों में बंद करना शुरू कर दिया है, आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का आदर प्रगट करो। फिर बाबा जी ने जो आदर प्रगट किया और आँधी में दिए जगाने वाली बात की, उन्होंने स्वयं पहचाना और हमें बताया कि यह पन्ने नहीं, यह स्याही नहीं, साक्षात् गुरु हैं। बाबा ईशर सिंघ जी भी इतना सम्मान करते थे। इतनी भावना थी, यहां तक वचन करते थे कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी "गुरुओं के गुरु हैं।" (बारीकी) एक है किताब समझना, एक है गुरु समझना पर गुरुओं का गुरु, एक अन्य आदर वाली बात है। किसी ने पूछ लिया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी गुरुओं के गुरु क्योंकर हुए? बाबा जी

कहते हैं, गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को शीश निवाया है। गुरु गोबिंद सिंघ जी हमारे गुरु और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हमारे गुरु के गुरु, इतना आदर करते थे।

बाबा नंद सिंघ जी ने बहुत सूक्ष्मताएं निकालीं, दास कुछ उल्लेख करे तांकि हमें भी अपने लिए सीख मिल जाए। बाबा जी वचन करते थे कि गुरु साहिब के प्रकाश हेतु बड़े साईज़ की मंजी साहिब होनी चाहिए और प्रकाश के समय ऐसी भावना बनानी है कि गुरु साहिब बैठे हैं। अनेकों ने गुरु साहिब के प्रकाश के लिए छोटी-सी चारपाई अथवा पालकी रखी होती है, यह उचित नहीं। ज़रा स्वयं ही सोचो कि यदि आपको छोटी-सी चारपाई कोई बैठने के लिए प्रदान कर दे, क्या उस पर आरामपूर्वक बैठ सकते हो? बाबा जी तो प्रकाश करने की भी मर्यादा बताते हैं और कहते हैं सदैव स्नान कर शुद्ध वस्त्र डालकर प्रकाश करना चाहिए। प्रकाश करने से पूर्व सम्मानपूर्वक खड़े हो कर विनयपूर्वक गुरु साहिब को सन्मुख कर बड़े प्रेम से कहना है धन्य-धन्य गुरु नानक देव जी, धन्य-धन्य गुरु अंगद देव जी, इस तरह बड़े प्रेम से दस गुरुओं के नाम लेकर विनती करना है, धन्य-धन्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी (वही ज्योत) कृपा करो, आप जी की कृपा से रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत हुई है, कृपा करो, हम गरीबों को, अपने द्वार के भिखारियों को दर्शन दो। यह विनती करने के पश्चात्, प्रकाश करते वक्त मुँह के आगे कपड़ा रखना है और साथ ही साथ पहली पउड़ी पढ़ते जाना है। रूमाले चढ़ाओ, फिर सन्मुख आकर कहो गुरु नानक तू ही निरंकार, इसी तरह दस गुरुओं का नाम लेकर कहना है, शुक्र है सतिगुरु जी! कृपा की है गरीब लाचारों को दर्शन दिए हैं।

ज्यों हमारे नेत्रों की हिफाज़त के लिए परमात्मा ने पलकें बनाई हैं जो हमारे नेत्रों को धूल मिट्टी से बचाती हैं, इसी तरह गुरु साहिब की भी पलकें हैं। बाबा जी वचन करते थे, कभी Single पलक नहीं लगानी चाहिए। पहले सफेद पलक पर रूमाले की पलक। बाबा जी के सभी संगियों के घरों में दोहरी पलकें लगाई जाती हैं, एक हिस्सा मंजी साहिब पर नीचे आता है और दूसरा

पलट कर गुरु साहिब पर आ जाता है। फिर रूमाला भी पहले सफेद, फिर ऊपर दर्शनी रूमाला ऋतु अनुसार सर्दियों में गर्म, गर्मियों में ठण्डा हो, यह भी निर्मल भउ है। जो सफेद रूमाला इसके नीचे इस भावना से कि जैसे हम कमीज़ के नीचे बनियान डालते हैं। इस तरह करने से एक तो गुरु साहिब के अंग नहीं पलटते, दूसरा धूल-मिट्टी से बचाव रहता है। एक बार बाबा जी किसी गुरुद्वारे गए, वहाँ जब गुरु साहिब जी के दर्शन किए तो देखा कि गुरु साहिब के सभी अंग रेत से भरे हुए थे। बाबा जी की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने अपने आगामी सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए और अश्रुपूर्ण नेत्रों से साफ मलमल का कपड़ा लेकर गुरु साहिब के सभी अंगों की अपने हाथों से सेवा की। यहां से अपने लिए सीख लेना—सफेद मलमल का कपड़ा लेकर उसे भलीभांति धोकर, सुखाकर तांकि उसकी माया निकल जाए, उससे गुरु साहिब के एक-एक अंग की सेवा किया करो। सुखासन 3 से 6 फुट का कम से कम पलंघ अनिवार्य है। इस तरह निर्मल भउ रखने वाले थे बाबा जी, जिन्होंने पहचान लिया श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को, उन्होंने हमें भी आदर करना सिखाया, निर्मल भउ में रहना सिखाया।

एक बार दास किसी के घर गया। वह दास को गुरु साहिब के कमरे में ले गए और कहने लगे, आज संग्रांद है, आप आए हो, महीने का वाक्य आप सुनाओ। दास जब हुक्म मानकर गुरु साहिब के सन्मुख बैठा तो मन रो दिया, क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के तीन स्थानों पर, एक स्थान पर गता, एक स्थान पर मोर का पंख व एक स्थान पर बारह महीने के जो छोटे कार्ड होते हैं, वे रखे हुए थे। दास ने जब पूछा कि यह क्यों? तो वह कहने लगे कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के तीन सहज पाठ चल रहे हैं और यह तीनों चीज़ें निशानियों के लिए रखी हैं। दास ने कहा कि बड़ी खुशी की बात है घर में तीन-तीन सहज पाठ चल रहे हैं परन्तु इस तरंह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में निशानी के लिए कोई चीज़ रखना बहुत भारी अनादर है। एक-एक अक्षर गुरु साहिब जी का नेत्र है। आप स्वयं अंदाज़ा लगा लो कि यदि आपकी आंखों में कुछ

पड़ जाए तो क्या आप बर्दाशत करोगे? पाठ की निशानी के लिए एक अलग कापी लगाकर उस पर नोट करो।

आम कई बार यह भी देखने में आता है कि कई पाठ करते समय मुंह के आगे कपड़ा नहीं रखते। कभी नोट करो, हम जब बोलकर पाठ करते हैं तो कई बार मुंह में से थूक गिर पड़ती है और जब मुंह के आगे कपड़ा नहीं रखा होगा तो थूक गुरु साहिब पर गिरेगी, यह भी एक बहुत बड़ा निरादर है। अतः गुरु साहिब का पाठ करते वक्त मुंह के आगे कपड़ा रखना चाहिए। बाबा जी तो सुमति देते थे कि देग बनाते समय भी मुंह कपड़े से ढंका होना चाहिए। कभी नोट किया करो, कई पाठ करते-करते, अपने हाथ पैरों को लगाते जाते हैं, कभी नाक को, कभी मुंह को, कभी कान में उंगली देते हैं, कभी शरीर के किसी अंग पर खारिश करते जाते हैं। व्यक्ति को कई बार पता नहीं चलता कि वह शरीर के किस हिस्से पर खारिश करता है। एक बार दास ने देखा कोई गुरमुख प्यारे पाठ कर रहे थे और साथ ही साथ अपने दाएं हाथ के साथ पैर के अंगूठे पर खारिश करते जा रहे थे। दास का उस वक्त मन कांप गया, जब देखा कि उसने वही पैर वाले हाथ से गुरु साहिब का अंग बदला। जब भी जपुजी साहिब की सैंची पर भूमिका देने के लिए बैठना हो या गुरु साहिब जी के सहज पाठ करो, सदैव गले में हजूरिया डाल कर बैठो। किसी अंग पर खारिश करना हो तो उस हजूरिए से करना चाहिए।

दास को एक वाकया याद आ गया। किसी के घर अखंड पाठ था। परिवार की ओर से हमें हुक्म हुआ कि अवश्य चाहे 5 मिनट के लिए आओ। जब हम उनके घर गए और मन में सोचा कि वहाँ पाठ चल रहा है, 5-7 मिनट बैठकर पाठ श्रवण करते हैं। गुरु के लाल पाठी सिंघ जी पाठ कर रहे थे। जब हम बैठे तो वे पाठ उच्च स्वर पर करने लग गए। बड़ी खुशी हुई, बड़े प्रेम में भीगे पाठ कर रहे थे। कोई भी शुद्ध पाठ कर रहा हो, सुनने का आनंद ही बड़ा आता है। हम बैठकर पाठ सुनने लग गए। उस पाठी सिंघ को शायद किसी महापुरुष की संगत नहीं थी प्राप्त हुई, क्योंकि 3-4

मिनट ही बीते होंगे कि उसने पाठ करते-करते अपने दाएं हाथ से अपनी पगड़ी उठाकर, कान में उंगली डालकर खारिश करना शुरू कर दिया। यह देखकर हमारा मन कांपना शुरू हो गया, क्योंकि कान में मैल भी होती है। जब अंग पूरा होने पर उसने उसी उंगली से अंग बदलाया, तो हमसे रहा न गया। दास ने परिजनों को कहा कि पाठ पर किसी अन्य को बैठाकर इनको उठाओ, इनको कुछ विनती करनी है। जब वह उठे, नम्रतापूर्वक उन्हें विनती की कि अरे भाई ! वही कान की मैल वाले हाथ गुरु साहिब के अंग को लगाने का मतलब है कि आपके मन में गुरु के प्रति निर्मल भउ नहीं। शायद आपने किसी महापुरुष की संगत नहीं की। उन्होंने अपनी भूल महसूस की कि यह बारीकी हमें पता नहीं। हम आगे से ध्यान रखेंगे। दास ने विनती की कि किसी प्रकार की खारिश की क्रिया गले में विद्यमान हजूरिए से करो, पाठ पर बैठने से पूर्व गुरु साहिब को शीश निवाते समय भी ध्यान रखना चाहिए कि हाथ जमीन पर न लगें क्योंकि धूल इत्यादि लग जाती है। फिर वही धूल वाले हाथ गुरु साहिब के अंग को लगते हैं। शीश निवाते समय नतमस्तक होना चाहिए। जितना भी अधिकाधिक हो सके, गुरु साहिब का आदर करना चाहिए। भाई चौपा सिंघ के रहतनामे में भी वर्णन है–

"गुरु का सिक्ख पाठ करने बैठे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का तो सुचेत हो कर बैठे। तन बदन खुजला कर हाथ धो ले।

बाबा जी वचन करते थे कि अगर हर वक्त गले में हजूरिया न भी रख सको परन्तु जब गुरु की हजूरी में जाओ तो गले में पल्लू डाल कर जाओ। मन में ऐसी भावना हो कि सतिगुरु तेरा विनम्र-सा सिक्ख आया है। इस तरह करने से और आदर बढ़ जाता है। जब विनम्र होकर गुरु साहिब जी के चरणों में जाएं तो सतिगुरु की सेवा, सम्मान सच्चे मन से प्रगट गुरां की देह मान कर करना चाहिए। बाबा जी तो यहाँ तक वचन करते थे कि पाठी के पाठ करने वाले वस्त्र भी अलग होने चाहिए जो सिर्फ पाठ के समय ही धारण किए जाएं। पाठी सिंघ हमेशा रोल पर स्नान करके बैठे।

कई दफा कई कोहनियों का भार डाल कर बैठते हैं, वह भी नहीं मंजी साहिब पर डालना चाहिए, पाठ करते-करते हाथ भी अगर ज़मीन पर रखना हो तो हजूरिया रखकर। बाबा जी और बारीकी में जाते थे जो हमारे जैसे साधारण इन्सान की सोच में भी नहीं आ सकती। बाबा जी इतना आदर करते थे कि सहज पाठ, अखंड पाठ या संपट पाठ चल रहा हो तो, Table fan जो पाठी बैठा हो, उसकी पीठ की ओर नहीं लगाने देते थे। कहते थे कि यह भी निरादर है कि पहले पाठी को हवा लगे फिर इसके शरीर की झूठी हवा छूकर गुरु साहिब को लगे। वचन करते थे, Table fan सम्मुख लगाओ तांकि पहले गुरु साहिब को हवा लगे और गुरु साहिब को हवा छूकर पाठी को लगे।

इन सभी मर्यादाओं बारे लिखने के पीछे मकसद तो यही है कि हमारी अपने गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर प्रत्यक्ष भावना हो। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को प्रगट गुरां की देह मानकर पूजन करें। सम्मान करें, उनको साक्षात् मान कर उनके निर्मल भउ में रहें। इहलोक-परलोक के रक्षक, लोक-परलोक के सहायक सबकुछ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हैं। जिनकी पूर्ण श्रद्धा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर पूरी नहीं पड़ी फिर कहीं भी नहीं पड़ सकती। बाबा जी तो यहाँ तक वचन करते थे कि जहां गुरु साहिब का प्रकाश हो, साक्षात् मान कर सेवा होती हो, वहां सर्वशक्तियों का निवास होता है। वहां शहीद सिंघों का भी पहरा रहता है। यह सभी उपरोक्त बातें लिखने से यह स्पष्ट है कि सतिगुरु की सेवा ऊँचे मन से साक्षात् समझ कर करनी चाहिए। बहुत ज़रूरी है, मालिक को खुश कर लें, मालिक के प्रति निर्मल भउ रखा जाए।

लावां का पाठ कहीं ध्यान से पढ़ो। उसमें पंक्ति आती है। दूसरी लांव में—

निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥

(अंग ७७४)

यह दूसरी अवस्था है निर्मल भउ गुरु के प्रति प्राप्त हो जाना।

श्रद्धा की तीसरी निशानी

सुखमनी साहिब की वाणी में एक पंक्ति आती है–

भै ते निरभउ होइ बसाना॥

(अंग २८५)

बड़ी गहराई है इस पंक्ति में कि जो गुरु परमेश्वर का निर्मल भय रखेगा, वह निर्भय परमेश्वर उसके अन्दर बस जाएगा।

दास को एक वाकया याद आ गया। किसी गुरमुख प्यारे ने सुनाया। कहने लगा कि उसे एक बार कोई ऐसा शरीर मिला जिसने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को ट्रंक में रखा हुआ था। उस गुरमुख प्यारे ने उसको प्रेमपूर्वक विनती की कि यह गुरु साहिब का बड़ा अनादर है। उस शरीर के आगे से बोल थे, तू स्वयं को बहुत समझदार समझता है जो मुझे सिखाने आया है। मैं एक स्वरूप पालकी साहिब में रखता हूं, पर एक स्वरूप ट्रंक में इसलिए रखता हूं कि जब मेरा प्रोग्राम बन जाता है तो एक जगह से दूसरी जगह पर लेकर जाना होता है। दास को जब गुरमुख प्यारे ने यह बात सुनाई तो दास के रौंगटे खड़े हो गए। आप भी अंदाजा लगा लो कि ऐसे शरीर की गुरु के प्रति क्या भावना होगी। क्या उसके अन्दर गुरु के प्रति कोई निर्मल भउ होगा? दास को भी कीर्तन के प्रोग्राम के सिलसिले में बाहर जाना पड़ता है, सतिगुरु कृपा करके सेवा लेते हैं। बाहर जितने भी कीर्तन दरबार होते हैं, वहां लगभग रात के 11-12 बज ही जाते हैं। कई बार कीर्तन की समाप्ति के बाद साथी कह देते हैं कि चलते हैं, पर अपना मन नहीं मानता। यही मन में होता है कि मालिक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को विराजमान करवा कर चला जाए। मालिक का आदर अनिवार्य है, शेष सब कुछ स्वयं ठीक हो जाएगा।

भाई वीर सिंघ जी द्वारा एक खालसा समाचार पत्रिका निकलती है। 5-6 वर्ष पहले उसमें एक वचन छपा था जिसको पढ़कर आप स्वयं ही अंदाजा लगा लो कि गुरु साहिब को साक्षात् मानकर भउ में रहना कितना अनिवार्य है।

एक कीर्तनिया था, हेमकुंट साहिब गया। मार्ग में किसी

महापुरुष की कुटिया थी, उनके पास चला गया। नमस्कार हुआ। गुरुबाणी की बातें होने लग गईं। बातचीत के दौरान महापुरुष ने कीर्तनिए को पूछ लिया कि आपको कितने शब्द कंठ हैं? उन्होंने बताया कि लगभग सवा सौ। जब उन्होंने शब्द सुनाने शुरू किए तो महापुरुष भी एक-एक प्रकरण के साथ कई प्रमाण पढ़ने लग गए। कीर्तनिया कहने लगा, आपको तो बहुत बाणी कंठ है, अवश्य आप नित्य गुरु साहिब की हाज़िरी में बैठकर 3-4 घंटे सहज पाठ करते होंगे। उसका उतना वचन करते ही महापुरुष की आंखों में आंसू आ गए और कहने लगे, मेरे जीवन में एक बहुत बड़ी कमी है कि मैं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हाज़िरी में नहीं बैठ सकता। वह कीर्तनिया हैरान होकर कहने लगा, हाज़िरी में क्यों नहीं बैठ सकते? हाज़िरी में तो जो भी जब भी स्वेच्छा से बैठ जाए।

खेदपूर्वक उन्होंने अपना 15 साल पुराना एक वाकया सुनाया। कहने लगे कि मैं पाठी था, एक गांव में किसी के घर रहता था। जिनके घर रहता था, उनके पुत्र का रिश्ता हुआ और 10 दिन बाद विवाह की तिथि निश्चित हो गई। परिजन कहने लगे कि सहज पाठ रखकर विवाह से पूर्व भोग डालना है, इसलिए 1-2 पाठी साथ और रख लो। दिन कम हैं और समय पर भोग पड़ जाए विवाह से पूर्व। वे कहते हैं, मुझे लालच आ गया कि मैं अकेला ही कर लूंगा और सारी भेटा मुझे ही मिल जाएगी। यह सोचकर स्वयं ही सहज पाठ आरम्भ कर दिया। सातवें दिन ही रात के 10 बजे परिजन कहने लगे—सुबह पाठ का भोग डालना है, सब तैयारी है, पर पाठ अभी तैयार नहीं था। मैंने सोचा कौन-सा किसी को पता चलना है, कौन मुझे देख रहा है कि मैंने सभी पढ़े हैं कि नहीं। उसने बताया कि मैंने 400 अंग बिना पढ़े ही पलट दिए और सुबह पाठ का भोग डालकर अरदास कर दी और परिजनों से पाठ की भेटा ले ली। परन्तु 2-4 दिन बाद ही मेरे हाथों पर कुष्ठ रोग शुरू हो गया। मैं मन में समझ गया कि यह जो मैंने गुरु के अंग बिना पढ़ने के यह सोच कर पलट दिए थे कि मुझे कौन देख रहा है, मुझे उस निरादर का दंड मिला है। मैं यह भूल गया था कि गुरु साहिब प्रगट

गुरां की देह है, साक्षात् है, किताब नहीं है।

उन्होंने अपनी आपबीती सुनाई। कहते हैं कि मैं किसी महापुरुष की संगत करता था। उनके पास गया और अपनी सारी व्यथा उनके आगे रख दी। महापुरुष मुझसे हुए निरादर बारे सुनकर बीर रस में आ गए और नाराज़गी व्यक्त की। वे कहने लगे कि फिर मेरे बहुत निवेदन करने पर कि महापुरुषो! कोई तो रास्ता निकालो, गुरु नानक का घर तो क्षमावान् है। कोई भूल मान ले क्षमा पा लेता है। बड़े-बड़े पापी मुक्त हो गए। मैं जानता हूँ मैंने पाप बहुत बड़ा किया है पर कोई रास्ता तो निकालो। महापुरुष कहते हैं, अच्छा फिर बख्शिश भरी वाणी श्री सुखमनी साहिब का आसरा ले। प्रतिदिन के 5 पाठ श्री सुखमनी साहिब जी के करने हैं, 40 दिन लगातार हाज़िरी भरकर अरदास किया कर कि मेरा कुष्ठ दूर हो जाए। गुरु साहिब अवश्य कृपा करेंगे। सुखमनी साहिब की वाणी के फलस्वरूप तेरा कुष्ठ रोग ठीक हो जाएगा, पर एक तेरे लिए सजा है ताकि तुझे जीवन भर अपनी इस भूल का एहसास रहे और तुझ से अन्य लोगों को भी शिक्षा मिल जाए और वह गुरु साहिब को प्रगट गुरां की देह मानकर निर्मल भउ में आ जाएं। सजा यह है तेरे लिए कि तूने अब कभी भी गुरु साहिब की हाज़िरी में नहीं बैठना।

यह जिक्र दास का यहां लिखने का केवल यही मकसद है कि जो भी इस जिक्र को, प्रत्यक्ष घटित घटना को पढ़ेगा, उसे अवश्य निर्मल भउ की प्राप्ति हो जाएगी। यह यकीन हो जाएगा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी साक्षात् जोत हैं, किताब नहीं, क्योंकि आप किसी धार्मिक किताब को, गुटका साहिब को जहां मर्जी पढ़ो और जहां मर्जी छोड़ दो, पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी किताब नहीं, प्रगट गुरां की देह हैं।

यह है श्रद्धा की तीसरी निशानी कि जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए, उसके भीतर गुरु के प्रति निर्मल भउ आ जाता है। अवश्य मन में झांक कर देखो कि यह निशानी हमारे भीतर आई है कि नहीं। यदि मिली है तो सतिगुरु की कृपा है और यदि नहीं

मिली तो अवश्य गुरु साहिब के चरणों में प्रार्थना करो कि यह कृपा निर्मल भउ की हमें प्राप्त हो, क्योंकि यह अति अनिवार्य है। इसके बिना कोई बात नहीं बन सकती। वाणी का भी फैसला है—

बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ॥
गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ॥ ३॥
भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ॥
बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥ ४॥

(अंग ४२७)

भाव कि गुरु के निर्मल भउ के बिना शरण रूपी लाग नहीं लगती और न ही मन शुद्ध होता है। जो उसके निर्मल भउ व प्रेम में रत हो जाते हैं, वे उस सत्य में ही समा जाते हैं।

हम कहते हैं कि हमें गुरु पर श्रद्धा है। निगाह डालो श्रद्धा की यह तीसरी निशानी है हमारे पास। जिसके पास श्रद्धा हो उसके भीतर गुरु के प्रति निर्मल भउ आ जाता है।

☆☆☆

जितु कारै कंमि हम हरि लाए॥
सो हम करह जु आपि कराए॥

श्रद्धा की चौथी निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :

वह अपने गुरु में से ही परमेश्वर के दर्शन करता है।

जैसे समुद्र में से जो लहर उत्पन्न होती है, वह समुद्र का ही रूप होती है। वह लहर जब किनारे तक उछलती है, यदि कोई किनारे पर पड़ी वस्तु उससे मिल जाए तो उसे भी समुद्र में ही ले जाती है। परमेश्वर स्वयं ही गुरु रूप होकर जगत को उपदेश देता है और जो गुरु के चरणों से मिल जाए, वह उसको भी अपने आत्म-स्वरूप में लीन कर लेता है। गुरु ज्योति रूप होता है, शरीर रूप नहीं। देखो, गुरु नानक साहिब के समय, भाई लहणा जी शरीर रूप में मौजूद थे परन्तु कोई भी उनको गुरु नहीं मानता था परन्तु जब निरंकारी जोत उनके अन्दर स्थित हुई तो सम्पूर्ण सृष्टि उनके आगे झुकने लग गई। गुरु अंगद साहिब जी के समय गुरु अमरदास जी का शरीर मौजूद था परन्तु अनेकों ने आपको अमरु निथावा भी कहा, परन्तु जब निरंकारी जोत उनमें अवस्थित की गई तो वह बेघरों का घर बन गए, सम्पूर्ण सृष्टि के मालिक बन गए। अब वही निरंकारी जोत दशमेश पिता ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में टिका दी है। दास का यह लिखने से भाव कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब अथवा दस गुरु निरंकार हैं, परमेश्वर हैं। दास गुरुओं से जिस पर भी हमारी भावना बने (जोति सब एक ही है) उसको ही परमेश्वर

मानकर आराधना, श्रद्धा की निशानी है। निरंकार स्वयं ही गुरु नानक के रूप में आया और दस जन्म धारण किए।

बाबा जी वचन करते थे कि जिस तरह हम पगड़ी बांधते हैं और देखना चाहते हैं कि पगड़ी कैसी बंधी है तो दर्पण में देखते हैं, इसी तरह गुरु नानक खुद निरंकार हैं। निरंकार की जब इच्छा हुई अपना रूप देखने की, उसने गुरु नानक का रूप धारण कर लिया।

निरंकारु आकारु करि जोत सरूपु अनूप दिखाइआ॥

(वार १२, पा: १७)

बाबा जी वचन करते थे कि जब रोग बहुत ज्यादा बढ़ जाए तो डाक्टर को स्वयं चलकर आना पड़ता है। धरती ने निरंकार के समक्ष पुकार की थी कि "हे निरंकार! अहम्, जुल्म व कायरता का रोग बहुत बढ़ गया है। मैं बहुत दुखी हूं, मेरा कल्याण करो।" धरती पर जुल्म-अत्याचार इतने अधिक बढ़ गए थे, अतः आप निरंकार, गुरु नानक का रूप धारण कर धरती पर आ गया। इससे पूर्व जब भी धरती पर मुसीबत आई, निरंकार धरती पर अवतारों को भेजता रहा, पर एक बड़ी विचित्र बात हृदय में बसाओ कि जितनी मुसीबत धरती पर आती थी, निरंकार द्वारा उतनी ताकत के अवतार को धरती पर भेजा जाता था। त्रेता युग में अभी पाप कम थे, श्री राम को 14 कला देकर भेजा गया। द्वापर में पापों में कुछ वृद्धि हो गई, धर्म के दो ही पैर रह गए तो फिर और अधिक शक्ति (16 कला) देकर श्री कृष्ण जी को धरती पर भेजा गया। परमेश्वर ने अन्य भी कई अवतारों को धरती पर भेजा। सतयुग में हिरण्यकशिपु ने जब अत्यंत जुल्म करने शुरू कर दिए तो नृसिंह अवतार स्तंभ में से प्रगट हुआ। इस तरह मत्स्यावतार, कच्छावतार और अन्य भी कई।

कलियुग में धर्म के तीन पैर टूट गए, एक ही पैर रह गया तो धरती पर बहुत अत्याचार होने लग गए। निर्धन की रक्षा करने के समर्थ कोई न रहा। काज़ी मुल्ला रिश्वत लेकर न्याय करने लग

गए। पूरे संसार में झूठ का बोलबाला हो गया। चोर, ठग, साधुओं वाला पहनावा धारण कर लोगों को लूटने लगे। राजाओं ने कसाइयों का रूप धारण कर लिया, धर्म तो मानो पंख लगाकर उड़ गया। अनेक प्रकार के पापों के कारण धरती कलियुगी जीवों के भार से बहुत दुखी हो गई। फिर धरती ने निरंकार के समक्ष रो कर पुकार की कि मुझ से पापों का भार नहीं सहा जाता। निरंकार ने पूछा, किस चीज का भार है? तो धरती ने कहा, "मुझ पर कृतघ्नों का भार बहुत बढ़ गया है जो किसी के उपकार को नहीं जानते। ईर्ष्या बहुत बढ़ गई है, जिस कारण जुल्म व अत्याचार बहुत बढ़ गए हैं।" धरती की पुकार सुनकर निरंकार ने कहा, "मैं शीघ्र ही किसी अवतार को भेजता हूं।" परन्तु धरती ने कहा, "हे निरंकार! त्रेता युग में एक रावण था, जिसका वध करने के लिए आपने श्री राम को भेजा। द्वापर युग में एक पापी कंस था, जिसे मारने के लिए श्री कृष्ण को भेजा, परन्तु कलियुग में तो लाखों ही रावण और लाखों ही कंस विद्यमान हैं। अब किसी अवतार के वश की बात नहीं, अब आप स्वयं ही धरती पर आ जाओ।"

कलियुग में धरती की आवाज़ सुनकर निरंकार स्वयं गुरु नानक के रूप में धरती पर आया। भाई गुरदास जी भी लिखते हैं—

सुणी पुकारि दातार प्रभु
गुरु नानक जग माहि पठाइआ।

(वार १, प : २३)

वाणी की पंक्तियां भी हैं—

"आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ॥
निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ॥"

(अंग १३६५)

कार्तिक की पूर्णिमा संवत 1426 अर्धरात्रि से एक घड़ी ऊपर, राय भोइ की तलवंडी में माता तृप्ता के उदर से ईश्वरीय नूर ने अवतार लिया। महता कालू को पिता व नानकी को आप जी की

बहन होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसका भी रहस्य बाबा जी बताते थे कि जहां अब दरबार साहिब (सचखंड श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर) है, यहां पहले जंगल होता था और जहां सरोवर है वहां 7 ऋषि (पिता कालू, माता तृप्ता, बेबे नानकी, बहनोई जयराम, भाई लालो, राय बुलार व भाई झंडा) तप करते थे। तृप्ता व कालू ने तपस्या करके यह वर मांगा था कि निरंकार हमारे आंगन में खेलें, हमारी गोद में खेलें। राय बुलार व अन्यों ने मांगा था कि हमें खुदा के दर्शन हो जाएं और बेबे नानकी ने मांगा था कि मैं निरंकार की भरपूर सेवा करना चाहती हूं।

दौलता दाई ने जब इस अर्शी बालक के दर्शन किए और कहने लगी, मेरे हाथों से अनेक बालक हुए परन्तु इस तरह का बालक मैंने कोई नहीं देखा। यह कोई साधारण बालक नहीं, यह तो प्रभु अवतार है। जब पंडित हरदयाल ने देखा तो उसने भी कहा, इस बालक के चरण जहाज़ के समान होंगे। जो भी इसके चरणों से लगेगा, वह भवसागर से पार हो जाएगा। इसकी हिन्दू-मुसलमान दोनों ही उपासना करेंगे। नाम भक्ति से यह बेअन्त जीवों का उद्धार करेगा। यह साक्षात् निरंकार की ज्योति है।

हो सकता है अभी भी अनेकों के मन में यह संतुष्टि न हुई हो कि निरंकार स्वयं ही गुरु नानक के रूप में धरती पर आया। किसी स्थान पर कोई कील लगाना हो हथौड़ी से तो वह थोड़ा-सा झुकता है और तुरन्त ही निकल जाता है, फिर आप एक और चोट करते हो, फिर और, फिर और तांकि वह अच्छी तरह पक्का हो जाए, निकल न सके। दास, गुरु इतिहास की कुछ अन्य बातें लिखकर उल्लेख कर रहा है, जिनको पढ़कर हम सबका यकीन पक्का हो जाए कि गुरु नानक के रूप में निरंकार, परमेश्वर स्वयं धरती पर आए।

जब गुरु नानक साहिब बहन नानकी की प्रेमपूर्ण पुकार पर उसको मिलने के लिए सुलतानपुर गए तो बहन नानकी ने दौड़कर आप जी के चरणों में शीश निवा दिया। गुरु नानक कहने लगे, आप मेरी बड़ी बहन हो, शीश निवाना तो मेरा फर्ज़ बनता है। अब

प्रत्युत्तर जो बहन नानकी ने दिया, वह गौर कीजिए। बहन नानकी कहने लगी, "मैं आपको अपना छोटा भाई नहीं समझती, आप तो परमेश्वर का रूप हो, आपने जगत का उद्धार करने के लिए स्वेच्छा से शरीर धारण किया है।"

कौडे राक्षस ने जब मरदाना को पकड़कर तपते तेल के कड़ाहे में फेंकना चाहा तो गुरु नानक साहिब ने कृपा-दृष्टि से तपते हुए तेल के कड़ाहे को पोष-माघ के पाले की तरह ठंडा कर दिया और कौडा यह कौतुक देखकर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ और गुरु नानक साहिब के चरणों पर नतमस्तक हो गया। चरणों का स्पर्श प्राप्त होते ही उसको अपने पूर्व जन्म का ज्ञान हो गया और उसने मौखिक अपनी पूर्व जन्म की व्यथा सुनाई। कहने लगा कि मैं पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। मेरे मन में विद्या का बहुत अहंकार हो चुका था। उसने बताया कि मैं अपने विद्या के अहंकार में इतना अंधा हो चुका था कि एक बार मेरे गुरु, मेरे घर आए तो मैंने उनका भी आदर नहीं किया। उन्होंने अपने इस निरादर के कारण मुझे अभिशाप दे दिया कि तुम राक्षस का शरीर धारण कर खोटे कर्म करोगे। वह कहने लगा, मैं बहुत डर गया और उसी वक्त अपने गुरु के चरण पकड़ लिए और पूछा कि मेरी गति कैसे होगी क्योंकि मैं जानता था कि मेरे गुरु का वचन अवश्य पूरा होना ही है। मेरे इस तरह गुरु के चरणों पर पड़कर अपनी भूल को मान लेने के कारण वह प्रसन्नता के घर में आ गए और जो वचन किया, वह गौर कीजिए। (क्योंकि हमारा विचार चल रहा है कि निरंकार ने ही गुरु नानक के रूप में धरती पर आगमन किया) कहा, जब निरंकार स्वयं अवतार धारण कर संसार में आएगा, उनके दर्शन करके तेरा उद्धार होगा। इतना कहकर ब्राह्मण (कौडे राक्षस) ने अपना शरीर त्याग दिया और ब्रह्मलोक चला गया।

राजा जनक के भी रसोइए ने जब संतों-महापुरुषों के लिए तैयार किए भोजन को उनको खिलाने से पहले ही चोरी-चोरी निकाल कर खा लिया था तो उसने भी क्रोध में आकर अपने रसोइए को श्राप दिया था कि तू अगले जन्म में राक्षस बनेगा,

क्योंकि तूने बड़ा राक्षसों वाला काम किया है। जब उसने हाथ जोड़कर पूछा, मेरा उद्धार कैसे होगा तो राजा जनक ने कहा था कि कलियुग में परमेश्वर गुरु नानक का रूप धारण कर प्रगट होगा, उसके दर्शन करके तेरा उद्धार होगा।

गुरु नानक साहिब जब करतारपुर में निवास करते थे तो नित्य रावी के किनारे बैठकर अपने आत्मस्वरूप में लीन होते थे। वहां के एक सिक्ख भाई सैदा, जिसकी गुरु नानक पर अभी परमेश्वर वाली भावना नहीं थी, उसने जब गुरु साहिब को ऐसा करते देखा तो उसने सोचा कि शायद गुरु नानक जल देवता की आराधना करके उससे शक्ति प्राप्त करते हैं। इस विचार के मन में आते ही उसने सोचा कि वह भी जल देवता की पूजा किया करेगा। अगले दिन सुबह जब भाई सैदा जल देवता की पूजा करने के लिए जा रहा था तो पथ में क्या कौतुक देखता है कि आगे कोई जा रहा है। चन्द्रमा की रौशनी में उसकी परछाई नहीं बन रही? उसने कहा कि मैं जल देवता हूं। भाई सैदा कहने लगा, आप किधर जा रहे हो? जल देवता ने कहा कि रावी के किनारे निरंकार रूप गुरु नानक अपने आत्मस्वरूप में लीन होते हैं, मैं उनके दर्शन करके खुशकिस्मत बन रहा हूं। यह सुनकर सैदा बड़ा दंग हुआ और कहने लगा कि मैंने तो सोचा था कि गुरु जी वहां बैठकर आपकी पूजा करते हैं। जल देवता ने प्रत्युत्तर दिया कि मैं तो उसके दरबार का पनिहार मात्र सेवक हूं।

एक पीर बहावल हक ने गुरु साहिब को कहा था कि मेरी दरगाह तक पहुंच है। मुझसे कुछ भी मांग लो, मैं आपको दरगाह में से लेकर दे सकता हूं। उसके पुनः पुनः यह बात कहने पर सतिगुरु नानक ने कहा, ठीक है हमें दरबार में से एक पाव गरीबी (गरीबी से भाव माया द्वारा गरीबी मत समझना, यहाँ से भाव नम्रता से है) दिलवा दो। उस फकीर ने जब समाधि के समय दरगाह में से पाव गरीबी की मांग की तो आकाशवाणी हुई कि एक किलो (किलो से भाव माप यहाँ माप तोल से नहीं, किलो से भाव चार भाग कह लो) गरीबी में से तीन पाव भाव तीन हिस्से गरीबी

निरंकार गुरु नानक के रूप में धरती पर लेकर आए हैं और शेष एक पाव भाव एक हिस्से से सम्पूर्ण सृष्टि का चक्र चला रहा है और जिसके लिए तू पाव गरीबी की मांग कर रहा है, वह कोई अन्य नहीं, वह गुरु नानक स्वयं परमेश्वर का रूप, स्वयं निरंकार हैं।

दास ने यह ऐतिहासिक ज़िक्र उसकी कृपा से इसलिए उसने स्वयं लिखवाए हैं, तांकि हम कहीं इस भ्रम में न बैठे रहें कि गुरु नानक और है और ईश्वर अन्य। परमेश्वर स्वयं गुरु नानक के रूप में धरती पर आए और दस जन्म धारण किए। गुरु नानक साहिब का शरीर ज्योति जोत समाया, ज्योति गई गुरु अंगद साहिब के हृदय में और इस तरह चलते-चलते दसम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हृदय में। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस निरंकारी जोत को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में टिका दिया। उस निरंकारी जोत की हजूरी में पांच प्यारों द्वारा तैयार किए खंडे बाटे के अमृत को जो भी ग्रहण कर लेता है, वह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु धारण कर लेता है। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब में टिकाकर हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के संग लगाया है। कुर्बान जाएं दशमेश पिता पर जो उन्होंने हमें पूर्ण गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के संग लगाकर हमें भटकने से बचा लिया, क्योंकि वे जानते थे कि कलियुग में कई कच्चे गुरु बन जाएंगे, जो भोलीभाली दुनिया को अपने पीछे लगाकर उनको लूटेंगे। (यह बात याद रखना, कच्चा गुरु कभी मुक्ति नहीं दे सकता। जो उसके पीछे लगते हैं, वह डूबेगा ही) अतः ध्यान दें। आज वही गुरु नानक की जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में विद्यमान है, जो दशमेश गुरु ने शब्द को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में टिकाकर खालसा को उसकी हाज़िरी में किया है।

भाई वीर सिंघ जी अपने वचन में कहते हैं कि समय-समय पर धरती पर अत्याचार हुए, कष्ट आए, अवतार आया, डयूटी निभाई और गया। समय बीता धरती पर पुनः कष्ट आए, अत्याचार हुए पर अब कष्ट, जुल्म इतने अधिक थे कि अवतार भेजने से कुछ साकार नहीं होना था, अतः स्वयं निरंकार आया, गुरु नानक के

रूप में, 10 जन्म धारण किए और दसवें जन्म के बाद शब्द रूप में सर्वदा के लिए धरती पर टिक गए, दुनिया को तारने के लिए। यथावत उसी तरह जोत टिकाई है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में गुरु नानक की, निरंकारी भाव वह निरंकार शब्द रूप में, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में सदा के लिए धरती पर टिक गए, दुनिया का उद्धार करने के लिए, दुनिया की नाव किनारे लगाने के लिए। हम यह तो पढ़ते हैं–

भइआ अनंद जगतु विचि कलि तारन गुरु नानक आइआ॥

(वार १, पउड़ी ३७)

पर कभी किसी ने यह नहीं पढ़ा होगा कि गुरु नानक तार कर चले गए और इस समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में सदा-सदा के लिए हैं। पहले स्वरूप से दूसरे, फिर तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें, नौवें फिर दसवें और अब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में विराजमान हैं। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि धन्ने की पत्थर पर भावना बन गई, अरे भोले ! तेरी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर भावना नहीं बनी।

महापुरुष वचन करते थे कि प्रेमी, श्रद्धावान तो कभी यह नहीं कहते कि गुरु नानक चला गया है, वह गुरु नानक के अस्तित्व को मानते हैं। बात तो भावना की है। हमारी निष्ठा होनी चाहिए। तीन ढंगों से आज भी दर्शन होते हैं–

"तीन रूप है मोह के सुनहु नंद चित लाइ॥
निरगुण सरगुन गुर शबद कहु तोहि समझाइ॥"

(रहितनामा प्रश्न-उत्तर नंद लाल)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में स्वयं प्रत्यक्ष गुरु नानक हैं। हम अपनी भावना श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर परिपक्व करें। गुरु साहिब को प्रत्यक्ष परमेश्वर मानकर पूजा करो, आप स्वयं महसूस करोगे कि जो आनंद वर्ष तक सिमरन करके नहीं था मिला, वह एक ही घड़ी में मिल सकता है। जरूरत है विश्वास की, जरूरत है भावना की। निष्ठावानों को तो प्रत्यक्ष दर्शन भी होते हैं, परन्तु इसके लिए

अथक मेहनत की आवश्यकता है। बाबा जी सुमति देते थे। कहते थे कि गुरु साहिब के चरणों में अरदास किया करो, सच्चे गुरु ! कृपा करो; सगुण रूप में भी दर्शन देकर मेरी झोली भरो। वे वचन करते थे यूं विनय करो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, आपके दर्शन भी दर्शन हैं पर कृपा करो, कभी उस रूप में जिस रूप में कौडे राक्षस का कल्याण किया, वली कंधारी, भूमिए चोर का उद्धार किया, चाहे थोड़ी-सी झलक ही दिखा दो। वह कोई दूर नहीं है। आवश्यकता है, भावना की, प्रेम की। भावना व प्रेम से ऐसी चाह रखने वालों को प्रत्यक्ष दर्शन भी होते हैं।

पंक्ति आती है, उनकी सूझ के लिए जो अस्तित्व को नहीं मानते, गौर कीजिए—

पुछनि सिख अरदासि करि छिअ महलां तकि दरसु निहारी।
अगम अगोचर सतिगुरु बोले मुख ते सुणहु संसारी।
कलिजुगु पीढी सोढीआं निहचल नींव उसारि खिलारी।
जुगि जुगि सतिगुरु धरे अवतारी॥ ४८॥

(वार १, पउड़ी ४८)

यह वार हमें बहुत बड़ी सीख देने वाली है। इसका भाव है कि यह सतिगुरु का अस्तित्व तो युग युग तक खत्म नहीं होगा। "निहचल" से भाव है निश्चल नींव। भाव यह नींव इतनी अटल है कि गुरु नानक का अस्तित्व युग युग तक रहेगा। अभी भी अगर किसी को यकीन न आया हो, मन में शंका हो तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में रचित पंक्तियां भी है—

स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ॥

(अंग १३९०)

भाव यह राज अविचल अटल है। अतः ऐसा प्रेम करो, यह प्रतीत, यह भावना रखो कि गुरु नानक हैं, वह कहीं गया नहीं। कभी भी यह मत कहना कि गुरु नानक चले गए हैं। वे नहीं गए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में मौजूद हैं, भावना की आवश्यकता है। आज भी वही ज्योति विद्यमान है। अरे प्रियजनो! कहीं किताब

मत समझ लेना, पहचानें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को। बाबा जी तो यहां तक वचन करते थे कि जहां व्याप्त मानकर सेवा होती हो, वहां सर्वशक्तियों का निवास होता है। वहां 24 घंटे शहीद सिंघों का पहरा रहता है। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि जिसकी गुरु ग्रंथ साहिब से पूर्ति नहीं हुई, कहीं भी नहीं हो सकती। हमारी भी गुरु ग्रंथ साहिब जी में पूर्ण भावना बने, हम उनको सर्वव्याप्त, लोक-परलोक के रक्षक, लोक-परलोक के सहायक मानकर पूजन करें। एक बार बाबा नंद सिंघ जी को किसी ने विनती की कि महापुरुषो ! मैंने सुना है कि आपने गुरु नानक के दर्शन किए हैं, मुझे भी करवा दो, बाबा जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की तरफ संकेत करके कहने लगे, मेरा तो गुरु नानक यह बैठा है, यही गुरु नानक है, पर भावना बनानी पड़ेगी।

यह बात याद रखना, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के केवल दर्शन करने से सफलता नहीं मिलती। जब गुरु नानक साहिब देहधारी स्वरूप में थे, उनके भी तो दर्शन अनेकों ने किए हैं, पर न पहचानने वालों ने भूतना, बेताल तक कह दिया। जिन्होंने नहीं पहचाना, उन्होंने पत्थर भी मारे। दर्शन तो पिता कालू ने भी किए, उसके आंगन में प्रभु स्वयं खेलता रहा, पर पहचान न होने के कारण तमाचा भी मारा, निखटू तक कह दिया। किसी ने सिक्ख कहा और किसी ने संत-महापुरुष का दर्जा दिया परन्तु जिसने पहचाना वह भाई लहणा था। उन्होंने कह दिया, मेरा तो प्रभु ही तू है। मेरा तो परमेश्वर ही तू है। वही निरंकारी जोत जब गुरु अमरदास जी में विद्यमान हो गई, जिन्होंने नहीं पहचाना, दातू ने ज़ोर से लात मारी। जिन्होंने नहीं पहचाना, उन्होंने पांचवी जोत गुरु अर्जुन साहिब जी को कितने कष्ट दिए।

सभी अपने अन्तर्मन में दृष्टि डालो। आप में किसी का दरबार साहिब का नेम होगा, किसी का संतोखसर का, किसी का बिबेकसर का, किसी का बाबा दीप सिंघ जी के दर का या किसी भी शहर में किसी भी धार्मिक स्थल का। कोई दरबार साहिब जाए और मन में यह धारण करे कि गुरु रामदास जी आपके पास आया हूं, पर

प्रभु कोई और अन्य ढूंढना है। उसको इस जन्म में प्राप्ति नहीं हो सकती। यदि अन्तर्मन में यह भावना हो कि गुरु रामदास अन्य है, प्रभु अन्य है। यदि हम अपने गुरु में भगवान नहीं देख सकते तो अन्य कहीं भी नहीं मिल सकता चाहे उलटा लटक कर भक्ति करते रहो। जिसने अपने गुरु में से निरंकार नहीं देखा, उसको प्राप्ति नहीं हो सकती। सिक्खी की पढ़ाई भी यही है कि गुरु को प्रत्यक्ष परमात्मा समझो।

दास की अपनी ज़िन्दगी भी काफी ऐसी गुज़री है। जब मन में यह होता था कि गुरु नानक और है तथा प्रभु और है। कुछ वर्ष पूर्व जब आंख नहीं थी खुली, दास का भी यही हाल था, दरबार साहिब जाना, गुरु रामदास जी के दर पर नमस्कार करना, पर मन में होना गुरु रामदास जी के दर्शन तो कर रहे हैं, पर प्रभु अभी कोई और है। परमेश्वर तो कोई और है। अगर कोई ऐसी अवस्था पर है तो समझ लेना अभी श्रद्धा की कमी है। जिसको श्रद्धा की दात मिली होगी, वह अपने गुरु में से ही परमात्मा को देखेगा।

बाबा नंद सिंघ जी ने पता नहीं कितनी मेहनत की और जब आंख खुली तो भावना में कह दिया, "धन्य गुरु नानक तू ही निरंकार" भाई नंद लाल ने भी कह दिया–

गुरु नानक आंवदो नाराइन सरूप।
होमाना निरंजन निरंकार रूप।

भाई गुरदास जी की आंख खुली तो कह दिया–

हरिगोविंद गुर अरजनहु गुरु गोबिंद नाउ सदवाइआ।

(वार २४, पउड़ी २५)

एक बार बाबा ईशर सिंघ जी ने किसी से पूछा कि हे भाई, बता ईश्वर कैसा है? (देखना चाहते थे कहाँ खड़ा है या यह कह लो कि शिक्षा देना चाहते थे) वह शरीर कहने लगा, जी मोमबत्ती की लाईट जैसा। (कई लाईट में वृत्ति रखते हैं कि यही ईश्वर है) दूसरे से पूछने लगे कि तू बता ईश्वर कैसा है? उसने कहा, ईश्वर तारे जैसा है। (वह तारे में वृत्ति रखता होगा) तीसरे को पूछा तो

उसने कहा कि ईश्वर न लाईट जैसा है और न तारे जैसा है, ईश्वर तो चन्द्रमा जैसा है। जब चौथे से पूछा तो वह कहने लगा, जब बिजली कड़कती है और जो रोशनी आती है फिर चली जाती है, वह जो रोशनी है, वही ईश्वर है। एक अन्य से पूछा तो वह कहने लगा, प्रकार के साथ एक गोल वृत्त खींच दो, उसके अन्दर एक और छोटा, उसके अन्दर एक और छोटा, करते-करते एक जगह आ जाती है केवल एक बिन्दु रह जाता है, वही ईश्वर है। महापुरुष मुस्कुरा दिए–कहते अरे भोले, ईश्वर बिन्दु, लाईट, तारे, चन्द्रमा, रोशनी सरीखा नहीं। अगर ऐसे भ्रमों में रहे तो जीवन भर लगे रहोगे और परमेश्वर की प्राप्ति नहीं कर सकोगे। वे कहने लगे, बाबा जी ! फिर आप बताओ ईश्वर कैसा है? बाबा जी ने उनकी बांह पकड़ी और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के कमरे में ले गए और कहते हैं, आओ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से पूछते हैं कि ईश्वर कैसा है। बाबा जी ने अरदास की, रूमाला उतारा और हुक्मनामा लिया। अब जो हुक्मनामा आया, वह पढ़कर शायद हम सबको भी सूझ मिल जाए, हुक्मनामा था–

सतिगुरु मेरा बेमुहताज॥ सतिगुरु मेरे सचा साजु॥

इसकी अन्तिम पंक्तियां हैं–

नानक सोधे सिंम्रिति बेद॥ पारब्रहम गुर नाही भेद॥

(अंग ११४२)

इन पंक्तियों के अर्थ समझना, गुरु साहिब कथन करते हैं कि हमने चार वेदों एवं सत्ताईस स्मृतियों का विश्लेषण करके देख लिया है कि गुरु और परमेश्वर में कोई भेद नहीं भाव दोनों ही एक रूप हैं।

हमें एक गर्व है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में जो कुछ भी लिखा है, वह तीन काल सत्य हैं, उसे कोई भी गलत नहीं कह सकता। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अन्य भी अनेकों ही ऐसी पंक्तियां हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि गुरु ही परमेश्वर है। दास कुछ पंक्तियां और लिख रहा है जो गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं तांकि हमारे मन में कहीं थोड़ी-सी भी शंका न रह जाए।

समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई॥
गुर गोविंदु गुोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई॥

(अंग ४४२)

देख लो उसकी भी अंतिम पंक्तियों का यही भाव है कि गुरु गोविंद रूप है और गोविंद गुरु रूप है। इन दोनों में कोई भेद नहीं।

गुरु अर्जुन साहिब जी की पंक्तियां हैं–

सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ॥

(अंग १२७१)

दास इन पंक्तियों के भी अर्थ स्पष्ट कर दे। सतिगुरु कहते हैं कि सतिगुरु से बड़ा अन्य कोई भी नहीं। गुरु, परब्रह्म परमेश्वर एक ही है।

एक अन्य जगह लिखते हैं–

गुरु मेरा खसमु सतिगुर सरणाई॥

नानक गुरु पारब्रहमु जा की कीम ना पाई॥

(अंग १२७०)

इन पंक्तियों का भी यही भाव है कि गुरु व परब्रह्म एक ही है, जिसकी कीमत आंकी नहीं जा सकती। पंचम गुरु हमें भी इन पंक्तियों द्वारा उपदेश कर रहे हैं कि गुरु को परमेश्वर मानना चाहिए।

गुरु परमेसरु एको जाणु॥

(अंग ८६४)

हमारे लिए उपदेश किया है कि गुरु व परमेश्वर दोनों को एक रूप मानो। पंचम गुरु की एक और पंक्तियां हैं, जिनको पढ़कर यह पता लगता है कि गुरु साहिब की गुरु के प्रति क्या भावना है, हम भी उससे अपने लिए सीख लें–

गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंदु॥
गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवंतु॥

श्रद्धा की ग्यारह निशानियां

गुरु मेरा देउ अलख अभेउ॥
सरब पूज चरन गुर सेउ॥ १॥
गुरु बिनु अवरु नाही मै थाउ॥
अनदिनु जपउ गुरू गुर नाउ॥ १॥ रहाउ॥
गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु॥
गुरु गोपालु पुरखु भगवानु॥

(अंग ८६४)

कितना प्रेम ! कितनी भावना ज़ाहिर हो रही है। कहते हैं, मेरी पूजा भी गुरु है। मेरा गोबिंद भी गुरु है, गुरु ही मेरा परब्रह्म भगवंत है। अंतिम पंक्तियां भी हमें कितनी बड़ी सीख दे रही हैं कि मैं हृदय में गुरु का ही ध्यान करता हूं। गुरु ही गोपाल पुरुष भगवान हैं।

दास का श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में से कुछ पंक्तियां लिखने का या कुछ श्रद्धावानों के वचन लिखने का केवल इतना ही भाव है कि हमारा भी विश्वास बन जाए। परमेश्वर दस गुरु एवं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हैं। जो इनको छोड़कर गोल चक्रों और या चन्द्रमा तारों में वृत्ति टिकाकर बैठा है, उसकी भक्ति सफल नहीं होती। कबीर जी की भी पंक्तियां हैं–

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा॥

(अंग ३२४)

भाव जो अपने गुरु साहिब को छोड़कर अन्य कहीं प्रभु को ढूँढता है, उसके जप, तप, व्रत, पूजा सफल नहीं होते।

विश्वास वालों के बेड़े पार होते हैं। बात तो भावना की है। भाग्य तो भावना को लगते हैं। गुरु नानक तो एक ही थे, माता-पिता ने पुत्र समझा, बहन ने अवतार समझा, राय बुलार ने अवतार समझा, भाई लहणे ने कह दिया–

किस ही कोई कोइ मंञु निमाणी इकु तू॥

(अंग ७६१)

श्रद्धा की चौथी निशानी

मुझे तो एक तेरा ही आसरा है। मेरा तो रब ही तू हैं। गुरु नानक तो एक ही है, भावना अपनी-अपनी थी। जैसी भावना गुरु पर रख लोगे वैसा फल मिल जाएगा। बहन व राय बुलार ने अवतार समझा। उनको वैसा फल मिला। पत्थर मारने वालों को पत्थर मारने का फल मिला, जैसी भावना से गुरु का अभिवादन कर लोगे, गुरु की आराधना करोगे, वैसा फल मिलेगा। इसी तरह पृथीचंद भी गुरु रामदास जी का पुत्र था और गुरु अर्जुन साहिब जी भी। पृथीचंद की भावना गुरु रामदास जी पर केवल पिता वाली थी पर गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु रामदास जी को केवल पिता नहीं था समझा, बल्कि परमेश्वर का स्वरूप मानते थे। वे कहते थे मुझे तो यों लगता है कि हरि ने अपना नाम बदलकर रामदास रख लिया है–

हरि जीउ नामु परिओ रामदासु॥

(अंग ६१२)

एक बार भाई बाला जी (गुरु नानक देव जी के साथी) गुरु अंगद साहिब जी के दर्शन करने गए और अनुरोध करने लगे कि मेरे मन में एक प्रश्न है। सतिगुरु ने कहा, पूछो बाला जी ! गुरु अंगद साहिब जी बहुत आदर करते थे भाई बाला जी का। उनसे गुरु नानक की कथा सुनते थे। कहते थे बाला जी ! (आप इतने वर्ष मेरे गुरु नानक पातशाह के साथ रहे हो। उनसे गुरु नानक के कौतुक बड़े प्रेमपूर्वक सुनते थे जो भाई बाला जी ने आंखिन देखे थे) बाला जी कहने लगे, मैं 40 वर्ष गुरु नानक साहिब जी की सेवा में उनके साथ रहा। उनको चंवर करता रहा पर आपकी मुलाकात गुरु नानक साहिब से बहुत समय बाद हुई और केवल 7–8 वर्ष का समय ही आप उनके साथ रहे पर मुझे इस बात की बड़ी हैरानी होती है कि जो आपने 7–8 वर्ष में उनसे प्राप्त किया मैं 40 वर्ष में भी नहीं कर सका। उन्होंने आपको अपना रूप ही बना दिया। अब जो गुरु अंगद साहिब जी ने भाई बाला जी को उत्तर दिया, उस पर गौर करना और फिर अपने मन में भलीभांति चिंतन करना कि हमने गुरु पर कैसी भावना धारण करनी है। गुरु साहिब जी

ने कहा, बाला जी, आप मुझे यह बताओ कि आप 40 वर्ष गुरु नानक साहिब जी की सेवा उनको क्या समझ कर करते रहे? आपकी उनके प्रति क्या भावना थी? बाला जी ने कहा, ब्रह्मज्ञानी, पूर्ण संत, महापुरुष समझ कर। गुरु अंगद साहिब जी ने कहा, बाला जी गुरु शीशा रूप है, जैसे शीशे में मुख देखोगे वैसा ही नज़र आता है। आप गुरु नानक को महापुरुष जानकर उनकी सेवा करते रहे, उन्होंने आपको महापुरुष ही बना दिया। बाला जी ने कहा, आप बताओ, आप क्या समझकर उनकी सेवा में जुटे रहे? आपकी गुरु नानक के प्रति क्या भावना थी? गुरु अंगद साहिब जी ने कहा, मैंने उनको परब्रह्म परमेश्वर मानकर पूजन किया, उनसे परे कोई रब नहीं देखा। बाला जी का शीश झुक गया और कहने लगे, मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया है। आपने गुरु नानक को परब्रह्म परमेश्वर समझ कर पूजन किया है और उन्होंने आपको वही रूप बना दिया। हम भी सीख लें गुरु अंगद साहिब जी की भावना से।

श्रद्धा की मिसाल कायम की गुरु अंगद साहिब जी ने। उनकी मिसाल हमारे लिए सच्ची सिक्खी की मिसाल हैं। उन्होंने हमें बताया कि गुरु-सा कोई नहीं। उन्होंने जिस तरह श्रद्धा व भावना से गुरु की सेवा की, हमें तरीका सिखाया। गुरु अंगद साहिब जी का इतिहास पढ़ो। पहले हर वर्ष देवी की यात्रा पर जाते थे, पर जब गुरु नानक साहिब जी के दर्शन हुए, फिर मन बेच दिया गुरु नानक के आगे। ऐसा गुरु नानक से प्रेम किया कि गुरु नानक के ही होकर रह गए, अपना अंतर्मन दे दिया गुरु नानक को। हमारे लिए मिसाल तैयार की श्रद्धा की गुरु अंगद साहिब ने। हमें ढंग सिखाया कि गुरु पर कैसी श्रद्धा रखनी है।

गुरु नानक साहिब की पत्नी माता सुलखनी जी ने एक बार गुरु साहिब को कहा कि अपने पुत्र भी तो बेहतर हैं। गुरुगद्दी की बख्शिश पुत्रों को ही करना व कुल में रहनी ही संसार की मर्यादा है। गुरु नानक साहिब जी ने जो कौतुक रच कर माता सुलखनी जी को उनकी इस बात का उत्तर दिया, उससे संकेत लेना कि श्रद्धा क्या है और श्रद्धा की कितनी आवश्यकता है। वह कौतुक क्या

था? उस समय एक सिक्ख ने मंसूरी टका चढ़ाया। गुरु साहिब ने वह टका मुट्ठी में बंद कर लिया और पुत्रों की ओर देखकर पूछने लगे, बताओ मेरी मुट्ठी में क्या है? एक से पूछा उसने कहा, टका है। दूसरे से पूछा, उसने भी कहा कि टका है। अभी हम सभी के सामने तो टका रखकर सिक्ख ने माथा टेका है। वही आपने मुट्ठी में रखा है। यूं ही बार-बार पूछ रहे हो। अन्य संगत भी वहाँ बैठी थी। उनसे भी सतिगुरु ने पूछा, उनका भी वही जवाब था। अब माता सुलखनी को पूछा तो उन्होंने भी कहा टका ही तो है। सब ने देखा है। सबसे पीछे खड़े थे भाई लहणा जी विनम्रतापूर्वक कि सतिगुरु ने आवाज़ दी, हे लहणे, तू बता हमारी मुट्ठी में क्या है? भाई लहणा जी के नेत्र प्रेम में विह्वल हो गए और बड़े सहज से प्रेम भरे बोलों में कहते हैं, मालिक ! मुट्ठी तेरी और बताऊँ मैं कि इसमें क्या है? गुरु नानक ने पुनः कहा, हे लहणे ! बता हमारी मुट्ठी में क्या है? भाई लहणा जी ने जो जवाब दिया, उससे इशारा लेना कि हमारी भावना गुरु के प्रति कैसी हो, भाई लहणा जी ने कहा, सच्चे पातशाह ! तेरी मुट्ठी में सम्पूर्ण सृष्टि की नियामतें हैं, तीन भवनों के समस्त पदार्थों की नियामत है। आप जी जिसके सिर पर हाथ रख दो, जिसको जिस त्रिलोकी का राज देना चाहो, सब आप जी की मुट्ठी में है। रहरासि साहिब में पंक्तियाँ हैं—

सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ॥

(अंग १०)

स्वयं अंदाज़ा लगा लेना कि जिनके अन्दर श्रद्धा नहीं उनको तो टका नज़र आ रहा है और जिसकी श्रद्धा है, उसने क्या कहा। यहां ही बस नहीं। भाई लहणा जी कहते हैं, सतिगुरु ! आप जी की मुट्ठी पर जितने रोम हैं, एक-एक रोम में करोड़ों ब्रह्माण्ड बसते हैं, इसलिए हे मेरे सर्वोच्च सतिगुरु ! मैं "निम्न" यह कैसे बता सकता हूं कि तेरी मुट्ठी में क्या है। इशारा समझना कि भाई लहणा जी की श्रद्धा भावना कहां टिकी रहती थी। एक बार गुरु नानक साहिब ने किसी से पूछा, कितनी रात बाकी है? (उस समय घड़ियां नहीं थी होतीं) उसने बाहर जाकर देखकर बताया, सवा प्रहर बाकी है।

गुरु साहिब ने कहा, नहीं प्रहर बाकी है। जाकर भलीभांति देखकर आओ। इस तरह गुरु नानक साहिब जी ने तीन बार भेजा और उनका हर बार यही जवाब था। जब भाई लहणा जी से पूछा तो उनका जवाब पढ़ो कहीं, कमाल हो गई, इतनी श्रद्धा, इतनी भावना! भाई लहणा जी का जवाब था हे जगतगुरु स्वामी ! काल तेरा बनाया है और तेरी रज़ा में है, रात जितनी आप जी ने बिताई, उतनी बीती है और जितनी आप जी की रज़ा उतनी बाकी है। इशारा—हे गुरु नानक! रात भी तेरे हुक्म में है।

अब स्वयं अंदाज़ा लगा लो कि गुरु अंगद साहिब जी ने हमारे लिए श्रद्धा की क्या मिसाल कायम की है। सही मायने में यदि देखा जाए तो गुरु नानक साहिब की वास्तविक पहचान ही भाई लहणा जी ने की। पूरी पहचान कर भी वही सकता है, जिसकी अपनी नज़र उस ऊँचाई तक ऊँची उठी हो कि कितने ऊँचे सतिगुरु नानक जी हैं। गुरु नानक पर इतनी ऊँची भावना रखने के कारण ही वह स्वयं भी एक दिन उतने ऊँचे हो गए। भाई लहणा जी का गुरु नानक के प्रति जो यह श्रद्धा का नमूना है, पूरे जगत के लिए रोशनी का घर है, प्रकाश स्तंभ है। वास्तव में भाई लहणा जी भी प्रभु दरबार से आए थे। स्वयं भी गुरु ज्योति ही थे, पर उनको अकाल पुरुष वाहिगुरु ने जान कर सिक्खों का कल्याण करने के लिए इस रंग में रखा था तांकि वह श्रद्धा की मिसाल कायम कर सिखा सकें। उन्होंने सिक्खी धारण की ही हमें शिक्षा देने के लिए थी। धन्य थे भाई लहणा जी, मालिक होकर भी सिक्खों में सिक्ख होकर रहे, सिक्खों वाले कार्य किए। सिक्खी भावना में गुरु नानक की सेवा की और हमें ढंग सिखाया। गुरु साहिब का इतिहास पढ़कर अपने लिए शिक्षा प्राप्त करें कि हमने अपने गुरु के प्रति कैसी भावना रखनी है। भाई लहणा जी (गुरु अंगद साहिब) ने श्रद्धा भावना रखी गुरु नानक साहिब पर, इसी तरह आगे तीसरे गुरु (गुरु) अमरदास जी ने गुरु अंगद साहिब जी को अपना परब्रह्म परमेश्वर मानकर पूजन किया। इसी तरह आगे से आगे यह परंपरा चलती गई। किसी ने भी अपने गुरु के अलावा अन्य अकाल पुरुष

नहीं ढूँढा, यह हमारे लिए मिसाल हैं। अब हमें दशमेश गुरु हुक्म कर गए हैं कि आपके गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हैं। अगर हम इनको छोड़कर कहीं अन्य प्रभु को ढूँढते हैं तो हमें कहीं भी शरण नहीं प्राप्त होगी। हमसे तो पेड़ भले हैं जो सिर के बल खड़े हैं और टांगें ऊपर की हैं। हजारों सालों से वहाँ के वहाँ ही सिर के बल खड़े रहते हैं, जहाँ निरंकार ने खड़े कर दिए। लाखों आंधियां आती हैं, तूफान आते हैं, बाढ़ें आती हैं, यह टूट चाहे जाएँ पर अपनी जगह नहीं छोड़ते। जहाँ निरंकार ने खड़े कर दिए, वहाँ ही खड़े रहते हैं जबकि हमारी यह हालत है कि जहाँ गुरु गोबिंद सिंघ सच्चे पातशाह हमें खड़े कर गए हैं, वहाँ टिकते नहीं हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को प्रगट गुरां की देह नहीं मानते तथा कहीं और परमेश्वर ढूँढते फिरते हैं, उनकी भावना में फर्क है। जब तक भावना नहीं तब तक दर्जा बहुत पीछे है, प्राप्ति नहीं हो सकती। श्रद्धा की यह चौथी निशानी है अपने गुरु में से ही परमेश्वर के दर्शन करना। हम में से कई शरीर दस गुरुओं को अलग-अलग समझते हैं। वचित्र नाटक की पंक्तियां भी हैं–

भिंन भिंन सबहूं कर जाना॥ एक रूप किनहूं पहिचाना॥

दस गुरु व श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी एक ही जोत हैं, उनको भिन्न-भिन्न समझना हमारी नासमझी है। भाई नंद लाल जी की "श्री जोत बिगास" में लिखी पंक्तियां भी इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं–

हमू नानक असतो हमो अंगद असत॥
हमू अमरदास अफजलो अमजद असत॥
हमू रामदासो हमु अरजुन असत॥
हमू हरिगोबिंद अकरमो अहिसन असत॥
हमू असत हरि राइ करता गुरु॥
बद आशकारा हमा पुशतो रू॥
हमू हरि किशन आमदा सर बुलंद॥
अजो हालिस उमीदि हर मसतमंद॥
हमू असत तेगि बहादर गुरु॥

कि गोबिंद सिंघ आमद अज़ नूरि ऊ॥
हमू गुरु गोबिंद सिंघ हमू नानक असत॥
हमू शबदि ऊ जौहरि हमू मानक असत॥

(श्री जोत बिगास भाई नंद लाल में से २३/२८)

दस गुरु साहिब व श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी स्वयं निरंकार हैं। जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी व अकालपुरुष में फर्क समझते हैं, उनके बारे वाणी में इस तरह लिखा है—

जिन कै भीतरि है अंतरा॥
जैसे पसु तैसे ओइ नरा॥

(अंग ११६३)

गुरु को छोड़कर अन्य कहीं प्रभु ढूंढना तो अन्धेरे की टक्करें हैं, यों ही हड्डियां पसलियां तुड़वाना है। यदि हम यह कहने की हिम्मत रखते हैं कि अगर कोई ओर परब्रह्म है भी तो भी उसके दर्शन के चाहवान नहीं, फिर प्राप्ति होगी, जैसे एक गाथा भी है एक राजा था। उसके मन में परमात्मा के मिलन की इच्छा उत्पन्न हुई और वह अपना सारा राज भाग अपने पुत्रों को सौंपकर अपने साथ कुछ कीमती सामान लेकर जंगल को चल पड़ा। एक ठग को इस बारे पता लग गया और वह ठग साधुओं वाला लिबास डालकर उसके रास्ते में बैठ गया। जब राजा की दृष्टि उस पर पड़ी तो उसने सोचा कि यह कोई पूर्ण महापुरुष लगते हैं, इनको गुरु धारण कर लेता हूं। राजा ने यह सोचकर महापुरुष के रूप में जो ठग था, उसको माथा टेका और विनती की कि मैं आपको गुरु धारण करना चाहता हूं। वह ठग कहने लगा, गुरु धारण करना कोई सरल कार्य नहीं, पहले तन, मन, धन देना पड़ता है, फिर हुक्म मानना पड़ता है। राजा ने कहा, मुझे मंजूर है। ठग ने कहा कि अच्छा फिर जो कुछ भी तेरे पास है, वह यहां रख दे और पलथी मार कर आंखें बंद करके बैठ जा, जब तक मैं तुझे हुक्म न दूं, तुम आंखें मत खोलना।

राजा उस ठग को पूरा गुरु समझ कर उसका हुक्म मान कर आंखें बंद करके बैठ गया और वह ठग जो राजा का कीमती सामान था, सब लेकर वहां से खिसक गया। 24 घंटे बीत गए, राजा ने आवाज़ दी, गुरु जी अब आंखें खोल लूं? पर कोई गुरु वहां हो तो बोले। इसी तरह तीन दिन तीन रातें बीत गईं। राजा इसी तरह आंखें बंद करके बैठा रहा कि गुरु के हुक्म बिना आंखें नहीं खोलनीं। आखिर भगवान स्वयं प्रगट हुए और राजा को कहा, आंखें खोल। राजा ने पूछा, तू कौन है? भगवान कहने लगे, जिसके मिलाप की लालसा में तू बैठा है, मैं वही हूं। राजा कहने लगा, पर मैं अपने गुरु के हुक्म के बिना आंखें नहीं खोल सकता। भगवान ने कहा, वह तो ठग था। तेरा सारा कीमती सामान लेकर भाग गया है, यहां कोई नहीं है। राजा ने कहा, खबरदार ! यदि मेरे गुरु को ठग कहा। भगवान उसका इतना विश्वास देखकर ठग के पास गए और उसको जाकर सारी बात सुनाई और कहा, शीघ्र चलकर राजा को आंखें खोलने का हुक्म दो। ठग ने जब भगवान के साथ जाकर राजा को आंखें खोलने का हुक्म दिया तो राजा ने आंखें खोलीं और देखा ठग (उसका गुरु) व भगवान दोनों उसके सम्मुख खड़े हैं। राजा ने पहले उस ठग के चरणों पर सिर रखा, माथा टेका। देख लो, राजा की ठग पर श्रद्धा बन गई, ठग पर विश्वास कर लिया और प्राप्ति हो गई, भगवान के दर्शन हो गए और हम अगर पूरे धन्य धन्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर विश्वास करेंगे तो क्या हमें प्राप्ति नहीं होगी। बात तो निपटती है विश्वास से।

हमारी हालत तो यह है कि हम में से कई नरक से डरते गुरु गोबिंद सिंघ जी को परमेश्वर कहने से डरते हैं, क्योंकि गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पंक्ति उच्चारण की थी–

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥

बाबा जी वचन करते थे कि यह तो एक परीक्षा थी जो गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को डाली थी कि देखना कौन लकीर पार करता है और कौन नरक के डर से पीछे लौट जाता है। बाबा

जी, जिनकी पूर्ण श्रद्धा थी, बड़े प्रेम में आकर किसी अगम्य लौ में फुरमाते थे, हम हृदय से कहते हैं कि कलगीधर पातशाह स्वयं परमेश्वर हैं। अधिक से अधिक क्या होगा, नरक में फैंके जाएंगे, अरे भोलो ! यदि नरक में भी कलगीधर पातशाह गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम ही ले लोगे तो नरक भी ठंडे हो जाएंगे। भाई नंद लाल जी फुरमाते हैं–

कूच तुहाडे उतों जद तों दिल नूं घोल घुमाया॥
बाग बहिसत (सुरग) निकम्मा समझ के पैरां हेठ रुलाया॥

देख लो वे भी हैं जो लाखों स्वर्गों को त्याग देते हैं और वे भी हैं जो नरक के डर से गुरु को परमेश्वर कहने से डरते हैं। कबीर जी ने भी कह दिया–

कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि॥
चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि॥

(अंग १३७०)

कबीर जी सब को सीख दे रहे हैं–

सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु॥

(अंग ३३७)

गुरु अर्जुन साहिब जी अपनी वाणी में फुरमाते हैं–

कई बैकुंठ नाही लवै लागै॥
मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे॥

(अंग १०७८)

श्रद्धा वाले तो कहते हैं कि यदि गुरु को परमेश्वर कहने से नरक में फैंक दिया जाएगा तो वे नरक भी हमें मुबारक हैं, पर धिक्कार हैं उन स्वर्गों पर जहाँ गुरु ही नहीं।

यह है श्रद्धा की चौथी निशानी कि गुरु में से ही परमेश्वर के दर्शन करना। दास की यह दिल से ख्वाहिश है कि हम सबकी अपने गुरु साहिब पर परिपक्व भावना बने और अपने गुरु के अतिरिक्त

कहीं अन्य परमेश्वर ढूँढने के लिए न भटकें। उन ख्यालों से व उन श्रद्धाविहीन लोगों के विचारों से दूर रहें जो गुरु के प्रति श्रद्धा को तोड़ते हैं। कई बार हमारे अपने ख्याल भी ऐसे बन जाते हैं कि हमें गुरु छोटा नज़र आने लग जाता है। कोई बख्शिश मांगी थी, मिली नहीं, यूं लगता है जैसे गुरु समर्थ नहीं, कई बार हमारे अपने मन में ऐसे ख्याल बनने शुरू हो जाते हैं कि परमेश्वर अन्य है और गुरु नानक अन्य है। मैं यूं ही गुरु नानक, गुरु नानक करता जा रहा हूं। मेरा तो पार उतारा भी नहीं होना। जब भी ऐसे ख्याल मन में बनें, उन ख्यालों से लड़ना है। श्रद्धा व प्रेम वालों की कथा-कहानियां पढ़नी हैं और गुरु के प्रति श्रद्धा भावना में कोई दरार नहीं आने देनी और हर वक्त गुरु साहिब के चरणों में अरदास करनी कि हमें अपने चरणों पर ऐसा भरोसा, प्यार, श्रद्धा, भावना प्रदान करना कि हम सदैव आप जी के ही बनकर रहें, आप जी का ही आसरा पाएं, कोई भी लहर, कोई भी विचार या कोई भी कुसंगति हमारी भावना को तोड़ न सके।

यह है श्रद्धा की चौथी निशानी—वह अपने गुरु में से ही परमेश्वर के दर्शन करता है।

चार चीज़ें होती हैं—गुरु का ध्यान, गुरु की स्तुति, गुरु की पूजा, गुरु की सेवा। जिसकी गुरु पर श्रद्धा हो, वह अपने गुरु में ही ध्यान धारण करता है। प्रभु समझकर गुरु की ही पूजा, गुरु की स्तुति, गुरु की सेवा करता है।

1. गुरु का ध्यान

किसी वस्तु में मन लगाने और उसमें मगन होने को ध्यान कहते हैं। अपने गुरु के चरणों में लगना, यह बहुत बड़ी बंदगी है, तपों में तप सार है। कोई भी चीज़ तपने के बिना अपनी असलियत में नहीं आती। सोना पहले तपता है, फिर आपके गले का शृंगार बनता है। धरती तपती है, गेहूं उगे व गेहूं भी तपती है। यदि गेहूं ने सूर्य का तप न सहा हो, आप उसको खोद लो तो वह कुछ दिनों के बाद सूख जाएगी, किसी काम नहीं आएगी। तपने के बाद इसमें

लाली आती है और जीवों की खुराक बनती है। आम का पौधा यह भी जब तक तपस न सहे, कच्चा होता है। तपस सहे फिर इसमें मिठास भरती है। समुद्र का पानी सूर्य की तपस सहता है, फिर किरणें बनकर उड़ता है तो ही बादल बनकर सर्वत्र बरसता है। गुरु के चरणों का ध्यान कर सिमरन करो। अतः अपने गुरु को परमेश्वर जान कर ध्यान करना यह सबसे कठिन भक्ति है। बाबा जी वचन करते थे कि केवल नाम जपना सूखी खांड की तरह है, क्षति पहुंचाएगी और नाम जपने के साथ ध्यान धारण करना घी वाली खांड है जो फायदा प्रदान करेगी। अवश्य मन में नज़र डालो कि जो नितनेम करते हो, वाणी पढ़ते हो, सिमरन करते हो, ध्यान कहाँ धारण करते हो। किसे कह रहे हो--

अंतु न सिफती कहणि न अंतु॥

किस को कह रहे हो--

तेरे बंके लोइण दंत रीसाला॥
सोहणे तन जिन लंमड़े वाला॥
कंचन काइआ सुइने की ढाला॥

गुरु के चरण सिक्ख का केंद्र है, जिसके पास केंद्र ही नहीं, वह भटकता फिरता है। जैसे सूर्य के पास एक केंद्र है, जिसके इर्द-गिर्द वह घूमता है। यदि उसने केंद्र न पकड़ा हो फिर सही ढंग से न घूम सकेगा। आगे-पीछे होता रहेगा। चन्द्रमा के पास भी केंद्र है तो ही पूरे वक्त से अपनी कार्रवाई कर रहा है। इसी तरह जिस सिक्ख के पास भी अपने गुरु के चरणों का केंद्र नहीं, वह इधर-उधर भटकता फिरता है। हमारे पास भी जब केंद्र आ जाएगा फिर हमारी ज़िंदगी का दायरा टिकाने लग जाएगा। गुरु के चरण हमारे लिए केंद्र है। कोई 'एक ओंकार' में वृत्ति लगाए, "वाहिगुरु" शब्द के अक्षर में लगाए।

जहाँ मर्ज़ी गुरु के चरण समझकर वृत्ति लगाओ, उसे सब स्वीकार है।

निरगुणु सरगुणु आपे सोई॥ (अंग १२८)

श्रद्धा की चौथी निशानी

मानव मन हर वक्त किसी न किसी चीज़ का ध्यान करता रहता है। इसके भीतर 24 घंटे अच्छे-बुरे ख्याल चलते रहते हैं। उन ख्यालों को हम रोक नहीं सकते। प्रत्येक हृदय किसी न किसी ख्याल में डूबा रहता है। कभी किसी की भलाई सोच रहा होता है और कभी बुराई। कभी अपने कारोबार के बारे में सोचता रहता है और कभी अपने परिवार के बारे में, बच्चों के बारे में। हमने इन सब निरर्थक ख्यालों द्वारा अपने मन को बदल कर अपने ध्यान में सार्थक संकल्प गुरु के चरण, वाणी के चिंतन को स्थान देना है। निरर्थक विचारों को हटा कर गुरुवाणी, गुरु-मंत्र, गुरु के चरणों को मन में बसाना है। जिसका ध्यान गुरु के चरणों में लीन हो जाए, वह गुरमुख बन जाता है, और फिर वह सदैव ही प्रसन्नचित्त रहता है और आनंदित जीवन व्यतीत करता है। बाबा ईशर सिंघ जी फ़ुरमाते हैं कि ध्यान के समय वृत्ति ऐसी होनी चाहिए कि जैसे कोई अत्यावश्यक चिट्ठी पढ़ रहे हों या हिसाब-किताब कर रहे हों और पूरे चाव से करते हैं तो कहते हैं कि हमसे कोई बीच में बात न करे।

जिस चीज़ का कोई ध्यान करता है, वह उसका ही रूप हो जाता है। गुरु का ध्यान करते-करते जीवात्मा परमात्मा से धीरे-धीरे एकरूप हो जाती है, चूंकि गुरु ही परमेश्वर है और यही मानव जीवन की मंजिल है। पूरी भक्ति, पूरी मेहनत, सारी तलाश इसलिए है कि परमात्मा से ऐसे जुड़ना कि एक रूप हो जाना। जो परमात्मा से एकरूप हो जाता है, फिर वह उसका ही रूप बन जाता है और कदापि उससे बिछुड़ता नहीं। मनुष्य जीवन का दरअसल यही मनोरथ है।

कई कह देते हैं कि गुरु के स्वरूप का ध्यान नहीं करना चाहिए। बेड़ा तो नाम ने पार करना है। बाबा जी सुमति देते थे और कहते थे कि चाहे बेड़ा नाम ने ही पार करना है, पर नाम को याद करने के लिए भी तो कोई विधि बनानी है। बच्चे को पढ़ाई कराने के लिए कोई पुस्तक होती है उस पर उ, अ, इ, भी होता है और साथ ही ऊ ऊंट भी लिखा है और साथ ही ऊंट की तस्वीर

भी बनी होती है। उस तस्वीर को बनाने के पीछे भाव तो सिर्फ यही होता है कि चित्र को देखकर अक्षर याद आ जाए ऊंट की फोटो जब बच्चा देखे तो "उ" शब्द याद आ जाए। पढ़ाई तो अक्षरों की ही करवानी होती है। इसी तरह बेड़ा तो नाम ने ही पार करना है पर जिसके सदके नाम याद आ जाए, उस पर बलिहारी जाना है। गुरु के स्वरूप का ध्यान वृत्ति की एकाग्रता के लिए, अपने प्रियतम की याद मन में रखने के लिए है, गुरु के चरण नेत्रों में हृदय में बसाने के लिए है। गुरु के स्वरूप के दर्शन मन की वृत्ति को जोड़ने के लिए अति आवश्यक है तांकि हमारा ध्यान गुरु के चरणों में लीन रहे। कई कह देते हैं कि ध्यान गुरु शब्द का करना चाहिए, पर बाबा जी वचन करते थे कि शब्द का ध्यान हर कोई नहीं कर सकता, गुरु के स्वरूप, गुरु के चरणों का ध्यान करना सरल होता है। बाबा जी के वचन थे कि जाप करना है वाहिगुरु का व ध्यान करना है गुरु नानक के चरणों का। (वाहिगुरु जपने से चार युगों के नाम महातम से बड़ा महातम मिल जाता है। गुरु नानक साहिब ने "व, ह, ग, र," के प्रत्येक अक्षर को लाने के लिए 9-9 युग भक्ति की, इस तरह 36 युग के तप का फल 'वाहिगुरु' नाम में है। कई जिज्ञासु गुरु की मूर्ति, चेहरे या आंखों का ध्यान करते हैं, पर बाबा जी सुमति देते थे कि दर्शन चेहरे का करो, पर ध्यान चरणों का रखो, इससे नम्रता आती है। चरणों का ध्यान करने से मेहनत थोड़ी व महातम अत्यधिक मिलता है। बाबा जी सुमति देते थे कि चरणों में जो "पदम" है, उसका ध्यान करना चाहिए। बाबा जी यह बात दावे से कहते थे कि जिसका लक्ष्य सही हो गया, गुरु नानक उससे वचन भी करेंगे।

कोई बुजुर्ग थे। वह पहले माथे पर ध्यान करते थे। कई साल कठोर तपस्या करते रहे, पर कोई प्राप्ति न हुई। आखिर बाबा जी से सुमति लेकर चरणों में पदम का ध्यान करना प्रारंभ किया। इतनी कृपा हो गई कि कुछ सप्ताह उपरांत ही गुरु नानक साहिब से प्रत्यक्ष बातचीत हो गई। उन्होंने फिर बाबा जी को पूछा कि प्राप्ति होने के उपरांत भी 'ध्यान' करना आवश्यक है। बाबा जी ने उत्तर

दिया, उससे अपने लिए भी सीख लेना। बाबा जी कहते हैं कि जब स्त्री के बच्चा पैदा हो जाए तो क्या वह अपने पति को छोड़ देती है? इशारा समझना कि प्राप्ति के लिए भी ध्यान गुरु के चरणों का ही करना है और प्राप्ति होने के उपरांत भी ध्यान गुरु के चरणों पर ही टिकाना है। बाबा जी तो यहां तक वचन करते थे कि जब कोई भी काम, क्रोध, लोभ, अहंकार भी दिमाग पर हावी हो जाए, गुरु साहिब के चरणों का ध्यान सुरति से करो, शब्द का जाप करो, यह सभी लहरें स्वयं काबू हो जाएंगी। बाबा जी यहां तक कहते थे कि यदि घर में गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश नहीं, सेवा नहीं कर सकते तो सुन्दर स्वच्छ आसन बिछा कर गुरु नानक साहिब का स्वरूप रख लो, उसके सुबह उठकर दर्शन करो, उस स्वरूप का ध्यान करो, और कमाई शब्द की करो। ध्यान में कमाल की ताकत है। जिसका ध्यान परिपक्व हो जाए, वह पता नहीं कितने-कितने कार्य गुरु से प्रेम में करवा लेता है।

देखो ध्यान किया था भाई बिधि चंद जी ने, पट्टी शहर में जब दुशाले लेकर आ रहे थे तो सभी गेट बंद हो गए, शहर में कोई जगह न मिले छिपने के लिए। एक भट्ठी नज़र आई। जब उस भट्ठी वाले से कोई जगह छिपने के लिए पूछी तो वह कहता है कि मेरे पास तो यह भट्ठी है, इसमें छिपना है तो छिप जा। भट्ठी में आग जल रही थी। जब बिधि चंद ने देखा कि अन्य कोई चारा नहीं है, वह जलती भट्ठी ही एक ऐसी जगह है, जहां छिपा जा सकता है, तो उसने गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के चरणों का ध्यान किया और जलती भट्ठी में छलांग लगा दी। इतिहास लिखता है कि उधर छठे गुरु सिक्खों को कहते हैं कि पानी की बालटियां लाकर हमारे शरीर पर डालते जाओ। इतिहास में लिखा है कि सतिगुरु सच्चे पातशाह ने तब तक अपने शरीर पर पानी की बालटियां बंद नहीं कीं जब भट्ठी शीतल न हुई। इतनी ताकत है ध्यान में।

गुरु नानक साहिब के समय की वार्ता है कि एक बार गुरु नानक साहिब व भाई मरदाना चले जा रहे थे कि अकस्मात मरदाना चकित होकर गुरु नानक साहिब को कहने लगा, सतिगुरु!

अभी तो आपके चरण बिल्कुल ठीक थे, पर यह अचानक इनमें से रक्त कैसे बहना शुरू हो गया। गुरु साहिब कहते हैं, कल जो गडरियों का लड़का मिला था, उसने हमारे चरण हृदय में बसा लिए थे। वह चरा तो बकरियां रहा है, पर ध्यान उसका हमारे चरणों में लीन है। ऐसा चरणों के ध्यान में मग्न चला जा रहा है कि उसको पता ही नहीं लगा कि वह चलते-चलते कांटों की बाड़ में घुस गया है। वह बात हो गई–

भइआ दिवाना साह का.....

(अंग ६६१)

गुरु साहिब कहते थे कि उसका ध्यान हमारे चरणों में होने के कारण, कांटे चुभने का जो कष्ट है, वह हमारे चरणों में आ रहा है, उसको नहीं हो रहा। एक नहीं, अनेक वृत्तांत हैं।

भीम चंद के वजीर देवी चंद की आंखों में सलाइयां गर्म करके चुभोने का और पहाड़ी से नीचे फैंकने का हुक्म था सिपाहियों को, क्योंकि उसने गुरु गोबिंद सिंघ जी की स्तुति की थी। अब सिपाही उसके परिचित थे, अधीन थे, पर मजबूर थे। कहते थे कि हमें बादशाह का हुक्म तो मानना ही है। सलाइयां तो हम चुभो देते हैं पर पहाड़ी से धक्का देकर फैंकेंगे नहीं। वह सिपाहियों को कहता है कि यदि आप मुझ पर दया कर ही रहे हो तो फिर जब मैं आपको अपना दायां हाथ ऊपर उठा कर इशारा करूँगा, उस वक्त आप सलाइयां चुभोना। अब देवी चंद पलथी मार कर बैठ गया और ध्यान लगा लिया गुरु गोबिंद सिंघ जी के चरणों में और विनती की, सतिगुरु ! अब आप ही मुझे बचा सकते हो, मेरी रक्षा कर सकते हो। जब 3-4 मिनट उसकी वृत्ति लग गई और चरणों में ध्यान परिपक्व हो गया, तो उसने अपना दायां हाथ उठाकर सलाई चुभोने का इशारा दे दिया और आप चरणों के ध्यान में ही लीन हो कर बैठा रहा। सिपाहियों ने गर्म सलाईयां उसकी आंखों में चुभो दी और सोचा कि स्वयं ही गिर जाएगा, हम धक्का नहीं देते।

वे सिलाईयां चुभो कर चले गए पर थोड़ी देर बाद देवी चंद

ने जब आंखें खोलीं तो बिल्कुल ठीकठाक था। बड़ा चकित हुआ कि वह कष्ट सिलाईयां चुभोने का किधर गया। क्या वह सब एक सपना था। अब जब स्वयं को बिल्कुल ठीकठाक देखा तो मन में गुरु के दर्शनों की इच्छा पैदा हो गई। जब गुरु जी के दर्शन करने के लिए आनंदपुर पहुंचा तो वहां जाकर द्वारपाल को विनती की कि सतिगुरु के दर्शन करने की मन में तीव्र लालसा है। द्वारपाल कहने लगा, सतिगुरु के चरणों में आज बहुत तकलीफ है। इसलिए आराम कर रहे हैं, द्वारपाल अभी यह वचन कर ही रहा था कि अंतर्यामी सतिगुरु ने उसको भीतर से बुलावा भेजा। जब भीतर जाकर दर्शन किए और माथा टेका तो सतिगुरु के चरणों में पट्टियां बंधी हैं। वह देखकर आश्चर्यचकित होकर पूछने लगा, सतिगुरु! आपके सुन्दर चरणों पर इतना दुख, इतनी तकलीफ कैसे? सतिगुरु मुस्कुरा कर कहते हैं कि अरे भोले, जब तेरी आंखों पर सिलाईयां डाली गई थीं, तेरा ध्यान कहां था? महाराज, आपके चरणों में। अरे भोले, इसलिए उन गर्म सिलाईयों के चुभने का दुख तकलीफ तेरी आंखों पर नहीं, हमारे चरणों पर हुई है।

गुरु के चरणों का ध्यान करने में कितनी ताकत है, इसका आनंद, इसका रस तो वही जानते हैं जो ध्यान करते हैं, वे गुरु के प्रत्यक्ष होने के बावजूद भी गुरु का ध्यान कर गुरु से प्रेम का रस पा लेते हैं। भाई जेठा जी (गुरु रामदास जी) जब अभी गुरु पदवी को प्राप्त नहीं थे हुए, अपने ध्यान में ही उन्होंने गुरु अमरदास जी से प्रेम की हमारे लिए मिसाल कायम की। एक बार जब भाई जेठा जी लाहौर में गुरु साहिब की आज्ञा पर कचहरी की तारीख के लिए गए थे और वापिसी पर बाज़ार में से गुजरते-गुजरते एक दुकान पर बड़ा सुन्दर कुर्ता देखा और मन में विचार आया कि कितना अच्छा हो यदि इतना सुन्दर कुर्ता मेरा गुरु, मेरा मालिक डाले। जब दुकानदार से उस कुर्ते को खरीदने की चाह से मूल्य पूछा तो सोच में पड़ गए क्योंकि उनकी जेब में उस कुर्ते की कीमत जितने पैसे नहीं थे। सोचते हैं कि अब क्या करें? बड़ा चाव था, यह सतिगुरु को पहनाने का। उसी वक्त

सतिगुरु का ध्यान किया और वहां खड़े-खड़े ही सुरति के साथ ही अपने मालिक गुरु अमरदास जी को वह कुर्ता पहनाने लग गए।

उधर गोइंदवाल साहिब बैठे गुरु अमरदास जी कभी अपनी दायीं बाजू ऊपर करते हैं और कभी बायीं और कभी कुर्ते की सिलवटें ठीक करते हैं। जैसे कोई कुर्ता पहना रहा हो। उनके पास खड़ा था उनका सिक्ख भाई बल्लू, उसने पूछ लिया, सतिगुरु! यह क्या कर रहे हो? गुरु साहिब कहते हैं, लाहौर में हमारा प्रिय सिक्ख भाई जेठा जी हमारा ध्यान करके हमें सुरति से कुर्ता पहना रहा है। मैं उसकी भावना पूरी कर रहा हूं। इतना ही नहीं, जब थोड़ा और आगे गए, एक जगह बिन बहार फल आम देखा। सोचते हैं कि यह आम ही गुरु साहिब के लिए ले जाते हैं। इसके खरीदने योग्य तो पैसे हैं। आम खरीद लिया। अब उस वक्त कोई गाड़ियां तो होती नहीं थी, जो थोड़े समय में गोइंदवाल पहुंच जाते। वापिस पहुंचने में समय बहुत अधिक लगता था। रास्ते में जब दोपहर हुई तो धूप की गर्मी से आम बहना शुरु हो गया। भाई जेठा जी की आंखों में वैराग्य से आंसू आ गए। (बहुत प्रेम था भाई जेठा जी का गुरु साहिब से, वैराग्य की मूर्ति हुए हैं गुरु रामदास जी) जो हमारी बात चल रही है, ध्यान की ताकत पर, भाई जेठा जी, गुरु अमरदास जी का ध्यान कर कहते हैं कि सतिगुरु यह आम तो आपके लिए लाया था कि आप इसका रस लो, पर यह धूप की गर्मी से बहना शुरु हो गया है, आप तक पहुंच नहीं सकता। भाई जेठा जी ने गुरु साहिब जी का ध्यान कर स्वयं आम चूसना शुरु कर दिया और सुरति लगा ली कि गुरु साहिब इसके रस का स्वाद ले रहे हैं। उधर गोइंदवाल साहिब में गुरु अमरदास जी ने कहा, हमारा प्यारा भाई जेठा हमें सुरति से आम चुसा रहा है। आम चूस कर गुठली भाई बल्लू को पकड़ाई और कहा, इसे खिड़की में संभालकर रख, वह जब आएगा तो उसको यह गुठली दिखाएंगे कि देख सुरति से तेरे द्वारा चुसाया हुआ आम हमें पहुंच गया था। देख लो कितनी ताकत है ध्यान में, दूर बैठे भी गुरु के प्रेम का आनंद लिया जा सकता है। गुरु को वश में किया जा सकता है।

गुरु को प्रेम की डोरी में बांधा जा सकता है। भाई गोंदा की काबुल वाली घटना हमारे लिए एक बहुत बड़ी मिसाल है, एक प्रेरणा का स्रोत है। जब काबुल में बैठे जपुजी साहिब जी की वाणी पढ़ते-पढ़ते पंक्ति आई थी–

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि॥

(अंग ८)

लीन हो गया, वैराग्य उत्पन्न हो गया। सतिगुरु कई तेरे निकट, तेरे पास मैं तुझसे कितना दूर। मैं काबुल में और आप कीरतपुर। ऐसा वैराग्य में चरणों में सिर झुकाया कि आसन पर दोपहर के 11-12 बज गए। उधर गुरु हरि राय साहिब जी ने भी घुटना नहीं हिलाया। जब 12 बज गए, घुटना हिलाया और लफ्ज़ निकले धन्य सिक्खी, धन्य सिक्खी ! पास खड़े सिक्ख कहते हैं, हम समझे नहीं, यह वचन करने का भाव। सतिगुरु कहते हैं, काबुल में बैठा मेरा सिक्ख भाई गोंदा धन्य है, उसकी सिक्खी धन्य है। वह इतना प्रेम में हमारा ध्यान कर काबुल में बैठा हमारे चरण पकड़ कर बैठा हुआ है कि उसने आज प्रेम में हमें उठने ही नहीं दिया। देख लो। ध्यान में गुरु को भी बांध कर बैठा दिया। इसलिए चार चीज़ों में पहला है गुरु का ध्यान व दूसरा है गुरु की स्तुति।

2. गुरु की स्तुति

स्तुति का अर्थ है बड़ाई, शोभा, महिमा, परमेश्वर अगम्य है, अथाह है। उसकी स्तुति भी अथाह है, वर्णन नहीं की जा सकती।

जैसे फटे हुए कपड़े को सुई-धागे से सिलाई किया जा सकता है, इसी तरह गुरु परमेश्वर से डाली हुई, बिछुड़ी हुई जीव रूपी स्त्री की गांठ उसकी स्तुति करने से पड़ जाती है।

नानकु आखै एहु बीचारु॥
सिफती गंढु पवै दरबारि॥

(अंग १४३)

कलगीधर के अति प्यारे भाई नंद लाल भी अपनी गजल में

यही भाव व्यक्त करते हैं–

हवाए बंदगी आवुरद दर वजूद मरा॥
वगरनह ज़ौकि चुर्नी आमदन नबूद मरा॥ १॥

अर्थात्–

भगती तेरी दी तांघ असां नूं एस सरीरे लिआई मेरे माही।
नहीं ते की सी लोड़ आवण दी लिस पिछे उठ धाही।

भाव कि हे कलगियों वाले ! तेरे भजन-बंदगी की चाह ही मुझे मनुष्य शरीर में लाई है, अन्यथा मुझे इस शरीर में आने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। भाई नंद लाल जी कहते हैं कि जब मैं सोचता हूं कि मनुष्य जन्म क्यों लिया है तो एक चीज़ मेरे सामने आती है कि मैंने तो मनुष्य जन्म अपने गुरु प्यारे, अपने कलगीधर प्रियतम की स्तुति करने के लिए लिया है। अन्य कोई कारण मनुष्य जन्म का नज़र नहीं आता।

गुरमुख सदैव अपने गुरु की स्तुति में लीन रहते हैं। वे अपने मालिक की प्रशंसा यूं करते हैं कि हे मेरे साहिब ! तू धन्य है ! तू धन्य है ! एक तू ही सच्चा है, बेपरवाह है।

एक भाई राम किशन जी हुए हैं। हर वक्त यही जपते रहना धन्य गुरु नानक, धन्य गुरु नानक (दास यह एक उनके प्रेम की बात लिख रहा है, करनी कमाई है पर यह भावना रखकर कि जपते थे कि गुरु नानक तू ही वाहिगुरु हैं। वाहिगुरु तू ही गुरु नानक हैं) उन्होंने हर वक्त गुरु नानक का जाप करना व इस जाप के साथ ही उनकी अवस्था इतनी ऊँची हो गई थी जो भी रसना से किसी से वचन कर देना, सत्य हो जाना। एक सिक्ख जगत के रागी भाई भाग सिंघ ने एक बार भाई राम किशन जी को कीर्तन सुनाया। कीर्तन की समाप्ति के उपरांत जब संगत चली गई पर भाई भाग सिंघ व उनकी पत्नी बैठे रहें। उन्होंने पूछा, आप नहीं गए, क्या कारण? समीप ही कोई बैठा था उनका सेवक, कहने लगा, 17 साल हो गए हैं इनके विवाह को पर औलाद नहीं। भाई राम किशन जी गुरु साहिब के सन्मुख बैठे थे, वहां बैठे ही कहते

हैं कि गुरु के कीर्तनिए की संतान नहीं। साथ ही रसना में से अगला वचन कर दिया कि ''गुरु के कीर्तनिए की गोद हरी।'' ''गुरु के कीर्तनिए की गोद हरी'' दो-तीन बार यही वचन दोहराया। फिर साथ ही अपने पर बड़ाई न लेने के कारण भाई भाग सिंघ को कहने लगे—इस सीढ़ियों में से जहां से संगत गुज़रती है, हाथों से वहां की चरण-धूलि इकट्ठी करके ले जाओ और थोड़ी-सी पानी में डालकर अपनी पत्नी को पिलाना। फिर कहने लगे, संगत की धूल का सदका गुरु के कीर्तनिए की गोद हरी। संगत की धूल का सदका गुरु के कीर्तनिए की गोद हरी। साखी में ज़िक्र है कि ठीक 11 महीने उपरांत उनके घर पुत्र ने जन्म लिया और आत्मा भी घर में गुरु नानक के घर की आई भाई हीरा सिंघ रागी। जिसने अनेकों को गुरु नानक के घर से जोड़ा। इशारा लेना, जिसके घर में 17 साल से कोई संतान नहीं, एक अपने गुरु को धन्य-धन्य करने वाले की रसना में से वचन निकलने के कारण औलाद की प्राप्ति हो गई। गुरु की सुरति में कितनी ताकत है।

एक बार एक बड़ा विद्वान पंडित आ गया भाई राम किशन जी के पास कि बहुत नाम सुना है राम किशन जी का, चलकर दर्शन कर आएं। वह कोई दो घंटे वहां बैठा रहा। भाई राम किशन जी धन्य गुरु नानक, धन्य गुरु नानक ही करते रहे। उस पंडित के मन में ख्याल आ गया है कि लगता है कि इनको अन्य कुछ आता ही नहीं, पर देखो! अपने गुरु को धन्य कहने के कारण अवस्था इतनी ऊँची हो चुकी थी कि उसके मन में चल रहे ख्याल को पढ़ लिया और कहते हैं, बहुत में से हमने क्या लेना है? मैं तो अपने गुरु का कूकर हूं और उसको धन्य धन्य कहता हूं। इतने बड़े नानक का कूकर होना और उसको धन्य कहने की बख्शिश प्राप्त होना, यह कोई छोटी बात है।

दास ने संत बाबा शाम सिंघ जी का जीवन किताब में पढ़ा। उनकी भी रसना पर हर वक्त धन्य निरंकार, धन्य गुरु रामदास रहता था। गुरु रामदास जी को धन्य कहने के कारण, स्तुति के फलस्वरूप परमेश्वर के दरबार से गांठ जुड़ गई। एक बार कहते

हैं कि एक साल बारिश बिल्कुल न हुई, सूखा पड़ गया। समीपवर्ती गांवों से बहुत सारे लोगों का समूह संत शाम सिंघ जी के पास आकर विनती करने लगा कि कोई कृपा करवाओ तांकि हम इस प्राकृतिक कोप से बच सकें। संतों ने जब मायूस चेहरों की ओर देखा तो दया के घर में आ गए और सिरंदा पकड़कर दरबार साहिब कीर्तन के द्वारा गुरु रामदास जी के चरणों में विनती की। अपने गुरु की स्तुति में रत रहने वाले सिक्ख के हृदय में से निकली विनती के फलस्वरूप तुरंत ही बख्शिश शुरू हो गई। वह बात हो गई।

मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि॥

(अंग १२८४)

कहते हैं कि इतनी मूसलाधार बारिश हुई कि पूरे राज्य में लोगों ने सुख की सांस ली।

गुरु साहिब की वाणी द्वारा यही उपदेश देते हैं—

मेरे मन गुरु अपणा सालाहि॥

(अंग १३३४)

जिसने अपने गुरु की स्तुति कर ली, उसको अन्य कोई धार्मिक कर्मकांड करने की जरूरत नहीं। गुरु की स्तुति में सबकुछ आ जाता है। दास को एक बाबा नंद सिंघ जी के समय का जिक्र याद आ गया। एक बार संगत बैठी हुई थी और एक रागी 45 मिनट से यही पढ़ता जाए "गुरु नानक की बड़ाई— गुरु नानक की बड़ाई" में प्रमाण देकर। वहां संगत में कोई रागों का निपुण भी बैठा हुआ था। उसके मन में ख्याल आता जाए कि बाबा नंद सिंघ जी के रागियों को लगता है कि कुछ आता ही नहीं। बाबा नंद सिंघ जी अंदर की पट्टी भी पढ़ लेते थे, रागी सिंघ को इशारा किया। कीर्तन रोक दिया तो बाबा जी उस रागों के अनुभवी को बुलाकर कहने लगे, भाई तू कीर्तन सुना। मन में अहम् था कि मैं बड़े रागों का अनुभवी हूं, वह कहने लगा, बताओ कौना-सा राग सुनाऊँ। बाबा जी कहते हैं, जो भी इच्छा हो सुना दो भाई। पर मन में अहम् उछल

रहा था। वह कहने लगा, बाबा जी! मुझे तो सभी राग आते हैं, आप बताओ कौन-सा सुनना चाहते हो? (यहां अपने लिए शिक्षा लेना, ध्यान रखना कहीं किसी काम में अहम् भावना न रखना, क्योंकि जहां अहम् आ जाए, फिर परीक्षा शुरू हो जाती है) उसकी भी परीक्षा की घड़ी आ गई। फिर कहता है कि, जी आप बताओ कौन-सा राग सुनाऊँ? बाबा जी कहते हैं कि भाई जी कोई सुना दो। कहता है, आप बताओ कौन-सा सुनाऊँ? बाबा जी ने अपने गले वाला हजूरिया उतार कर बिछा दिया और कहने लगे, मान लो किसी मां का जवान पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है, विलाप कर सुनाओ। अब ऐसी परीक्षा आ गई, सुर निकाले पर सुर से गला ही न मिले। 15-20 मिनट लगा रहा पर कोई बात न बनी तो बाबा जी ने उसे सूझ प्रदान की कि प्यारे! तेरे मन में ख्याल आ रहा था कि रागी सिंघ गुरु नानक की स्तुति, गुरु नानक की प्रशंसा ही गाते जा रहे हैं, इनको अन्य कुछ आता ही नहीं लगता। कहते हैं, भाई जी ! जहां गुरु नानक की स्तुति आ गई, वहां सबकुछ आ गया। दास यहां एक बात स्पष्ट कर दे। कई शरीर बहुत सारे देवी-देवताओं, पीर-पैगम्बरों व अवतारों की आराधना करते हैं, उनका पूजन करते हैं। पूछने पर कारण यह बताते हैं कि हम इसलिए सभी की पूजा करते हैं कि कहीं कोई देवी-देवता या पीर हमसे नाराज़ न हो जाए। कहीं किसी का हम पर कोप न हो जाए। बाबा जी वचन करते थे, उससे सूझ लेना। कहते थे, पेड़ की जड़ को पानी देने से सब पत्रों को पानी स्वयं ही पहुंच जाता है। इसी तरह जिसने गुरु नानक की महिमा कर ली, गुरु नानक की स्तुति में जीवन गुज़ार दिया, मत सोचना कि उस पर कोई देवी-देवता नाराज़ हो जाएगा। गुरु नानक की स्तुति में सब की स्तुति स्वयं ही आ जाती है। यहां एक बात ध्यान में रखना कि हमने स्तुति अपने गुरु नानक की, परमेश्वर मान कर करनी है, पर मन में आदर सबके प्रति रखना है, किसी का निरादर नहीं करना। मन में यह विचार कदापि नहीं रखना कि अन्य देवी-देवता, पीर-पैगम्बर कुछ भी नहीं, बेशक मंदिर में से गुज़रो या मस्जिद, गिरजाघर से

तो आदर सबके प्रति रखना है कि यह भी प्रभु के घर हैं, क्योंकि यदि एक कदम भी किसी के प्रति निरादर वाला उठाया गया तो गुरु नानक की भी प्रसन्नता नहीं मिल सकती। इशारा समझना! दास जो गुरु की कृपा से विचार बताना चाहता है कि अपने गुरु में से ही परमेश्वर को देखना, उसका ही ध्यान करना, उसका ही जाप करना, उसकी ही स्तुति करनी है। दास कोई बात स्वयं से नहीं कर रहा, गुरु रामदास जी की वाणी की पंक्तियों में से भी यही आश्य मिलता है–

गोविंद गुण गाईऐ जीउ लाइ सतिगुरू नालि धिआनु॥

(अंग ७३४)

जिनको सतिगुरु अपनी प्रशंसा की बख्शिश प्रदान करते हैं, वे नाम धन को पाकर पोतेदार सतिगुरु पिता के खज़ाने के हकदार बन जाते हैं।

सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार॥
कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भंडार॥

(अंग १२३६)

हर रोम कर के जीभ मेरी मेरे ते कर के करंम॥
सिफत सांई दी करां मैं दम बर दम॥

(भाई नंद लाल)

यहां ही बस नहीं, इससे आगे भी बात जाती है कि हर रोम स्तुति करे। यह भी थोड़ा लगता है। कृपा कर मेरे एक-एक रोम को कोटि कोटि (करोड़ों) जिह्वाएं लगा दे, जिनसे मैं तेरी स्तुति कर सकूं, क्योंकि तेरी कृपा, तेरी बख्शिश, तेरा प्रेम ही इतना है–

दइआ करहु दइआल अपणी सिफति देहु॥

(अंग ६६१)

3. गुरु की पूजा

पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइ मलु लाई॥

(अंग ६१०)

श्रद्धा की चौथी निशानी

बहुत सारे लोग पूजा तो करते हैं, पर पूजा करने की सही विधि नहीं जानते, जिस कारण परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। पूजा से भाव है आराधना, उपासना। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि पूजा किसकी करनी चाहिए और कैसे करनी चाहिए। गुरु नानक को एक बार किसी पण्डित ने जो कि ठाकुर की पूजा करता था, कहा था कि आप भी ठाकुर की पूजा किया करो, इससे आपको मुक्ति भी प्राप्त होगी। सतिगुरु ने एक शब्द उच्चारण करके उसे समझाया कि पूजा किसकी करनी और कैसे करनी है। हम भी उस शब्द के भाव को समझकर अपने लिए शिक्षा प्राप्त करें–

तेरा नामु करी चरणाठीआ जे मनु उरसा होइ॥
करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ॥
पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ॥

(अंग ४८६)

सतिगुरु कहते हैं कि पण्डित जी, नाम का जाप किए बिना पूजा सफल नहीं होती। मन को स्थिर करके घट-घट में व्यापक परमात्मा का जाप और निष्काम कर्म करना, यही वास्तविक पूजा है। कबीर जी को पण्डितों ने कहा था कि यदि तू हिन्दू है तो हिन्दू रीति-रिवाज़ों के अनुसार पूजा किया कर और मुल्लाओं ने कहा था कि यदि तू मुसलमान है तो तू उस मज़हब मुताबिक रोज़े रखा कर, नमाज़ पढ़ा कर। कबीर जी कहते हैं कि न मैं पूजा करता हूं, न मैं नमाज़ पढ़ता हूं, मैं तो एक परमेश्वर का नाम लेकर उसको मन, हृदय द्वारा नमस्कार करता हूं, यही मेरी पूजा है, यही मेरी नमाज़ है। गुरु अर्जुन देव जी ने कबीर के इस भाव को अपनी वाणी द्वारा इस तरह प्रगट किया है–

हज काबै जाउ न तीरथ पूजा॥
एको सेवी अवरु न दूजा॥
पूजा करउ न निवाज गुजारउ॥
एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ॥

(अंग ११३६)

सामान्य रूप पर लोग कई प्रकार के साधन करके, व्रत रखकर, भूख-प्यास सहकर, कई प्रकार से शरीर को कष्ट देकर, तीर्थ-यात्रा कर, स्नान करके, समग्रियों को मलकर, धूप-दीप कर, तिलक लगाकर इत्यादि कई ढंगों से पूजा करते हैं, परन्तु जिनके मन काम, क्रोध, मोह एवं अहंकार रूपी विकारों से भरे हुए हैं, वे चाहे बाहरी प्रकार के अनेक प्रकार के ढंगों से परमेश्वर की पूजा करें, उनको परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। वास्तव में अपना मन व तन गुरु को अर्पण करना, यही गुरु की सर्वश्रेष्ठ पूजा है। वे कार्य करने जो गुरु को भले लगते हों, जिनके करने से गुरु खुश हो, यह है गुरु की सही मायने में पूजा। दास कोई बात अपने द्वारा नहीं लिख रहा, गुरबाणी में भी लिखा है—

अनिक पूजा मै बहु बिधि खोजी
सा पूजा जि हरि भावासि॥

(अंग १३०४)

शिक्षा लेना कि गुरु की बात को समझना है और समझ कर उस पर अमल करना ही गुरु की सर्वश्रेष्ठ पूजा है। महापुरुष एक दृष्टांत देकर समझाते थे कि किसी स्त्री का पति कुछ महीनों के लिए शहर से बाहर गया और वहां जा कर अपनी पत्नी को पत्र लिखता था, जिस में ज़िक्र होता था कि अमुक काम कर लेना। कुछ महीनों उपरांत जब पति वापिस घर आया और पत्नी से पूछा कि मेरे पत्रों का क्या किया। उनमें जो कुछ लिखा था तूने वह कुछ किया है कि नहीं। पत्नी कहने लगी, मैं आपका इतना आदर करती हूं कि मैं आपके भेजे पत्रों को भी प्रेम व आदर से साफ कपड़े में रखकर एकत्र करती रहीं हूं और उनकी धूप करती थी। उनमें आपका रूप देखकर, आपको याद करके रोज माथा टेकती थी। पति ने कहा, वह तो ठीक है पर यह तो बता कि उन पत्रों में मैंने जो काम लिखे थे वे भी किए हैं कि नहीं? पत्नी ने कहा, काम तो मैंने कोई नहीं किया पर आदर बहुत किया है। उन पत्रों की पूजा आपका रूप मानकर की है। अब आप स्वयं अंदाज़ा लगा लो,

क्या ऐसी पत्नी पर उसका पति खुश हुआ होगा? इसी तरह गुरु भी कहता है कि तेरे मैं निरा माथा टेकने और आदर करने का क्या करूँ यदि तूने मेरे दिए उपदेश को नहीं माना। गुरु का बाहर से आदर भी करना है, पूजा भी करनी है, माथा भी टेकना है, पर इसके साथ गुरु की वाणी को पढ़कर, उसके उपदेशों को समझकर अपने जीवन में अनुसरण भी करना है। यह पूजा है गुरु की।

एक बार पूछा था गुरु नानक साहिब ने भाई लहणा जी को, लहणा! किधर जाना है? लहणा जी के मुख से स्वाभाविक निकल गया, जी इधर जाना है। सतिगुरु साथ ही कहते हैं, लहणा! रास्ता पूछने आया है कि बताने आया है? सतिगुरु के यह वचन हृदय में तीर की तरह काम कर गए, जैसे कबीर साहिब जी की पंक्तियां हैं–

कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु॥
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु॥

(अंग १३७४)

फिर ऐसा रंग लगा, गुरु नानक साहिब की रसना से निकले प्रत्येक वचन को प्यार व भावना से माना। यदि गुरु साहिब ने कहा कीचड़ में से कटोरा निकाल कर लाओ, बिना किसी संकोच के निकाला। यदि सतिगुरु ने कहा, मृत चुहिया उठाकर बाहर फैंक आओ, भीतर कोई संकोच नहीं किया। इतनी अंदर भावना कि यदि सतिगुरु ने कहा, पेड़ को हिलाकर संगत में मिठाई वितरित करो। भाग्य भी भावना को लगते हैं। पूरा खेल ही भावना का है। कुछ लोगों ने मज़ाक भी किया कि कभी पेड़ों से मिठाई भी गिरती है। पर लहणा जी गुरु नानक के असली व सच्चे उपासक थे, अपने गुरु को परमेश्वर मानकर पूजा करते थे। वह परमेश्वर जिसके हुक्म में सब कुछ है, सृष्टि का पत्र पत्र क्या, हर कण उसके हुक्म में है, वह जो चाहे कर सकता है। पूरी भावना से लहणा जी ने पेड़ को हिलाया और इतिहास लिखता है कि सचमुच ही पेड़ से मिठाई गिरी और उसको संगत में वितरित किया। इशारा लेना।

दास गुरु की कृपा से कहता है कि अपने गुरु की परमेश्वर मानकर पूजा करना और उसके हर वचन को आदरपूर्वक मानना, यही गुरु की असली पूजा है। एक ऐतिहासिक कथा में से भी यही शिक्षा मिलती है।

गुरु नानक साहिब नित्य सुबह भाई लहणा जी को साथ लेकर नदी में खड़े होकर बंदगी करते थे (अपने आत्मस्वरूप में लीन होते थे) और लहणा जी को नदी के किनारे अपने वस्त्रों के पास खड़ा कर देते थे। एक बार सर्दियों के दिन थे, गुरु नानक साहिब नित्य की तरह केतु नदी में खड़े होकर आत्मस्वरूप में लीन थे तो भाई लहणा जी ने सोचा कि मैं यहां वस्त्रों के पास अकारण ही खड़ा हूं, क्यों न मैं भी पानी में खड़ा होकर थोड़ी देर बंदगी कर लूं। यह सोचकर अपने वस्त्र उतारकर लहणा जी भी पानी में खड़े हो गए। जब सतिगुरु जी काफी देर बाद नदी में से बाहर आए तो अन्तर्यामी सतिगुरु जी ने लहणा जी से पूछा कि तू जल में खड़ा होकर बंदगी करने गया था, भक्ति करने गया था, फिर क्यों नहीं की, एक पल में ही बाहर क्यों आ गया? लहणा जी ने विनती की, सच्चे पातशाह! पानी बहुत ठण्डा था। अब गुरु नानक जी ने लहणा जी को जो वचन किया, उससे सीख लेना। इशारा लेना। सतिगुरु ने कहा, तुझे हमने वस्त्रों के पास खड़ा किया था, तूं वहां खड़ा रह, तेरे लिए यही भक्ति है, यही पूजा है। तेरी भक्ति इसमें ही है कि तू हुक्म मान, गुरु के वचन को मानना, यही सिक्ख की भक्ति है, यही पूजा है।

4. गुरु की सेवा

गुरु-घर में सर्व तपों से शिरोमणि तप सेवा है गुरु की सेवा। परमेश्वर की प्राप्ति के लिए नाम जपने के साथ-साथ सेवा करना अत्यावश्यक है। जिस पक्षी के दोनों पंख हों, वह आकाश में उड़ सकता है। एक पंख वाला पक्षी आकाश में उड़ नहीं सकता। इसी तरह जिसके जीवन में निरा सिमरन है, सेवा नहीं तो भी बात नहीं बनती। सेवा सिमरन दोनों आ जाएं, फिर आनंद ही आनंद है।

श्रद्धा की चौथी निशानी

एक बार कोई रागी सिंघ कीर्तन कर रहे थे और धारणा पढ़ रहे थे–

पखा फेरां पानी ढोवां तेरीआं संगतां दा

बाबा नंद सिंघ जी ने इशारा करके कीर्तन रोक दिया और पूछने लगे कि जो पढ़ रहे हो कभी किया भी है। उनके सिर झुक गए। बाबा जी ने कहा, साज छोड़ दो और पहले पानी ढोने और पंखा करने की कुछ दिन सेवा करो। फिर यह पंक्ति पढ़ना। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में असंख्य ऐसी पंक्तियां हैं, जिनके द्वारा हमें सीख मिलती है कि सेवा करना अत्यावश्यक है, सेवा करने से मनवांछित फल प्राप्त होते हैं–

सतिगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाए॥

(अंग ३१)

गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ॥

(अंग ६५१)

कबीर जी तो अपने एक श्लोक द्वारा इतनी सख्ती करते हैं, यहां तक कहते हैं कि जिस घर में संतों-साधुओं की या गुरु की सेवा नहीं, वह भूतों के समान है।

कबीर जा घर साध न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि॥
ते घर मरहट सारखे भूत बसहि तिन माहि॥

(अंग १३७४)

बाबा जी के वचन हैं कि अपने पूर्व शुभ कर्मों के कारण सत्संग की प्राप्ति होती है और सत्संग में जाकर प्रेम से सेवा करें तो पुण्य में वृद्धि होती है। गोद भरती है, भक्ति का उत्साह मिलता है। सेवा मन को विनम्र करती है और विनम्रता मन की मैल धोती है। इससे मन नाम के निवास के लिए तैयार हो जाता है। एक बार आनंदपुर साहिब में किले की सेवा चल रही थी। एक साधु गुरु तेग बहादुर साहिब जी के दर्शनों की इच्छा से आया और मन में ख्याल आ गया कि गुरु साहिब को क्या जरूरत है सेवा के कार्य करवाने की,

उनको तो चाहिए की बैठकर भक्ति करें। गुरु तेग बहादुर साहिब जी घट घट की जानने वाले, उन्होंने एक सिक्ख को वचन किया कि उन संतों को भोजन पानी करवाकर आराम के लिए कमरा दो। कहो कि दर्शन सायंकाल को होंगे। वह संत-महापुरुष जब आराम करने लगे तो उनको नींद आ गई और एक सपना देखा कि एक जंगल में एक राही चला जा रहा था। अचानक बहुत तेज़ वर्षा शुरू हो गई, वहां निकट ही एक गुफा में घुस गया। वह गुफ़ा शेर की थी और शेर उस समय अपनी गुफा में वापिस आ गया, पर अभी भीतर घुसने ही लगा था कि उसने गुफा में एक आदमी देखा। आदमी को देखकर शेर के मन में ख्याल आया कि शिकार स्वयं ही मेरी गुफ़ा में आ गया है। इसे मारकर अपनी पेट की भूख मिटाता हूं, पर साथ ही ख्याल आया कि यह आदमी मेरी गुफा में आया है, इसलिए मेरा यह अतिथि है। अतिथि की सेवा करना मेरा फर्ज़ है और यदि मैं अपनी गुफा के भीतर गया तो वह आदमी मुझे देखकर डरकर बाहर को भागेगा तो बाहर इतनी तेज़ वर्षा और ओलावृष्टि के कारण मर जाएगा। इस नेक सोच के कारण ही वह उस आदमी की सेवा करने के विचार से स्वयं पूरी रात गुफा के बाहर ही बैठा रहा तांकि उस मुसाफिर की रात आरामपूर्वक व्यतीत हो सके। बाहर ओलावृष्टि बहुत तेज़ पड़ रही थी। वर्षा, ओलावृष्टि व ठण्ड के कारण शेर मृत्यु को प्राप्त हो गया और उस शेर की आत्मा को देवते लेने आए। धर्मराज ने वचन किया कि इसे दरगाह में पूरा आदर दिया जाए।

वह साधु यह सपना देख रहा था कि गुरु साहिब ने अपने सिक्ख को भेजकर उसे बुलावा भेजा। जब उसने आकर गुरु साहिब के चरणों में माथा टेका तो सतिगुरु मुस्कुरा कर कहते हैं, अपने प्रश्न का, जो अपने मन में ख्याल आ रहा था, उसका उत्तर मिल गया है कि नहीं? जो सपना देखा है। उससे कोई सूझ मिली है कि नहीं? वह साधु कहने लगा, मैं कुछ समझा नहीं? सतिगुरु ने कहा, संत जी! उस शेर ने सिर्फ एक रात एक इन्सान की सेवा की, एक मुसाफिर की सेवा, खातिरदारी के लिए उसको अपनी

गुफा आराम करने के लिए दी और स्वयं ओलावृष्टि की मार सह ली। उस एक रात एक मुसाफिर की सेवा के फलस्वरूप उस शेर को दरगाह में आदर मिला।

सतिगुरु ने कहा, यह जो सेवा के कार्य हम करवा रहे हैं, ईटें लगवा रहे हैं, सराय बना रहे हैं, छबीलें बनवा रहे हैं, यह सब सेवा संगतों का पुण्य बढ़ाने के लिए करवा रहे हैं।

यह वचन सुनते ही उस साधु की पूरी शंका दूर हो गई और वह चरणों में नतमस्तक हो गया।

एक बार भाई जग्गा ने गुरु अमरदास जी को विनती की थी कि सतिगुरु ! मुझे एक जोगी कहता है कि तू घर-गृहस्थी त्याग कर मुझसे उपदेश ले, फिर तेरा कल्याण करेगा। पर सतिगुरु! आप कृपा करके बताओ, परमेश्वर की प्राप्ति कैसे हो सकती है? संसार-सागर से क्योंकर पार हुआ जा सकता है? सतिगुरु ने उसकी शंका निवृत्त करने के लिए कहा, यदि घर-गृहस्थी का त्याग करने से रब मिलता है तो यह जोगी साधु घर-घर आकर क्यों मांगता फिरता रहे। सतिगुरु ने जो भाई जग्गे को उपदेश दिया, उससे इशारा लेना, अपने लिए सीख लेना। सतिगुरु ने कहा, गृहस्थ धर्म सर्वोत्तम है। यदि गृहस्थी नेक कमाई करे, शुभ कर्म करे और उस कमाई में से जहां स्वयं खाए, साथ ही साधु-संतों की तथा दुनिया की सेवा करे। जरूरतमंदों की मदद करे और मन से परमेश्वर की भक्ति करे। इस तरह सेवा सिमरन करने से जीव को परमेश्वर की प्राप्ति होती है। पुण्य में वृद्धि होती है और जीव का कल्याण होता है और सहज ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है।

दरअसल सुख तो सेवा में ही है।

गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि॥

(अंग ५४८)

महापुरुषों के वचन अनुसार सेवा भी विभिन्न प्रकार की होती है एक तो सेवा है सतिगुरु की सेवा, गुरु के चरणों की सेवा, गुरु

को चंवर करने की सेवा, दूसरी है गुरु साहिब के स्थानों की सेवा, वहां जाकर बर्तन मांजने की सेवा, झाड़ू की सेवा, लंगर बनाने-बांटने की सेवा, गुरु की संगत की सेवा, संगत के जोड़े झाड़ने की सेवा। जिसकी आंख खुल जाए, वह गुरु की संगत की सेवा भी गुरु की सेवा समझ कर करता है। गुरु की संगत के जोडे झाड़ता है और यह नहीं कहता कि यह किसी महिला का जोड़ा है, बल्कि मन में यह भावना बनाता है कि पता नहीं यह माता कौलां जी का जोड़ा है या माता गंगा जी का। यदि किसी बच्चे का जोड़ा हो तो वृत्ति बनाता है कि वह साहिबजादा अजीत सिंघ जी का जोड़ा साफ कर रहा है या साहिबजादा जोरावर सिंघ का। यदि किसी भाई का जोड़ा हो तो उसमें से बाबा बुड्ढा जी के, भाई शालो जी के, भाई बिधि चंद जी के और अन्य गुरु के लाडले सिक्खों के जोड़ों के दर्शन करता है।

एक भाई जैता हुआ है। पटना में जिसकी हलवाई की दुकान थी। बड़ा रंगा हुआ और प्रेम-भावना वाला सिक्ख था। संगत की, गुरु के सिक्खों की सेवा गुरु की सेवा मानकर करता था। उसने अपना एक नियम बनाया हुआ था कि सुबह अपनी दुकान शुरु करने से पूर्व पांच पूरियां एक गुरु के सिक्ख के नाम की निकालता था और गुरु सिक्ख के दर्शन होने पर उसको विनती करके बड़े प्रेम से उसको गुरु का रूप मानकर खिलाता था और यदि किसी सिक्ख ने कहना कि मुझे भूख नहीं तो कहता मैं यह तेरे नाम की पूरियां किसी गरीब को खिला दूंगा। यह है बारीकी गुरसिक्ख की, यह है प्रेम-भावना, गुरु के सिक्ख की अपने गुरु के प्रति और उनकी हमारे लिए मिसाल।

गुरु साहिब के, महापुरुषों के जीवन से भी सेवा की मिसाल प्राप्त होती है। भाई लहणा जी ने अमीर घर में अवतार लिया। सुख में जीवन व्यतीत करने वाले, नौकरों पर हुक्म करने वाले पर अपने गुरु, गुरु नानक साहिब की छोटी से छोटी सेवा करके सेवा करने की मिसाल कायम की। यदि गुरु साहिब ने अर्धरात्रि को कहा कि दरिया पर जाकर कपड़े धोकर लाओ तो उसी समय कपड़े उठाकर

धोने चले गए। यदि अत्यंत सर्दियों की रात्रि को धर्मशाला की दीवार ध्वस्त हो गई तो सतिगुरु ने हुक्म किया कि रातो-रात उस दीवार को बना दो तो तुरन्त मिट्टी गारे से दीवार को बनाना शुरु कर दिया। यदि गुरु साहिब ने कीचड़ से भरी घास का गट्ठर सिर उठाने को कहा तो वह भी उठाई। रेशमी कपड़ों के खराब होने की कोई परवाह नहीं की। यदि गुरु अमरदास जी की सेवा की ओर देखा जाए तो 72 वर्ष की आयु, पर नित्य गोइंदवाल से अर्धरात्रि के समय खडूर साहिब से जल की गागर भर कर लाना अपने मुरशद, अपने मालिक गुरु अंगद साहिब के स्नान के लिए। लाना भी नंगे पांव और चलना भी उलटे पैर कि कहीं गुरु की तरफ पीठ न हो। जहां मोड़ आना, वहां सीधे होकर चलना पड़ता था और पहले खड़े होकर अरदास करके सुरति से, क्षमा याचना करना कि सतिगुरु यहां आप जी की ओर पीठ हो रही है। यहां ही बस नहीं, गागर को ज़मीन पर नहीं थे रखते, सिर पर रखकर दरिया ब्यास में कपड़ों सहित उतर जाना और गागर भरकर उसी तरह भीगे ही खडूर साहिब की ओर चल देना। फिर कोई कुछ दिन या सप्ताह भर नहीं, पूरे 12 वर्ष लगातार, एक भी अवकाश नहीं आने दिया।

यदि महापुरुषों के जीवन की ओर दृष्टि की जाए तो बाबा ईशर सिंघ जी ने अपने मुरशद बाबा नंद सिंघ जी की इतनी कठिन सेवा की, जिसकी मिसाल कहीं नहीं। हर वक्त सेवा में जुटे रहते थे। अपने शरीर की होश भी नहीं रहती थी। चरणों में जोडे तक नहीं डालते थे। सर्वदा सेवा में तत्पर रहते थे। जब बाबा जी नितनेम में होते थे तो बाबा जी के दरवाजे के सम्मुख ही बैठे रहते थे कि कहीं आवाज़ न पड़ जाए। जब भी बाबा जी ने आवाज़ देना इतनी शीघ्रता से भागना कि कई बार सिर का माथा दीवार में या खंबे में ही जा लगना, पर कोई परवाह न करना। इतनी सेवा की कि अंगुलियों के नाखुन गलकर उखड़ गए थे। एक बार बाबा नंद सिंघ जी पहाड़ी खाई में विराजमान होकर भक्ति कर रहे थे कि अकस्मात ही बहुत तेज़ी से ओलावृष्टि शुरू हो गई। बाबा ईशर सिंघ जी ने तुरंत झुककर अपना शरीर बाबा जी पर इस तरीके

से कर दिया कि ओलावृष्टि अपनी पीठ पर सह ली। दरअसल सेवक वही है जो अपने शारीरिक सुख की परवाह किए बिना सेवा निभाए।

यदि संत बाबा शाम सिंघ जी का जीवन पढ़ा जाए तो नित्य हरिमंदिर साहिब परिक्रमा में प्रेमपूर्वक झाड़ू की सेवा करना, साथ ही हाथ में खुरपी रखना, जिससे जहां जहां बीठें होनी, हाथ से उसे उठाना। आप जी वचन करते थे कि दरबार साहिब की सेवा, गुरु रामदास जी के शरीर की सेवा है। यह सब उनका पावन शरीर है। इसके अलावा अपने डेरे से प्रसाद तैयार करवा कर स्वयं अपने सिर पर टोकरियां उठाकर दरबार साहिब लेकर आना और परिक्रमा में संगतों को खिलाना। लंगर बांट कर छबील पर संगतों के जूठे बर्तन मांज कर खुशियां प्राप्त करना। भाई शालो जी कितनी ऊँची अवस्था के मालिक, अपने हाथों से परिक्रमा में झाड़ू की सेवा करते थे। बाबा दीप सिंघ जी लंगर घर में अपने हाथों से संगत के जूठे बर्तन मांजते थे। हमारे लिए आदर्श बने हैं। बाबा जी लंगर में बर्तन मांजते समय साथ ही साथ वाहिगुरु सिमरन में लीन रहते थे। आप जी सेवा-सिमरन में इतने लीन होते थे कि एक बार सेवा के दौरान गुरु गोबिंद सिंघ जी आप जी के पास आकर कितनी देर खड़े रहे, पर उनको पता ही न चला। कुछ समय पश्चात् जब अचानक ध्यान पड़ा तो सतिगुरु के चरणों पर शीश निवा कर ध्यान न पड़ने की क्षमा मांगी। गुरु साहिब ने कहा, हमें आपको इस तरह सेवा-सिमरन में लीन देख कर अपार प्रसन्नता हुई है। मैं अपने सिक्खों से यही चाहता हूं कि वे सेवा करते सिमरन में इतना लीन हो जाएं कि कोई होश न रहे।

दूसरी प्रकार की सेवा है उस कर्ता की बनाई हुई दुनिया के लोगों की सेवा। उस वाहिगुरु परमपिता परमेश्वर को सर्वव्यापक मानकर जगत की सेवा, बच्चों की, माता-पिता की सेवा। सब में गुरु को व्याप्त मानकर, गुरु के नमित पूरी सेवा करना। उस परमेश्वर के नमित दया करना, गरीबों, अनाथों, रोगियों, दुनिया की सेवा, यही गुरु घर में मान्य है। जो इनकी सेवा करता है, गुरु

साहिब स्वयं दरगाह में उसको गले लगाते हैं। सिक्ख चिंतनानुसार परोपकार व निस्वार्थ किए कामों का नाम सेवा है। अपना बिगाड़ कर भी दूसरों का संवारना, यह सेवा है। सेवा स्वार्थ का त्याग और तन, मन, धन की कुर्बानी मांगता है। गुरु नानक साहिब ने ऐसा सिक्खी का मार्ग बनाया, ऐसी सड़क बनाई सेवा की, दया की कि जिनके हृदय में सेवा भाव नहीं था, उनको वचन किया 'बसते रहो' और जिनके भीतर सेवा भाव था, उनके लिए वचन किया, 'उजड़ जाओ'। मरदाना ने बड़े चकित होकर पूछा, सतिगुरु! यह क्या लीला? सतिगुरु ने कहा, जिनके भीतर सेवा भाव नहीं वे गंदगी के ढेर की मानिंद हैं और गंदगी को एक स्थान पर ढक देना चाहिए, क्योंकि वे जहां भी जाएंगे, बदबू फैलाएंगे। इसलिए उनको वही बसते रहने का वचन किया और जिनके भीतर सेवा भाव था, दया थी, उनको कहा 'उजड़ जाओ' तांकि उनकी खुशबू फैले। वे जहां भी जाएंगे उनके गुणों की महक दूसरों पर पहुंचेगी अन्यों को भी सेवा व दया जैसे शुभ गुणों की प्रेरणा मिलेगी।

गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय भी जब भाई सुजाने ने गुरु साहिब जी के चरणों में विनती की कि मैं अपना शेष जीवन आप जी के लिए जीना चाहता हूं, कृपा करो मुझे कोई सेवा दीजिए। सतिगुरु की मौज! कोई सीख देना चाहते थे आने वाले जगत को, मिसाल कायम की। सतिगुरु ने पूछा-कौन-सा काम जानते हो ? जब उसने कहा—जी हकीम का काम जानता हूं तो सतिगुरु ने भाई सुजाना को कहा कि यहां आनंदपुर से 50-60 किलोमीटर दूर एक दुकान खोल ले हकीमी की और वहां बैठकर जरूरतमंद यात्रियों की मरहम पट्टी दवा-दारू किया कर। उसने पुनः विनती की, सतिगुरु जी ! मैंने तो सोचा था कि कोई आपके चरणों में सेवा मिल जाए, कोई आपके स्नान की या चरण दबाने की। सतिगुरु ने कहा, सुजान ! तूने यही सेवा निभानी है। आने जाने वाले यात्रियों को जलपान, मरहम-पट्टी और उनको दवा-दारू करना भाव कि गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने भी दुनिया की सेवा जरूरतमंदों की सेवा हेतु मिसाल कायम की।

भगवान श्रीकृष्ण के इतिहास का अध्ययन किया जाए तो उसमें से भी ऐतिहासिक वार्ता मिलती है, जिससे पता लगता है कि उन्होंने दुखियारे जरूरतमंदों की, दुखियों की सेवा के लिए प्रेरणा पैदा की। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो कोई भूखे को भोजन करवाता है वह मुझे पहुंचता है। एक बार द्वारिका में एक वृद्धा ने भगवान श्रीकृष्ण को अपने घर भोजन करने की विनती की। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा, आप भोजन तैयार करो हम खाने के लिए आएंगे। वह वृद्धा भोजन तैयार कर श्रीकृष्ण का इन्तज़ार करने लगी। इंतज़ार कर ही रही थी कि किसी ने उसका दरवाजा खटखटाया। वृद्धा ने देखा कि दरवाजा खटखटाने वाला एक भिखारी था जो लंगड़ा व भूख से व्याकुल था। उस भिखारी ने वृद्धा के आगे भोजन के लिए आग्रह किया पर उस वृद्धा ने इन्कार कर दिया और कहा, मैंने भगवान श्रीकृष्ण के लिए भोजन तैयार किया है। भिखारी ने बहुत विनती की, गिड़गिड़ाया परन्तु उस वृद्धा ने भोजन न दिया और दरवाजा बंद कर दिया।

थोड़ी देर बाद पुनः दरवाजा खटका। वृद्धा ने सोचा अवश्य भगवान श्रीकृष्ण आए होंगे। जब उसने दरवाजा खोला तो देखा कि दरवाजा खटखटाने वाला भगवान नहीं बल्कि एक गरीब बेसहारा औरत थी, जिसने एक छोटा-सा मासूम बच्चा उठाया हुआ था जिसके तन पर कपड़े भी नहीं थे। उस औरत ने हाथ जोड़कर उस वृद्धा से प्रार्थना की कि मेरा बच्चा भूखा है, कृपा करके उस मासूम बच्चे पर तरस करके थोड़ा-सा इसके लिए दूध दे दो, कहीं यह छोटा बच्चा भूख बर्दाशत न करने के कारण मृत्यु को प्राप्त न हो जाए। उस वृद्धा के हृदय में ज़रा भी दया नहीं आई और दूध देने से इन्कार कर दिया। अब माई दिन भर श्रीकृष्ण को भोजन करवाने के लिए इन्तजार करती रही, पर वह न आए। पूरा दिन बीत गया। फिर वह खुद गई श्रीकृष्ण के पास और विनती की भगवान! आप मुझे वायदा करके आए नहीं। अब जो भगवान श्रीकृष्ण ने उस वृद्धा को वचन किए, उससे सीख मिलती है कि दुनिया के लोगों की, जरूरतमंदों की सेवा भी परमेश्वर की सेवा है, क्योंकि सबमें उस

परमेश्वर की ज्योति, परमेश्वर का अंश है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा, मैं दो बार तेरे घर गया था, पहले भिखारी के रूप में जो काम करने में असमर्थ था और दूसरी बार भूखे नग्न बच्चे के रूप में, पर तुझे उनमें मेरा रूप नज़र नहीं आया और तूने खाली हाथ भेज दिया। यदि तू उनको खिला देती तो वह भी मुझे ही पहुंचना था। उनका पेट भरने से तुझे मेरी खुशी प्राप्त होनी थी, मैंने तृप्त हो जाना था। महात्मा बुद्ध कहते थे कि यदि कोई मेरी सेवा करनी चाहे, किसी रोगी की, गरीब की सेवा कर ले, इसमें मेरी सेवा ही है।

दास ने गुरु नानक साहिब की एक साखी पढ़ी, पढ़कर दंग रह गया कि गुरु नानक साहिब ने इन्सानों पर तो क्या, उस परमेश्वर के पैदा किए जीव-जन्तुओं, जानवरों पर भी दया करने की मिसाल कायम की है। एक बार गुरु नानक साहिब को किसी जुलाहे ने गलीचा भेंट किया और विनती की, सतिगुरु ! यह गलीचा, आप जी के लिए बुनकर लाया हूं, कृपा करो, यह गलीचा अपने नीचे बिछा लो। सतिगुरु ने कहा, यह जो परमेश्वर ने धरती का गलीचा बिछाया है, हमारे लिए यही ठीक है, वह सामने कुतिया है, वह नित्य सर्दी से ठिठुरती है, तू यह गलीचा उस पर डाल दे और उसको रोज़ चूरी खिलाया कर, तेरी जो भी कामना है, वह पूरी होगी। उस जुलाहे ने कहा, मेरे घर औलाद नहीं। सतिगुरु ने कहा, गरीब दुखियारों की सेवा करने से तेरी इच्छा पूरी होगी।

गुरु हरिगोबिंद साहिब जी भी नित्य रोटी के अपने हाथों से छोटे-छोटे टुकड़े करके पक्षियों को डालते थे। जिसकी आंख खुल जाए, वह जरूरतमंदों, गरीबों, दुखियों की सेवा गुरु की सेवा समझ कर करता है। भाई घनईया जी का जीवन पढ़ो, आंख खुल चुकी थी। कितनी उच्चावस्था बन गई थी। जब गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय धर्मयुद्ध के दौर आरम्भ हुए तो आप जी युद्ध के दौरान सिपाहियों को पानी पिलाने की सेवा करते थे। मशक उठाकर हर सिपाही के पास जाकर बिना किसी भेदभाव के, चाहे वह हिन्दु हो या मुसलमान, सबको पानी पिलाना, गुरु साहिब के पास किसी ने शिकायत कर दी कि सतिगुरु ! हम दुश्मनों को, मुसलमानों को

युद्धभूमि में मारते हैं और भाई घनईया जी उनको पानी पिलाकर पुनर्जीवित कर देते हैं। सतिगुरु तो अन्तर्यामी थे, दिल की जानने वाले थे, पर मिसाल कायम करने के लिए और अपने सिक्ख की बड़ाई प्रगट करने के लिए कौतुक रचा। सिक्खों को कहा कि बुलाकर लाओ भाई घनईया को। जब भाई घनईया जी आए तो सतिगुरु ने कहा, सभी सिंघ तेरी शिकायत कर रहे हैं कि तू दुश्मनों को पानी पिलाता है। भाई घनईया जी नतमस्तक हो गए और विनती की कि सतिगुरु! मैंने तो किसी दुश्मन को पानी नहीं पिलाया तो गुरु जी ने कहा, फिर किसे पिलाते हो? क्या यह सभी सिक्ख झूठ बोल रहे हैं? यह कहते हैं कि तुम तुर्कों को, पहाड़ियों को पानी पिलाते हो। सभी पास खड़े सिक्खों की हैरानी की उस वक्त कोई सीमा न रही जब भाई घनईया जी ने यह कहा कि सतिगुरु ! मैंने तो सिक्ख को भी पानी नहीं पिलाया। सतिगुरु ने कहा कि यदि तुम सिक्खों को भी पानी नहीं पिलाते, तुर्कों को भी नहीं पिलाते? पहाड़ियों को भी नहीं पिलाते, दुश्मनों को भी नहीं पिलाते तो फिर किसको पिलाते हो? क्या यह समस्त सिक्ख झूठ बोल रहे हैं? भाई घनईया जी ने प्रेम में भीगकर नम्रतापूर्वक कहा, हे सच्चे पातशाह! मैं तो आप जी को पानी पिलाता हूं। क्या तुर्क, क्या पहाड़िया, क्या सिक्ख मुझे तो आप जी की कृपा से सबमें आप का ही नूर नजर आता है। जब भी कोई पानी मांगता है, मुझे तो यही लगता है कि सतिगुरु! आप पानी मांग रहे हो। मैं तो आप जी को पानी पिलाता हूं। किसी कवि ने इस तरह लिखा है—

तैनूं पिआ पिलावां पानी मेरे सिर दे सांई।
तुर्क अतुर्क न दिसदा मैंनू तू ही दिसदा सभनी थाईं।

सतिगुरु भाई घनईया जी पर इतने प्रसन्न हुए कि उसे अपने गले से लगा लिया और कहा, तू धन्य है और धन्य है तेरी कमाई। साथ ही वचन किया कि भाई घनईया जी, मरहम की डिबिया और पट्टी भी ले लो, जहां घायलों को पानी पिलाते हो वहां उसके घावों पर मरहम पट्टी भी किया करो।

दुखियों जरूरतमंदों की सेवा की मिसाल गुरु अर्जुन देव जी

ने कायम की। गुरु अर्जुन देव जी स्वयं हाथों से कुष्ठियों की सेवा करते थे।

अब हमने यह विचार गुरु साहिब की कृपा से कर लिया है कि सेवा दिल से करनी है और सेवा किसकी करनी है, पर अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि परमात्मा की खुशी प्राप्त हो जाए, हमारी सेवा सफल हो जाए।

वाणी की पंक्तियां हैं–

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ॥

(अंग २६)

वाणी की इन पंक्तियों से स्पष्ट हो रहा है कि सेवा करने से दरगाह में स्थान मिलता है। अब यहां एक बात की ओर गौर कीजिए, सेवा करने व कमाने में बहुत अन्तर है। अब आप स्वयं ही देख लो कि सेवा तो बहुत सारी दुनिया करती है तन की, धन की, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की भी, गुरु की संगतों की भी और जरूरतमंदों दुखियों की भी, पर पास युक्ति न होने के कारण, सेवा कमाना किस तरह है। यह सूझ न होने के कारण बात टिकाने नहीं लगती। कई कह देते हैं कि हमें इतने वर्ष हो गए सेवा करते पर हमें तो मिला कुछ नहीं या हमने जिस मनोरथ के लिए सेवा की थी, हमें वह फल मिला ही नहीं। एक बात मानना, घर में कोई पौधा लगाओ तो वह पहले फलता फूलता है, फिर फल देता है, इसी तरह आपने भी किसी की सेवा का पौधा लगाया तो फिर उतावले मत होना, फल अवश्य मिलेगा पर इसके लिए अत्यावश्यक है कि सेवा का पौधा लगाने का ढंग सीख लें। सेवा करने की युक्तियों को समझ लें तांकि हमारी की हुई सेवा पर गुरु साहिब प्रसन्न हो जाएं, क्योंकि सफलता तो तभी मिलनी है जब गुरु साहिब प्रसन्न हो गए–

सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मंने॥
जा सतिगुर का मनु मंनिआ ता पाप कसंमल भंने॥

(अंग ३१४)

यदि हमारी सेवा पर गुरु साहिब प्रसन्न हो गए, फिर कोई घाटा नहीं। फिर तो छोटे क्या, बड़े-बड़े वज्र पाप भी वे अपनी कृपा-दृष्टि से क्षण में धो देंगे। बात तो गुरु को मनाने की है, उसको प्रसन्न करने की है। अब दास गुरु की कृपा से कुछ विचार लिखकर व्यक्त कर रहा है कि सेवा किस तरीके से की जाए कि गुरु साहिब की प्रसन्नता हम पर हो जाए। सर्वप्रथम आवश्यक बात है कि सेवा में प्रेम हो, प्यार हो। सेवा चाहे तन की हो, चाहे मन की हो, चाहे धन की हो, यदि आपकी सेवा में प्रेम का रंग है तो नम्बर ले जाओगे। प्रेम बहुत बड़ा वरदान है, जिसको गुरु साहिब खुश होकर प्रदान कर दें। प्रेम का भाव है वृत्ति का गोबिन्दमयी हो जाना। किसी मन्दिर का निर्माण हो रहा था, कुछ मज़दूर पत्थर तोड़ रहे थे, गर्मियों के दिन थे। कोई महापुरुष उधर से गुजरे और एक मजदूर को पूछा— क्या कर रहे हो? वह कहने लगा, रब ने मेरे कर्म ऐसे बनाए हैं, पत्थरों से सिर खपा रहा हूं। एक अन्य मज़दूर को पूछा, तुम क्या कर रहे हो ? उसने भी कहा कि पापी पेट की खातिर, जीविका की खातिर पत्थरों से सिर खपा रहा हूं। अब पास ही एक मजदूर था जिसकी वृत्ति गोबिंदमयी थी। जब महापुरुष ने उससे पूछा तो वह कहता है कि मन्दिर का निर्माण हो रहा है और मैं शुक्र करता हूं कि इतनी बड़ी सेवा में मेरा योगदान भी आ रहा है, मैं कितना भाग्यशाली हूं कि परमेश्वर मुझ से इतनी बड़ी सेवा ले रहा है।

इशारा लेना, काम एक ही है, पर कोई खीझकर कर रहा है कि रब ने मेरा दुर्भाग्य लिखा है, पर जिसकी वृत्ति गोबिन्दमयी है, जो परमेश्वर के प्रेम के रंग में रंगा हुआ है, वह अपने भाग्य की सराहना कर रहा है।

एक जगह किसी गुरुद्वारे पत्थर की सेवा संगत ने करवाई। मिस्त्री को जब पूछा गया कि काम दिहाड़ी पर करोगे कि ठेके पर तो वह कहने लगा, ठेके पर करवा लो। दास ने विनती की कि काम चाहे ठेके पर करो, पर हमें सफाई पूरी चाहिए। गुरु-घर का कार्य है, काम सुन्दर होना चाहिए। अब महीना दो महीने काम ठीक

चलता रहा पर दो महीने के बाद उसने जल्दबाज़ी कर दी तांकि काम शीघ्रातिशीघ्र खत्म किया जाए। फिर उस मिस्त्री को बुलाकर विनती की कि आप केवल माया को न देखो, यह ब्रह्मज्ञानी के घर का काम है, इसे ऐसे प्रेम में भीगकर करो, सुन्दर करो। उनकी खुशी आपको प्राप्त होगी और आपको बरकत मिलेगी। इतनी बात है।

एक बार बाबा खड़क सिंघ जी ने कुछ सेवादारों को, संगतों को कहा कि अमुक स्थान पर रेत लाओ। 100 ट्राली रेत की आ गई। पीपल तक ढेर लग गया। जब बाबा जी ने हाथ लगाकर देखा तो समझ गए इसमें मिट्टी है। बाबा जी ने कहा कि इस रेत का बिल्डिंग के लिए इस्तेमाल नहीं करना। इसकी ज़मीन पर भरती डाल दो। सभी कहने लगे, महापुरुष जी ! एक सप्ताह हो गया है हमें रेत ढोते और आपने एक मिनट में कह दिया कि इसे इस्तेमाल नहीं करना। महापुरुष ने कहा कि यह बाबा दीप सिंघ जी के घर की सेवा है। यदि गुरु के दर की सेवा को गोबिन्दमयी वृत्ति से न किया तो फिर क्या मज़ा आया। कोई भी सेवा हो, गोबिन्दमयी वृत्ति से, प्रेम से करने से गुरु की खुशी प्राप्त होती है।

गुरु अर्जुन साहिब जी के समय भाई बहलो की सेवा से सीख ली जाए। जब हरिमन्दिर साहिब के पौड़ों की सेवा चल रही थी, गुरु साहिब ने एक बाही को पूरा करने की जिम्मेदारी भाई बहलो को सौंपी थी। अब भाई बहलो ने प्रेम रंग में भीगकर गोबिन्दमयी वृत्ति से बाही की सेवा की। लोगों को पूछा कि ईंट लाल व बढ़िया कैसे निकलेगी ? यदि व्यंग्य से उसको यह कह दिया लोगों ने कि यदि गलियों का कचरा इकट्ठा करके भट्ठी में डालोगे तो ईंट बहुत बढ़िया निकलेगी तो उसने वह भी किया क्योंकि भोला-भाला था, लोग मज़ाक करते थे पर उसके मन को एक ही चाव था कि गुरु साहिब देखकर प्रसन्न हो जाएं। दूसरी और मसंद भी थे, जिनको दूसरी बाहियों की सेवा सतिगुरु ने प्रदान की थी, पर उनकी वृत्ति गोबिन्दमयी नहीं थी। उन्होंने मन लगाकर काम न किया। फिर परिणाम क्या निकला, भाई बहलो की सेवा से प्रसन्न होकर गुरु साहिब ने वचन कर दिया "भाई बहलो सब तो पहलो।" गुरु साहिब

ने कहा कि आया तो बड़ी देर से था, पर तूने इतने प्रेम में भीगकर सेवा निभाई है कि हम तुझ पर बहुत खुश हैं क्योंकि बात सिर्फ ईंटों के लाल निकलने की नहीं थी बल्कि उसकी भावना की थी कि उसको यदि गुरु-घर की सेवा के लिए गलियों का कचरा भी उठाना पड़ा तो उसने वह भी खुशी से उठाया।

इशारा समझना कि आपकी जिन्दगी में कोई भी सेवा हो, उसमें प्रेम अवश्य शामिल करना, जो भी सेवा करो वृत्ति गोबिन्दमयी बनाकर करना। बाबा जी वचन करते थे, संसार में कई नेमी होते हैं और कई प्रेमी, पर प्रेम के बिना सेवा सिमरन का फल थोड़ा मिलता है। कोई भी सेवा हो, युक्ति व प्रेम से करो तो गुरु की प्रसन्नता मिलती है। एक अन्य बात आप कभी ध्यान देना, हम में से बहुत सारे लोग सेवा करते परस्पर सांसारिक बातें, हंसी मजाक करते हैं पर यदि हो युक्ति, हाथों से सेवा करो और साथ आपका सिमरन चल रहा हो, फिर देखना आपकी ज़िन्दगी में सेवा कैसे रंग लाती है। यह भी प्रेम की निशानी है। सेवा करने पर भी बात को ध्यान में रखना है कि कोई भी सेवा करो, चाहे गुरु की या गुरु की संगतों की या जरूरतमंदों की पर आपके मन की भावना यहां टिकी हो कि मैं गुरु की सेवा कर रहा हूं। दुनिया की सेवा, संगतों की सेवा को भी यदि गुरु की सेवा मानकर करो तो वह साकार होती है।

इसके अलावा यह भी ध्यान रखना कि सेवा बड़ी नम्रता व प्रेम से की जाए अन्यथा जिनको सूझ नहीं, सेवा करके इतने अभिमानी हो जाते हैं कि बात-बात पर क्रोध आ जाता है, सेवा के अभिमान से बोली भी बिगड़ जाती है। जहां गुरु की कृपा से सेवा करनी है, वहां सेवा अहम् छोड़कर करनी है, मन में अभिमान नहीं आना चाहिए कि मैं सेवा कर रहा हूं, अपितु शुक्रिया निकले कि शुक्र है सतिगुरु ! सेवा ले रहे हो, मुझ जैसे अनजान को सेवा प्रदान की है। कहीं मन में यह भावना न बने कि यदि मैं यह सेवा नहीं करता तो यह सेवा होनी ही नहीं थी या मेरे जैसी सेवा कोई कर ही नहीं सकता। सेवा करते मन को निम्न रखना है, अन्दर नम्रता को रखना है, सब को गुरु रूप मानकर सेवा करनी है। यदि किसी

की सेवा में अहंकार है, क्रोध है तो गुरु गोबिन्द सिंघ जी के समय की ऐतिहासिक साखी से सीख लो जो पातशाह जी ने हमारी सूझ के लिए रची।

एक बार गुरु गोबिन्द सिंघ जी के दरबार में एक भालू नचाने वाला आ गया और विनती की गुरु साहिब के चरणों में कि मैं भालू के कौतुक आप जी को दिखाकर आपकी खुशी पाना चाहता हूं। सतिगुरु ने कहा, ठीक है दिखाओ क्योंकि यह गुरु नानक का घर है और यहां सब को खुशियां मिलती हैं। अब उसने भालू से कई तरह के तमाशे करवाए, जिसको देखकर वहां मौजूद सब संगतें बहुत हंसी। भाई कीरतिया जो गुरु साहिब को उस समय चंवर कर रहा था, वह भी खूब हंसा और कहता है कि देखो, इतना भयानक जानवर कैसे एक इन्सान ने काबू में किया हुआ है, पता नहीं इस भालू बेचारे को किस पाप की सज़ा मिल रही है जो दिन में कितनी बार अपने मालिक के हुक्म पर तमाशे दिखाता है। गुरु साहिब की लीला ! वह अपने सिक्खों को, आने वाली पीढ़ी को सूझ देना चाहते थे। वे कहने लगे, भाई कीरतिया! यह भालू कोई अन्य नहीं, तेरा पिता भाई शोभा राम है। उसने बड़ा हैरान होकर कहा, सतिगुरु! यह कैसे हो सकता है। मेरे पिता शोभा राम ने काफी समय गुरु तेग बहादुर जी के दरबार में सेवा की, कुछ समय आपकी भी सेवा की। यदि गुरु-घर की सेवा करने से ऐसी तुच्छ योनि मिलती है तो सेवा करने का क्या फायदा। हम लोग तो सेवा इस ख्याल से करते हैं कि सेवा करने से हमारा लोक-परलोक संवर जाएगा, हमें मुक्ति मिल जाएगी, हमारा जन्म-मरण कट जाएगा। सतिगुरु ने कहा कि जानना चाहते हो कि तुम्हारे पिता को गुरु-घर की सेवा करने के बावजूद भालू की योनि क्यों मिली तो फिर सुन ले कि तेरे पिता ने सेवा तो अवश्य की, पर प्रेम से नहीं की, संगतों को गुरु का रूप नहीं माना। उसके मन में अत्यंत क्रोध भरा हुआ था। संगतों से कटु भाषा में दुर्व्यवहार करता था। एक दिन तेरा पिता कड़ाह प्रसाद की देग बांट रहा था कि एक गरीब सिक्ख उधर से अपने छकड़े पर निकल रहा था, उसने आग्रह किया– थोड़ा-सा

प्रसाद का कण मुझे भी दे दीजिए पर तेरे पिता ने कोई परवाह न की। उसने पुनः प्रेम-पूर्वक विनती की, भाई साहिब जी, मेरा छकड़ा निकल गया है। कृपा करके थोड़ा-सा प्रसाद दे दीजिए, मैं भी रसना को लगा लूं। सतिगुरु ने कहा, तेरे पिता के अन्दर सेवा का इतना अहंकार भरा हुआ था कि वह उस गरीब को कटु वचनों से कहने लगा, तू भालू की तरह बार-बार ऊपर चढ़ता जा रहा है, चल इधर हट, मुझे सेवा करने दे। उस गरीब सिक्ख के नेत्रों में आंसू भर आए और उसके अन्तर्मन से निकला कि तेरे सरीखे सेवादार गुरु-घर में नहीं होने चाहिएं, जो इन्सानों को भालू कहते हैं, परमात्मा करे तू भी भालू की योनि भोगे। इशारा समझना। हम में से कई लंगर बांटने की सेवा करते हैं और संगत से कटु वचनों से दुर्व्यवहार करते हैं। नहीं प्यारो! संगतों की सेवा गुरु का रूप मानकर करनी है वाहिगुरु प्रसादा जी! वाहिगुरु दाल जी, फिर देखना कैसे गुरु साहिब की खुशियां प्राप्त होती हैं। हमने सेवा करनी है इस ख्याल से, इस ढंग से कि पता नहीं किस वक्त हमारी सेवा पर सतिगुरु प्रसन्न हो जाएं और कृपा कर दें।

एक बात का ध्यान रखना, यदि युक्ति नहीं, सूझ नहीं तो मिली हुई बख्शिश भी छिन जाती है। दास को एक ज़िक्र याद आ गया, आप जी को वर्णन कर रहा हूं, सीख लेना। कोई गुरु प्यारा गुरु रामदास जी के घर पर रोज़ नियम से झाड़ू की सेवा करता था। एक दिन जब उसने झाड़ू लगाकर कचरा इकट्ठी किया तो किसी ने पैर मारकर उसे बिखेर दिया। उस सिक्ख को बड़ा क्रोध आया और क्रोध-वश बोला, लोगों को अक्ल ही नहीं। आप तो सेवा करते नहीं और किसी को करने नहीं देनी। अब गुरु प्यारो ! ध्यान देना, वह कचरा बिखेरने वाला कोई अन्य नहीं, स्वयं गुरु रामदास जी थे। उन्होंने अपने वास्तविक रूप की उसे थोड़ी-सी झलक दिखाई और कहा, भाई हम तो तुझे चैक कर रहे थे कि इतने साल हो गए सेवा करते, देखा तो जाए सेवा करते हुए नम्रता आई है कि अहंकारी बन गया है। इतना वचन करते ही गुरु रामदास जी तो लुप्त हो गए, पर कहते हैं कि वह सेवा करने वाला उसके बाद

बहुत वैराग्य में आ गया। इसलिए गुरु प्यारो ! ध्यान रखना, पता नहीं किस वक्त और किस रूप में आकर गुरु आपको ही चैक करे, इसलिए ऐसा गुरु के निर्मल भय में रहकर प्यार और नम्रता से सेवा करें। युक्ति के बिना, सूझ के बिना, हम भी कहीं धोखा न खा जाएं, कहीं सेवा करके भी गुरु की खुशी से वंचित न रह जाएं।

सेवा की अगली युक्ति है कि सेवा सदैव ख्वाहिश और कामना से रहित होकर की जाए। बाबा जी वचन करते थे यदि कोई निष्काम भावना से सेवा करता है तो उसको एक तिल जितनी सेवा करने का महातम मिल जाता है और अहम् आने से मन का भी तिल बन जाता है। निष्काम सेवा करने वाले को तो परमेश्वर की प्राप्ति हो जाती है। स्वयं ही अनुमान लगा लो, जिसको सब बख्शिशें देने वाला दाता ही मिल गया फिर उसको किस चीज़ का घाटा रह जाएगा।

सेवा करत होइ निहकामी॥
तिस को होत परापति सुआमी॥ (अंग २८६)

परन्तु जिसकी सेवा में निष्काम भावना नहीं, गुरु साहिब से सेवा का हिसाब करता है, उसके लिए गुरु रामदास जी के वचन हैं–

कीता थाइ न पाइ॥ (अंग १२४६)

भाव कि सेवा करके यह नहीं कहना कि मैंने इतनी सेवा की और उसकी उपेक्षा मुझे क्या मिला बल्कि हृदय में इतनी नम्रता हो, मन यहां टिका हो कि हे सच्चे पातशाह ! मैं अनजान हूं, मुझे सेवा करनी नहीं आती, आप जी की कृपा, बख्शिश से करता हूं, आप ही कृपा करके मुझ जैसे मूर्ख नालायक के सिर पर हाथ रख कर सेवा लेना, मेरी भूलों, मेरे अवगुणों का ख्याल न करना।

गुरु के दर पर अहम् त्याग कर अहं-भावना को समाप्त कर के निष्काम सेवा सब सेवाओं का शिरोमणि तप है। गुरु के प्रति या मनुष्यता के प्रति जो भी सेवा करें, निष्काम होकर करें। उसमें कोई लोभ-लालच, कोई लाभ या सांसारिक मांग न हो, क्योंकि एक बात का ध्यान रखना कि यदि सेवा करते सांसारिक लाभ ले लिया

तो सेवा परमार्थी नहीं रहेगी। सांसारिक लाभ तो मिल जाएगा, पर फिर भी स्वयं ही सोचो गुरु साहिब के दर्शनों के लिए क्या बचेगा ? केवल और केवल प्रभु प्रेम और उसके दर्शनों की चाह की लालसा ही हमारी सुरति में होनी चाहिए। ऐसी सेवा मोह-माया व अहम् से दूर रखती है, क्योंकि इससे अहम् पैदा होता है। जहां गुरु की कृपा से अहम् से बचकर रहना है।

सेवा के दौरान अन्य ध्यान रखने योग्य बात यह है कि कभी किसी से सेवा छीननी नहीं चाहिए और कोई मांगे तो मना भी नहीं करना चाहिए, बांट कर करनी चाहिए, यह भी बड़ी बारीकी है, गौर करना। कुछ लोगों के अन्दर सेवा करने की भावना तो बहुत होती है, पर सूझ न होने के कारण दूसरों के हाथों से सेवा छीनकर सोचते हैं, हम अधिक सेवा कर लेंगे और गुरु की प्रसन्नता मिल जाएगी।

दास को किसी ने वचन सुनाया, कहता है एक बार वह जोड़ा घर में सेवा कर रहा था और कोई नया प्रेमी जगह न होने के कारण पीछे खड़ा हो गया। उस शरीर ने बताया कि मैंने उसको विनती की कि आप सेवा करने आए हो, यहां मेरे साथ आ जाओ, हम बांट कर सेवा करते हैं। अब उस शरीर को सूझ नहीं थी, वह वहां जितने भी सेवा कर रहे थे उनसे जोड़े छीनने लगा। उस शरीर ने बताया कि मैंने उसको बड़ी नम्रता से पूछा लिया कि आप इस तरह क्योंकर कर रहे हो ? उसका जवाब था कि मैंने सोचा आज सेवा मिली है और भरपूर कर लूं, लूट लूं सेवा। वह शरीर जिसने वचन सुनाया, सूझवान था। उसने उसको समझाया, दूसरों से सेवा छीनने से गुरु की प्रसन्नता प्राप्त नहीं होगी। यदि तू वाकई सेवा जी भरकर करना चाहता है तो तू एक घण्टे की बजाय दो घण्टे सेवा कर ले, दो समय कर ले, भाव समय अधिक लगा ले पर यदि तू दूसरों की सेवा छीनेगा तो उससे उनकी नाराज़गी मिलेगी, जिससे गुरु साहिब की खुशी प्राप्त नहीं होगी। दास द्वारा यह ज़िक्र लिखने से भाव, सीख लेनी चाहिए कि दूसरों से सेवा छीनकर उनकी नाराज़गी मत पाना बल्कि जिसको सेवा नहीं मिल रही और करना चाहता है, उसको सेवा देकर उससे आशीष लेनी है। उसमें गुरु की प्रसन्नता है।

सीख तन मन शुद्ध करती है, मनुष्य में परोपकार की भावना पैदा करती है। सेवा से मनवांछित फल प्राप्त होते हैं, गुरु की खुशियां मिलती हैं, झोली भरती है। गुरु साहिब ने स्वयं ही कृपा करके, सिर पर हाथ रखकर सेवा बारे विचार व्यक्त करवाएं हैं। सतिगुरु स्वयं ही कृपा करें, हम सब को सूझ प्रदान कर सेवा करने का तरीका सिखाएं। हम अभिमान व क्रोध से रहित होकर, निष्काम, निर्वैर, नम्रता व प्रेम भावना से सेवा करें। कोई भी सेवा करें, गुरु की सेवा मानकर करें तांकि हमारा लोक-परलोक सुखी हो जाए, गुरु साहिब की खुशियां प्राप्त हो जाएं। यह है श्रद्धा की चौथी निशानी गुरु में ही परमेश्वर को देखना और चार चीज़ों "गुरु का ध्यान, गुरु की स्तुति, गुरु की पूजा, गुरु की सेवा" इन पर अडिग रहना। यह अत्यावश्यक है। अपने मन में दृष्टि डालना कि गुरु की कृपा के भण्डार में से हमारी झोली में यह बख्शिश पड़ी है या नहीं। यदि मिली है तो बार-बार शुक्रिया करो सतिगुरु का और साथ ही यह अरदास भी अवश्य करना कि हम पर तरस करके हमारी झोली में इतनी बड़ी बख्शिश अपनी भावना की डाली है और कृपा करना यह भावना सदा बनी रहे, कभी भी इसमें दरार न आए। कोई भी लहर, कोई भी प्रसंग हमारी भावना को तोड़ न सके, क्योंकि कलियुग बहुत भारी है। इस कलियुग व कलियुग की फौज से रक्षा गुरु साहिब ही कर सकते हैं। हमें जो मानव जन्म मिला है उसका जो असली मकसद है, हमारी जो असली मंज़िल है, "परमेश्वर की प्राप्ति" वह तब ही प्राप्त हो सकती है यदि हमारा अपने गुरु पर पूर्ण व दृढ़-निश्चय हो कि मेरा गुरु ही परमेश्वर है, उससे परे कुछ भी नहीं। यदि गुरु पर निश्चय ही नहीं, अपने गुरु को परमेश्वर मानकर पूजा नहीं करते, अपने गुरु के अतिरिक्त किसी अन्य रब के दर्शनों की आकांक्षा है तो फिर मंज़िल मिलने की आस ही नहीं। निश्चय हर प्रकार का होता है। अनेकों की गुरु पर भावना यहां तक होती है कि मेरा गुरु एक विशेष "खास" व्यक्ति है। कई गुरु को संत का दर्जा दे देते हैं। बाबा जी कहते थे, गुरु साहिब की तो चरणधूलि में इतनी ताकत है कि उसके स्पर्श से

लाखों-करोड़ों संत-साधु व भक्त बन सकते हैं। गुरु को संत का दर्जा देना गुरु का सम्मान नहीं बल्कि निरादर है। गुरु यदि किसी विकारी पर भी अपनी थोड़ी-सी कृपा-दृष्टि कर दे तो उसको भी पूर्ण संत बना सकता है।

पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र॥
अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत॥

(अंग २८७)

इसलिए गुरु को संत या साधु का दर्जा देना बुद्धिमानी नहीं। इसके अतिरिक्त कईयों की भावना होती है कि मेरा गुरु "रब का रूप" है, पर यह भावना रखना कि मेरा गुरु आप परब्रह्म परमेश्वर है। जब तक इन्सान अपने गुरु पर किंचित मात्र भी शक करता है, तब तक कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। कई कह देते हैं कि सिमरन करते हैं पर रस नहीं आता। यहां एक बात जान लेना, जिसका अपने गुरु पर पूर्ण निश्चय नहीं, उसको रस आ भी नहीं सकता। रस तभी आना शुरु होता है जब गुरु परमेश्वर वाली भावना बन जाए। यह जो चार चीज़ें हैं- ध्यान, स्तुति, पूजा, सेवा, यह रस को जन्म देती हैं। यदि गुरु को परमेश्वर ही नहीं मानते तो किसका ध्यान करोगे, किसकी स्तुति में लीन होगे, किसकी पूजा-आराधना करोगे, किसके प्रेम को अपनी मंज़िल जानकर उसके वचनों को मानने और उसके गुणों व उपदेशों को धारण करने का यत्न करोगे? दास एक बात गुरु भरोसे से लिख रहा है कि यदि आपका गुरु पर पूर्ण भरोसा बन गया तो आप प्रत्यक्ष गुरु की बख्शिशों, गुरु का प्रेम महसूस करोगे।

किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना॥
जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना॥

(अंग ७६७)

★★★

श्रद्धा की पांचवी निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :

उसको सेवा-सिमरन, गुरुबाणी पढ़ने-सुनने की भूख लगनी शुरु हो जाती है।

सामान्य रूप पर बहुत सारे जिज्ञासु यह कह देते हैं कि हमारा मन तो बहुत करता है कि हम भी सिमरन करें, पर रस नहीं आता। गुरुबाणी का पाठ करते समय सुरति गुरुबाणी में नहीं लगती, ध्यान इधर-उधर भटकता रहता है। यहां एक बात का ध्यान रखना कि सिमरन पहले मैल काटता है, इसलिए पहले इसमें रस नहीं आता, मन नहीं टिकता, जब मन निर्मल हो जाता है तो सिमरन में रस आने लग जाता है, फिर छोड़ने को दिल नहीं करता। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि सबसे कठिन भी नाम जपना और सबसे सरल भी नाम जपना। इशारा समझना कठिन कब, जब भूख नहीं लगनी शुरू हुई, सरल कब जब इश्क लग गया। गुरु ने कृपा करके भूख लगा दी, रस प्रदान कर दिया, फिर वही नाम जपना जो पहले कठिन लगता था, सरल बन जाता है। जिस पर गुरु साहिब कृपा कर दें, जिसको भूख लगनी शुरु हो जाए, फिर उससे रहा ही नहीं जाता। एक है जोर लगाना पड़े, कहना पड़े कि पाठ करो, एक है गुरु नानक ने प्रसन्न होकर कृपा कर दी और भूख लगनी शुरु हो गई बाणी पढ़ने की। एक है मन के हठ से बाणी को पढ़ना, एक है प्रेम में रस में बाणी को पढ़ना बड़ा अंतर है दोनों में। एक तो है रहिरास साहिब का पाठ किया, अन्तिम पंक्तियां आई गुटका साहिब बंद किया, रखा टिकाने पर, अरदास की, मन में ख्याल आने शुरु हो गए कि पाठ खत्म हो गया, काम समाप्त

हुआ, चलो अब टी.वी. देखा जाए। अमुक धारावाहिक आना है ध्यान उधर यह बहुत छोटा खेल है। पर जहां भूख लगने की बख्शिश प्राप्त हुई है, वह पाठ करने के पश्चात यह नहीं सोचता कि शुक्र है, यह काम समाप्त हुआ। वह पाठ के काम को एक बोझ नहीं समझता, अपितु जिसको गुरु की कृपा से गुरुबाणी में से, सिमरन में से रस आने लग जाए, उसको तो पाठ करने के पश्चात कोई जरूरी घरेलू काम भी करना हो तो भी वह प्रयास करता है कि सांसारिक कार्य के दौरान भी उसके भीतर सिमरन का भोग न पड़े। जरूर चैक करो, जो भी बाणी पढ़ते हो, सिमरन करते हो, भूख लगनी शुरु हो गई है या मजबूरी है, रस आया है या धक्के से गाड़ी चल रही है। एक अवस्था है– सुखमनी साहिब का पाठ कर रहे हो और मन खिन्न है, मन उतावला हो रहा है, बार-बार यह देख रहे हैं कि अभी कौन-सी अष्टपदी पर पहुँचे हैं, अभी कितनी अष्टपदियां रहती हैं, कब पाठ सम्पूर्ण होगा? एक अवस्था है, पाठ में से रस आना शुरु हो गया है। जिन पर यह कृपा हो जाए, उनका पाठ सम्पूर्ण होने पर भी मन होता है कि अभी और पाठ कर लूं। उनका यदि कहीं ज़रूरी काम का समय भी हो गया हो तो यही कहते हैं कि हे वाहिगुरु! घड़ियां थम जाएं, पाठ करने के लिए और समय मिल जाए, इशारा समझना! एक है मन ऊबना, एक है रस आ गया। सांसारिक ज़िम्मेदारी के कारण अपने नियम से उठना तो पड़ना है पर मन करता है और बैठूं, कुछ देर और निमग्न हो जाऊँ।

संगत में से ही एक बहन ने दास को वचन सुनाया और कहने लगी, मेरी यह अवस्था थी कि आधा पाठ सुखमनी साहिब का नित्य करती थी। 4-5 अष्टपदियां करना और मन में कौतुहल शुरु हो जाना। बड़े हठ से बलपूर्वक बैठकर आधा पाठ करना और आधा छोड़ देना कि शेष कल करूँगी। वह कहने लगी, एक दिन अपने घर, गुरु साहिब के कमरे में बैठी सुखमनी साहिब का पाठ कर रही थी कि पता ही नहीं लगा कब आधा पाठ हो गया और मैंने 13वीं अष्टपदी शुरु कर दी। करते-करते पूरा पाठ हो गया, पर

मन उतावला न हुआ। वह कहने लगी, पता नहीं मन में क्या आया, एक और पाठ शुरु कर दिया। कृपा हुई, दूसरा पाठ भी सम्पूर्ण हो गया। फिर सोचा, पाठ करते समय न ही कोई फोन आया है, न किसी ने द्वार खटखटाया है, न कोई मेहमान आया है, किसी काम के लिए भी पाठ छोड़कर नहीं बीच में उठना पड़ा, पाठ में बोलना नहीं पड़ा। किसी से बातचीत करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी और सबसे बड़ी और अनोखी बात जो आज पाठ करते मन उतावला नहीं हो रहा। क्यों न अभी और पाठ कर लूं। यह सोचकर उस महिला ने तीसरा पाठ करना शुरु कर दिया। उसने वचन सुनाया कि पता नही कौन-सी कृपा हुई गुरु साहिब की कि वही सुखमनी साहिब का पाठ करते जहां मन उतावला होता था, रस आना शुरु हो गया, आंखों में अजीब-सा नशा आना शुरु हो गया। ज्यों-ज्यों पाठ करती जाऊँ, रस आता जाए, स्वाद आए, अब मन ही न करे गुटका साहिब हाथ से छोड़ने का। कहती है, इस तरह करते-करते मैंने पांच पाठ सुखमनी साहिब जी के एक चौकड़ी में कर लिए और किए भी गुरु साहिब की कृपा से पूरे स्वाद से। वह कहने लगी कहां मैं आधा पाठ मजबूरी से करती थी और कहां ऐसी कृपा हुई कि पांच पाठ किए, वह भी रस में। वह कहने लगी कि मैं संगत में से जब सुनती थी कि पाठ करने से रस आता है, बाणी पढ़ने की भूख लगती है, छोड़ने को मन नहीं करता तो मन में सोचती थी कि मेरे साथ तो ऐसा नहीं होता। क्या मुझ पर भी कभी ऐसी कृपा होगी ? आज मैंने गुरु की कृपा से उस रस को महसूस कर लिया। दास ने कहा, यूं लगता है कि तेरी पुकार सुन कर, तेरे हृदय की नित्य की विनती सुनकर गुरु ने प्रसन्न होकर तुझ पर कृपा की और तेरी झोली में भूख लगने की बख्शिश प्रदान की, रस प्रदान किया। अब गुरु साहिब के समक्ष यह अरदास अवश्य करना कि सतिगुरु, यह कृपा बनाए रखना। इशारा समझना, एक है मजबूरी में बंधकर, किसी के आग्रह पर या किसी लोभवश पाठ करना, एक है स्वाद आना शुरु हो गया, रस आना शुरु हो गया। फरीद की मां फरीद को पहले लालच देती थी नमाज़ पढ़ शक्कर

मिलेगी, क्योंकि वह शक्कर का शौकीन था पर जब कृपा हो गई, नमाज़ में रस आना शुरु हो गया तो अब शक्कर की आवश्यकता ही नहीं। कह दिया–

फरीदा सकर खंड निवातु गुड़ु माखिओ मांझा दुधु॥
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु॥

(अंग १३७९)

इस संदर्भ में गुरु अर्जुन देव जी की बाणी में से भी प्रमाण मिलता है–

सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा॥
सादु आइआ तिन हरि जनां चखि साधी डिठा॥

(अंग ३२१)

जब सिमरन में से रस आने लग जाए फिर तो सिमरन से टूटना "नाग निवासा दे रहना" समान बन जाता है।

भोजन के पहले ग्रास में से भी रस आता है, अन्तिम ग्रास में वह रस नहीं होता। जैसे-जैसे भूख कम होती जाती है, रस भी कम होता जाता है, लेकिन नाम का, सिमरन का, भजन-बंदगी का रस ऐसा है जो दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है।

दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि॥

(अंग ३००)

दास यहां एक बात स्पष्ट कर दे, जब कुछ समय नाम जपते बीत जाए और रस की प्राप्ति न हो तो कई छोड़ देते हैं नाम जपना, यह बड़ी भारी भूल है। मन टिके या न टिके, रस आए या न आए,नाम बाणी सिमरन नहीं छोड़ना। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि जैसे नौकर जूठे बर्तन मांजता है। यदि वह कहे कि मेरा मन नहीं लगता और बर्तन मांजने छोड़ दे तो उसको मालिक तनख्वाह नहीं देता। तनख्वाह उसको तो ही मिलेगी यदि बर्तन मांजेगा, वैसे ही सिक्ख नियम से नितनेम करे, बाणी पढ़े, मन टिके या न टिके, मन लगाना गुरु की मर्जी है, अथवा यह गुरु की

कसौटी भी है। सिक्ख यह ख्याल भी न बनाए कि मेरा मन नहीं टिकता। जो लगे रहेंगे, उनकी ज़िन्दगी में वह समय अवश्य आएगा जब मन का टिकाउ भी प्राप्त हो जाएगा। जब तक पापों का भार ऊँचा है, मन नहीं लगता। ज्यों-ज्यों बाणी पढ़ोगे पाप जलते जाएंगे क्योंकि बाणी का काम है पापों को जलाना। जैसे आग में कोई चीज चाहे किसी ढंग से भी डाल दो, वह उसको जला देती है क्योंकि आग का काम है जलाना, इसी तरह बाणी का काम है, पापों को जलाना, चाहे मन लगे या न लगे, इसने हमारे पापों को जला ही देना है। जो चलते रहते हैं, भाव नाम-बाणी नहीं छोड़ते, गुरु का आंचल नहीं छोड़ते, उनको ही मंजिल की प्राप्ति हो सकती है, इसलिए चलना न छोड़ना चाहे धीमी चाल ही सही। हमारी जिन्दगी में ऐसी दृढ़ता हो—

चरण न छाडउ सरीर कल जाई॥

(अंग ३४५)

इस दृष्टांत से अपने लिए सीख लें-

एक भगत पेड़ के नीचे बैठा भक्ति कर रहा था, उधर से नारद मुनि गुजरे। उस भगत ने पूछा, नारद मुनि जी! कहां जा रहे हो? जब नारद मुनि ने बताया कि भगवान कृष्ण के दर्शन करने जा रहा हूं तो वह भगत कहने लगा, भगवान कृष्ण से पूछना कि मुझे दर्शन कब होंगे? जब नारद मुनि ने भगवान के दर्शन करने के पश्चात् उस भगत का संदेश दिया तो भगवान कृष्ण ने सहज स्वभाव वचन कर दिया कि उस भगत को कहना जिस पेड़ के नीचे बैठ कर तू भक्ति कर रहा है, उस पेड़ के जितने पत्र हैं, उतने जन्म लेगा, फिर दर्शन होंगे। जब नारद मुनि भगवान कृष्ण का संदेश लेकर भगत के पास पहुँचा तो कहने लगा कि भगवान का जो तेरे लिए संदेश है, वह न ही सुन तो अच्छा है, पर भगत तो बहुत उत्सुक था, वह कहने लगा, मुझे शीघ्र बताओ मेरे भगवान का मेरे लिए क्या संदेश है, मुझे दर्शन कब होंगे? जब नारद मुनि ने उसको भगवान का संदेश बताया तो उस भगत ने खुशी से नाचना झूमना शुरु कर दिया। नारद मुनि बड़े चकित। वे कहने

लगे, मैंने तो सोचा था कि तू भगवान का संदेश सुन कर भक्ति करना ही छोड़ देगा। तूने कहीं संदेश गलत तो नहीं समझा, मैंने तुझे यह तो नहीं कहा कि आजकल में दर्शन हो जाएँगे, यह कहा है कि इस पेड़ के पत्र जितने जन्म लेने के पश्चात दर्शन होंगे।

वह भगत निष्ठावान था। वह कहने लगा, भगवान ने यह तो नहीं कहा कि दर्शन नहीं होंगे, होंगे तो सही चाहे इतने जन्मों के बाद ही सही। दृष्टांत आगे भी जाता है। कहते हैं, उसी वक्त भगवान वहां प्रगट हो गए। नारद मुनि भगवान को कहने लगे, आप कहते कुछ और हो और करते कुछ और हो। मुझे कहा था इतने जन्मों के पश्चात और अभी प्रगट होकर दर्शन दे दिए हैं। भगवान कहने लगे कि मैं अपने भगत के भरोसे की, निष्ठा की कड़ी परीक्षा ले रहा था। इसके प्रेम व भरोसे को देखकर मुझे अभी इसको दर्शन देने पड़े। हम भी कह देते हैं, नित्य स्नान करते हैं, अमृत वेले बाणी पढ़ते हैं, जप-तप भी करते हैं, प्राप्ति कब होगी? इस कथा से, दृष्टांत से, अपने लिए सीख लें, यह नहीं कि छह माह हो गए सुखमनी साहिब पढ़ते रस तो आया नहीं, छोड़ देते हैं। नहीं प्यारो! हमारा भी अपने गुरु पर, बाणी पर इस भगत सरीखा भरोसा हो, प्रेम हो कि बाबा तेरा साथ नहीं छोड़ना, प्राप्ति भी ऐसे लोगों को ही होती है।

माता करतार कौर जी (अमृतसर किला भंगिया वाले) उनको एक बार किसी महिला ने प्रश्न किया था कि रोज़ बाणी भी पढ़ते हैं, सेवा भी करते हैं, सिमरन भी किया जाता है पर सब कुछ करने के बावजूद नाम तो अभी तक अंदर बसा नहीं, रस की प्राप्ति तो हुई नहीं। माता करतार कौर जी ने जो जवाब दिया, वह ध्यान देना। माता जी ने कहा, हमारा काम है साबुन की टिकिया लेकर मैले कपड़ों पर घिसाते जाना, गर्म पानी डालते जाना और हाथों से या थापी लेकर कपड़े को थोड़ा-थोड़ा कूटना। हमारे मन पर अनेक ज़न्मों और अनेक योनियों की मैल लगी हुई है। यह काला हो गया है। बाणी की भी पंक्तियां हैं–

श्रद्धा की पांचवी निशानी

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु॥
खंनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु॥

(अंग ६५१)

माता जी वचन करते थे कि यह काम जल्दबाज़ी का नहीं, जल्दबाज़ी से काम बिगड़ जाता है। धीरे-धीरे पर लगातार विश्वास से लगे रहना चाहिए। जो चल पड़ा और चला जाता है, वह रास्ता खत्म करता जाता है। रास्ता लम्बा हो सकता है, कठिन भी हो सकता है, चलता-चलता आदमी थक भी जाता है। कई बार मन ऊब भी जाता है, पर ऊब कर या थक कर चलना नहीं छोड़ना। सांस लेने के लिए बैठना अलग बात है पर छोड़कर बैठ ही जाना बहुत खतरनाक बात है। सांस लेकर व्यक्ति दुगुणी समर्था से काम करता है। पर छोड़ देने वाला पिछली की हुई कमाई से भी हाथ धो बैठता है।

किसी भी फल की, मंज़िल की प्राप्ति के लिए मेहनत तो करनी ही पड़ती है। किसी भी किसान के घर बैठे रहने से उसकी फसल में गेहूं उत्पन्न नहीं हो सकती। माली की मेहनत के बिना रंग-बिरंगे फूल नहीं खिल सकते। लोहे को स्टील बनने के लिए कई कष्ट सहन करने पड़ते हैं। जितनी भी कोई वस्तु कीमती हो, उसकी प्राप्ति के लिए मेहनत भी उतनी ही अधिक करनी पड़ती है। "नाम का रस" अत्यंत अमूल्य नियामत है, इसलिए इसकी प्राप्ति सुगमता से नहीं हो सकती, बहुत मेहनत और बख्शिश की जरूरत है। इसके लिए जहां सेवा-सिमरन, गुरुबाणी पढ़ने-सुनने की आवश्यकता है, वहां साथ ही जरूरत है अपने मन को काबू करने की, काम-क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार जैसी व्याधियों पर जीत प्राप्त करने की, ईर्ष्या, निंदा, द्वेष जैसे अवगुणों से बचने की।

भाई वीर सिंघ जी अपनी पुस्तक गुरमुख सिखिया में लिखते हैं—

मनुष्य का धर्म है बंदगी करना। स्वाद नहीं आता तो गुरु जाने, जो स्वाद नहीं देता। रस वाहिगुरु के वश है। हमारा अभी

रस का हक कहां है? रस तो कभी-कभी गुरु झलक दिखा कर देता है कि बच्चे दोलायमान न हो जाएं। अभी तो युद्ध है। नाम के गोले मारकर माया के, मैल के, पापों के, विकारों के गुबार के मोर्चे तोड़ने हैं। जल्दी-जल्दी गोले बरसते रहें और वैरी के छक्के छुड़ाना है। युद्ध क्या और रस क्या? हम अपने अन्दर के वैरियों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) को मारना है। गुरु पर भरोसा रखकर तोपें चलाते रहो, सिपाही का काम है लड़ना। एक दिन अवश्य फतह प्राप्त होकर रस की प्राप्ति होगी। रसना से वाहिगुरु-वाहिगुरु जपो या कोई गुरु-शब्द या गुरुबाणी का शब्द ही उच्चारण करते रहो। इस तरह करते-करते काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि विकार सूक्ष्म होते-होते खत्म हो जाएंगे।

केवल सांसारिक कामकाज व कारोबार ही हमारी जिंदगी का मकसद नहीं। वे भी करने हैं, छोड़ने नहीं, पर कम से कम 24 घण्टों में से अढ़ाई घण्टे अवश्य गुरु नमित लगाया करो। गुरु आप से केवल अढ़ाई घण्टे मांगता है और मांगता भी किसलिए है, आपके ही पाप बख्शने के लिए, आपके दुख घटाने के लिए, तन, मन के रोग खत्म करने के लिए, आत्मा का कुष्ठ दूर करने के लिए। यदि आप प्रतिदिन अढ़ाई घण्टे कम से कम (इससे अधिक जितना कर सको, वह और आपका ही भला है) सेवा-सिमरन, गुरुबाणी द्वारा गुरु नमित लगाओगे, इससे आपके पुण्य बढ़ जाएंगे और पुण्य बढ़ने से आपको यह भूख लगने की अनमोल नियामत प्राप्त हो जाएगी। जब भूख लगनी शुरु हो गई फिर मजबूरी खत्म हो जाएगी, फिर तो आप कहोगे कि यदि मैं किसी काम जा रहा हूं तो रास्ते में जो समय लगना है, उसमें भी सिमरन कर लूं। जब पुण्य बढ़ जाएंगे, पाप खत्म हो जाएंगे, फिर तो एक बार वाहिगुरु कहोगे तो चित करेगा 4 बार और कहने पर। कम से कम आधा घण्टा अवश्य रोज़ गुरु नानक के चरणों का ध्यान धारण कर के सिमरन में बैठा करो। वाहिगुरु शब्द की कमाई प्रेम व भावना से करते जाओ। थोड़ी देर कमाई करने के बाद घबरा मत जाना कि कुछ समझ नहीं आता या कोई प्राप्ति नहीं हुई या रस नहीं आया।

जल्दबाज़ी मत करना, धैर्य और संतोष का रास्ता पकड़ना है। विश्वास, भरोसा रखना है। बेअंत सिमरन करने की आवश्यकता है। बात गणना से बाहर की है, कोई हद मुकर्रर नहीं। महीने भी लग सकते हैं, साल भी लग सकते हैं, गुरु साहिब की कृपा होगी तो रस की प्राप्ति भी हो जाएगी। इस बात को सोचना भी नहीं कि इतना समय हो गया रस तो आया ही नहीं, छोड़ दें। नहीं प्यारो! धैर्य, संतोष से लगे रहना है और गुरु साहिब की कृपा का इंतज़ार करना है। नाम जपते रहो और इसके साथ ही साथ मन को निर्मल करो, मन में से छल-कपट, वैर-विरोध ईर्ष्या-द्वेष को दूर करो। जब हृदय रूपी बर्तन साफ हो जाएगा तो नाम का रस भी प्राप्त हो जाएगा। नामामृत पान करेगा और नाम का रस पी-पीकर मन तृप्त होगा। नाम का रस ऐसा है, जिनको मिल जाए फिर वह जितना भी जपते हैं, उनकी भूख और बढ़ती जाती है।

गुरु नानक साहिब को एक बार योगियों ने और एक बार उनके पिता जी ने भी पूछा था कि नानक! तुझे भजन-बंदगी की कितनी भूख है। पूरी-पूरी रात भी निरंकार की ध्वनि आलापता रहता है। यदि दिन को किसी कार्य के लिए अथवा भैंसों को चराने के लिए भेजते हैं तो उसकी ओर ध्यान देने की अपेक्षा निरंकार की ध्वनि में, उसके नाम में मस्त हो जाते हो। यह परमेश्वर का नाम जपने की तुझे कितनी भूख है? तू कितना नाम जपेगा? उस समय गुरु नानक ने यह शब्द उच्चारण किया–

मारू मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न भुख॥
राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे किसुक॥
नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ॥

(अंग १४८)

सतिगुरु कहते हैं, ज्यों मरुस्थल, जितनी बरसात पड़ जाए तृप्त नहीं होते, अग्नि में जितना मर्ज़ी ईंधन डाल दो, अग्नि की भूख नहीं मिटती, यूं राजा अपने राज्य से कभी तृप्त नहीं होता। उसकी और राज्य बढ़ाने की इच्छा बढ़ती रहती है। समुद्र की भूख

कभी मिटती नहीं। वह कभी यह नहीं कहता मुझे और पानी नहीं चाहिए। जैसे इन सबकी भूख नहीं मिटती, जैसे यह तृप्त नहीं होते, मैं भी तृप्त नहीं होता। मैं भी ज्यों-ज्यों नाम जपता हूं, त्यों-त्यों मेरी नाम जपने की भूख और बढ़ती जाती है, क्योंकि रस बढ़ता जाता है, स्वाद बढ़ता जाता है। भाई गुरदास जी की भी पंक्तियां हैं–

स्रवण दारिद्री सुनि अंम्रित बचन प्रिय

अचवति सुरति पिआस न मिटाई है॥

बहुत सारे पुण्य इकट्ठे हो जाएं, कोई शुभ कर्म ऊपर आ जाए, परमेश्वर की अपार कृपा हो जाए तो गुरुबाणी पढ़ने की, नाम जपने की, कीर्तन सुनने की, सेवा करने की, सिमरन करने की भूख लगती है। कोई शुभ कर्म ऊपर आ जाए तो मन करता है दरबार साहिब जाकर संगतों के जूठे बर्तन मांज लूं, वहां बैठकर अपनी आत्मा को कीर्तन की खुराक प्रदान करूँ। कोई शुभ कर्म ऊपर आए, गुरु कृपा करे तो ही इन कामों की भूख लगती है। बहुत भाग्यशाली हैं, जिनको ऐसे उत्तम कामों की भूख लगती है। शौंक जागता है अंदर, चाव उत्पन्न होता है पाठ करने का, सेवा करने का। बहुत सारे पुण्य इकट्ठे हो जाएं तो अंदर आत्मा तड़पती है, उसके सिमरन को, नाम जपने को, सेवा करने को। अपने मन में झांकना, हमारे अंदर कभी ऐसी तड़प उठी है कि नहीं, हमें भूख लगनी शुरु हुई है कि नहीं। हमें 6–7 बजे सुबह उठना भी कठिन लगता है पर जिनको भूख लगनी शुरु हो जाती है, वह पुनः पुनः उठकर घड़ी देखते हैं। अम्रतवेला कब होगा। हमें आधा-आधा घण्टा भी बाणी पढ़ना, कीर्तन सुनना कठिन लगता है पर जिनको भूख लगनी शुरु हो जाए, उनकी तृप्ति नहीं होती, शारीरिक भूख, प्यास की भी कोई परवाह नहीं रहती। अमृतसर में माता प्रकाश कौर जी (गुरुद्वारा छोटी शहीदां वाले) 9–10 घण्टे कीर्तन, बंदगी, सिमरन में लीन रहने के पश्चात् भी यदि किसी ने आग्रह करना माता जी भोजन कर लो तो कहना, नहीं अभी पेट को भूख नहीं, पर आत्मा को अभी और कीर्तन सुनने की, सिमरन करने की भूख लगी है। कभी आप नोट करो, हरिमन्दिर साहिब में अमेरिकन

सिंघ-सिंघनियों या कई अन्य गुरमुख प्यारे जिन पर गुरु साहिब की कृपा है, तीन-तीन, चार-चार घण्टे कीर्तन सुनते हैं, लीन होते हैं और हम जैसों को एक शब्द भी बैठकर सुनना मुश्किल लगता है। यह है भूख लगने वालों की अवस्था, वे न ऊबते हैं न थकते हैं। यदि कोई अमृत वेले 3-4 बजे उठता है, 7-8 बजे नाश्ता करता है, यदि उसके अंदर ऐसा आकर्षण है कि मैंने एक पल भी यों नहीं गंवाना, बाणी पढ़ने या सिमरन में लीन होकर व्यतीत करना है। गुरुद्वारे जाता है और रास्ते में भी सिमरन की कड़ी नहीं टूटने देता। यदि दरबार साहिब जाता है, वहां परिक्रमा में चलते भी सिमरन कर रहा है तो समझ लेना गुरु ने कृपा करके भूख लगने की दात उसको प्रदान कर दी है और इसके विपरीत जिसको भूख लगने की दात नहीं मिली, गुरुद्वारे जाएगा, रास्ते में सांसारिक बातें करता, वहां पहुँच कर भी बातों में ध्यान होगा। मन में झांक कर देखो, तोलो अपनी अवस्था को कि हम कहां खड़े हैं?

दास को प्रत्येक सप्ताह लगभग, सूरत (गुजरात) शहर से एक गुरमुख प्यारे का फोन आता है। दास हैरान होता है, उसकी मांग सुनकर, उसकी तड़प सुनकर, क्योंकि वह जब भी बात करेगा, अन्य कोई दुख-सुख नहीं बताएगा बस एक ही बात करेगा, "मेरी गुरु रामदास जी के चरणों में अरदास कर दो कि मुझे गुरु के प्रेम की दात मिल जाए।" दास ने एक बार पूछ लिया कि प्रेम से तेरा क्या भाव है ? तू कैसा प्रेम चाहता है? उसने बड़े प्रेम व वैराग्यपूर्ण लफ्ज़ों में कहा, "हमारे घर में गुरु साहिब का प्रकाश है, पर अन्तर्मन से मन नहीं करता गुरु साहिब के कमरे में जाने को। यदि जाता भी हूं तो बस मजबूरी से कमरे में गए, अनचाहे मन से एक पाठ जपुजी साहिब का किया और बाहर आ गए। मन में कोई गुरु साहिब के प्रति आदर वाली, श्रद्धा वाली बात नहीं आती। जब कैसेटों द्वारा या किताबों द्वारा गुरु के प्रति प्रेम भावना की, गुरुबाणी पढ़ने, रस आने के विचारों को पढ़ता हूं या सुनता हूं तो मेरे मन में बहुत वैराग्य आता है, सोचता हूं कि कभी मेरे अंदर भी चाव पैदा होगा? क्या कभी मेरे अंदर भी सेवा-सिमरन

की, गुरुबाणी पढ़ने की भूख लगेगी ? क्या कभी मुझे भी नाम का रस प्राप्त होगा ? कहीं ऐसा न हो कि मैं इस भूख से वंचित ही रह जाऊँ, इस अमूल्य रस को चखे बिना शरीर त्याग जाऊँ, ज़िंदगी का क्या भरोसा है। यह चीज़ नोट करना। इस वृत्ति वाले शरीर को अभी भूख लगनी शुरु नहीं हुई।

इशारा लेना। मांगें तो हम भी मांगते हैं, कामनाएं तो हमारी भी हैं, मन में तड़प हमारे भी है, पर उसके नाम की नहीं, सेवा की नहीं अपितु हमारी कामनाएं सांसारिक हैं। जिसका मकान शहर में है, उसकी तड़प है कि मुझे कोठी मिल जाए, जिसके पास कोठी है, उसकी तड़प है कि मेरे भाई की कोठी, मेरी कोठी से बड़ी है, मुझे भी बड़ी कोठी मिल जाए। जिसके पास स्कूटर है, उसकी इच्छा है, कार मिल जाए। जिसके पास एक कार है, वह भी संतुष्ट नहीं है। कहता है कि दो मिल जाएं, भाव कि पदार्थों की भूख है माया की भूख है। चाहे जितने मर्ज़ी पदार्थ हैं, माया है, पर और अधिक मिले यह भूख है। इनके मिलने पर भी यह भूख मिटती नहीं अपितु और बढ़ती जाती है। हम इन सांसारिक पदार्थों में ही लीन रहते हैं। इन सांसारिक सुखों में ही सुख ढूँढ रहे हैं। खुशी ढूँढ रहे हैं। अपने लिए, अपने परिवार के लिए अनेकानेक पदार्थ, माया, सुख-आराम व ऐशो-आराम के साधन इकट्ठे करने की कोशिश करते हैं तांकि हम और हमारा परिवार सुख व शान्ति से जीवन बिता सके। सुन्दर और कीमती वस्त्र, आभूषण, आलीशान मकान, कोठियां, कीमती व आलीशान फर्नीचर व अन्य साजो-समान में से सुख ढूँढते फिरते हैं। भिन्न-भिन्न स्वादिष्ट पदार्थों में से, काम में से, परिवार के मोह में से रस ढूँढते फिर रहे हैं, क्योंकि इन्सान रसों का भूखा है, रस ही इसकी ज़िन्दगी का आधार है। रसों की खोज में दिन-रात भटकता रहता है। पर इसकी भटकन खत्म नहीं होती, क्योंकि यह जिन चीज़ों में से रस ढूँढता है, वह एक बुलबुले की तरह हैं, झूठे हैं।

गुरुबाणी के मुताबिक सर्वश्रेष्ठ रस नाम जपने से प्राप्त होता है, गुरु की, गुरु की संगत की सेवा से प्राप्त होता है, पर इस रस

को वही जानता है, जिसने इस रस को चखा है। चख लिया संगत की सेवा के रस को भाई नंद लाल जी ने। कितने बड़े गुणी ज्ञानी, विद्वान, लेखक होने के बावजूद गुरु की संगतों के बड़े चाव से जूठे बर्तन मांजते हैं, गुरु के दर पर झाड़ू देते हैं। संदेश भिजवाए बड़े-बड़े राजाओं ने नंद लाल! तू इतना बड़ा गुणी-ज्ञानी है। कहां अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर रहा है, हमारे पास आ जाओ, उच्च पद पर शोभायमान करेंगे, शाही ठाठ, मान-सम्मान, माया सब कुछ मिलेगा, पर भाई नंद लाल क्या जवाब देते हैं कि जो आनंद दशमेश गुरु के दर पर जूठे बर्तन मांजने और झाड़ू देने में है, वह आपके महलों में व शाही ठाठ में कहां ? जिनको यह रस प्राप्त हो जाए, फिर तो वे वही जानते हैं कि गुरु के दर की सेवा करना कोई छोटा काम है या फिर बादशाहों से भी कहीं अधिक ऊँचा और आनंद देने वाला।

हम कनाडा गए, 15 दिन का कार्यक्रम था। एक सज्जन, उसके क्षेत्र में हम चार दिन रहे और वह चार दिन हमारे साथ ही, हर कार्यक्रम पर हमारे साथ ही। दास ने एक दिन हैरान होकर पूछ ही लिया, आपका कामकाज क्या है? क्या वहां समय नहीं देते? उसने बताया कि उसका स्टोर है। मैंने पूछा, क्या उसे बंद रखा है? उसने बताया कि बंद तो नहीं रखा है, खुला है पर नौकर की जिम्मेदारी पर छोड़ आते हैं। दास ने पूछा, क्या वह आपकी पूर्ति कर लेता है? काम को ईमानदारी व लगन से संभाल लेता है? क्या नुक्सान इत्यादि नहीं होता आपके वहां स्वयं न हाजिर होने से? वह कहने लगा, नुक्सान तो कुछ होता है स्वयं न जाने की वजह से पर क्या करूँ भूख अत्यधिक लगती है, चाव बहुत है संगतों की सेवा का। उसकी बात सुनकर दास को और हैरानी हुई। जब उसने बताया कि वह हर शनि-रविवार अपना स्टोर बंद रखता है और पूरा दिन वहां गुरुद्वारे में कथा-कीर्तन सुनने, संगत के जोड़े साफ करने, लंगर में सेवा, जूठे बर्तन मांजने की सेवा में व्यतीत करता है। यह दो दिन गुरु के दर पर सेवा-सिमरन में जो रस मिलता है, उसके समक्ष मुझे स्टोर बंद करने से जो नुक्सान होता

है, वह बहुत अच्छा लगता है, छोटा लगता है। मैं तो प्रतीक्षा करता हूं, कब शनि-रविवार आए और अपना समय सेवा-सिमरन में व्यतीत कर वास्तविक आनंद को पा सकूं।

उसने जो अपनी अगली और ऊँची सोच बताई, उसे सुनकर तो और भी अधिक आश्चर्य हुआ और यह महसूस हुआ कि वाकई गुरु साहिब ने इसे गुरमुख प्यारे पर प्रसन्न होकर इसकी झोली में बहुत अनमोल दात सेवा-सिमरन की भूख लगने की प्रदान की है। उसने बताया, जब मेरे काम का कुछ प्रबंध और सही बन गया तो मेरी अगली योजना यह है कि मैंने छः महीने कनाडा रहना है और छः महीने अमृतसर। उसने बताया कि- मेरे मन में बहुत चाव है कि गुरु रामदास जी के दर पर भरपूर सेवा सिमरन का आनंद प्राप्त करूँ क्योंकि वहां तो प्रत्येक दिन 24 घण्टे इस दात का आनंद प्राप्त किया जा सकता है। जहां 24 घण्टे आत्मा को कीर्तन की खुराक मिलती है और वहां लाखों की संख्या में संगत दर्शन के लिए जाती है, इसलिए सेवा की तरफ से भी कोई कमी नहीं। यह है भूख लगने वालों की निशानियां।

कई बार ऐसा होता है कि आपको किसी ने कहा है कि तुझ पर प्रतिबंध है। तूने आधा घण्टा नित्य एक सप्ताह के लिए संगत के जोडे साफ करने हैं। यदि विवशता से कर रहे हो कि करने पड़ने हैं, एक-एक दिन गिनकर पूरे कर रहे हो कि कब सप्ताह पूरा हो और छुटकारा मिले, फिर समझ लेना कि भूख लगने की दात आपको प्राप्त नहीं हुई। कोई महिला बाबा दीप सिंघ जी के दर पर झाड़ू दे रही थी। वहां उसको उसकी कोई परिचित महिला मिल गई और पूछने लगी कि आप प्रतिदिन झाड़ू की सेवा करने के लिए यहां आते हो? उस सेवा कर रही महिला ने जो जवाब दिया, उससे आप ही समझ लेना कि वह महिला किस अवस्था में सेवा कर रही थी, विवशता में या फिर चाव में। उस महिला का जवाब था घर में कोई मुश्किल आ गई थी। किसी महापुरुष के पास जाकर विनती की, अपनी मुश्किल बताई तो उन्होंने 40 दिन शहीदां साहिब झाड़ू देने के लिए कहा। आज 38 दिन हो गए हैं, शुक्र है,

बस दो दिन शेष रह गए हैं। अब स्वयं ही अनुमान लगा लो कि यह धक्के से सेवा हो रही है, मजबूरी में सेवा हो रही है, भूख लगने वाली दात अभी प्राप्त नहीं हुई। अब इसके विपरीत लें तांकि बात पूरी तरह समझ में आ जाए। गत दिनों सूरत में दीवान थे कीर्तन के। अहमदाबाद से सूरत 'By Road' पांच घण्टे का रास्ता है। वहां का एक परिवार करोड़पति से भी ऊपर है। उनकी बेटी और पत्नी ने सूरत में दीवानों में हाज़िरी भरने आना और मन में जहां कीर्तन सुनने का चाव, वहां साथ में सेवा का भी चाव, जिस दीवान में भी आना, संगत के जोडे प्रेमपूर्वक साफ करने, एक-एक जोड़ा दोनों मां-बेटी ने रुमाल से साफ करके सीधा करके रखना, फिर अंदर दीवान में आना। इतनी दौलत होने के बावजूद भी संगतों की सेवा का चाव कि शुक्र है सेवा मिली है। कोई अंदर करोड़पति होने का मान नहीं। पूरी सेवा नम्रता व धन्यवाद में निभाना। जिस पर गुरु की कृपा हो, वही इस अवस्था पर पहुंचता है। इस तस्वीर के दोनों पहलू देख लो। दास का यह दोनों तरह का ज़िक्र लिखने का केवल इतना ही मकसद है कि हमें बात समझ में आ जाए तांकि हम अपने अन्तर्मन में ध्यान देकर अपने आप को तौल लें कि हम किस स्टेज पर खड़े हैं, विवशता या भूख लगनी।

आप अपने घर कहीं अखण्ड पाठ करवाओ, सत्संग करवाओ। यदि मन में चाव है कि अपने हाथों से पाठियों की सेवा करूँ, उनको भोजन करवाऊँ, उनके जूठे बर्तन अपने हाथों से मांजूं। यदि गुरु की संगत घर आई है तो उसको अपनी आंखों की पलकों पर बिठाओ, अपने हाथों से संगत के जोड़े झाड़ो और अपने अंदर से साथ-साथ यह निकले कि मेरे अहोभाग्य जो गुरु की संगत मेरे घर आई है तो समझ लेना, भूख लगने की दात प्राप्त हुई है। और यदि कहीं सफेदपोशी वाला काम करो, सब ज़िम्मेदारियां लगा दो नौकरों की, अपने हाथों से कोई संगत की, पाठियों की सेवा न करो और मन में हो कि धन दौलत बहुत है, नौकर-चाकर बहुत हैं, हमें क्या आवश्यकता है कुछ करने की तो फिर समझ लेना कि गुरु ने इस अमूल्य बख्शिश से आपको वंचित रखा है। राजा जनक के

जीवन की ओर ध्यान दीजिए। उसके पास कोई नौकरों की कमी नहीं थी, न ही धन-दौलत की। प्रतिदिन एक हज़ार ब्राह्मणों को भोजन करवाता था और उनके जूठे बर्तन अपने हाथों से बड़े चाव से उठाता था। यह है भूख लगने वालों की अवस्था। इशारा समझना! कई गुरु के काम भाव सेवा-सिमरन को बोझ समझ कर करते हैं, पर कई शुक्र करते हैं, पर शुक्र वही करते हैं जिनको भूख लगने की दात प्राप्त हुई हो।

एक संत उत्तम सिंघ जी हुए हैं। वचन करते थे कि जब भी दरबार साहिब, शहीदां साहिब या किसी भी गुरुद्वारे या संगत में जाओ, कानों की जेब कीर्तन से, सिमरन से, हृदय की जेब गुरु के प्रेम से, हाथों की जेब सेवा करके भरा करो भाव कि कानों द्वारा गुरु की वाणी का कीर्तन श्रवण करो, रसना से सिमरन करो, हृदय में गुरु का प्रेम भरा हो और हाथों से गुरु की, संगत की सेवा करके अपना जीवन सफल करो। जिनको भूख लगने की दात मिल जाए, उनको फिर जब भी मौका मिले, समय मिले, वह उन जेबों को भरता है। बड़ा आनंद आता है यदि भूख लगनी शुरु हो जाए। इस आनंद को वही जानते हैं जिनको गुरु की कृपा से यह रस प्राप्त हुआ है।

गत दिनों दास कीर्तन की सेवा के लिए जयपुर शहर गए। वहां एक बड़े ही रंगे हुए गुरमुख प्यारे के दर्शन हुए, जो कि बैंक की सरकारी नौकरी करते हैं। पांच बजे शाम को बैंक से छुट्टी हो जाती है। उन्होंने अपना जीवन जरूरतमंदों की सेवा में लगाया है। उनको इसमें ही बहुत आनंद मिलता है। जैसे कि आप जी ने चौथी निशानी में पढ़ा है कि सेवा दो प्रकार की होती है। एक गुरु की सेवा, गुरु के दर की सेवा, गुरु की संगतों की सेवा और दूसरी है दुनिया की सेवा, उस परमपिता परमेश्वर द्वारा बनाई गई दुनिया में बस रहे जरूरतमंदों व दुखियों की सेवा। उनके पास गुरु साहिब की प्रदान की एक मारुति वैन है। यह गुरमुख प्यारे शाम 7 बजे से सुबह 8 बजे तक जरूरतमंदों को अपनी इस गाड़ी द्वारा अस्पताल पहुंचाने की सेवा पूरे तन मन से करते हैं। उन्होंने इस

सेवा के कार्य के लिए पूरे शहर के हर इलाके में, अस्पताल में, मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में, शहर के थानों में अपने इश्तिहार लगवाए हुए हैं कि कोई भी जरूरतमंद, रोगी हो, उसको उसके घर से अस्पताल पहुंचाने की निष्काम सेवा के लिए, उनके साथ फोन पर संपर्क करें। दास उनकी इस अनोखी सेवा बारे सुनकर बहुत चकित हुआ और पूछ लिया कि आप गृहस्थी हो, रोज़ 13-13 घण्टे सेवा के कार्य के लिए किस तरह निकाल लेते हो? उसने बताया कि बैंक से आकर रोटी खाने के बाद तैयार होकर ही आराम में होता हूं तांकि किसी जरूरतमंद का फोन आने पर उठकर तैयार होने में समय बर्बाद न हो। गुरु साहिब की बड़ी कृपा है, फोन की घण्टी बजते ही सावधानी आ जाती है। और बड़ी गुरु साहिब की कृपा है जो मेरी पत्नी मेरे इस सेवा कार्य में मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान करती है। कोई विघ्न नहीं आता, यहां तक कि हम रात के कार्यक्रम, विवाह, पार्टियां इत्यादि भी अटैंड नहीं करते। कई बार तो एक रात में 5-6 फोन आ जाते हैं जिन में से दुर्घटना केस भी होते हैं और पूरी रात ही लग जाती है। गुरु साहिब स्वयं ही कृपा करके हिम्मत प्रदान करते हैं। दास ने उनको पूछा कि ऐसी सेवा का विचार आपके दिमाग में बना कैसे? उसने बताया कि जयपुर शहर टूरिस्ट ऐरिया है, यात्री बहुत आते हैं, जिस कारण यहां टैक्सी इत्यादि के किराए भाड़े बहुत ज़्यादा हैं। देर रात को यदि किसी को अपने बीमार रिश्तेदार संबंधी या दुर्घटना केस में अस्पताल पहुँचाने की जरूरत पड़ जाए तो पहले आटो रिक्शा, टैक्सी इत्यादि मिलती ही नहीं, यदि कहीं मिल भी जाए तो किराया भाड़ा बहुत ज़्यादा मांगते हैं, जिससे आम गरीब जनता को बहुत परेशानी होती है, इसलिए मन में यह ख्याल आया। उसने कहा, सतिगुरु की अपार कृपा है। वह कहने लगा, इस तरह जरूरतमंदों की सेवा करने में जो मुझे आत्मिक सुख मिलता है, मैं उसको बयान नहीं कर सकता। इस शरीर का नाम कंवलजीत सिंघ और उनकी पत्नी का नाम बीबी मनजीत कौर है। इन्होंने एक और बात बताई कि गुरु हमारे कितना साथ है। जितने दुर्घटना

केस अर्धरात्रि को अस्पताल पहुंचाए हैं, हमें कभी सड़क पर रैड लाईट नहीं मिली। यूं लगता है कि गुरु साहिब स्वयं ही सेवा ले रहे हैं। आप पढ़ने वाले सीख लेना, अपने लिए, यह है भूख लगनी सेवा की। यह पैट्रोल का खर्च भी स्वयं अदा करते हैं और माया भी नहीं लेते।

जरूर ध्यान देना। आपको भी सेवा के कार्यों में आत्मिक आनंद प्राप्त होता है कि नहीं। जिनको यह रस प्राप्त हो जाए, फिर वे रह ही नहीं सकते। जिनको यह भूख लगनी शुरु हो जाए, फिर उन से रहा ही नहीं जाता। एक गुरमुख प्यारा किसी शहर में, किसी गुरुद्वारे में जोड़े घर में सेवा करता है। इश्क लगा है सेवा का, रह ही नहीं सकता, सेवा बिना, सिमरन बिना। उसके घरवाले रोकते भी हैं, पर वह घरवालों को झूठ बोलकर, किसी तरह अपनी इस उत्तम भूख को पूरा करता है। यहां यह बात याद रखना कि किसी शुभ कार्य के लिए बोला झूठ सच से भी बड़ा है।

गुरु नानक के घर में इस भूख को पूरा करने के लिए गुरु को भेष भी बदलना पड़ा है। बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है गुरु इतिहास में से। इस भूख को पूरा करने के लिए भेष भी बदलना पड़े और कोई गुनाह नहीं क्योंकि कई बार ऐसा फीता लग जाता है कि वह खुलेआम सेवा नहीं कर सकता। दास से खुद बीतती है ऐसी बात। यदि दिल करता है जोड़ा घर सेवा करने का, तो जोड़ा घर खड़े होते हैं, कोई जोड़ा ही नहीं दास को पकड़ाता, कह देते हैं, आप गुरु के कीर्तनिए, हमारे जोड़ों को हाथ लगाओ, यह नहीं शोभा देता। रोज़ वहां जा कर खड़े होने पर भी ऊब जाते हैं कोई जोड़ा पकड़ाता तो है नहीं, कहीं कोई यह न सोचे कि यूं ही रोज़ अपनी वाह-वाह के लिए, अपनी मशहूरी के लिए आकर यहां खड़ा हो जाता है। चाहे दास तो अपनी सेवा की भूख जो गुरु ने कृपा करके प्रदान की है, उसकी पूर्ति करना चाहता है, पर ऐसा कर नहीं पाता। दास का यह अपना ज़िक्र बताने का कारण सिर्फ इतना ही है कि दास ही की तरह कई बार और भी कई गुरमुख प्यारों से कीर्तन द्वारा या किसी धार्मिक ओहदे द्वारा ऐसी बात बन

जाती है कि वे चाहते हुए भी खुलेआम ऐसी कार्रवाई नहीं कर सकते। अपनी भूख पूरी नहीं कर सकते।

गुरु अर्जुन साहिब के जीवन में से इस भूख को पूरा करने का रास्ता मिलता है। काबुल से संगत आई थी अमृतसर श्री हरिमन्दिर साहिब में गुरु साहिब के दर्शन करने के लिए और रास्ते में रात हो जाने के कारण पुतलीघर, पिपली साहिब में रुकी। गुरु अर्जुन साहिब जी को जब पता चला तो उन्होंने सोचा यह मौका मिला है संगतों की सेवा करके अपनी भूख मिटाने की पूर्ति करने का। उन्होंने सिर पर बड़ा सारा खेस-सा बांध लिया तांकि कोई पहचान न सके उस स्थान पर पहुंच गए जहां संगत रुकी थी। अब संगत सोचती है कि गुरु साहिब ने अपना कोई सिक्ख भेजा है। (क्योंकि संगत ने गुरु रामदास जी के दर्शन तो किए थे, पर गुरु अर्जुन साहिब जी को गुरुगद्दी प्राप्त होने के बाद संगत पहली बार आई थी)। गुरु अर्जुन देव जी ने अपनी सेवा की भूख मिटाने के लिए सिक्ख के वेष में संगतों को पंखा किया, संगत को जलपान करवाया। यदि किसी अन्य प्रेमी ने आकर कहा कि मैं जलपान की सेवा करता हूं तो कहते तू पिला ले क्योंकि यदि दूसरा कोई कहे सेवा मैंने करनी है तो फिर देना भी जरूरी है। (इस बात के लिए सीख भी लेना) अब जब जलपान की सेवा किसी अन्य प्रेमी ने संभाल ली तो गुरु साहिब जूठे गिलास इकट्ठे करने लग गए। अब यह नहीं कि मैं गुरु होकर संगतों के जो मेरे दर्शनों को आई है, उनके ही जूठे बर्तन उठाऊं, बल्कि बड़े चाव और बड़े रस में आनंद में मग्न होकर यह सेवा भी की, संगतों को अपने हाथों से भोजन भी बांटा। यहां ही बस नहीं, अभी उनकी भूख पूरी नहीं हुई। हद हो गई, गुरु साहिब ने अपनी भूख पूरी करने के लिए बुजुर्गों की टांगें भी दबाईं। हर तरफ से हद हो गई। जब संगतें हरिमन्दिर साहिब में दर्शन करने गईं, आप जी बाहर संगतों के जोड़ों की देखभाल के लिए बैठ गए और बड़ी खुशी-खुशी शुक्र करते अपने गले के हजूरिए से संगत के जोड़े भी साफ किए।

कोई 14-15 साल पूर्व का ज़िक्र याद आ गया जो दास ने आंखिन देखा। बाबा कुंदन सिंघ जी कितनी बंदगी, इतनी उच्चावस्था के मालिक जो किसी को वचन कर देना, पूरा होना, वह भी अपनी इस भूख को पूरा करने के लिए दोपहर के समय जब सभी सेवक आराम करते थे, ऊपर सिरोपा लेकर और मुँह पर कपड़ा ले लेते कि कोई पहचान न ले और अपने हाथों से झाड़ू देना और संगतों के जूठे बर्तन इधर-उधर से इकट्ठे करके, अपने हाथों से उनको मांजना, धोना और बहुत प्रसन्न होना।

बाबा नंद सिंघ जी ने इतनी कमाई, बंदगी, जप-तप अवस्था के होते अपने गले के हजूरिए से दर्शन करने आई संगत के जोड़ों की सेवा करनी। भाई डरोली को बाबा जी का संग प्राप्त हुआ है। उन्होंने एक बार जिक्र सुनाया कि मैं एक बार बाबा जी के दर्शन करने गया और किसी से पता चला कि बाबा जी अपने आसन पर नहीं हैं। मैंने सोचा ठाठ के दर्शन कर लें। उसने बताया कि जब जोड़े उतारने के लिए जोड़ा घर की ओर गया तो वहां थोड़ा-सा अंधेरा था। जब मैं जोड़ा उतारने लगा तो यों महसूस हुआ कि वहां कोई जोड़ा उठाने की चाह में बैठा हुआ है। जब मैंने पूछा, भाई, तुम कौन हो? तो उसने कोई उत्तर न दिया, जिस कारण मेरा शक और पक्का हो गया। मेरे बार-बार पूछने पर भी वह कुछ न बोला तो मैंने उसे कंधे से पकड़कर हिलाया और यह देखकर हैरान हो गया कि बाबा जी मुँह नीचे करके स्वयं जोड़ों में बैठे हुए थे और अपने गले के हजूरिए से एक-एक जोड़ा साफ कर रहे थे। भाई डरोली कहने लगा कि मेरी आंखों में आंसू आ गए और मैं बाबा जी से माफी मांगने लगा कि मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। मैं आपको पहचान नहीं सका, मुझे बख्श दो, बख्श दो। साथ ही पूछ लिया, बाबा जी, आपकी इतनी कमाई, इतना जप, तप, इतनी उच्चावस्था और जोड़ों की सेवा में बैठे हो? बाबा जी कहने लगे, यों लगता है जैसे तूने कभी संगत के जोड़े नहीं झाड़े तो ही तू आनंद और स्वाद से परिचित नहीं क्योंकि तूने यह रस चखा ही नहीं लगता।

श्रद्धा की पांचवी निशानी

संत बाबा शाम सिंघ जी ने दरबार साहिब जाकर छबील पर जल पिलाने की सेवा करना, परिक्रमा में से खुरपी से कबूतरों की विष्ठा को इकट्ठी करके थैली में डालना। एक दिन किसी ने पूछ लिया कि यह थैली में क्या है? संत जी कहते हैं, इसमें वह पदार्थ हैं जिसको इकट्ठा करके ऋद्धियों-सिद्धियों की प्राप्ति होती है। भाव कि इतने चाव व प्रेम से परिक्रमा में झाड़ू की सेवा करना कि कई देखने वालों ने उनसे प्रभावित होकर सेवा में लग जाना। यही नहीं, छबील पर जूठे बर्तन मांजने की सेवा भी करना और करना भी खुशी से, धन्यवाद से और खुशी से सेवा तो वही कर सकता है, जिसको अन्दर से चाव हो, भूख हो।

आओ अरदास करें सतिगुरु के चरणों में कि हम सबके जीवन में भी ऐसा समय आए, हम पर भी कृपा हो जाए, ऐसी बख्शिश हो जाए कि हम सब को संगतों की सेवा का स्वाद आए और सेवा करते अनुभवी रस की प्राप्ति हो। सतिगुरु कृपा करें, हम पुण्यों से विहीनों को अपनी बख्शिश के खाते में से कृपा करके सेवा-सिमरन की भूख प्रदान करें, हमें वास्तविक रस की प्राप्ति हो और हमारे जीवन का जो वास्तविक मनोरथ है, जिसके लिए मानव जन्म मिला है, वह प्राप्त कर सकें।

☆☆☆

श्रद्धा की छठी निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :

वह अपने गुरु को 1 नम्बर और दुनिया को 2 नम्बर पर रखेगा।

कई लोग इस संसार में अपनी पूरी जिंदगी दुनियादारी और रिश्तेदारों को खुश करने में लगा देते हैं परन्तु वे खुश होते ही नहीं। एक खुश होता है और दूसरा नाराज़ हो जाता है, यह चक्र चलता ही रहता है। कोई भी इन्सान हरेक को खुश नहीं कर सकता, इसलिए यदि चाहते हो अपना लोक-परलोक संवारना, यदि चाहते हो आपका इहलोक सुखी परलोक सुहावना हो जाए तो गुरु को प्रियतम बना लो, गुरु की ओर मुँह कर लो, गुरु को मना लो, गुरु को खुश कर लो, जिसके हुक्म में सम्पूर्ण सृष्टि है, सृष्टि का हर कण, हर पत्ता, हर जीव-जन्तु, हर इन्सान जिसके हुक्म में है, यदि उसकी ओर मुख कर लोगे, उसको खुश कर लोगे तो फिर दीन-दुनिया की कौन-सी चीज़ है जिसको वह हुक्म करके आपके चरणों में नहीं ला सकता। जिसके हाथ में डोरी है, उसकी ओर मुख कर लें, दुनिया के सुख, माया, रिश्तेदार सब आपके पीछे लग जाएंगे। गुरु नानक साहिब जी के जीवन के एक ऐतिहासिक वृत्तांत से भी यही सीख मिलती है।

एक दफा गुरु नानक साहिब खेतों में अपने सुन्दर शीश के नीचे अपनी बांह रखकर आराम कर रहे थे। उधर से दो औरतें गुज़रीं। जब उनकी नजर गुरु साहिब की ओर पड़ी तो एक औरत, गुरु साहिब की ओर संकेत करके दूसरी को कहने लगी देख बहन, यों तो यह साधु बना फिरता है पर सरहाना चाह रहा है। गुरु साहिब

के कानों में जब उस औरत की यह बात पड़ी तो उन्होंने अपने शीश से बांह निकाल ली तो साथ ही दूसरी औरत बोल पड़ी, कहती है, देख बहन, यों तो साधु बना फिरता है पर अहं कितना है। गुरु साहिब ने अब उन औरतों की ओर पीठ कर ली और समझ गए कि दुनिया को खुश नहीं किया जा सकता। बाबा जी भी वचन करते थे "सूर्य की ओर मुख कर लो परछाई स्वतः ही पीछे-पीछे आ जाएगी और जो परछाई के पीछे दौड़े सूर्य की ओर पीठ करके तो यह हाथ ही नहीं आती। बाबा जी सुमति देते हैं कि न भागने की आवश्यकता है और न पकड़ने की, इसको पीछे लगाने का एक ही तरीका है कि सूर्य की ओर मुँह कर लो, परछाई स्वतः ही पीछे लग जाएगी। सूर्य कौन है– गुरु, परछाई क्या है– गुरु की ओर मुँह कर लो, माया भी स्वयं पीछे लग जाएगी। भगत नामदेव जी भी अपनी रचित बाणी जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है, के द्वारा हमें यही सीख दे रहे हैं–

बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो॥
लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो॥

(अंग ६५७)

इतिहास लिखता है कि एक बार भगत नामदेव जी अपने परिवार सहित तीर्थ यात्रा के लिए गए। कुछ साल बाद जब वापिस लौटे तो क्या देखा कि उनकी झोंपड़ी की अपेक्षा एक सुंदर महल बना हुआ है। आस-पड़ोस से पूछने पर पता लगा कि सेठ ने अपना महल बनाते समय उसकी झोंपड़ी वाली जगह भी साथ ही मिला ली है। भगत नामदेव जी किसी अन्य जगह पर अपनी कुटिया बनाने के लिए सरकंडे लेने चले गए। जब सरकंडे के पौधे को दातरी से काटना शुरु किया तो उस पर दरार के निशान देखकर उनका हृदय द्रवित हो गया। (प्रभु के भगतों का हृदय बहुत कोमल होता है, वह किसी का भी दुख बर्दाशत नहीं कर सकते, क्योंकि वह कण-कण में परमेश्वर को समाया हुआ महसूस करते हैं) भगत जी को यों अनुभव हुआ ज्यों पौधे दातरी के दुख से रोए हैं। यह सब देखकर भगत जी की समाधि लग गई। भगत जी का इतना

प्रेम व कोमल हृदय देखकर परमेश्वर ने स्वयं मिस्त्री का रूप धारण कर उसके लिए सुन्दर कुटिया तैयार कर दी और नामदेव जी को कहा, अपने घर जाओ, तुम्हारी कुटिया तैयार हो गई है। भगत जी की इतनी सुन्दर कुटिया देखकर उनकी पड़ोसन कहने लगी, आपकी कुटिया बहुत सुन्दर है, मुझे भी अपना कारीगर ला दो, उसकी क्या मज़दूरी है, वह कहां और कब मिलेगा, मैं उसको दुगुणी मज़दूरी देने के लिए तैयार हूं। यही जवाब भगत नामदेव जी ने अपनी उस पड़ोसन को यह शब्द उच्चारण करके दिया जो हमारे लिए बहुत बड़ी सीख है कि यदि तू अपनी प्रीति लोगों से, रिश्तेदारों से, दुनिया से तोड़कर परमेश्वर से जोड़ ले तो वह परमात्मा तुझे मिल जाएगा भाव तेरे सभी कार्य वह स्वयं ही सम्पन्न कर देगा।

यहां एक बात याद रखना, जो दुनिया को 2 नंबर पर और गुरु को 1 नंबर पर रखते हैं, दुनिया के नासमझ व अनजान लोग ऐसे भगतों के विरोधी बन जाते हैं, उनके रास्ते में कई प्रकार की रुकावटें उत्पन्न कर देते हैं, यहां तक कि कई बार अपने घर परिवार वाले भी दुश्मन बनकर राह रोकते हैं, पर परमात्मा के सच्चे आशिक इन सबकी परवाह न करते हुए बेपरवाह व बेखौफ होकर प्रेम के रास्ते पर चले जाते हैं। उनको दुनिया की कोई परवाह नहीं होती। फिक्र होती है तो एक कि कहीं उनकी गुरु से प्रीति न टूट जाए, कहीं उनका गुरु से प्रेम न टूट जाए, दुनिया रूठती है तो रूठ जाए

"मेरा रूठे न कलगियों वाला जग चाहे सारा रूठ जाए।"

जिनका प्रेम अपने गुरु से है, इतिहास साक्षी है कि वे आरे से दो फाड़ हो जाते हैं, अंग-अंग कटवा लेते हैं, परन्तु अपने गुरु से विमुख नहीं होते, अपने गुरु के सन्मुख रहते हैं। धन्य हैं कलगीधर पातशाह और धन्य हैं कलगीधर पातशाह के सिक्ख। गुरु गोबिंद सिंघ जी सच्चे पातशाह जी ने अपना सर्वस्व खालसा कौम पर न्योछावर कर अपने सिक्खों में यह भावना भर दी कि अपना धर्म बचाने की खातिर अगर अपना सबकुछ कुर्बान करना पड़े तो

भी अपनी सिक्खी से पीछे नहीं हटना, अपने गुरु से विमुख मत होना। गुरु गोबिंद सिंघ जी के सिक्खों का इतिहास पढ़कर रौंगटे खड़े हो जाते हैं कि उन्होंने अपनी सिक्खी को बचाने के लिए, अपने धर्म को बचाने के लिए असहनीय कष्ट सहन किए। भाई मनी सिंघ जी का पूरा परिवार ही (11 भाई, 10 पुत्रों में से 7 पुत्र और कई पौत्रे) सिक्खी सिदक निभाते हुए शहीदी को प्राप्त कर गए। भाई तारू सिंघ जी की शहादत भी सिक्खों के लिए एक प्रकाश स्तंभ है। उनको भी कहा गया था कि यदि तू सिक्खी को त्याग दे तो तुझे जीवनदान मिल सकता है, पर धन्य गुरु के सिक्ख भाई तारू सिंघ जी कहते हैं, मुझे तो सिक्खी अपने प्राणों से भी प्यारी है। हकूमत द्वारा उनके केशों सहित खोपड़ी को अलग कर देने का हुक्म हो गया। भाई जी ने इस हुक्म को सहर्ष स्वीकार कर लिया, पर सिक्खी से अलग होकर गुरु से विमुख होना परवान न किया। माताओं ने अपने बच्चों के टुकड़े गले में डलवा लिए पर सिक्खी सिदक से नहीं डगमगाई। ऐसे थे गुरु कलगीधर जी के सिक्ख जिन्होंने अपने सतिगुरु की वाटिका को बढ़ाने के लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया। आज हम इस वाटिका को स्वयं ही उजाड़ने में लगे हुए हैं। जिस कौम का इतिहास इतनी शहीदियों भरा हो, जिस सिक्खी के महल की हर ईंट के नीचे कई सिक्खों का रक्त और कुर्बानी दबी हो, ऐसी कौम में पैदा होने वाले अगर आज सिक्खी के प्रभाव से परे रहें, यह बड़ी शर्मनाक व दर्दनाक बात है। जिस सिक्खी के पौधे को खून से सींचा गया है, हमें तो चाहिए कि उसको ऐसा पेड़ बनाएं जिसकी छांव का आनंद हर कोई प्राप्त कर सके, न कि स्वयं ही सिक्खी से दूर होकर इस छांव का आनंद पाने से वंचित रह जाएं। असल में देखा जाए तो धर्म ही इन्सान की पहचान है। उस परमपिता परमेश्वर ने जिस किसी को भी जिस धर्म में पैदा किया है, मुबारक है। सभी धर्म भले हैं पर जो इन्सान अपने धर्म को प्यार नहीं करता, अपने गुरु के बताए मार्ग पर नहीं चलता, वह इन्सान होकर पशुओं सरीखा जीवन व्यतीत कर रहा है। जिस इन्सान को अपने गुरु की कद्र नहीं, जो अपने गुरु से दुनियादारी

को, अपने रिश्तेदारों को, धन-दौलत को, मान-प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्व देता है, दास के मुताबिक तो उसका जीना, धरती पर आना ही निष्फल है।

धर्म सभी भले हैं पर जब कोई सिक्ख धर्म को समझता है, सिक्ख धर्म व इतिहास को पढ़ता है, सिक्ख गुरुओं के जीवन, उनकी महिमा, उनकी बड़ाईयां, उनकी कृपा, उनके आदर्शों व शिक्षाओं बारे जानता है, उनका अपना सिक्ख सेवकों के लिए प्यार बारे पढ़ता-सुनता है तो दास का तो यह पक्का दावा है कि यदि कोई सिक्ख है तो उसके अन्तर्मन से जरूर शुक्रिया निकलता होगा कि परमात्मा ने उसको सिक्ख धर्म में पैदा किया है और जो सिक्ख नहीं है, पर सिक्खी के लिए तरसते हैं। दास तो कई बार बैठा सोचता है कि कितने अभागे हैं वे इन्सान जो सिक्ख होने के बावजूद सिक्खी का महत्त्व नहीं जानते। उनकी मत पर फैशन ने, माया ने, दुनियादारी ने ऐसा पर्दा डाला है कि वह इन झूठी चीज़ों की खातिर गुरु की ओर पीठ कर रहे हैं। ऐसा गुरु, जिसकी ओर केवल एक कदम प्यार का उठाने की आवश्यकता है, वह करोड़ों कदम हमारी तरफ प्यार के उठाकर हमें अपनी बांहों में ले लेता है। हमारे जन्म-जन्मान्तरों के कर्मालेख क्षण में फाड़ देता है। हमारे झुकने में देरी है, वह हमारे बड़े से बड़े गुनाह माफ करने में एक पल नहीं लगाता। हमारा लोक-परलोक सुखी करता है। हमारे अवगुण देखता भी है, पर फिर भी नियामतें देने से पीछे नहीं हटता। हमारे सभी कार्यों को सम्पूर्ण करता है। हमारी सभी चिंताओं, सभी बोझ, सभी दुख दूर करके सुख व शान्ति प्रदान करता है। ऐसा जिसके गुण बयान नहीं किए जा सकते, हम उसे छोड़कर दुनिया से प्रेम जोड़ते फिरते हैं। उस दुनिया को खुश करने की हर वक्त कोशिश में लगे रहते हैं, जिनका प्रेम झूठा है, दिखावा मात्र है, स्वार्थपूर्ण व मतलबी है। गुरु का प्रेम दुनिया के प्रेम से बहुत अलग है। इतना प्रेम तो सगी मां भी अपने पुत्र से नहीं करती होगी जितना गुरु अपने सिक्ख से करता है। सबसे बड़ी बात गुरु अपने सिक्ख की केवल इस दुनिया में ही नहीं बल्कि मरणोपरांत भी बांह नहीं छोड़ता। गुरु के

प्रेम में सर्व सुख हैं, सर्व भण्डार हैं। गुरु को 2 नम्बर पर वही रख सकते हैं जिन्होंने गुरु के प्रेम व आनंद को पाया ही नहीं। ऐसे लोगों को ही गुरु से दुनियादारी अधिक अच्छी लगती है। उनको गुरु के प्रेम से माया में से और सुख-साधनों में से खुशी मिलती महसूस होती है, पर एक बात याद रखना, वास्तविक आनंद व खुशी तो गुरु से प्रेम करने से ही मिल सकती है।

इस समय कलियुग पूरे जोर पर है और वह हर तरह से प्रभाव डालकर हमें अपने गुरु से तोड़ना चाहता है, अतः दास यही कहेगा कि हे गुरु के सिक्खो! आप पर चाहे कितनी ही कोई विपत्ति आ जाए, चाहे आपके सभी संबंधी आपको छोड़ दें, चाहे आपका सबकुछ चला जाए, चाहे सब खुशियां छिन जाएं, कलियुग चाहे अपने चक्रव्यूह में कितना भी फंसाने की कोशिश करे, तो भी अपनी सिक्खी से डोलना मत, कभी भी गुरु की ओर पीठ न करो, क्योंकि इन झूठी चीजों को अगर हमने अपने गुरु की खातिर कुर्बान कर भी दिया तो उसके बदले में हमें अपने प्यारे गुरु की गोद मिलनी है, प्यार मिलना है जिसका कोई मूल्य नहीं, जो अमूल्य है। गुरु साहिब कृपा करें हम सबको सिक्खी से प्रेम हो जाए, हमें गुरु की गोद में बैठने की चाह हो जाए, सिक्खी को समझ लें, सिक्खी से दूर मत हो जाएं। दास, गुरु-घर के कूकर की आप सबके चरणों में विनती है, अपने बच्चों का भी अवश्य ध्यान रखा करो। हमारे बच्चे चाहे कितनी ही उच्च विद्या प्राप्त कर लें, चाहे कितने बड़े उच्च पदों पर पहुंच जाएं, पर ध्यान रखना कहीं वे अपने गुरु को न भूल जाएं। उच्च पदवियों पर पहुंच कर कहीं भी उनको गुरु की सिक्खी छोटी न लगने लग जाए। कहीं ऐसा न हो कि बड़ी पढ़ाई करने के पश्चात, उच्च मुकामों पर पहुंचने के बाद उनके हृदय में गुरु के प्रति प्रेम ही न रहे, उनकी नज़र में गुरु के आदर्शों को, गुरु की बताई मर्यादा का कोई मूल्य ही न रहे। जब सिक्ख का बच्चा पतित हो जाता है तो इसका यही भाव है कि गुरु के आदर्शों व गुरु की मर्यादा का उसके लिए कोई मूल्य नहीं, उसके लिए कोई महत्व नहीं।

कुर्बान जाएं उन पर जो बड़े से बड़े पदों पर पहुंच कर भी अपने मुरशद को पहल देते हैं, अपने गुरु के दायरे में रहते हैं। कई विदेश अमेरिका, कैनेडा इत्यादि जाते हैं और वहां जाते ही अपने केश कटवा लेते हैं, यह क्या है दुनिया 1 नम्बर और गुरु 2 नम्बर। गुरु पर श्रद्धा रखने वाले सिक्खी की आन-शान को कायम रखते हैं।

एक गुरमुख प्यारा अमेरिका का रहने वाला, उसने बताया कि मेरा बेटा अमेरिका के स्कूल में पढ़ता है और स्कूल में फर्स्ट आने के कारण उसके सिर पर पगड़ी से सुसज्जित फोटो, स्कूल में सबसे ऊँची लगी है। बात सुनाते-सुनाते खुशी में, गुरु के प्यार, गुरु के धन्यवाद में वैराग्य से उसकी आंखें विह्वल हो गई और कहने लगा कि जब मैं अपने बच्चे की पूर्ण सिक्खी स्वरूप में सुन्दर फोटो स्कूल में देखता हूं तो अन्तर्मन से शुक्रिया निकलता है कि सतिगुरु! तेरा सिक्ख बच्चा इतने बड़े मुलक की पढ़ाई में फर्स्ट आया है और सिक्खी का नाम रौशन कर रहा है। एक अन्य उन्होंने अपनी बात सुनाई, दास व्यक्त करे, जिसे पढ़कर शायद हमें कुछ सीख मिल जाए। उसने बताया कि चाहे अमेरिका में अंग्रेज़ी भाषा का प्रसार है, पर हमारे घर में सब पर यह प्रतिबंध है कि घर में हर बात पंजाबी में ही करनी है तांकि हम अपनी गुरमुखी भाषा, अपनी मातृभाषा न भूल जाएं। कुर्बान जाएं ऐसे लोगों पर जो विदेशों में जाकर भी अपने मुलक, अपनी विरासत, अपने धर्म के उसूल, अपने गुरु के आदर्श को याद रखते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो पतित अपना वास्तविक रूप बिगाड़ कर खुशी महसूस करते हैं इसमें अपनी शान समझते हैं। दास के मुताबिक तो जो सिक्ख होकर अपने केश कटवाता है, यह सोचकर कि मैं सुंदर लगूंगा, वह सुंदर नहीं अपितु कुरुप लगता है।

एक गुरसिक्ख की पत्नी का देहांत हो गया। वह पुनः ऐसा जीवन-साथी चाहता था जो गुरसिक्ख हो। 8 साल बीत गए, कोई ऐसा रिश्ता न मिला, पर उसने अपने विचार न बदले। एक ऐसी लड़की का रिश्ता आया जिसके नाम पर 7 किले ज़मीन थी, उससे

शादी करवा कर वह लाखों की ज़मीन का मालिक बन सकता था, उसकी पूरी गरीबी कट सकती थी, कर्ज़ उतर सकते थे, ऐशो-आराम की ज़िंदगी मिल सकती थी, पर उस लड़की की शर्त थी कि वह क्लीन शेव हो जाए, पर देखो! उस गुरमुख प्यारे ने क्या जवाब दिया। कहता है कि चाहे लड़की के नाम 100 किले ज़मीन भी होती तो भी मैं एक रोम कटवाने के लिए भी तैयार नहीं। मुझे गरीबी की ज़िन्दगी मंजूर है, बिना पत्नी के जीवन व्यतीत करना मंजूर है पर गुरु से विमुख होना मंजूर नहीं। यह क्या है गुरु को 1 नंबर पर रखना और दुनिया को 2 नंबर पर। आप अपने लिए सीख लेना।

जो गुरु को 1 नंबर पर रखे, फिर गुरु भी किसी तरफ से कमी नहीं रहने देता, लोक-परलोक के सुख प्रदान कर देता है। आप स्वयं ही अंदाज़ा लगा लो कि कोई सिपाही का एस.एस.पी. मित्र बन जाए तो वह कितना खुश होता है, खुशी से झूमता है कि मेरी एक बड़े उच्चाधिकारी से मित्रता है। मेरा परिचित है और यदि कहीं गुरु परिचित बन जाए, गुरु मित्र बन जाए, फिर दीन-दुनिया में किसी बात की कमी नहीं रह जाएगी। फिर तो न यहां की चिन्ता न वहां की, दरगाह की भी चिंता समाप्त हो जाती है। इस दुनिया में तो फिर भी आपके कोई संबंधी, मित्र आपका साथ दे सकता है, पर दरगाह में तो गुरु के अलावा किसी ने नहीं साथ देना।

ऐथे ओथै रखवाला॥ प्रभ सतिगुर दीन दइआला॥

(अंग ६२८)

यदि चाहते हो कि गुरु अंगीकार हो जाए तो ज़िंदगी में हर छोटे से लेकर बड़े काम में गुरु को एक नंबर पर रखा करो और दुनिया को दो नंबर पर। दास एक ज़िक्र व्यक्त करे तांकि हमें समझ आ जाए कि गुरु को एक नंबर पर रखने से क्या भाव है। एक महिला प्रत्येक सप्ताह संगत में आने वाली, अनेक वर्षों से संगत करने वाली, बड़ी गुरु साहिब की कृपा थी उस पर। एक दिन अचानक उससे सामना हुआ और देखा उस महिला के

"आई-ब्रो" बने हुए। दास देखकर बड़ा दंग हुआ और बड़ा दुखी हुआ कि एक गुरसिक्ख बच्ची जो इतने वर्षों से संगत कर रही है, आज उसके कदम उस दिशा की ओर चल पड़े जिसमें गुरु की खुशी नहीं, अपितु नाराज़गी है। दास ने पूछ लिया, बहन जी! आप तो 6-7 वर्षों से संगत कर रहे हो, पहले तो गुरु की बड़ी कृपा थी आप पर, आप रोमों का निरादर नहीं थे करते। फिर अचानक आज आपका यह रूप कैसे हो गया, आपने आई-ब्रो बना लिए हैं। उसने जो जवाब दिया उससे समझ जाना कि गुरु को एक नंबर पर रखना क्या है और दुनिया को एक नंबर पर रखना क्या है। उस महिला ने प्रत्युत्तर दिया, भाई साहिब जी! विवाह था, घर में बहुत सारे रिश्तेदार इकट्ठे हुए थे। वे सभी मुझे कहने लगे कि तू आई-ब्रो क्यों नहीं बनवाती, आई-ब्रो न बनवाने के कारण तू पगली-सी लगती है, शादी में इस तरह शोभा नहीं देता। यदि तेरा मन नहीं मानता तो बाद में फिर बेशक न बनवाना पर अब विवाह में एक बार अवश्य बनवा ले। दुनियादारी भी तो देखनी चाहिए। सभी कहेंगे कि यह कौन-से पुराने ज़माने की औरत है जिसको तैयार होने का भी ढंग नहीं। वह कहने लगी कि इस तरह बार-बार सब के कहने पर मैंने यह कदम उठा लिया। इशारा समझना, यह क्या है? दुनिया एक नंबर पर हो गई और दशमेश गुरु दो नंबर पर हो गए। जो गुरु को एक नंबर पर रखते हैं, वे जब तैयार होते हैं तो यह नहीं देखते कि दुनिया को सुंदर दिखाई दें बल्कि यह देखते हैं कि गुरु को अच्छे लगें।

आप जी जानते हो कि गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक दिन एक सिक्ख को दीवान में बड़ा आदर दिया, प्रेम प्रदान किया। जब वह घर गया और जाकर बार-बार आइने में अपना चेहरा देखता जाए कि आज गुरु साहिब ने मुझे बड़ा प्यार प्रदान किया है, क्या मैं बहुत सुन्दर हूं। आइने की ओर देखते समय उसकी नज़र अपनी दाढ़ी के भीतर एक सफेद बाल पर पड़ गई। सोचता है यदि मैं यह सफेद बाल काट दूं तो और ज्यादा सुंदर दिखाई दूंगा। ऐसा ही किया, काट दिया सफेद बाल अपनी दाढ़ी में से। अब जब

अगले दिन गया कलगीधर जी के दर्शनों को तो गुरु साहिब ने उसकी ओर पीठ कर ली। वह बहुत रोया कि गुरु साहिब कल इतना प्रेम और आज इतनी नाराज़गी। कारण क्या? क्या भूल हो गई? सतिगुरु ने कहा, जो तू कल था वह आज नहीं। आज रोम काटने की वजह से हमारी नज़रों में तेरी सुन्दरता खत्म हो गई है। अब आप स्वयं अंदाज़ा लगा लो कि एक रोम काटने से गुरु साहिब ने पीठ कर ली और जो रोमों का अपमान करते हैं, उनको गुरु की प्रसन्नता कैसे मिल सकती है ? गुरु उनकी ओर कैसे हो सकता है ?

कोई भी कदम उठाना हो तो यह ज़रूर देख लिया करो कि मैं जो करने जा रहा हूं उसके लिए गुरु की अस्वीकृति तो नहीं। दास गत दिवस इंगलैंड गया। वहां गुरु ने कीर्तन की सेवा ली। वहां का एक गुरमुख प्यारा अरबपति, बेशुमार दौलत, नौकर-चाकर, शाही ठाठ, सुख-सुविधाएं, उसने दास को अपनी वार्ता सुनाई, जो दास आप जी से व्यक्त करे तांकि हमें निश्चय हो जाए कि जो गुरु को एक नंबर पर रखते हैं, गुरु उनको कैसे सौभाग्य लगाता है।

उस गुरसिक्ख ने बताया कि आज से कोई 17-18 वर्ष पूर्व जब मैं पंजाब से इंगलैंड में नौकरी करने के लिए आया। जब पहली जगह गया नौकरी के लिए, इंकार हो गया। लगभग दो माह काम नहीं मिला। एक दिन किसी जगह नौकरी के लिए गया, उसने मेरी योग्यता इत्यादि पूछी और कहने लगे, आप नौकरी के लिए ठीक हो, क्योंकि हमें जिस तरह का व्यक्ति चाहिए, उस तरह पूरी सैटिंग ठीक है। आपकी पढ़ाई भी ठीक है, कद भी ठीक है, हम आपको 12 पौंड घण्टे का रोज़ दे देंगे और 8 घण्टे रोज़ काम करना होगा, इस तरह आपको 96 पौंड रोज़ के (इण्डिया का 7700 रुपए) मिलेंगे। उसने कहा, मैं बड़ा खुश। गुरु साहिब ने कृपा की है जो अपना घर, अपना शहर छोड़कर यहां नौकरी के लिए आया और नौकरी मिल गई है, पर उसकी अगली बात सुनकर मैं दुविधा में पड़ गया, क्योंकि उसने कहा, हमारी एक शर्त है यदि आपने हमारे कारखाने में काम करना है तो आपको केश कटवाने पड़ेंगे, दाढ़ी

को कटवाना पड़ेगा। वह कहने लगे, अब दो मन झगड़ पड़े। एक तरफ माया और एक तरफ सिक्खी। किसको एक नंबर पर रखूं पर मन पक्का किया। वह कहने लगा, मैंने सोचा गुरु के सिक्खों ने सिक्खी बचाने के लिए क्या कुछ नहीं किया, उन्होंने अपने शीश कटवा लिए, पर केश नहीं कटवाए और मैं एक नौकरी की खातिर अपने केश कटवा लूं, अपने गुरु की ओर पीठ कर लूं, सिक्खी को छोड़ दूं, यह नहीं हो सकता। मेरे कानों में जैसे आवाज़ें गूंजने लगीं–

सिर जाए तो जाए पर मेरा सिक्खी सिदक न जाए॥

कहता है कि बड़ी मुश्किल से गुरु की कृपा से मन को पक्का किया कि नौकरी मिले या न मिले पर सिक्खी को नहीं छोड़ना। (यह है गुरु को एक नंबर पर रखना) उसने बताया कि इस तरह नौकरी की तलाश करते 5-6 दिन बीत गए पर जहां भी जाए, वह यही शर्त रखते कि केश कटवाने पड़ेंगे। कहता है कि अब मेरी हालत यह हो गई कि मेरे पास पैसे भी खत्म हो गए। किसी परिचित मित्र से उधार पैसे लेकर एक-एक दिन कट रहा था। एक दिन एक स्टोर में नौकरी के लिए गया। उन्होंने मेरी पढ़ाई, लिखाई के सर्टिफिकेट देखे, मुझ से कम्प्यूटर चलवा कर देखा और कहा आपकी नौकरी पक्की है। 13 पौंड घण्टे के मिलेंगे। 8 घण्टे रोज़ का काम करना होगा। मैं बड़ा खुश हुआ कि शुक्र है इन्होंने केश कटवाने की शर्त नहीं रखी, पर यहां भी गुरु की परीक्षा पड़ गई। स्टोर का मालिक कहने लगा कि हमारे स्टोर में बीड़ी सिगरेट भी है। इस बारे में आप अपने मन से विचार कर लो कि आपको वह सिगरेट बीड़ी इत्यादि भी ग्राहक को अपने हाथ से पकड़ाना पड़ेगा।

अब फिर दो मन लड़ पड़े। एक तरफ नौकरी, एक तरफ सिक्खी। मन में यह भी आया कि प्लास्टिक के दस्ताने डालकर दे दूंगा, पर मन दृढ़ किया। क्योंकि मन में आ गया कि मेरे गुरु पिता का तो घोड़ा भी नहीं गया था तंबाकू के खेत में। (कलगीधर पातशाह का नीला घोड़ा) आगे नहीं था बढ़ रहा तो सतिगुरु ने कहा था, नीले ! आगे क्यों नहीं बढ़ता ? फिर दया सिंघ को कहा,

देख नीला आगे क्यों नहीं जा रहा। (गुरु साहिब तो जानते थे पर हमें सीख देने के लिए कौतुक कर रहे थे) दया सिंघ ने आगे जाकर देखकर बताया कि सतिगुरु सच्चे पातशाह! आगे तम्बाकू के खेत हैं। सतिगुरु कहने लगे, हमारा नीला भी सेवा में रहने के कारण अन्तर्यामी हो गया है। यह जान गया है कि आगे तम्बाकू के खेत हैं और इसको इस बात की भी सूझ है कि यदि यह हमें तंबाकू के खेतों में ले गया तो इसकी सारी सेवा निष्फल हो जानी है।

वह गुरसिक्ख कहने लगा बड़ी मुश्किल घड़ी बन गई मेरे लिए उस वक्त। एक तरफ 104 पौंड रोज़ की नौकरी, ऊपर से मेरे पास कोई पैसा भी नहीं था बचा, उधार पैसे लेकर गुज़ारा कर रहा था और दूसरी तरफ कलगीधर की सिक्खी। कहता है, मैंने बड़ी मुश्किल से अपने मन को दृढ़ किया कि जो भी हो जाए वह काम नहीं करना जिसकी गुरु की ओर से मनाही है, यह सोचकर वहां भी नौकरी से मना कर दिया। आप भी इस गुरमुख प्यारे की आपबीती पढ़कर अपने लिए सीख लेना कि आप पर भी बेशक कितनी मुश्किल घड़ी क्यों न बन जाए पर गुरु के बताए मार्ग को कदापि न छोड़ना, यही है गुरु को एक नंबर पर रखना और दुनिया को दूसरे नंबर पर। वह गुरमुख प्यारा पूरे दो महीने बिना नौकरी के रहा, उधार पैसे लेकर गुज़ारा करता रहा, पर नौकरी की खातिर सिक्खी को नहीं छोड़ा। गुरु को पीछे नहीं डाला, इसको कहते हैं गुरु से सच्चा इश्क। 17 जगह से नौकरी से इंकार हुआ पर उसने अपना मन कमज़ोर नहीं होने दिया। तदुपरांत गुरु ने भी ऐसी कृपा की कि आज उस गुरसिक्ख के अपने स्टोर हैं, अपनी संपति है, कितनी ही कार पार्किगें हैं, वहां कार पार्क करनी हो तो 5 पौंड किराया है। 500 कार भी पार्क हो तो रात को घर बैठे 2500 पौंड मिल जाते हैं। देख लो गुरु को एक नंबर पर रखा, गुरु की खातिर कुर्बानी की फिर गुरु भी कई गुणा अधिक लौटाता है। गुरु ने ऐसी अनुकंपा की कि अब वह मिट्टी को भी हाथ लगाता है तो सोना बन जाती है। वह शरीर जो 18-19 वर्ष पूर्व नौकरी की तलाश में था, आज उसके अधीन 150 शरीर काम करते हैं, जिसमें 50 अंग्रेज़

और 100 इण्डियन हैं। देख लो यदि उसने गुरु को एक नंबर पर रखा फिर गुरु को भी कितनी चिंता कि उसने मेरी सिक्खी निभाई है, माया की खातिर मुझसे मुँह नहीं मोड़ा, अब मैं माया को इसके कदमों में ला देता हूं, इसको किसी की नौकरी नहीं करने देनी, बल्कि दूसरे इसके पास नौकरी मांगने आएंगे। वह शरीर यह नहीं कि माया आने के बाद गुरु को भूल गया, यह भी अपने लिए सीख लेना, अधिकांश के पास जब माया जब बहुत आ जाए तो उसके चेहरे का रूप-रंग बदल जाता है, फिर उनको गुरु की सिक्खी छोटी लगने लग जाती है, उसको सिक्खी निभाने में शर्म आती है। उस गुरसिक्ख का प्रेम देखो। कहता मैंने अपने स्टोर में नौकरी के लिए यह शर्त रखी है कि जो भी कोई सिक्ख नौकरी करे वह साबत सूरत हो। जो सिक्ख होकर दाढ़ी नहीं काटेगा, केश नहीं काटेगा, उसको 100 पौंड तनख्वाह अधिक मिलेगी। इस शरीर का नाम जसविन्द्र सिंघ कोहली है मानचैस्टर शहर में इनकी रिहायश है।

इशारा लेना। गुरु को एक नंबर पर रखना क्या है। यह नहीं कि सिर्फ नौकरी की बात चल रही है। आपने कोई कारोबार करना हो, वह भी पहले देखा करो कि सिक्खी में मंजूर है कि नहीं। कई काम ऐसे हैं जैसे मीट, मुर्गों के काम, नशे के काम, ब्यूटी पार्लर के काम, ऐसे कारोबार नहीं करने, जिनकी हमारी सिक्खी में मनाही है। कोई भी काम छोटे से बड़ा, चाहे कामकाज हो, चाहे बच्चों की रिश्ते की बात हो, हर काम में गुरु को एक नंबर पर रखा करो, कोई भी काम करो, गुरु को एक नंबर पर रखो और दुनिया को दो नंबर पर। इसमें यह भी आएगा कि अपने कई कामों को दूज और गुरु के कामों को पहल। जैसे कोई नौकरी-पेशा हो, उसको महीने बाद तनख्वाह मिलती है, यदि दुकानदार है तो अपनी दुकान से महीना निकालता है। अब जिसके भीतर श्रद्धा की यह छठी निशानी गुरु को 1 नंबर पर रखने की है, वह अपनी तनख्वाह में से पहले गुरु का हिस्सा (दसवंध) निकालता है, पर जहां नहीं यह बात, वे कई तो निकालते ही नहीं दसवां भाग या कई सोचते रहते हैं अच्छा आज निकालेंगे, कल निकालेंगे, या कहेंगे इस माह खर्चा

बहुत हो गया है, बिजली का बिल बहुत आ गया है, फोन का बिल ज्यादा आ गया है, इसलिए दसवां भाग निकालते ही नहीं या कई यह कह देंगे 10% नहीं निकालते 5% निकाल लेते हैं या और भी कम। यह है तो छोटी-छोटी बातें पर जो गुरु को पहल दे, वह पहले दसवां भाग निकालता है क्योंकि उसको सूझ है कि सच्चा व्यापार क्या है। गांवों में जहां गुरु को पहल हो, वह जब फसल काटते हैं, पहले गुरु का हिस्सा, गुरु के लंगर के लिए निकालते हैं, फिर अपने घर बांटना शुरु करते हैं।

गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल के लांगरी दरबारा सिंघ की साखी इस बात की साक्षी है। एक बार एक जाट मकई की रोटी व सरसों का साग बनाकर ला रहा था गुरु के लंगर के लिए। रास्ते में कुछ सिंघों के कहने पर उसने उनको गुरु का रूप, गुरु के प्यारे जानकर वह मकई की रोटी व सरसों का साग खिला दिया था। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसे भरे दीवान में जो वचन कहे थे, उससे हमें भी बड़ी सीख मिलती है, शिक्षा मिलती है, एक बड़ी ही प्यारी सड़क मिलती है, रास्ता मिलता है, उसके वचन थे कि हमारे पूर्वजों से यह रिवाज चला आ रहा है कि जब फसल को काटना है, उसका पहला भोजन पकाकर गुरु-घर लाना है। यह क्या है– अपने घर को दूज और गुरु को पहल। यह श्रद्धा की, प्रेम की निशानी है कि पहले गुरु के चरणों में अर्पण करके शुक्रिया अदा करना कि सतिगुरु तेरा दिया दान है, तेरी बरकत है, तेरी रहमत है, इसलिए सर्वप्रथम भेंट तेरे दर पर। श्रद्धा वाला जो गुरु को एक नंबर पर रखता है उसका जो भी कार्य हो, कूलर का, पंखों का, जो कुछ भी, उसके मन की यह भावना होती है कि मालिक ने उसको जिस चीज़ का भी काम दिया है, उसकी हाज़िरी गुरु-घर में पहले लगे। आप भी करो कहीं ऐसा प्यार गुरु से फिर देखो कैसे गुरु की कृपा होती है। गुरु-घर में किसी चीज़ की कमी नहीं, न गुरु को आपके धन या चीज़ों की आवश्यकता है पर भाग्य तो भावना को लगते हैं।

अमृतसर में ही दास का एक मित्र है। घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का कमरा भी है। उसकी पत्नी उसको कहती है कि कुछ

रकम आप डालो, कुछ मेरे पास है और हम अपने कमरे में ए.सी. लगवा लेते हैं, बच्चे भी ज़िद करने लगे कि गर्मी बहुत होती है, अवश्य ए.सी. लगवाओ। अब उस मित्र ने जो कहा, उससे इशारा लेना कि गुरु को पहल, गुरु को एक नंबर पर रखना क्या है। वह कहने लगा, मेरा मन नहीं मानता कि गुरु साहिब के कमरे में ए.सी. न हो अपने कमरे में लगवा लें। जिसका गुरु से प्रेम हो, वह कभी यह नहीं चाहेगा, कि गुरु से अधिक सुविधाओं में रहें। उस गुरमुख प्यारे की यह अवस्था थी, प्रेम भावना थी, पर उसकी पत्नी अभी यहां तक नहीं थी पहुंची। वह कहती है कि गुरु साहिब के कमरे में अगले वर्ष लगवा लेंगे। अवश्य चैक करो अपने अंदर की भावना को कि कहां खड़े हो?

हमें महापुरुषों द्वारा इशारा है कि गुरु साहिब का प्रकाश 6 बजे से पहले 4–5 बजे करने का व दोपहर को सुखासन करने का, यह भावना कि गुरु साहिब को दिन में कुछ आराम करवाना है। एक दिन की बात, दोपहर के तीन बजे थे, सुबह से रूटीन कुछ ऐसी थी कि बहुत ज़्यादा थकावट थी, अब एक मन कहे कि थोड़ी देर स्वयं पहले आराम करके फिर गुरु साहिब के कमरे में जाएंगे और सुखासन करेंगे, पर साथ ही ज्यों अंदर से गुरु साहिब द्वारा चेतावनी मिली कि यह तो अपने आप को पहल हो गई।

अपने आराम की परवाह है और गुरु को दूसरे नंबर पर रख दिया। यह छोटी-छोटी बातें हैं, संकेत है, जितना भी कोई चल सके।

ज़रूर चैक किया करो, हमें श्रद्धा की यह छठी निशानी मिली है कि नहीं? हम गुरु को पहल देते हैं कि स्वयं को? गुरु को एक नंबर पर रखते हैं कि दुनिया को? हमारा मुख गुरु की तरफ है कि दुनिया की तरफ? भाई गुरदास जी की पंक्तियां भी हमें यही सीख दे रही हैं–

सतिगुरु आगू जाणीऐ॥

(वार २६, प. १६)

हर काम में गुरु को आगे रखा करो जब नया मकान बनवाना

हो, नक्शा बनवाते हो, अब जिनके अंदर तो है श्रद्धा का भाग, वे गुरु को मुख रखते हैं, वे सर्वप्रथम गुरु साहिब के कमरे के बारे में सोचते हैं कि मेरे मालिक का कमरा ऐसा हो जहां वायु भी हो, रोशनी भी हो और कमरा भी सुंदर हो। एक बात याद रखना, जो ऐसी भावना रखे फिर गुरु भी उन पर कृपा करता है कि यदि इसको मकान दिया है तो इसने मुझे पहले नंबर पर रखा है। जिनके अंदर नहीं श्रद्धा वे अपने बैडरूम, बच्चों के कमरे, ड्राइंग रूम, डाइनिंग के बारे में सोचेंगे पर जब गुरु साहिब के कमरे की बारी आती है तो अटारी रह जाती है। शेष सभी कार्यों के लिए स्थान है, पर मालिक जिसने सब कुछ दिया है, उसके लिए कोई स्थान नहीं।

इसी तरह और भी सब तरह के छोटे-बड़े कार्यों में ज़रूर चैक किया करो कि गुरु को पहल देते हो कि दुनिया को? अपने घर, अपने संबंधियों, अपने सुखों को पहल देते हो कि गुरु को? हमारे जीवन में 4 संस्कार आते हैं जन्म संस्कार, अमृत संस्कार, अनंद संस्कार और अंतिम संस्कार। इन चारों में चैक करो कि दुनिया को दूज देते हो और गुरु को पहल या गुरु को दूज तथा दुनिया को पहल।

सर्वप्रथम जन्म संस्कार ले लो। जन्म संस्कार यदि जन्म से भी पीछे चले, जो मां गुरु को पहल देती है, उसकी जब आशा होती है तो वह नेम में वृद्धि कर देती है कि उसकी कोख में से गुरुमुख जन्म ले। बंदगी बढ़ा देती है कि पवित्रात्मा आए। यह बात पक्की है कि जब बच्चा मां के गर्भ में हो तो उस दौरान जैसा कर्म करे उसका प्रभाव बच्चे पर पड़ता है, इसलिए जो बहनें-बेटियां चाहती हैं उसके घर नाम जपने वाली आत्मा आए तो उस समय दौरान बाणी अधिकाधिक पढ़ो, अधिकाधिक भजन-बंदगी की ओर ध्यान दो, गुरु साहिब प्रसन्न होकर आपके घर पुण्यात्मा भेजेंगे। अब जब शिशु जन्म लेता है, यह एक आम रिवाज है कि उसके मुख को शहद लगाया जाता है। गुरु को पहल देने वाले की यही कोशिश होती है कि उसके बच्चे के मुख को शहद किसी महापुरुष की उंगली

से लगे। महापुरुष वचन करते थे कि जब बच्चे के मुँह को शहद लगाना है, चाहे उंगली से चाहे सोने की सिलाई से, सीधा मुँह में नहीं डालना, पहले उंगली से ही लगाकर बच्चे की जुबान पर 'वा' लिखना है, फिर दूसरी बार 'हि' फिर 'गु' फिर 'रु'। उस बच्चे के अन्दर शहद 'वाहिगुरु' शब्द में जाए। जन्म लेते ही नींव बने, बाहरी खुराक 'वाहिगुरु' शब्द की मिले। जिसका मुख गुरु की ओर है, वह हर कार्य में गुरु को बसाता है। कई लोगों में सामान्यतः यह रिवाज़ होता है कि पुत्र जन्म के उपरांत पार्टी देते हैं। अब जिनका मुख नहीं गुरु की ओर, वह मीट-शराब की पार्टी देंगे। किसी घर 7-8 वर्ष बाद औलाद हुई, पुत्र का वर प्राप्त हुआ। उसने इस खुशी में मीट, शराब की पार्टी दी। दास ने पूछ लिया कि आप यह पुत्र के जन्म की खुशी में मीट शराब की पार्टी क्यों दे रहे हो, आपको तो चाहिए कि घर में अखंड पाठ करवा कर या अन्य किसी प्रकार पाठों का प्रवाह चला कर सतिगुरु का शुक्रिया अदा करो कि उसने आपकी कामना पूरी की है। वह कहने लगा कि दुनियादारी देखनी पड़ती है। मीट-शराब की पार्टी न दी जाए तो रिश्तेदार संबंधी नाराज़ हो जाते हैं। यह क्या है? दुनिया को पहल, गुरु को दूज। जिसका मुख गुरु की तरफ है, वह मीट शराब की पार्टी नहीं देते। उसका तो जब बच्चा 3 दिन या 13 दिन का हो, उसके दिमाग में एक फिल्म घूमने लग जाती है कि पांच सिंघों या दो सिंघों या एक सिंघ को अपने घर बुलाए और उसको खाना खिलाए। वह सिंघ जपुजी साहिब का पाठ करके बच्चे को अमृत की बूंद पिलाए (तांकि मां बाप से बच्चे की जूठ शुद्धता का भेद न रहे) जब बच्चा होश संभालने योग्य हो जाए तो पांच प्यारों से पूरी मर्यादा से अमृतपान करवाते हैं।

दूसरा है अमृत संस्कार अमृत की दात गुरु गोबिंद सिंघ जी की महान बख्शिश है, एक अमूल्य दात है। पहले 9 गुरुओं तक चरण पाहुल दी जाती थी, दसम गुरु ने थोड़ा-सा मर्यादा को यूं किया। 11 माह सतिगुरु सच्चे पातिशाह चुप रहे, उसके बाद पांच शीश मांगे। पता नहीं उनकी क्या लीला थी? क्या देना चाहते थे?

खण्डे बाटे का अमृत तैयार किया और प्रत्येक सिक्ख के लिए हुक्म किया कि अमृतपान तेरे लिए अनिवार्य है। अमृतपान के उपरांत ही सिक्ख होने की मोहर लगती है। हिन्दू धर्म में जब जनेऊ की रस्म हो जाए तो उसकी धर्म में शामिल होने की मोहर लगती है। मुस्लिम धर्म में सुन्नत की रस्म होने पर धर्म में शामिल होने की मोहर लगती है और ईसाई धर्म में शामिल होने के समय जब पवित्र जल पिलाया जाता है तो वह ईसाई कहलाता है। इसी तरह प्यारो! सिक्ख धर्म में जब एक सिक्ख पांच प्यारों से अमृत की दात प्राप्त करता है तो ही वह गुरु का सिक्ख कहलाता है। सिक्ख के सही मायने में दो जन्म हैं, एक अपने मां-बाप के घर और दूसरा सतिगुरु के घर। एक जन्म तो हम सब ने ही लिया है। यदि यह न लिया होता तो शरीर रूपी पिंजर कई लोगों ने लिया है और कई लोगों ने नहीं। दूसरा जन्म है 'गुरु के घर में जन्म लेना, अमृतपान करके गुरु वाला बन जाना, उसकी प्राप्ति कई लोगों ने की है कई ने नहीं, पर यह है बहुत ही जरूरी। जब सिक्ख दूसरा जन्म धारण कर लेता है तो उसका आवागमन मिट जाता है। इस बात की गवाही गुरुबाणी भी देती है–

सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ॥

(अंग ६४०)

एक बार कलगीधर पातशाह मालवे की धरती पर अपनी मौज में बैठे थे। आप जी का एक बहुत ही प्यारा सिक्ख भाई डल्ला दर्शन करने के लिए आया। गुरु साहिब के दर्शन किए, चरणों पर माथा टेका और हाथ जोड़कर विनती करने लगा, सच्चे पातशाह आप जी की बहुत कृपा है, आप जी बहुत खुशियां, बहुत प्यार प्रदान करते हो, एक कृपा करना दरगाह में एक पीढ़ी जितनी जगह दे देना। सतिगुरु ने कहा, भाई डल्ला, चाहे तेरी गुरु-घर में बहुत सेवाएं हैं और तुझ पर हमारी प्रसन्नता भी है, पर दरगाह में तुझे पीढ़ी जितनी तो क्या, सूई की नोक जितनी जगह भी नहीं मिल सकती जब तक तू अमृतपान कर के सिंघ नहीं बन जाता। अब इस साखी से स्वयं अंदाज़ा लगा लो कि अमृतपान कितना जरूरी है। भाई

डल्ला, गुरु साहिब के कितने निकट, कितनी उसकी सेवाएं, गुरु साहिब की कितनी उस पर प्रसन्नता, कितना प्यार है कि अपने अंगों के साथ सुशोभित कई चीजें भी उसको खुश होकर देते थे पर क्या कहा अमृतपान के बिना कामयाबी नहीं मिल सकती। गुरु गोबिंद सिंघ जी के वचन हैं कि सिक्ख ने अमृतपान किया हो, जानबूझकर गलती न करे, अगर अनजाने में गलती हो जाए और नरक का भागी बन जाए तो भी मैं अपने अमृतधारी सिक्ख को दस हज़ार साल तक नरक में नहीं जाने दूँगा। बार-बार मनुष्य जन्म देकर मौका दूँगा तांकि यत्न करके अपना जन्म सफल कर ले। स्वयं अंदाजा लगा लो अमृतपान कितनी बड़ी दात है।

कई कह देते हैं अमृतपान की क्या आवश्यकता है। मन साफ होना चाहिए। बाबा ईशर सिंघ जी वचन करते थे कलगीधर पातशाह कवियों में सबसे बड़े कवि, लेखकों में से बड़े लेखक, तपस्वियों में से बड़े तपस्वी, सर्वगुण सर्वकला सम्पूर्ण उन्होंने स्वयं पांच प्यारों से अमृत की दात प्राप्त की, क्या उनका मन साफ नहीं था? वह तो स्वयं निरंकार थे, पैगम्बर थे पर फिर भी अमृतपान की मर्यादा निभाई।

कई कह देते हैं कि हम स्वयं तो अमृत ग्रहण कर लेंगे पर हमने अपनी बेटियों, पुत्रों को ग्रहण नहीं करवाना। क्या पता कल को इनको कैसे घर मिलने हैं? बाबा जी इस बारे में वचन करते थे कि जिसने गुरु की मोहर लगवाई होगी, उस पर गुरु की रहमत होगी। वे अमृतधारी का अमृतधारी से अवश्य मेल करवाएंगे।

कई कह देते हैं कि हम इसलिए अमृत नहीं लेते कहीं कोई बेअदबी न हो जाए, कोई भूल न हो जाए, कोई गलत चीज़ों का सेवन न हो जाए, रोमों की बेअदबी न हो जाए, नेम न रह जाए। बाबा जी इस बारे में वचन करते थे कि सबसे बड़ी बेअदबी तो यही है जो हमने गुरु का हुक्म मानकर अमृतपान नहीं किया। हमने मन को समझाना है, उसको कुमार्ग जाने से रोकना है। गुरु की कृपा से मर्यादा में पूरा उतरना है और अमर्यादा से बचना है न कि अमृतपान न करके और बड़ी भूल करनी है।

श्रद्धा की छठी निशानी

आज विदेश के लोग सिक्ख इतिहास से प्रेरित होकर अमृतपान कर गुरु वाले बन गए हैं, सिंघ बन गए हैं। उसके सिर पर पगड़ी, दाढ़ी सिक्खी के स्वरूप को रौशन कर रहे हैं, हम कहीं पीछे न रह जाएं।

दास की, गुरु-घर के कूकर की तो सब के चरणों में हाथ जोड़कर यही विनती है कि जो अमूल्य सिक्खी आपको मिली है, उसको लोगों की बातों में आकर बहाओ मत। गुरु साहिब द्वारा प्रदान की अमृत की दात को, खुशी से आप हाथ फैलाकर मांगो। सतिगुरु के कक्कारों को बोझ समझ कर न डालो, अपितु उनको कीमती आभूषण समझकर गहना समझ कर छाती से लगाओ। एक है– अमृतपान के समय तो कक्कार धारण कर लिए परन्तु बाद में संकोच करना। अनेकों को गातरा डालने में शर्म आती है, कई अमृतपान के वक्त तो बड़ी कृपाण धारण कर लेंगे पर बाद में कहेंगे कि शर्म आती है, छोटी डाल लें। यह क्या है– दुनिया आगे आ गई, गुरु पीछे हो गया। जहां श्रद्धा है, वह गुरु के चिन्हों को सम्मान से, पूरी भावना और प्रेम से डालते हैं कि यह मेरे प्रियतम प्यारे के चिन्ह हैं। एक है द्वार खुल गया श्रद्धा का, एक भावना बन गई कि जैसे परमात्मा ने शरीर के अंग दिए हैं, वैसे ही यह कक्कार गुरु गोबिंद सिंघ जी के दिए अंग हैं। क्या कभी किसी ने यह कहा है कि मैं अपने अंग अलग कर दूं या यह अमुक अंग क्यों मिला है, यह मैंने नहीं रखना।

कुछ लोग केश रखना बोझ समझते हैं और कहते हैं कि इनका कोई फायदा नहीं, अपितु नुक्सान ही नुक्सान है। सिर धोने की समस्या, कंघी करने की समस्या, पगड़ी बांधने की समस्या, सिर गर्मी में पसीने से भर जाता है। नहीं गुरु प्यारो! केश तो हमारी पहचान है, केशों की बहुत महानता है। नाम की शक्ति यहां इकट्ठी होती है, उसकी रक्षा के लिए केश दिए हैं और केशों की रक्षा के लिए दस्तार। आप भी और अपने बच्चों को भी सिर ढक कर रखने की आदत डालो। शौचालय जाना है, सिर ढक कर जाओ। कुछ खाना है, सिर ढक कर खाओ। महिलाओं ने रसोई में खाना बनाना

है तो सिर ढक कर बनाएं। यह जो महिलाओं के लिए केसकी सजाने की प्रथा चलाई गई है, यह भी इसलिए कि केश सदैव ढके रहें। अन्दर-बाहर जाते, खाना बनाते, बालों को ढक कर रखना चाहिए, जिस कारण बालों को डाई करने की भी जरूरत नहीं, मेहंदी लगाने की आवश्यकता नहीं। इस तरह केशों का अपमान भी समाप्त हो जाएगा। अब जहां श्रद्धा है, वे महिलाएं कहती हैं कि जब से हमने बाल सजाए हैं, हमारा नितनेम बढ़ गया है, हमारा आदर बढ़ गया है। जिनमें श्रद्धा नहीं, वे कहती हैं, बड़ी मुश्किल पैदा हो गई है, बड़ी शर्म आती है, विशेषकर विवाह या पार्टियों पर। आप स्वयं अंदाज़ा लगाओ कि विवाह-शादियों पर साल में कब तक जाते हैं, 2 घण्टे नहीं तो 3 घण्टे। अब 10 पर गुणा करो तो बन गए 30 घण्टे। एक साल में अधिकाधिक 30 घण्टे, स्वयं देख लो साल में तीन घण्टे क्या मायने रखते हैं। हम इस 30 घण्टों के लिए गुरु के प्यार, गुरु की कृपा को ठुकराते हैं। जब स्त्रियां सिर पर बाल सजाती हैं तो यह भावना बनाया करो कि कलगीधर पातशाह ने अपनी कृपा भरा हाथ हमारे सिर पर रखा है, फिर देखो कैसे रस बन जाएगा।

केश तो परमात्मा द्वारा प्रदान अमूल्य दात है, इनकी संभाल करना हमारा कर्त्तव्य है। जो भी परमात्मा ने नियामतें दी हैं, उनका कोई न कोई फायदा तो अवश्य ही है। क्या आप कभी यह कहते हो कि परमात्मा ने दस उंगलियां क्यों दी हैं, यह दो हाथ क्यों दिये हैं, दो पैर क्यों दिए हैं? यदि केशों का भार लगता है तो फिर हाथों-पैरों का भी तो भार है, क्या कभी किसी ने उनके कटवाने की बात की है? कई कह देते है कि केशो को इतनी ज़्यादा महानता गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ही दी है, पहले किसी गुरु साहिब ने केशों के बारे में कुछ नहीं कहा। नहीं गुरु प्यारो! इतिहास पढ़ो तो पता चलता है कि गुरु नानक साहिब ने मरदाना को कहा था कि यदि तूने हमारे साथ रहना है तो यह तीन वचन मानने पड़ेंगे– केशों की संभाल, ब्रह्ममुहूर्त जागना, संतों-महापुरुषों की सेवा व सम्मान। सो केशों की महानता गुरु नानक साहिब से चलती आ रही है। गुरु

गोबिंद सिंघ जी ने तो इस पर मोहर लगाकर मर्यादा में ला दिया है।

साथ ही साथ इस बात को भी जान लेना कि केशों की महानता केवल सिक्ख धर्म में ही नहीं बल्कि हर धर्म में है। संसार में जितने भी संत-महापुरुष हुए हैं, चाहे वे किसी भी धर्म से संबंधित थे, केशाधारी हुए हैं। कृष्ण जी का तो नाम ही केशव था भाव केशों वाला। राम जी, मुहम्मद जी, यीशू मसीह सब ने केश रखे थे।

1200 वर्ष पूर्व हिन्दू धर्म में भी जूड़ा होता था। दसम ग्रंथ में राजा जनमेजे के बारे में जिक्र मिलता है, जिसको व्यास ऋषि ने पूर्व ही उसका भविष्य बता दिया था कि यह कुछ तेरे साथ बीतेगा, यदि बच सकता है तो बच ले। राजा जनमेजे ने जब ब्रह्म-भोज किया था तो वह देखने गया कि सब ठीक-ठाक चल रहा है, कहीं ब्राह्मण भोजन कर रहे थे, कहीं पाठ हो रहे थे, तीन मिनट के लिए इतनी जबरदस्त आंधी आई कि राजा की रानी (जिससे राजा ने विवाह करवाया था और उसके आग्रह पर ही ब्रह्म-भोज रखा था) के वस्त्र आंधी से उड़े तो ब्राह्मण हंस पड़े।

ब्राह्मणों द्वारा इस तरह अपनी पत्नी का मज़ाक उड़ाने पर राजा को इतना क्रोध आया कि उसने अपनी इस क्रोध की ज्वाला में, 17 ब्राह्मण जो अगली लाइन में बैठे थे, उनका सिर अपनी तलवार से काट दिया। इस बात पर भी दशमेश पिता पर गर्व है जो उन्होंने हमें सिलाई वाले कपड़े पहनने की मर्यादा प्रदान की है। हमें वह पहरावा दिया है, जिसमें वासनाएं नहीं, आवश्यकता अनुसार पर्दा ढका है।

उस समय सिलाई विहीन कपड़े होते थे, जैसे धोती-साड़ी। वह आंधी आने के कारण उड़ी और ब्राह्मण हंस पड़े। राजा ने 17 ब्राह्मणों का शीश काट दिया और अपनी फौज को हुक्म किया और कहा कि शेष सभी ब्राह्मणों को मौत से भी बड़ी सज़ा देनी है। उन्होंने कहा कि मौत से भी बड़ी सज़ा यह है कि इनके जूड़े काट कर इनको छोड़ दो। पता नहीं कितने प्रांतों से वे आए थे। उनके केश काट कर उनको उनके प्रांतों में छोड़ दिया गया। फिर इस सज़ा को छिपाने की खातिर केश काटने का रिवाज़ ही चला दिया गया

इन ब्राह्मणों द्वारा, अन्यथा 1200 वर्ष पूर्व आदरणीय हिन्दू धर्म में भी जूड़ा होता था।

गुरु गोबिंद सिंघ जी की जो कक्कारों की देन है, यह सब ईश्वरीय बातें हैं। हमने उनके दिए चिन्हों को उनकी कृपा समझ कर डालना है, उनका आदर करना है न कि बोझ समझना है। गुरु साहिब की हर देन को श्रद्धा-भावना से और ऊँचे ख्यालों से स्वीकार करना है। बाबा नंद सिंघ जी को किसी ने कहा था कि आप गुरु नानक के घर के फकीर हो, एक साधु हो, फकीर साधु तो खुला कपड़ा धोती डालते हैं। आप कछहरा क्यों डालते हो? पर बाबा नंद सिंघ जी, जिनके हदय में गुरु साहिब के चिन्हों के लिए श्रद्धा थी, प्रेम था, उसके बार-बार ज़िद करने पर उसको कहते हैं, हम कुएं में कछहरा और धोती दोनों चीज़ें फैंकेगे, जो चीज़ ऊपर आ जाएगी वही स्वीकार करेंगे। यदि धोती ऊपर आई तो हम भी धोती डाल लेंगे और यदि कछहरा ऊपर आया तो तुम्हें भी कछहरा अंगीकार करना पड़ेगा। यह विश्वास था, एक दृढ़ता थी बाबा जी के अंदर। बाबा नंद सिंघ जी का विश्वास देखकर ही कहने वाले का सिर झुक गया।

जो वह विचार गुरु की कृपा से व्यक्त हुआ है, उसमें इतना भाव है कि हमारे अमृत संस्कार में प्रेम शामिल हो जाए, गुरु के चिन्हों को बख्शिश समझ कर डाल लें, उनका आदर करें, यह गुरु को पहल देनी है। कई जो इस कारण अमृत नहीं ग्रहण करते या कक्कार डालने से हिचकिचाते हैं कि शर्म आती है, यह फिर दुनिया को पहल हो गई और गुरु पीछे हो गया। बड़ा अफसोस होता है जब ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं। डटकर आगे आओ, दुनिया की शर्म को पीछे करो। कभी किसी हिन्दू को नहीं कहना पड़ता कि हिन्दू बन जा, कभी किसी मुसलमान को नहीं कहना पड़ता कि मुसलमान बन जा, सिक्ख को क्यों कहना पड़ता है कि सिक्ख बन जा। दास की तो यह दिल की ख्वाहिश है कि कोई भी निगुरा न रहे। सभी अमृतपान करके गुरु वाले बनें। महापुरुष तो निगुरे को भूत की तरह मानते थे और वचन करते थे कि जो अमृतपान कर

रहत मर्यादा का धारणी बने, गुरु उस पर अपनी सभी कृपा के भण्डार खोल देता है।

एक बार बाबा ईशर सिंघ जी को किसी ने विनती की कि बाबा जी हमारे बेटे के अन्दर भूत घुस गया है। बाबा जी पूछने लगे, क्या आपने दशमेश पिता का अमृतपान किया है? उन्होंने जब उत्तर दिया कि नहीं पान किया तो बाबा जी ने प्रत्युत्तर दिया कि भाई ! कलगियों वाले का अमृतपान करो फिर यह बुरी चीज़ें आपके निकट नहीं आएंगी। आओ हम भी सभी दुनिया की शर्म को दरकिनार करके अमृतपान करें, गुरु साहिब के प्रदान किए कक्कारों को आभूषण समझकर खुशी से डालें, उनकी बताई मर्यादाओं में रहें तांकि हमारे लिए भी गुरु की कृपा का भण्डार खुल जाए और हमारा लोक-परलोक सुखद हो जाए। पक्की बात है, जब आप गुरु वाले बन गए, गुरु को पहल दे दी फिर तो आपकी सभी ज़िम्मेदारियां गुरु की, फिर न यहां की चिंता न वहां की।

तीसरा है आनंद संस्कार– इसमें भी दुनिया को दूज और गुरु को पहल। जो दुनिया को पहल देने वाला हो, वह जब अपने बेटे के लिए रिश्ता देखेगा, यह देखेगा कि लड़की सुन्दर हो, पढ़ी-लिखी हो, कद-काठ मैच करता हो, जाति बिरादरी बराबर की हो, यह सब सांसारिक बातें हैं, पर गुरु को पहल देने वाला इन चीजों के साथ यह भी पता करता है कि जिस बेटी ने मेरे घर की बहू बनना है, उसको जपुजी साहिब कंठ है कि नहीं, उसने अमृतपान किया है कि नहीं, नितनेम करती है कि नहीं, कीर्तन की दात उसके पास है कि नहीं। आप ही बताओ निरा सुन्दर व पैसे वाली बहू लाकर क्या करोगे, जो पूरा दिन टी.वी. लगाकर ही बैठी रहेगी या नावल पढ़ती रहेगी। जो गुरु को एक नंबर पर रखता है, वह यह बातें पहले ध्यान में रखता है कि मेरे घर जो बहू आए वह रंगी हुई, नाम जपने वाली हो। इसी तरह लड़की के लिए रिश्ता देखना हो सामान्य तौर पर हम यही देखते हैं कि लड़के का कारोबार अच्छा हो, पढ़ा-लिखा हो, धन हो, अपना मकान हो। यह सब चीज़ें भी देखनी हैं, पर जहां इन चीज़ों का ध्यान रखो, पर साथ ही यह भी

अवश्य देखा करो कि लड़का अमृतधारी है कि नहीं, सिक्खी में पूरा है कि नहीं। जो गुरु को एक नंबर पर रखता है, उसके मन में यह चाव होता है कि मेरा दामाद अमृतधारी हो, जिसके कारण मेरी भी कुल तिर जाए। सामान्य व्यक्ति अन्य चीज़ें देखता है, इधर कोई ध्यान ही नहीं देते।

इतिहास की ओर ध्यान दें। गुरु अमरदास जी के महल माता मनसा देवी जी ने जब गुरु साहिब को कहा कि बीबी भानी जवान हो गई है, उसके लिए कोई वर बताओ। सतिगुरु कहते हैं, कैसा हो? उधर से उस वक्त अचानक भाई जेठा जी सिर पर सेवा की बालटी उठाकर निकले तो माता जी की दृष्टि उन पर पड़ी और कह दिया, बस ऐसा ही। सतिगुरु कहने लगे, ऐसा तो बस यही है। जो बात दास बताना चाहता है, ध्यान देना कि तीसरे पातशाह ने अपनी बेटी के लिए वर ढूंढा और भाई जेठा जी में कौन-सी चीज़ देखी? अगर दुनिया के पक्ष से देखें तो माता-पिता का साया भी सिर पर नहीं, नानी ने पालन किया, घुंगनियां बेच कर निर्वाह करते हैं, इतनी गरीबी! सांसारिक पढ़ाई-लिखाई भी कोई नहीं (चाहे जब सेवा करके कपाट खुल गए, फिर जो पढ़ाई कर गए, जो दर्जा, जो ओहदा प्राप्त हो गया, फिर सब सांसारिक बातें पीछे रह गईं) पर हमारा जो विचार चल रहा है कि जब गुरु साहिब ने अपनी बेटी का उनके साथ रिश्ता किया तो उस समय उनकी क्या पोजीशन थी? उस वक्त कौन-सी चीज़ देखकर गुरु साहिब ने अपनी बेटी का हाथ, उनको पकड़ाया? जो उन्होंने भाई जेठा जी की ओर इशारा करके वचन किया था कि इस सरीखा बस यही है, बस यह था कि जो प्रतिभा इसके अंदर है, वह अन्य किसी के पास नहीं। गुरु अमरदास जी जानते थे कि यह सबसे अमूल्य पद है जो अवस्था, जो सहज, जो सिमरन, जो आनंद, जो बंदगी उसके अंदर है, उससे सब कुछ चला आएगा। आप भी जब बेटी के लिए रिश्ता ढूंढते हो तो जहां अन्य चीज़ें देखते हो, वहां यह भी अवश्य देखा करो कि लड़के में गुरमति है कि नहीं। उसको जपुजी साहिब याद है कि नहीं। सुखमनी साहिब का पाठ रोज़ करता है कि नहीं?

यदि पूरा नहीं तो 6 अष्टपदियां या 12 अष्टपदियां पढ़ता है कि नहीं। इन बातों से निष्कर्ष आपके सामने आ जाएगा कि जिसको दामाद बनाने जा रहा हूं, वह कितना गुरु की ओर लगा है। पर ऐसे प्रश्न अपने बेटे या बेटी के लिए कोई रिश्ता देते समय वही पूछेगा जो गुरु को पहले नंबर पर रखने वाला होगा। क्योंकि गुरु को एक नंबर पर रखने वाले के अंदर यह चाव होता है गुरमति पर चलने वाले धर्मी बेटे से मेरा नाता जुड़े।

बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि किसी शराबी की बेटी को बेशक अपनी बहू बना लो, पर किसी शराबी के घर अपनी बेटी मत देना, क्योंकि किसी शराबी के घर अपनी बेटी दे दी तो यह पाप हो जाएगा कि बेटी नरक में भेज दी। वह हाथ जिसने गुटका साहिब पकड़ना था, पति को शराब के गिलास बना कर देंगे, वह हाथ जिन्होंने माला पकड़नी थी, वह मांस बनाएंगे। यदि किसी शराबी की बेटी को बहू बनाकर लाते हो तो यह पुण्य का कार्य है, क्योंकि इसको नरक में से निकाल कर स्वर्ग में ले आता है। छठे गुरु, गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के भी वचन हैं कि बेटी का नाता करते समय 2 चीजें जरूर देखो, एक तो यह कि जहां रिश्ता कर रहे हो, घर में सिक्खी है कि नहीं? दूसरा उनका काम शुद्ध है कि नहीं? ऐसे घर में भेजी बेटी लगभग सुखी रहती है। दुनिया को 1 नंबर पर रखने वाला केवल पैसा व सुन्दरता देखता है, गुरसिक्खी नहीं देखता। जो गुरसिक्ख है, आध्यात्मिक है, गुरु को 1 नंबर पर रखता है, वह नितनेम, गुरसिक्खी भी देखता है।

इसके अलावा जो अनंद कारज के समय विवाह-पार्टियों को मीट, शराब के दौर चलाए जाते हैं, यह काम भी वही करते हैं जो गुरु को मुख नहीं रखते। वे कह देते हैं कि दुनियादारी देखनी पड़ती है, विवाह-शादियों पर रिश्तेदार नाराज़ हो जाते हैं। आप कहते हैं कि इसके बिना तो विवाह-शादियों का रंग ही नहीं बनता? यह है दुनिया को 1 नंबर पर रखना, इसमें गुरु की प्रसन्नता नहीं। फिर आप यह भी अंदाज़ा लगाओ कि कहां पर आपको चाहिए कि बेटे-बेटी का सिर जोड़ रहे हो, उनकी नई ज़िन्दगी के लिए सबका

आशीर्वाद इकट्ठा करो, गुरु साहिब की खुशियां प्राप्त करो तांकि आपके बच्चों का आने वाला पारिवारिक जीवन खुशहाल हो और कहां आप अनेक जीवों को, बकरों को, मुर्गियों को मरवाकर अपने बच्चों के लिए उनकी बददुआ पा रहे हो। पापों के भागी बन रहे हो। यदि चाहते हो कि आपके बच्चों का पारिवारिक जीवन सुखी हो, खुशियां भरा हो तो अवश्य इस चीज़ का ध्यान रखो कि बच्चों के अनंद कारज में भी दुनिया को दूसरे नंबर पर और गुरु को एक नंबर पर रखो।

चौथा है अन्तिम संस्कार– यह कुछ हम निभाते हैं और बाद में हमारे संबंधी हमारे रिश्तेदार। जो बाद में रिश्तेदार यह संस्कार निभाते हैं, उसका हाल आजकल बहुत ही बुरा हो गया है। पूर्व समय 17 दिन बाद किरिया करते थे, फिर धीरे-धीरे 13 दिन बाद होने लगी। फिर 10वें दिन, पर अब तो यह हाल हो गया है कि कोई शरीर वीरवार मान लो प्राण त्याग दे, शुक्रवार उसके लिए अखंड पाठ करवा देते हैं और रविवार भोग डालकर अन्तिम अरदास कर दी जाती है। पहले किसी शरीर के देहांत के पश्चात् 17–17 दिन उसके लिए जप-तप किया जाता था पर किसी के पास, समय ही नहीं रहा, सब इतने व्यस्त हो गए हैं कि जीते जी अपने हाथ से स्वयं ही अपना अन्तिम समय संवार कर जाएं। गुरु साहिब भी हमें बाणी द्वारा यह उपदेश दे रहे हैं–

जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ॥
जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ॥
आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ॥

(अंग ४७४)

यह है श्रद्धा की छठी निशानी। जिसकी गुरु पर श्रद्धा है, वह गुरु को पहल और दुनिया को दूज देगा। गुरु की ओर मुख तथा दुनिया की ओर पीठ। मन में ध्यान देना कि हम कहां खड़े हैं? बड़ा आनंद है। दास गुरु की कृपा से यह लिख रहा है। एक छोटा-सा कदम उठा लो, करो प्रयास, रखो हर काम में गुरु को

एक नंबर पर, दास दावे से लिखता है कि आपके इस प्रयास से गुरु आपकी ओर हो जाएगा, आपका मित्र बन जाएगा और जब वह इस तरफ हो गया फिर तो गुरुबाणी में भी मोहर लगी है–

जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा॥
तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा॥

(अंग १०९६)

जामि गुरु होइ वलि धनहि किआ गारवु दिजइ॥
जामि गुरु होइ वलि लख बाहे किआ किजइ॥

(अंग १३९६)

पक्की बात है कि जब गुरु साथ हो गया, फ़िर किसी प्रकार की कमी नहीं रह जाएगी। इहलोक भी सुखी हो जाएगा और परलोक भी सुखद हो जाएगा। न यहां की चिंता न वहां की। जिस दिन वह साथ हो गया, वह मित्र बन गया, फिर आपके प्रत्येक कार्य की डयूटी चाकर बनकर संभालेगा, हर कार्य संवारेगा। यह दास कोई अपनी तरफ से नहीं लिख रहा, बाणी कह रही है–

जिस दा करता मित्रु सभि काज सवारिआ॥

(अंग ९६०)

यह है श्रद्धा की छठी निशानी गुरु को 1 नंबर पर रखना और दुनिया को 2 नंबर पर रखना। जरूर ध्यान दो और गुणवान बनो।

☆☆☆

सोई कराइ जो तुधु भावै॥
मोहि सिआणप कछू न आवै॥

श्रद्धा की सातवीं निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए:
उसकी संसारी पकड़ निकल जाएगी, निरंकारी पकड़ आ जाएगी।

'पहुंचना है असली घर को, छोड़ दे नकली धाम को।'

साधारण तौर पर पांच पकड़ें हैं— मन की पकड़, आंखों की पकड़, रसना की पकड़, कानों की पकड़, वासना की पकड़। इनमें से चार तो अंग रूप में है, पांचवी अंग नहीं है। इनकी पकड़ चैक करो सभी संसारी है कि निरंकारी। दास गुरु की कृपा से दावे से यह बात लिख रहा है कि कईयों की आयु 60-70 वर्ष की हो जाती है परंतु संसारी पकड़ नहीं जाती। बात तो भीतर की लालसा की है, पकड़ की है। यह श्रद्धा की सातवीं निशानी है कि संसारी पकड़ निकल जाएगी और निरंकारी पकड़ आ जाएगी। निरंकार की पकड़, प्रीतम की पकड़, परमेश्वर की पकड़, सच्चे परमात्मा की पकड़। उपरोक्त पांच पकड़ें हैं, जिनको अपने अंदर दृष्टि डाल कर चैक करना है कि हम कहां खड़े हैं, हमारी कौन-सी पकड़ संसारी है और कौन-सी निरंकारी।

सबसे पहले आती है मन की पकड़। निरंकार से जुड़ने के लिए सबसे पहले जरूरी कार्य है कि अपने मन को नियंत्रण में किया जाए। मन को बाहरी मायावी पदार्थों से तोड़ कर अन्तरात्मा को गुरु से जोड़ना है। हमारे दुखों का कारण हमारा मन है। जब तक हम अपना मन काबू नहीं करते तब तक संसार में ठोकरें खाते रहेंगे। मन को ज्यादातर तीन पकड़ें तंग करती हैं एक माया की पकड़, दूसरी मोह की और तीसरी बड़ाई की। सभी दृष्टि डालो,

मन माया की पकड़ से निकला है कि नहीं।

आज का युग बहुत तेज़ रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। हर कोई एक दूसरे से आगे निकलना चाहता है। आज हर कोई सुबह से लेकर शाम तक माया के पीछे बचपन की तरह इधर-उधर दौड़ रहा है। परमात्मा का नाम लेने के लिए बाबा जी वचन किया करते थे कि पेड़ को 2 फल लगते हैं। एक तो वह फल जिसके नाम से पेड़ का नाम जुड़ा है जैसे आम का पेड़, अमरूद का पेड़। पेड़ एक और फल भी देता है जिसका नाम है छाया। पेड़ से छाया रूपी फल भी प्राप्त होता है। जब जो पहला फल है, जैसे आम या अमरूद या कोई और भी, उसको आप किसी शीतल स्थान में रख लो तो वह 2-4 दिन या सप्ताह दो सप्ताह खराब नहीं होता। शीतल स्टोर में रख लो तो 2-4 वर्ष के लिए संभाला जा सकता है, परंतु जो दूसरा फल है, 'छाया' उसको संभाला नहीं जा सकता। अगर कोई कहे कि इस समय छाया है और इसको संभाल कर रख लो, कल को जब धूप होगी तो इसका उपयोग कर लेंगे या फिर एक स्थान पर छाया है और दूसरी जगह पर धूप है, वहां ले जाकर इसका प्रयोग कर लें, ऐसा संभव नहीं। छाया को संभाला नहीं जा सकता, हां इसका आनंद लिया जा सकता है। महांपुरुष वचन करते थे कि दुनिया के पदार्थ, माया यह भी छाया रूप है, इनका आनंद लो परंतु इनमें पकड़ न रखो। जो असली पदार्थ है, दरगाही पदार्थ है, वह 'नाम' है, उसको संभालो। जितना कुल घर का खर्चा है, उसके अनुसार अपने आप को काम में '*Busy*' रखो, ज्यादा परेशानी में मत पड़ो, उसके पीछे लगकर कहीं नाम रूपी फल का जो समय है, उसको न गंवा देना, नाम के फल को संभालो।

जिसका मन माया की पकड़ से पार होगा, वह कहेगा 6-7 घंटे कार्य बहुत है और जो माया की पकड़ में फंसा होगा, वह सुबह 7 बजे दुकान खोल कर रात्रि 11 बजे बंद करेगा, क्यों? वह फंसा हुआ है। माया के संबंध में 5-6 घंटे कार्य करना भी है परंतु कई शरीर 12 घंटे, 15-16 घंटे तक भी कार्य को देते हैं, फंसे हुए हैं धंधे में। यह नहीं चलता, घर का निर्वाह नहीं होता परंतु पकड़।

लुधियाना का एक शरीर है। दास ने उसको पूछा, 24 घंटों में क्या दिनचर्या है, कार्य क्या है, बाणी पढ़ने, नाम जपने को कितना समय देते हो? वह कहने लगा, मैं बैंक में लगा हुआ हूं, कोई आधा घंटा बाणी पढ़ता हूं। दास ने फिर कहा बैंक की ड्यूटी तो 8 घंटे होती है, बाकी 16 घंटे में से अगर 6 घंटे सोने के भी लगा लो तो भी बाकी 10 घंटे बच जाते हैं। वह कहने लगा, मैं दो फर्मों की सुबह और दो फर्मों की शाम को वहियां बनाता हूं, उनके अकाउंट देखता हूं तांकि और ज्यादा कमाई कर सकूं। दास ने पूछा– तेरे बैंक की कितनी तनख्वाह है और घर का कितना खर्चा है? क्या बैंक की तनख्वाह से घर का गुज़ारा नहीं होता? इशारा लेना, पकड़ क्या है। उस शरीर का जवाब था 15 हजार तनख्वाह है और 8 हजार मेरे घर का खर्चा है। अब आप अंदाज़ा लगा लो यह क्या है– माया की पकड़ ने दबोच लिया है, दुनिया को सच समझ बैठा है। अच्छा भला तनख्वाह से गुजारा हो रहा है, बचत भी हो रही है, फिर भी कईयों का हिसाब लगा रहा है, अकाउंट देखता है। माया की कमी नहीं, परंतु किसी ढंग से ज्यादा आ जाए, यह लालच है। ऐसा इंसान, जिसको अपने बेकार वक्त में भी और माया कमाने की लालसा है, वह नाम कब जपेगा, निरंकार को समय कहां से देगा? कईयों की आयु 50-60 वर्ष हो जाती है, रिटायर भी हो जाएं, परंतु भीतर यह लालच बना रहता है कि किसी तरह माया कमा लूं। देख तो काल चाहे सिर पर खड़ा है परंतु अभी भी माया में ध्यान है। जिसने मृत्यु के बाद हमारा साथ देना है, उसकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। उस समय हमारा साथ केवल नाम ने देना है। श्री सुखमनी साहिब जी की दूसरी अष्टपदी कहीं ध्यान से पढ़ो, पांचवें पातशाह क्या कह रहे हैं–

जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥

(अंग २६४)

वहां कागज़ के नोटों की कीमत तो कौड़ी भी नहीं पड़ेगी, केवल और केवल नाम सहायक होना है। बाबा जी एक दृष्टांत सुनाते थे, दास व्यक्त करे, जिसको पढ़कर शायद हमारी भी आंख खुल जाए। कोई सौ वर्ष का बुजुर्ग था, माया की पकड़ इतनी कि अपनी जुड़ी हुई माया पीपे में इकट्ठी करके रखी थी और उस पीपे को ज़मीन में दबाकर ऊपर सोता था कि कहीं सोये हुए ही उसको कोई उठाकर न ले जाए। एक रात सो रहा था तो यमदूत लेने आ गए, परंतु यह माया का प्रेमी, इतनी माया की पकड़ में फंसा हुआ यमदूतों को क्या कहता है कि मुझे आज की रात छोड़ दो, मैंने गांव वालों से पैसे वसूल करने हैं। यमदूत कहने लगे, तू एक रात की मोहलत मांगता है, हम तुम्हें एक श्वास भी और नहीं दे सकते। वह बुजुर्ग अपनी एकत्र की माया देखकर कहने लगा, ऐ माया! मैंने तुम्हें इकट्ठा करने के लिए कितने फरेब किए, कितनी भाग-दौड़ की, क्या तू मेरे साथ नहीं जाएगी? मेरा साथ नहीं देगी? माया कहने लगी 'मैं तो बनी थी किसी भूखे की भूख मिटाने के लिए, किसी नंगे का तन ढकने के लिए परंतु तूने मुझे जमीन में दबा दिया, तूने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है, अब तेरे साथ भी ऐसा व्यवहार होगा (तुझे भी मरने के बाद मिट्टी में दबा दिया जाएगा) बुजुर्ग का समय खत्म हो गया था, श्वास पूरे हो गए थे। यम उसके गले में जंजीर डाल कर चल पड़े। अगला जन्म सांप का मिला। बाणी की भी पंक्ति है ''अंत काल जो लक्ष्मी सिमरे'' माया कहती है, तूने मुझे मिट्टी में दबाया, अगला जन्म तेरा भी ऐसा, तू भी मिट्टी में दबा रह। सतिगुरु हमें सूझ प्रदान करें।

यह ठीक है कि दुनिया में रहने के लिए माया की बहुत जरूरत है परंतु बहुत माया कई बार दुख, कलेश और बीमारियों का कारण बन जाती है, क्योंकि यह माया बड़ों-बड़ों का दिमाग खराब कर देती है, बुद्धि पर पर्दा डाल देती है। इस माया की खातिर इंसान बहुत कार्य भी करता है, अपनों से भी बिगाड़ लेता है। बाबा जी वचन करते थे कि माया बुरी नहीं, इसके छल बुरे हैं। गुरु साहिब यह नहीं कहते कि मेरे सिक्ख के पास माया न हो,

बल्कि वे चाहते हैं कि सिक्ख की माया जेब तक रहे, उसके हृदय में न बैठ जाए। माया ज्यादा आने पर कहीं वह अहंकारी न हो जाए। जो भी कमाई हो, कम से कम उसका दसवंध जरूर गुरु पर लगाए, भलाई के कार्यों में लगाए, भूखे की मदद करे। माया की पकड़ में फंसा इंसान परमात्मा को भूल जाता है।

हम संतों-महापुरुषों की, कमाई वालों की बराबरी तो नहीं कर सकते, परंतु उनके जीवन से तिनका मात्र सीख जरूर लें। संत बाबा शाम सिंघ जी माया से इतने दूर रहते हैं कि उनके पास जितनी भी माया आती थी, सारी भलाई के कार्यों के लिए लगा देते थे। एक बार किसी बड़े अमीर घराने के प्रेमी ने बहुत कीमती कश्मीरी लोई भेंट की और विनती की, महापुरुषो ! मेरी बहुत भावना है कि आप जी इसको स्वीकार करो। महांपुरुष कहते हैं, इस लोई को वापिस करके, इसकी कीमत के जितने कंबल मिलें वे लाकर और इन कंबलों को गरीबों में बांट दे। संत वधावा सिंघ जी भी अपने पास कोई वस्तु जमा नहीं करते थे। वैरागियों को भी ऐसा ही हुक्म था। उनके पास गुरमुखी, गुरबाणी के अर्थ, गुरमत सिद्धांतों की पढ़ाई के लिए विद्यार्थी आते थे, संत जी सब कपड़े-पदार्थ उन विद्यार्थियों, वैरागियों या सेवकों में बांट देते थे। जरूरत से ज्यादा आने वाले पदार्थों को या जला देते थे या जल में बहा देते थे या फिर ज़मीन में दबा देते थे।

भाई धर्मदास जी हुए हैं, बहुत कमाई वाले। उनका भी यह नियम था कि माया डेरे में इकट्ठी नहीं होने देनी, सब परोपकार हित खर्च कर देना। एक बार किसी व्यापारी ने बहुत ज्यादा माया भेंट की। उन्होंने सारी माया कुंओं, तालाबों और गऊओं के जल पीने वाले पक्के स्थान बना कर खर्च कर दी।

पक्की बात है, जिसकी यह पकड़ निकल जाएगी, उसके पास अगर ज्यादा माया आ जाए तो उसको चिंता लग जाती है कि मैं इस माया का क्या करूं। दास के साथ भी बीतती है, घर की कमाई तो चलायमान है, पर संगत की माया जिस समय ज्यादा आ जाए, फिक्र लग जाती है, इसका क्या किया जाए। फिर दास मिस्त्रियों

के मुखिया को फोन करके कहता है कि मिस्त्री, मजदूर बढ़ा दो तांकि यह जल्दी लग जाए। (क्योंकि गुरु की कृपा से कोई न कोई निर्माण कार्य चलता ही रहता है। कभी अस्पताल का और कभी धर्मशाला का या भलाई केंद्र का या विद्यालय का) जब कम हो जाए फिर व्यक्ति कम कर देते हैं।

आप कहोगे, हम तो गृहस्थी हैं, हमें कौन-सी संगतों द्वारा माया ने आना होता है। हमने तो माया से अपना परिवार भी चलाना है, हमनें गृहस्थी में रहते हुए, माया में रहते हुए इनकी पकड़ से दूर रहना है। सतिगुरु ने हमें उपदेश दिया है–

विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे॥

(अंग १०७१)

यह नहीं कि धन-दौलत, पुत्र-पुत्रियां, परिवार से इतना प्रेम बढ़ा लें कि परमेश्वर को ही भूल जाएं। इन सब में रहते हुए इनकी पकड़ न रखें। साथ-साथ नाम का भी जाप करें, सत्संग भी करें। गृहस्थी को सांसारिक जरूरतों से भी और परमार्थ सेवा के लिए भी माया की जरूरत है परंतु गुरमुख इसकी पकड़ में नहीं फंसता। वह धर्म का कार्य करता है और दसवंध गुरु के लिए लगाता है। माया के पीछे नहीं भागता बल्कि जितनी है, उसमें संतोष रखता है और अगर सतिगुरु ने ज्यादा दी हो तो भी उसको पाकर अहंकारी नहीं हो जाता बल्कि उससे निर्लिप्त रहता है और जरूरतमंदों की मदद करता है।

माया कोई बुरी चीज़ नहीं अगर इसका सही ढंग से प्रयोग किया जाए। अगर इसको अच्छे कार्य पर लगाओ, पुण्य दान की ओर लगा दो, गरीबों-जरूरतमंदों पर लगा दो तो भला है, अगर इधर नहीं लगाते तो मुकद्दमों और कचहरियों या डाक्टरों और बीमारियों पर लग जाएगी। अच्छे कार्य पर लगाई हुई माया दरगाह पर ले जाती है और बुरे कार्यों पर लगी माया नरकों का मुंह दिखा देती है।

माया की पकड़ से कोई विरले ही गुरु की कृपा से बच कर

निकलते हैं नहीं तो माया की पकड़ तो ऐसी है कि हज़ारों कमाने के बाद इंसान लाखों कमाने के पीछे दौड़ता है और लाखों कमाने के बाद करोड़ों पाने की दौड़ लग जाती है भाव कि तृप्ति होती ही नहीं, संतुष्टि नहीं होती। गुरु साहिब भी बाणी में कह रहे हैं—

सहस खटे लख कउ उठि धावै॥

त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै॥

(अंग २७८-७९)

महांपुरुष एक गाथा सुनाते थे—कोई सेठ था, अपने मुनीम को एक दिन पूछने लगा कि मेरे पास कितनी माया है? मुनीम कहने लगा कि आपके पास इतनी माया इकट्ठी हो चुकी है कि आपकी 10 पीढ़ियां बेकार बैठ कर खा सकती हैं। सेठ ने रोना आरंभ कर दिया। ध्यान देना, पकड़ कितनी बुरी है। मुनीम कहने लगा, सेठ जी! आप रो क्यों रहे हो? आपके पास माया की कोई कमी नहीं है। शायद आप मेरी बात को अच्छी तरह नहीं समझ पाए। आपके पास इतनी माया है कि आपके पुत्र, पौत्र-पड़पौत्र आगे 10 पीढ़ियों तक उस माया से सुख प्राप्त करेंगे। सेठ कहने लगा, मैं तो यह सोच कर रो रहा था कि दस पीढ़ियों का गुज़ारा तो चल ही जाएगा परंतु मेरी 11वीं पीढ़ी का क्या बनेगा? अब मुनीम बुद्धिमान था, समझदार था, कहने लगा सेठ जी! आप मत रोओ, मैं आपको रोते हुए नहीं देख सकता। मैं एक बहुत ही सच्चे संत को जानता हूं, हम कुछ आटा, दाल, चावल लेकर उनके पास चलते हैं और यह चीजें सामग्री उनको दान-पुण्य करके उनको विनती करेंगे कि आपकी माया में और बरकत डालने के लिए निरंकार के आगे प्रार्थना करें तांकि आपकी ग्यारहवीं पीढ़ी के लिए भी माया इकट्ठी हो सके। सेठ मुनीम की बात सुनकर बहुत खुश हुआ और सामान लेकर उस समय संत के घर चल पड़े। वह संत सच्चे थे, कोई वेषाडम्बरी नहीं थे। माया की पकड़ से ऊपर थे। संतों ने सेठ को अपने घर के बाहर आंगन में बिठाया और उनके आने का कारण पूछा। सेठ ने बताया कि हम आपको दान-पुण्य करने के लिए दाल, चावल, आटा लेकर आए हैं। वे सच्चे संत कहने लगे, आप बैठो,

मैं अपनी पत्नी को पूछ कर बताता हूं आज रात के भोजन के लिए सामग्री है या नहीं। जब सच्चे संतों ने अपनी पत्नी को घर के राशन की पोजीशन पूछी तो उसने बताया कि आज के गुज़ारे के लिए है। वह संत देखो कितना संतोषी है। सेठ को कहने लगे, सेठ जी! माफ करना, मेरे घर में आज की जरूरत अनुसार राशन है, इसलिए आप यह किसी दूसरे जरूरतमंद को दान कर दो। सेठ कहने लगा, संत जी! आज के लिए है और कल क्या करोगे? यह सामान रख लो, कल काम आ जाएगा। संत जी जिन पर मालिक की कृपा थी, कहने लगे, जिस मालिक ने मुझे आज रोटी दी है, कल भी वह स्वयं ही प्रबंध करेगा। सेठ को समझ आ गई और कहने लगा, मैं कितना मूर्ख हूं। मेरे पास 10 पीढ़ियों के लिए माया है और मुझे 11वीं पीढ़ी की चिंता सता रही है और महान हैं यह संत जिनको अपने कल की भी कोई चिंता नहीं।

रघुबीर सिंघ बीर भी अपनी पुस्तक 'बंदगी नामा' में एक ऐसे ही माया की पकड़ से रहित फकीर का वर्णन लिखते हैं कि कलकत्ता में एक फकीर था जो वहां के बाज़ार में बैठा रहता था। उसको एक बार उन्होंने सहज स्वभाव ही चार पैसे दिए, उस फकीर ने उसमें से दो पैसे मेरे देखते-देखते ही बाज़ार में फैंक दिए और बाकी दो पैसों की सामने से तंदूर की रोटी लेकर खा ली। रघुबीर जी लिखते हैं कि कुछ दिन बाद मैंने फिर उसको अजमाने के लिए आठ पैसे दिए परंतु उस संत ने उस समय दो पैसे रखकर बाकी फैंक दिए और उन्होंने दो पैसों की पहले की तरह सामने तंदूर से रोटी लेकर खा ली। रघुबीर सिंघ कहते हैं कि मैं बहुत हैरान, उसको कह ही दिया आपने बाकी के पैसे फैंक क्यों दिए, रात की रोटी के लिए रख लेते। वह फकीर मेरी ओर देख कर कहने लगा– 'क्या रात को या कल को खुदा मर जाएगा?'

कोई कीर्तनिया था। उसने देखा जो निष्काम कीर्तन करते हैं, उनका बहुत आदर होता है। उसने भी माया लेनी छोड़ दी। कहता है कि अब मैं भी निष्काम कीर्तन करूंगा, क्योंकि निष्काम कीर्तन करने वालों का बहुत आदर होता है। 6 माह ही बीते होंगे कि एक

दिन उसके पास कोई कीर्तन बुक करवाने के लिए आया और कहने लगा मैंने सुना है आप निष्काम कीर्तन करते हैं परंतु मेरी इच्छा है माया देने की। उसकी भीतर से माया की पकड़ तो नहीं गई थी, तुरंत बोला, अगर आप माया देना ही चाहते हो तो हम मना नहीं करेंगे, क्योंकि हम आपका दिल नहीं तोड़ना चाहते। आप जो भी देना चाहो, हमारे साईड बाजे वाले को दे देना, हमें स्वयं पहुंच जाएगा। अब यह क्या कहोगे? कान इधर से नहीं पकड़ा तो उधर से पकड़ लिया, क्योंकि भीतर से पकड़ नहीं गई माया की।

कहीं पढ़ो भक्त रविदास जी का इतिहास। कोई ब्राह्मण उनको एक बार पारस का टुकड़ा दे गया और कहा, जिसको लगाओगे सोना बन जाएगा, परंतु भक्त जी ने उस टुकड़े की परवाह भी न की और एक तरफ रख दिया और स्वयं वैसे ही राम नाम में रत जूते गांठने का कार्य करते रहे। कई वर्ष बाद वह ब्राह्मण दुबारा आया यह सोच कर कि अब तक तो रविदास जी ने पारस की सहायता से सुन्दर मंदिर तैयार करवा लिया होगा, परंतु जब रविदास जी को पहले की तरह जूते गांठते देखा तो हैरान होकर पूछने लगे, आपको जो पारस दिया था वह कहां गया? भक्त जी बेपरवाही से कहने लगे, यहां ही कहीं पड़ा होगा, यह क्या है? पकड़ नहीं।

इसके विपरीत दास ने एक महात्मा का ज़िक्र पढ़ा, जिनकी पकड़ नहीं गई थी। दास व्यक्त करे–

एक महात्मा अपना घर-बार छोड़कर वैराग्य की मूर्ति बन कर बाहर जंगल में जाकर बैठे और कई वर्ष तपस्या की। एक दिन वह महात्मा बैठे तपस्या कर रहे थे कि उधर से कोई राही निकला और महात्मा को पांच रुपए माथा टेक गया। उस महात्मा के सेवक ने उसमें से एक रुपया स्वयं रख लिया और बाकी 4 रुपए महात्मा की समाधि खुलने पर उनको देकर कहा, यह कोई प्रेमी भेंट कर गया है। आगे से महात्मा कहने लगे कि आवाज़ तो पांच की थी, यह तो चार हैं। इशारा लेना, पकड़ नहीं गई। बैठे तो समाधि में हैं परंतु मन माया गिनने में ही लगा हुआ है।

कहीं गुरु तेग बहादुर जी का जीवन पढ़ें, कितनी माया की पकड़ से ऊपर थे। धीरमल ने जब गुरु तेग बहादुर जी का डेरा लूट लिया था और मक्खन शाह उससे प्राप्त करके वापिस गुरु साहिब के पास पहुंचा तो गुरु साहिब कहते हैं कि हमने तो शुक्रिया किया था कि यह झगड़े की माया चली गई परंतु तूने फिर से यह विपत्ति की जड़ हमारे सिर पर लाकर रख दी है।

कई मनमुख इतने ज़्यादा माया की पकड़ में फंसे होते हैं कि गुरु के प्रति या भलाई के कार्यों पर कोई पैसा खर्च नहीं करते। ऐसे प्राणियों को आगे जाकर यमों के दण्ड की पीड़ा सहन करनी पड़ती है। बाणी में भी इस संदर्भ में पंक्तियां है--

साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा॥
हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा॥

(अंग ६६८)

जिस तरह शहद की मक्खी थोड़ा-थोड़ा शहद एकत्र करती है परंतु उसका पूरा शहद, शहद बेचने वाला इकट्ठा करके ले जाता है। गाय सारा दिन घास खाकर अपने बच्चे के लिए दूध जमा करती है, परंतु ग्वाला बछड़े को पीछे करके सारा दूध निकाल लेता है, इस तरह करोड़ों पाप करके और कई ढंग से इंसान माया एकत्र करता है, किसी भलाई के कार्य में नहीं लगाता, गुरु नमित कोई दसवंध नहीं निकालता, अंतिम वक्त सब एकत्र माया यहां ही छोड़कर खाली हाथ संसार से चला जाता है।

सिकंदर बादशाह का इतिहास पढ़ो, जिसने पूरी दुनिया पर राज किया। कितनी माया इकट्ठी की परंतु जब अंतिम समय आया तो समझ आई कि मैंने जो इतने युद्ध करके राज पाठ और माया एकत्र की है, इनमें से कुछ भी मेरे साथ नहीं जाना तो उसने ऐलान कर दिया कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे हाथ विमान में से बाहर निकाल दिए जाएं, जिनको देखकर शायद किसी को समझ मिल जाए कि इतना बड़ा बादशाह अंत में खाली हाथ जा रहा है और उसकी इस जिंदगी में ही माया की ओर से पकड़ निकल जाए।

यह माया का मोह, माया की पकड़ छोड़ना कोई आसान नहीं। परंतु एक बात याद रखो, जब आप अपनी कमाई में से गुरु-घर के लिए माया का दसवंध निकालते हो तो तुम्हारे बाकी के 9 हिस्से भी अमृत बन जाते हैं। हम कईयों को तो दसवंध निकालना ही मुश्किल लगता है परंतु कईयों पर इतनी गुरु की कृपा है, इतनी माया की पकड़ से ऊपर हैं कि दसवंध से भी ऊपर उठे हैं। ऐसे भी कई गुरमुख प्यारे हैं, जिन्होंने गुरु रामदास जी को, बाबा दीप सिंघ जी को अपनी फर्म में भागीदार बनाया है। इतना माया के मोह को छोड़ा है कि हे गरीबनिवाज सतिगुरु! मैं तेरा नौकर बन कर फर्म में कार्य करूंगा। केवल अपनी गृहस्थी चलाने के लिए गुज़ारे मुताबिक हिस्सा निकालूंगा, बाकी जो बचेगा, वह तेरी सेवाओं के लिए होगा।

दास दावे से लिख रहा है कि जिसका अपने गुरु पर विश्वास है और जो माया की पकड़ से ऊपर उठा है, वह अपनी दुकान को गुरु की दुकान समझ कर चलाता है, उचित दाम लगाता है। ऐसी दुकानों के ताले खुलने से पहले ही भीड़ लग जाती है।

कई बार तो ऐसी-ऐसी बातें सामने आती हैं कि हैरानी होती है कि यह माया की पकड़ इंसान को किस हद तक नीचे गिरा सकती है। इस बार दास को एक विधवा औरत मिली और कहने लगी, मुझे पता लगा है कि आपके माता कौलां जी भलाई केंद्र में हर माह फ्री राशन मिलता है, मेरा भी राशन लगवा दो। दास ने उस औरत को कहा कि ट्रस्ट वाले पहले जांच पड़ताल करते हैं फिर राशन लगाया जाता है तांकि संगत की माया सही स्थान पर लगे और उसकी जगह सही जरूरतमंद ले सके। जिस विधवा के घर सुख-सुविधाएं फ्रिज, रंगीन टी.वी इत्यादि हो, उसका फ्री राशन नहीं लगाया जाता। परंतु वह औरत कहने लगी मैं तो बहुत ही निर्धन हूं, हालात की सताई हुई हूं, बहुत ही मुश्किल से बच्चों का पालन पोषण कर रही हूं। मुझ पर रहम करो। दास की हैरानी की हद न रही जब जांच पड़ताल करने गए तो पता लगा कि वह औरत तो कई लोगों को ब्याज पर रुपए देती है और कई कमरे

उसने लोगों को किराए पर दिए हैं। इसके अलावा 13-14 किल्ले जमीन का उसको ठेका भी मिलता है। देखो पकड़! इतना कुछ है अत्यंत माया का साधन परंतु फिर भी भीतर लालच बैठा है कि किसी ढंग से कुछ और मिल जाए।

अगर गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन ध्यान से पढ़ा जाए तो उनके जीवन में से भी ऐसे ही मिसालों की झलक मिलती है। गुरु साहिब के जीवन में एक समय वह भी था जब वह शाही लिबास पहनते थे, शीश पर कलगी सजाते थे, कई सेवक पांव दबाने की सेवा में होते थे और कोई चंवर साहिब कर रहा होता था, भाव शाही जीवन, दर्शन करने वालों की कतारें लगी होती थीं, इतना आदर! और एक समय वह भी बना जब सच्चे पातशाह माछीवाड़ा के जंगल में अकेले, पास कोई सेवक नहीं, कोई सिंघ भी नहीं, यहां तक कि विश्राम के लिए कोई बिस्तर भी नहीं, ईंट को तकिया बनाया परंतु फिर भी कोई दुख नहीं, कोई घबराहट नहीं बल्कि निरंकार की याद में मस्त हुए शब्द उच्चारण कर रहे हैं–

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा॥
तुधु बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण
नाग निवासां दे रहणा॥
सूल सुराही खंजर पिआला
बिंग कसाईआ दा सहणा॥
यारड़े दा सानूं सथर चंगा
भठ्ठ खेड़िआं दा रहणा॥ १॥ ६॥

(खिआल पातशाही १०)

जहां पकड़ नहीं, वहां कोई परेशानी नहीं, रोना नहीं, वह हर हाल में एकसार रहते हैं और परमेश्वर की बंदगी में लीन रहते हैं। जिनको निरंकार अपनी बंदगी की मस्ती प्रदान कर दे, फिर वह सांसारिक दुखों-सुखों की पकड़ में नहीं फंसते बल्कि हर स्थिति में सहजावस्था में रहते हैं।

मन की एक और बहुत बड़ी दूसरी पकड़ है, वह है 'मोह की पकड़' जिसने लगभग हर किसी को, चाहे वह गरीब है या अमीर, अपनी पकड़ में जकड़ा हुआ है। साधारण इंसान अपने पुत्रियों के, पुत्रों के, पति के, पत्नी के, परिवार के मोह में फंसा हुआ है। परमेश्वर के सच्चे प्रेम से जानकार न होने के कारण सांसारिक मोह में लीन रहता है। यहां तक कि उनके पास निराश होने के बावजूद भी इस मोह को नहीं छोड़ता। गुरु तेग बहादुर साहिब जी के चरणों में एक बार उनके एक सिक्ख नारायण दास ने विनती की थी कि सतिगुरु! अपने काम में, धंधों में, बच्चों में ऐसा फंसा हुआ है कि नाम जपने को समय नहीं मिलता। सतिगुरु सच्चे पातशाह ने जो उस सिक्ख नारायण दास को उपदेश दिया, उसको धारण करो। गुरु साहिब कहते हैं, तूने काम करके धन कमाया। घर बनाया, बच्चों का पालन-पोषण करके उनको बड़ा किया, उनके विवाह कर दिए। अब तुझे चाहिए कि घर बार की ज़िम्मेदारी अपने बच्चों को सौंप दे। बच्चों के, परिवार के मोह में ही नहीं पूरी जिंदगी फंसे रहना। इस चीज़ से ऊपर उठ कर नाम सिमरन की कमाई कर और अपनी बाकी ज़िंदगी दुनिया की, लोगों की सेवा में लगा। परोपकार में लगा।

आज साधारण तौर पर हर इंसान, परिवार के, बच्चों के मोह में इतना ज्यादा फंसा हुआ है कि वह इसकी जकड़ से निकल कर असली आनंद, जो परमेश्वर के प्रेम में है, उस मार्ग पर चलने को तैयार ही नहीं। दास को एक गाथा याद आ गई, आप जी से व्यक्त कर रहा हूं। एक हलवाई के पास रोज़ाना एक संत दूध पीने जाते थे। एक दिन हलवाई संत जी को कहता है, मैं रोज़ आपको देखता हूं, आप हमेशा ही प्रसन्न होते हो, आपके चेहरे पर नूर होता है, हमेशा ही आनंद में होते हो, मुझ पर भी कृपा करो। मैं तो परिवार में, दुनियादारी में फंसा हुआ हूं, मुझे भी अपने साथ ले चलो। महात्मा कहते हैं, अभी चलो हमारे साथ, हमें कोई एतराज़ नहीं। महात्मा की यह बात कहने पर वह हलवाई तुरंत ही बोल पड़ा कि मेरा पुत्र अभी पढ़ाई करता है। दो वर्ष बाद उसकी पढ़ाई खत्म

हो जाएगी। वह कारोबार पर लग जाएगा, फिर आपके साथ चलेंगे। दो वर्ष बाद महात्मा ने फिर उसको कहा, अब तो तेरा पुत्र कारोबार करने लग गया है। अब हमारे साथ चल। वह कहने लगा, संत जी पुत्र का विवाह हो गया है, मन में कामना है पोते का मुंह देखने की, वह देख लूं फिर तुम्हारे साथ चलूंगा। दो वर्ष और बीत गए, फिर महात्मा कहते हैं, अब तो पोता भी हो गया है। अब चल हमारे साथ और तुझे भी असली आनंद की ओर ले चलें। वह कहता है, महात्मा जी, क्या करूं मन तो करता है आपके साथ जाने को परंतु पोते का मोह नहीं जाने देता। मेरा पोता मेरे साथ बहुत लाड-प्यार करता है, मुझे नहीं छोड़ता। इस तरह दो वर्ष और बीत गए। फिर महात्मा जी कहते हैं, चल भाई अब तो पोता भी बड़ा हो गया है, स्कूल जाने लग गया है, तू छोड़ अब इस मोह के जंजाल को, तेरी भी आयु बीतती जा रही है, इस जीवन में असली रस की प्राप्ति कर ले। मनुष्य जीवन का जो लक्ष्य है उसको प्राप्त कर ले, छोड़ दे अब इस झूठे मोह को। हलवाई खीझ कर कहता है, 'महात्मा जी! आप तो मेरे पीछे ही पड़ गए हो, क्या आपको कोई दूसरा नहीं मिलता। यही बात है। आज हर इंसान पहले अपने बच्चों के, फिर उनके बच्चों के मोह में फंसा परमार्थ के मार्ग की ओर चलने को तैयार ही नहीं। अगर कोई कहे भजन-बंदगी करने को तो कह देता है कि अभी बहुत आयु पड़ी है, कर लेंगे, परंतु वे भूल जाते हैं कि—

हम आदमी हां इक दमी (अंग ६६०)

इस मोह की पकड़ में फंसा इंसान जन्म-मरण के चक्रों में फंसा रहता है। इस मोह के कारण वह कई तरह की योनियों में पड़ता है।

जिस पर कृपा हो जाए, जिसकी झोली में गुरु प्रसन्नता से अपने प्रेम की बख्शिश डाल दे, जो सच्चा है, मृत्यु के बाद भी साथ देने वाला है, जिस पर दयाल होकर गुरु सच्चे प्रेम का जिसको रस चखा दे, उसके भीतर से यह परिवार के झूठे प्रेम की, मोह की पकड़ निकल जाती है। वह अपने परिवार के साथ बच्चों के

साथ, प्रेम तो करता है परंतु असली संबंध गुरु परमेश्वर से रखता है। वह परिवार में रहता है, गृहस्थी की ज़िम्मेदारी निभाता है, परंतु उनमें लिप्त नहीं होता, क्योंकि उसको यह समझ आ जाती है कि यह जो माता-पिता, पुत्र-पुत्रियां, संबंधी यह सब पूर्व जन्मों के संयोग से मिले हैं। अंत समय इनमें से किसी ने साथ नहीं देना।

मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई॥
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई॥

(अंग ७००)

उसको यह समझ आ जाती है कि यह सांसारिक प्रीत सभी झूठी और मतलबी हैं। बाणी की यह पंक्तियां फिर उनके हृदय में से निकलती हैं–

जगत मै झूठी देखी प्रीति॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे
किआ दारा किआ मीत॥

(अंग ५३६)

जिनको यह समझ आ जाए कि दुनिया के सभी रिश्ते-नाते झूठे हैं, जिनको यह संसार झूठा नज़र आ जाए, वह फिर पकड़ लेते हैं दामन गुरु नानक का, फिर वे कहते हैं मेरे गुरु नानक–

हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी॥

(अंग ६६३)

जिन पर कृपा हो जाए उनको दूसरे रिश्ते-नाते झूठे ही लगते हैं, उनको यहां तक समझ आ जाती है कि मेरे शरीर का संबंध भी झूठा है, इसने भी मेरा साथ नहीं देना, इसको भी अग्नि ने समेट लेना है और फिर मैंने अपनी आत्मा को लेकर दरगाह को जाना है, निरंकार के चरणों में जाना है, इसलिए वह अपनी आत्मा को संवारते हैं, अपनी आत्मिक उन्नति की ओर ध्यान देते हैं। भाव कि उनके भीतर अपने शरीर के प्रति भी मोह नहीं रहता।

मन पर नज़र डालो कि हमें यह समझ आई है कि नहीं।

वास्तव में कोई भी इंसान गुरु नानक के दामन से लगता ही तब है, जब उसको दुनिया के रिश्ते-नाते झूठे नज़र आए। जब तक दुनिया के रिश्तों को सच समझ बैठे हैं, तब तक गुरु नानक के दामन के साथ नहीं लग सकते। हमें भी संसार झूठा नज़र आए, फिर हमारा भी मन गुरु नानक से भीग जाएगा। जब तक संसार से जुड़े हैं, निरंकार से कैसे जुड़ेंगे। रहें संसार में परंतु मन निरंकार में रहे। मोह की पकड़ से ऊपर उठ कर गुरु के चरणों में जुड़ें, गुरु से प्रीत करके असली आनंद को प्राप्त करें और मनुष्य जन्म को सफल करें। बेटियों-बेटों के साथ, परिवार से प्रेम करें, उनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारियां निभाएं, परंतु भीतर से हमारा संबंध अपने गुरु पिता से हो। भीतर का संबंध, भीतर का प्रेम गुरु से हो। जीना भी उसका है जिसने गुरु से संबंध बना लिया, गुरु की प्रीत के अलावा सभी प्रेम झूठे हैं। गुरु ही सच्चा, अविनाशी है, उसका प्रेम ही सच्चा है, इसलिए सतिगुरु बाणी के द्वारा भी उपदेश दे रहे हैं–

भाई रे मीत करहु प्रभु सोइ ॥
माइआ मोह परीति ध्रिगु
सुखी न दीसै कोइ ॥

(अंग ४६-४७)

मन को एक और तीसरी पकड़ तंग करती है, वह है प्रशंसा की पकड़, शोभा की, वाह-वाही की भूख होती है। वह यह चीज़ें मिलने पर खुश होता है परंतु जिसके भीतर से यह पकड़ निकल जाए, वह इन चीज़ों से बचने की कोशिश करता है, इन चीज़ों से दूर भागता है। जैसे बुल्ले शाह की लिखी पंक्तियां हैं–

चल ओइ बुल्लिआ उथे चलीए जिथे वसण अन्हे।
ना कोई सानूं पछाण सके ते ना कोई सानूं मंने।

इन पंक्तियों की गहराई समझना। तंग आ गया होगा वह दुनिया की प्रशंसा से तो ही कह दिया है कि वहां जाकर बसा जाए जहां कोई उसको पहचान न सके। (अंधे से मतलब यहां आंखों से अंधे नहीं बल्कि यह कि जिनके पास उसको पहचानने वाली आंखें

न हों) यह वही कह सकता है जिसकी यह पकड़ निकल गई। बाबा नंद सिंघ जी के वचन हैं कि नाम जपने के मार्ग में वाह-वाही की, प्रशंसा की बहुत बड़ी खाई आती है। बहुत सारे लोग इस खाई में गिर जाते हैं और अपनी पूजा कराने में मस्त हो जाते हैं और असली मंज़िल निरंकार के चरणों के प्रीत की, चरणों के रस की प्राप्ति नहीं कर सकते और जो ऋद्धियों-सिद्धियों को छोड़ कर माया की, प्रभुत्ता की पकड़ से आगे निकल जाते हैं, फिर वे सतिगुरु पारस के साथ एक होकर खुद भी पारस बन जाते हैं।

बाबा ईशर सिंघ जी (नानकसर वाले) जब भी दीवान में आते थे तो दोनों हाथ जोड़कर सारी संगत को चारों तरफ से घूम कर शीश झुका कर फतह बुलाते थे और कहते थे 'दास तो गुरु नानक के घर का झाड़ू बरदार है, अभी सिक्ख ही नहीं बना। बाबा जी ने बोलना दास को जो भी माथा टेकता है, वह हम सभी इकट्ठे करके गुरु साहिब के चरणों में टेक देते हैं, स्वयं पर बोझ नहीं रखते, यह पूर्ण संतों-महापुरुषों, बड़ाई की पकड़ से ऊपर उठने वालों की निशानी, कि अगर संगतें मान दे भी देती थीं तो अपने पास नहीं रखते थे। यह मन की पकड़ के बारे तीन तरह का ज़िक्र लिखा है, आप जी संभाल लेना।

दूसरी पकड़ है 'आँखों की पकड़' सब दृष्टि डालो, टी.वी. का त्याग हुआ है कि नहीं। जिन आंखों में हमने निरंकार के चरण बसाने थे, हम दूसरी चीज़ें बसा रहे हैं। आप स्वयं ही सोचो, जिसकी आँखों में हर वक्त गुरु नानक के चरण बसे हों, जो हर वक्त यत्न करता हो गुरु के ध्यान में रहने का, क्या जब वह टी.वी. पर सीरियल देखेगा, तो उसको गुरु नानक प्रियतम को आंखों में से निकालना नहीं पड़ेगा। झूठ को मिलाने के लिए सच को निकालना पड़ेगा। गुरमुख की यह पकड़ निकल जाती है, उसको यह रंग-तमाशे अच्छे नहीं लगते। वह कहता है कि यह तो खिलौने हैं, मैंने तो सच से इश्क लगाया है।

टी.वी. पर धार्मिक चीजें भी आती हैं, संतों-महापुरुषों, कमाई वालों के प्रवचन आते हैं, वह देखो, उसको देखने की कोई मनाही

नहीं, परंतु जो दूसरी चीज़ें फिल्में, सीरियल इत्यादि आते हैं, उनको छोड़ दो। बाबा जी वचन करते थे कि कसूर गिलास का नहीं, गिलास में क्या पीना है, यह पीने वालों ने देखना है। कसूर टी.वी. का नहीं। उन्होंने तो सभी के लिए प्रोग्राम देने हैं, यह तो गुरसिक्ख ने देखना है कि मैंने कौन-सा सौदा खरीदना है और कौन-सा छोड़ना है। आजकल टी.वी. पर इतने ज्यादा सीरियल चल पड़े हैं कि बहुत ही बुरा हाल है। संगत करने वालों ने इस पकड़ से बचना है। कोई औरत 7-8 टी.वी. सीरियल रोज़ देखती थी। दास ने कह दिया, बहन जी! आपकी आंखों की पकड़ नहीं गई, इनको छोड़ दो। टी.वी. जरूर देखना है तो धार्मिक चीज़ें देख लिया करो, हम जो वास्तविक व्यापार करने आए हैं, दूसरी चीज़ों से किनारा करो। जब दूसरी चीज़ें देखते हो, गुरु को प्रियतम को नेत्रों में से निकालते हो तो ही दूसरी चीजों को देख सकते हो। उनको नेत्रों में बसा सकते हो, यह कितना ज्यादा नुक्सान है। उस औरत का आगे से जवाब था, कि टी.वी. पर सीरियल देखने से समय बहुत अच्छा व्यतीत हो जाता है। ओ गुरु प्यारो! एक बात याद रखो, समय व्यतीत करना बहादुरी नहीं, समय को सफल करना बहादुरी है। सिक्ख ने समय सफल करना है न कि समय व्यतीत करना है, समय तो पशु-पक्षी, कीड़े-मकौड़े भी व्यतीत कर लेते हैं।

एक अन्य शरीर की एक बात सामने आई। वह भी पांच-छह सीरियल देखता था और सीरियल देखने के साथ माला भी फेरता था। दास ने पूछा, इस तरह क्यों करता है? वह कहता है, जब टी.वी. पर सीरियल देखता हूं तो मन डरता है कि यह गलत कार्य कर रहा हूं, नहीं करना चाहिए परंतु क्या करूं, रहा नहीं जाता, इसलिए साथ-साथ माला फेरता हूं। अब इस बात का कानून तो दास को भी नहीं पता अभी तक कि टी.वी. देखना और साथ माला फेरना इसलिए कितनी क्षमा है और कितनी सज़ा है।

बाबा नंद सिंघ जी के वचन हैं कि कोई दो पाठ सुखमनी साहिब जी के कर ले और 2 घंटे टी.वी. पर रंग-तमाशे देख ले। बाबा जी कहते थे कि 2 पाठ सुखमनी साहिब के करने से जितने

पुण्य बने होंगे वह 2 घंटे रंग-तमाशे देखने से जल जाएंगे। इस तरह से यह बात समझ लेना कि जो टी.वी. पर सीरियल देखते हो, इससे तुम्हारे पुण्यों का कोटा समाप्त हो जाता है। केवल पुण्य बनाने वाला बड़ा नहीं बल्कि पुण्य बना कर संभालने वाला बड़ा है। जब टी.वी. देखते हो, जितने पुण्य प्राप्त किए होते हैं, वह नष्ट होने आरंभ हो जाते हैं। झूठे रंग-तमाशे, फिल्में, टी.वी. पर सीरियल देखने यह पुण्य गंवाने का मार्ग है। अच्छी चीज़ें देखो, धार्मिक प्रोग्राम देखो, जिनको देखकर आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए मार्ग मिले, सुमति मिले।

फिल्मों या टी.वी. सीरियल देखने का और बड़ा नुक्सान यह भी है कि जब आप यह चीज़ें देखते हो और फिर जब जपुजी साहिब, सुखमनी साहिब पढ़ने बैठोगे और सिमरन में बैठने का प्रयास करोगे तो वही सीन तुम्हारी आंखों के सामने आएंगे और गुरु नानक के चरणों में तुम्हारा ध्यान नहीं जुड़ पाएगा। इसलिए यत्न करो कि आंखों को वही चीज़ दिखाओ जिससे गुरु ही याद आए, गुरु की मूर्त्त आंखों में रहे। अगर हमने इस तरह की पकड़ को नहीं संभाला तो हमसे तो हीर अच्छी जो हर वक्त रांझे की याद में मस्त रहती थी। उसकी आंखों में हर समय रांझा रहता था क्योंकि जिसको आप हर समय याद करोगे, प्रेम करोगे, वही तो रहेगा तुम्हारी आंखों में। हीर की मां ने जब कहा था हीर को दीवार में सूई टांगने के लिए तो उसको दीवार में ही कहीं सूई टांगने की जगह नहीं मिली, क्योंकि उसको दीवार में हर जगह पर रांझा नज़र आ रहा था। वास्तव में रांझा दीवार में नहीं, बल्कि उसकी आंखों में बसा हुआ था। आप भी ऐसा प्रेम करो अपने गुरु नानक से कि आपकी आंखों में हर वक्त गुरु नानक ही बसा हो। तुम में कोई गुरु नानक का ध्यान धारण करता हो या छठे पातशाह का या कलगी वाले का या बाबा दीप सिंघ जी का, जहां भी किसी की श्रद्धा है, प्रेम है, वह जब दूसरी चीज़ें देखेगा तो गुरु को तो निकालना पड़ेगा नेत्रों में से। बाबा जी वचन करते थे, जो दूसरे रंग-तमाशे हैं यह नरकों का मुंह दिखाते हैं और गुरु नानक के घर

के धार्मिक प्रोग्राम यह सचखंड में जगह दिखाते हैं।

जरूर तौलना स्वयं को और तौल कर कहीं छोड़ न देना। जहां पुण्य बनाने हैं, संभालने भी हैं। चाहे धीरे-धीरे कम कर लो, परंतु विनती है दास की, गुरु-घर के कूकर की, आज से कम करने की तरफ चल पड़ना। अगर कोई 5 सीरियल देखता है तो 4 कर दो। अगर कोई चार देखता है तो 3 कर दे। अगर कोई 3 देखता है तो 2 पर आ जाए, दो वाला एक पर आ जाए। एक वाला गुरु की कृपा से सदा के लिए ही छोड़ दे। सतिगुरु हमें आंखों की पकड़ से बचाएं।

तीसरी है रसना की पकड़। रसना की हमारे शरीर में बहुत बड़ी भूमिका है। रसना दो कार्य करती है, एक स्वाद लेने का, एक बोलने का, इन दोनों पर नियंत्रण करना आवश्यक है।

यह रसना ही है जिससे मीठा बोलने से, दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं। इसी रसना से निकले गलत बोल मित्रता को भी दुश्मनी में बदल देते हैं। मीठे बोल शीतलता देते हैं और कड़वे बोल दूसरे का हृदय जला देते हैं। कहावत भी है कि तलवार की चोट भर जाती है, जुबान की नहीं। कहीं किसी से कोई मनमुटाव हो, ज़रा-सा जुबान से इतना ही कह दो कि गलती हो गई, कई वर्षों की खड़ी दीवारें गिर जाती हैं। रसना का इतना बड़ा स्थान है कि आज चाहो तो इससे टूटे हुए को भी जोड़ ले।

आप एक चीज़ नोट करो कि क्रोध कितनी बुरी चीज़ है और यह क्रोध प्रकट कहां से होता है? यह क्रोध भी तो रसना के द्वारा ही प्रकट होता है। इसलिए यत्न करो कि ज्यादा से ज्यादा इस पर नियंत्रण किया जाए। गुरु अमरदास जी के इतिहास की ओर दृष्टि डालो। गुरु साहिब ने अपनी बेटी बीबी भाणी को उसके विवाह के समय क्या वचन किए थे। गुरु साहिब ने कहा था कि मैं तुम्हें तेरे विवाह में कौन-सा दहेज दूं, क्योंकि जो चीज़ें भी दूंगा नाशवान है। फिर कुछ सोच कर कहते हैं, मैं तुम्हें यह तीन 'भ' दहेज में दे रहा हूं, इनको संभाल कर रखना, जिससे तेरा लोक भी और

परलोक भी सुखी हो जाएगा। वह तीन 'भ' कौन से थे–

भ–भूल गई जी! भ–भला जी!! भ–भाणा जी!!!

अब ध्यान देना, पहले दो 'भ' का संबंध रसना से है। सतिगुरु बीबी भानी को समझाते हुए कहते हैं कि हे मेरी बेटी! अगर तेरे घर में कोई ऊंची नीची बात हो जाए, तो बहस में मत पड़ना। अपनी जुबान पर नियंत्रण रखना और इस रसना से सिर्फ इतना कह देना, भूल गई जी। अपनी रसना पर तू अगर नियंत्रण रखेगी तो तेरा घर क्लेश से बच जाएगा।

दूसरे 'भ' का संबंध भी रसना से है। कहते हैं, अगर तुझे कोई घर का सदस्य ऐसा कार्य करने को कह दे, जो तेरा करने को मन न कर रहा हो, परंतु अपनी रसना पर नियंत्रण रखना, आगे से जवाब मत देना। मौका संभालने के लिए अपनी रसना पर नियंत्रण रखना और यह कह देना 'भला जी'। तेरा एक रसना पर नियंत्रण रखने से तेरा घर स्वर्ग बन जाएगा, घर में कलह-क्लेश नहीं होगा।

आप भी यत्न किया करो कि जितना ज्यादा से ज्यादा हो सके, रसना की इन्द्रिय पर ज्यादा से ज्यादा नियंत्रण रखो। तुम्हारी रसना घर-घर में मिठास घोले, गुरुद्वारे में, समाज में, हर स्थान जहां भी परमात्मा तुमसे डयूटी ले, वहां अपनी रसना से मिठास ही बांटो। क्रोध को छोड़ दो। अगर क्रोध को छोड़ना मुश्किल लगे तो घबरा मत जाना। महांपुरुष युक्ति देते थे कि जो चीज़ नियंत्रण में न आए, उसको नियंत्रण करने के लिए, थोड़े-थोड़े दिन का स्वयं पर बैन लगा लिया करो। क्रोध नियंत्रण में नहीं आता, स्वयं पर 7 दिन का बैन लगा लो कि मैंने सात दिन किसी से गुस्से से नहीं बोलना। अगर 7 दिन मुश्किल लगे, 3 दिन का लगा लो। इस प्रकार प्रतिबंध लगाओ तो फिर धीरे-धीरे चल पड़ोगे।

दास को एक वचन याद आ गया। एक गाड़ी के टी.टी. ने एक पत्रिका में अपनी आपबीती लिखी थी। दास ने पढ़ी, आप जी से व्यक्त करूँ, उसने लिखा था कि मैं एक दिन गाड़ी में टिकटें चैक कर रहा था कि गाड़ी में उस दिन हिन्दू धर्म के संत लीला

शाह भी गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। 10-12 सेवक भी उनके साथ थे। बड़ा इलाही नूर था उनके चेहरे पर। वह टी.टी. कहता है कि मैं उनको नहीं जानता था। उनके सेवकों से पूछ लिया तो उन्होंने बताया कि यह संत लीला शाह जी हैं। मैंने भी स्वाभाविक ही उनको कह दिया, महांपुरुषो! मुझ पर कृपा करो, मुझे भी आशीर्वाद दो, परंतु वह चुप रहे कुछ न बोले। फिर जब मैंने अपनी बात दो-तीन बार दोहराई तो वह कहने लगे, आशीर्वाद फ्री में नहीं मिलता भेंट लगती है। अगर तू परमात्मा के घर में से आशीर्वाद लेना चाहता है तो हमसे यह वचन कर कि आज के बाद क्रोध नहीं करूँगा। वह टी.टी. लिखता है कि मैंने हाथ खड़े कर दिए, मैंने कहा आशीर्वाद देना है तो दो, नहीं देना तो न दो, परंतु मैं क्रोध नहीं छोड़ सकता।

यहां एक बात याद रखो, जो पूर्ण महांपुरुष होता है, वह जब यह देखता है कि सौदा नहीं बिक रहा तो मूल्य कम कर देता है, क्योंकि उनका कार्य होता है संसार को सही राह पर चलाना। संत जी कहते हैं, हम तुम्हें रियायत कर देते हैं। टी.टी. कहता है कि रियायत कैसे? वे कहते हैं कि तू अगर हमेशा के लिए क्रोध नहीं छोड़ सकता तो सात दिन के लिए छोड़ दे। जब उन्होंने यह बात कही तो टी.टी. सोचता है कि मैंने मन में सोचा कि सात दिन तो ऐसे वैसे निकाल ही लूंगा। जब मैंने संतों का वचन मान कर स्वीकार किया तो उन्होंने प्रसन्नता के घर में आकर मेरे सिर पर हाथ रखा और मुझे आशीर्वाद भी दिया। अब संत तो गाड़ी से उतर कर अपने स्थान पर चले गए और उस टी.टी. ने जो स्वयं पर क्रोध छोड़ने का प्रतिबंध लगाया था, उसका तीसरा दिन था। वह अपनी ड्यूटी के अनुसार गाड़ी में यात्रियों की टिकटें चैक कर रहा था। रात के करीब दस बजे का समय था, ऊपर वाली सीट पर एक यात्री सोया हुआ था। टी.टी. ने उसको हिला कर टिकट चैक कराने के लिए कहा तो वह यात्री जिसका अपनी रसना पर नियंत्रण नहीं था, टी.टी. पर बिगड़ गया और क्रोध में आकर कहने लगा, जब दिल करता है मुंह उठाकर आ जाते हैं टिकट चैक करने, सुबह

का थकावट से अभी सोया था कि आकर उठा दिया है। कोई समय नहीं तुम्हारा भी टिकट चैक करने का, यह भी नहीं देखते कि इंसान सोया है तो थोड़ी देर रुक कर टिकट चैक कर लेंगे।

वह टी.टी. मन में सोचने लगा कि मैं टिकट चैकर हूं। मेरी मर्जी है मैं जिस समय मर्जी टिकट चैक करूं। मेरा इतने यात्रियों के सामने अपशब्द बोल कर निरादर किया है। वह कहता है कि मैं क्रोध से जवाब देने ही लगा था यात्री को तो साथ ही महांपुरुष का दिया वचन याद आ गया कि मैंने सात दिन क्रोध नहीं करना और अभी तो तीसरा दिन है। यह याद आते ही पूरी कोशिश करके मैं अपने क्रोध को पी गया और अपनी जुबान पर नियंत्रण किया और यात्री को कहा कि मैंने तुम्हारी नींद खराब की है, मुझे क्षमा कर देना और आप मुझे जब कहोगे मैं उस समय आकर तुम्हारी टिकट चैक कर लूंगा। यह लफ़्ज़ सुनते ही उस इंसान का क्रोध उतर गया और वह तुरंत अपनी सीट से नीचे उतर आया और कहने लगा, मैंने पता नहीं नींद में आपको क्या कुछ कह दिया है, क्षमा तो मुझे मांगनी चाहिए आपसे, उलटा आप मुझसे क्षमा मांग कर मुझे लज्जित कर रहे हो। आप मेरी टिकट अभी चैक कर सकते हो। टी.टी. उसकी टिकट चैक करके आगे जाने लगा तो उस यात्री ने उसको बांह से पकड़ कर अपने पास बिठा लिया और कहा, आप अपनी ड्यूटी समाप्त कर लो, फिर हम इकट्ठे खाना खाएंगे। मैं आपकी बातचीत के ढंग से इतना प्रभावित हुआ हूं कि आज मैं आपको अपना मित्र बनाता हूं।

टी.टी. ने वार्ता लिखी कि हमने मिलकर भोजन किया। मैंने अपना कार्ड पता उसको दिया और उसने मुझे दिया। टी.टी. कहता है कि उस दिन मुझे ज्ञान हो गया कि एक रसना पर नियंत्रण करने से कैसे मिलकर खाना खा रहे हैं, एक दूसरे को कैसे घर का पता दे रहे हैं। अगर मैं एक मिनट यह नियंत्रण न करता तो कितना झगड़ा होना था। अब आप स्वयं ही अंदाज़ा लगा लो कि अगर वह टी.टी. क्रोध से बोलता तो कितना बड़ा विषाद खड़ा हो जाना था और रसना पर दो मिनट के नियंत्रण ने उनको सदा के लिए

मित्र बना दिया। वह टी.टी. महांपुरुषों द्वारा दिए वचन की कीमत को समझ गया और सदा के लिए यह गुण उसने अपनी जिंदगी में धारण कर लिया और सोचा महांपुरुषो! अब सात दिन के लिए नहीं हमेशा के लिए उसने क्रोध छोड़ा। यह आप सब ने गुण लेना है कि क्रोध रसना के द्वारा प्रगट होता है। अगर इसका त्याग एकदम न भी हो तो धीरे-धीरे प्रतिबंध लगाकर किया जाए तो भी कृपा हो जाएगी।

रसना बोलने के अलावा खाने का भी कार्य करती है। यह भी ध्यान रखना है कि गुरमति के अनुसार रसना के द्वारा क्या खाना जायज़ है और क्या नहीं। भाई वीर सिंघ जी के वचन हैं कि जिन पदार्थों में 20 से 25% जान है, उनको खाना जायज़ है और जिनमें पूर्ण जान है, उनको खाना जायज़ नहीं है। जितनी भी सब्जियां या फल आदि हम खाते हैं उनका चौथा हिस्सा जान माना जाता है। पत्तों में भी प्राण है, यह भी बढ़ते हैं। इनमें 25% गिने जाते हैं भाव कि कितने ही पदार्थ जो निरंकार ने हमारे खाने के लिए बनाए हैं, जिनमें से चौथा हिस्सा जान मानी जाती है, यह खाने जायज़ हैं। अमेरिका के निवासी गुरमुख प्यारे भाई हरभजन सिंघ योगी जी से किसी ने सवाल किया था कि मांस खाना जायज़ है कि नहीं? उनका जवाब था कि जो गुरु रामदास के दर पर लंगर में बनता है, वह ही खाना जायज़ है। सो रसना दो बड़े कार्य करती है बोलने का और स्वाद लेने का। इन दोनों पर हमारा नियंत्रण हो।

चौथी है कानों की पकड़—जिनकी गुरु पर श्रद्धा है, उनकी यह भी निशानी है कि वह अपने कानों को गुरु के उपदेशानुसार बाणी सुनने में लगाते हैं, जैसे कि गुरु अमरदास जी अनंदु साहिब की बाणी के द्वारा हमारे कानों की इन्द्रिय के लिए उपदेश दे रहे हैं—

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए॥
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी॥

(अंग ९२२)

सतिगुरु उपदेश कर रहे हैं कि हे कानो! सच्चे परमेश्वर ने तुम्हें नाम सुनने के लिए शरीर के साथ लगाया है, इसलिए आप सच्ची बाणी को सुनो।

मेरे मन करन सुणि हरि नामु॥
मिटहि अघ तेरे जनम जनम के कवनु बपुरो जामु॥

(अंग १००६)

बाणी सुनने से करोड़ों पुण्यों की प्राप्ति होती है। तराजू के एक ओर करोड़ों पुण्य डाल लिए जाए और एक तौल में सुनने की बख्शिश, दोनों एक समान है। दास कोई बात अपनी ओर से नहीं लिख रहा, बाणी साक्षी है–

कोटि पुंन सुणि हरि की बाणी॥

(अंग २३८)

अपने मन पर नज़र डालो, हरिमंदिर साहिब जाकर या जहां भी जाकर कहीं कीर्तन सुनने को मिले, कोई घंटा आधा घंटा, दो घंटे कीर्तन सुनने में समाधि लगती है कि नहीं। हमसे आगे तो उन अंग्रेजों ने निकल जाना है जो अमेरिका या दूसरे देशों में कलगीधर के सिक्ख बन रहे हैं। कभी आपने नोट किया है कि कहीं हरिमंदिर साहिब बैठ कर कीर्तन सुनते हो तो दो-दो, तीन-तीन घंटे घुटने नहीं हिलाते। कानों के द्वारा बाणी का एक-एक कण अपने खेत रूपी शरीर में डालते हैं। इसको कहते हैं बाणी को सुनना, कीर्तन में समाधि लगाना। कान बाणी सुन रहे हों, भीतर हृदय में जा रही हो बाणी की पंक्तियां। ध्यान जुड़ा हो गुरु साहिब के चरणों में, ऐसा ध्यान जुड़ा हो कि कीर्तन सुनते-सुनते हमारी गुरु साहिब के साथ हृदय के द्वारा बातें हो रही हों। गुस्सा मत करना, हम भी कई बार कोशिश करते हैं, नेत्र बंद करके कीर्तन सुनने की, परंतु किसी को दस मिनट बाद और किसी को 15–20 मिनट बाद भी ऐसी झोंक आती है कितना समय व्यतीत हो जाता है पता ही नहीं लगता। कई बार थोड़ी-थोड़ी देर बाद होश आती है और दो-चार पंक्तियां कानों में पड़ती हैं, फिर निद्रा जोर डाल देती है। यह अर्ध-निद्रा

अवस्था है, यत्न करो सचेत अवस्था में रहो। विनती किया करो गुरु साहिब के चरणों में कि हमारे कानों को कीर्तन बाणी सुनने की बख्शिश दो। जिसको बाणी सुनने की बख्शिश मिल जाए, आप जी रोज़ पढ़ते हो जपुजी साहिब में, कितनी बख्शिशें हैं–

सुणिऐ दूख पाप का नासु॥

(जपुजी साहिब)

कानों द्वारा नाम बाणी सुनने से दुखों, पापों का विनाश हो जाता है। वजीर खान के जलोधर का रोग बाणी सुनने से ही ठीक हो गया था। संतों से नाम सुनने के कारण ही अजामल और सधना कसाई के पाप कट गए। जपुजी साहिब की बाणी में नाम सुनने की महिमा की चार पउड़ियां हैं। हम रोज़ यह पउड़ी पढ़ते हैं और आगे निकल जाते हैं परंतु गुरु कृपा करे, कहीं सुनिए की महिमा पढ़ कर हमें ज्ञान मिल जाए और हमें भी नाम बाणी सुनने का रस मिल गया, फिर गुरु साहिब के चरणों में हमारी यह विनती भीतर से निकलेगी–

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए॥
साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए॥

(अंग ८२०)

हे मेरे सतिगुरु! कृपा करके मेरे कानों को दूसरे गीत मत सुनाना। कई बार जब लोगों के घरों में जाने का अवसर मिलता है और उनके घर की सैलफों पर अश्लील गीतों की टेपों पर नज़र पड़ती है तो इतना मन अंदर से दुखी होता है कि सिक्खों का घर हो, अमृतधारियो का घर हो, उनके घर में अश्लील गानों की टेपें चलना, जो नरकों की ओर ले जाए। वह गीत क्यों न चले जो गुरु नानक के नज़दीक ले जाए, सचखंड को ले जाए, बैकुण्ठ को ले जाए। गुरु नानक, कलगियों वाले के सिक्खों के घर में तो शब्दों की, गुरबाणी की टेपों की कतार लगी होनी चाहिए जिनको सुन कर उनका ध्यान अपने गुरु के प्यारे चरणों में जुड़ जाए। मन पर नजर डालना, हमारे कानों को गुरुबाणी की टेपें सुनने में आनंद मिलता है कि फिल्मी गीतों, नाटकों में।

पांचवी है वासना की पकड़—यहां एक बात पर ध्यान रखना, भाई गुरदास जी द्वारा रचित पंक्तियां हैं—

एका नारी जती होइ पर नारी धी भैण वखाणै॥

(भाई गुरदास जी, वार ६, पउड़ी ८)

जिसके साथ गुरु साहिब की हजूरी में फेरे लिए हैं, वह 'एका नारी जती है' परंतु अगर कहीं और बुरी दृष्टि डालता है तो यह वासना है। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि नारी के लिए पराए मर्द का संग या मर्द के लिए पराई स्त्री का संग, यह भी नाम जपने वाले के मार्ग में एक बहुत बड़ी खाई है। नाम जपने वाले को तो पराई नारी या पराए मर्द का संग करना तो क्या, उस चीज़ की सोच से भी बचना है। बाबा जी तो यहां तक वचन करते थे कि जब विवाह को कुछ वर्ष बीत गए, बच्चे हो गए, बच्चे बड़े हो गए, फिर ब्रह्मचार्य रख लो। एक तो है संन्यास-विवाह कराया ही नहीं परंतु एक है पत्नी होते हुए ब्रह्मचार्य। समय था अपनी गृहस्थी की डयूटी निभाई, फिर इस चीज़ पर नियंत्रण किया जाए। गुरमुखों पर ऐसा समय आता है कि विवाह को कुछ समय बीत गए, फिर यह चीज़ नियंत्रण में आ जाती है। कई यह पढ़ कर हैरान होते होंगे कि यह कैसे संभव है परंतु ऐसा है। जैसे-जैसे कोई नाम जपता है, उसको रस प्राप्त होता है। निरंकार के चरणों के रस की ओर बढ़ता है और इस झूठे रस की पकड़ निकलती जाती है। गुरु साहिब भी उपदेश देते हैं—

बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ॥
बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ॥

(अंग ८०२)

अब यह जो सभी पकड़ों की गुरु साहिब की कृपा से विचार व्यक्त हुए हैं तो इनका निष्कर्ष लेना कि झूठे रंग-तमाशे देख कर आंखें नहीं संतुष्ट होतीं। रसना से फालतू बोल बोलने का भी कोई लाभ नहीं, बल्कि हानि ही है। रसना से तरह-तरह के पदार्थ के रस भोगने से भी संतोष नहीं हो सकता। कानों से अश्लील गीत नाद

सुनने या दूसरों की निंदा सुनने या करने में भी तृप्ति प्राप्त नहीं हो सकती। असली आनंद तो गुरु के प्रेम में है। गुरु से प्रीत ही सच्ची वस्तु है, सच्ची मर्यादा है। भाई गुरदास जी की पंक्तियां भी इसी बात की पुष्टि कर रही हैं–

अखी वेखि न रजीआ बहु रंग तमासे।
उसतति निंदा कंनि सुणि रोवणि तै हासे।
सादीं जीभ न रजीआ करि भोग बिलासे।
नक न रजा वासु लै दुरगंध सुवासे।
रजि न कोई जीविआ कूड़े भरवासे।
पीर मुरीदां पिरहड़ी सची रह रासे॥ ६ ॥

(वार २७, पउड़ी ६)

गुरु के, परमेश्वर के प्रेम में लीन होकर जो उसके नाम रस का पान करता है, क्योंकि इस रस को चखने के बाद यह पता लग जाता है कि इसके समान कोई दूसरा रस नहीं। जिस तरह सुबह होते ही अंधेरा दूर हो जाता है, ठीक उसी तरह परमेश्वर के प्रेम की सुबह होने से अज्ञानता का अंधकार दूर हो जाता है। इन्द्रियों के भोग भी नष्ट भ्रष्ट होकर दौड़ जाते हैं। जैसे सरकार की मोहर लगी है प्रापर्टी पर किसी का अधिकार नहीं होता, ठीक उसी तरह जब हृदय पर निरंकारी मोहर लग जाए तो जितने भी संसार के भोग है, वासनाएं हैं, तृष्णाएं हैं, भाग जाती हैं।

यह है श्रद्धा की सातवीं निशानी। संसारी पकड़ निकल जाएगी और निरंकारी पकड़ आ जाएगी। यह पढ़ने का तो ही लाभ है अगर पढ़ कर अपने अंतःकरण को तौलो, प्रकाश लाओ कि हम कहां खड़े हैं और गुरु के आगे अरदास करके आगे बढ़ने की कोशिश करो। बाबा जी वचन करते थे कि जिसने अमृत वेला संभाल लिया, टी.वी. पर नियंत्रण कर लिया, अपनी वासना को काबू में कर लिया, माया की पकड़ को काबू कर लिया फिर परमात्मा उसके पीछे-पीछे। अगर जीवन की वास्तविक मंज़िल पाना चाहते हो, अगर वास्तविक आनंद की प्राप्ति चाहते हो तो संसारिक पकड़ें कम करते जाओ और गुरु के चरणों से प्रेम बढाते जाओ। इन दोनों कार्यों के लिए

यत्नशील रहो। जैसे-जैसे संसारी पकड़, संसारिक भोगों की पकड़ कम होती जाएगी, निरंकारी पकड़ बढ़ती जाएगी। गुरु के चरणों से प्रेम बढ़ता जाएगा, क्योंकि इन दोनों का परस्पर संबंध है। एक दिन ऐसा आएगा कि संसारिक बन्धनों की पकड़ समाप्त हो जाएगी और निरंकार के चरणों में मन रम जाएगा। निरंकार के प्रेम का, निरंकार के चरणों का रस, असली आनंद की प्राप्ति हो जाएगी। कई कह देते हैं कि हम चाहते तो हैं परमेश्वर के मार्ग पर चलना परंतु हमें संसारिक बंधनों ने, परिवार के बन्धनों ने बांधा हुआ है, परंतु एक बात याद रखो, यह संसार के पदार्थ, संसारिक बन्धन हमें बांध नहीं सकते, हमने स्वयं ही इसको पकड़ा हुआ है।

जैसे एक गाथा है कि एक संत जी के पास एक सज्जन गया और कहने लगा, मन में बहुत जिज्ञासा है कि निरंकार के चरणों में लीन हुआ जाए परंतु क्या करूं, संसारिक बन्धन नहीं छोड़ते। संत जी ने उसको समझाने के लिए एक युक्ति का उपयोग किया। उन्होंने एक पेड़ को ज़ोर से पकड़ लिया और कहने लगे, यह मुझे छोड़ता नहीं। वह सज्जन कहने लगा, संत जी! यह आप क्या कह रहे हो, पेड़ ने आपको नहीं पकड़ा बल्कि पेड़ को आपने पकड़ा हुआ है, आप इसको छोड़ दो। संत जी ने उस वक्त पेड़ को छोड़ दिया और कहा, मैं भी तो यह समझाना चाहता हूं कि इस संसार ने तुम्हें नहीं पकड़ा हुआ, तूने संसार को पकड़ा है, तू स्वयं ही इसके बंधन में फंसा हुआ है।

हम सभी जानते हैं कि सब कुछ नाशवान् है, यह भी जानते हैं कि शांति संसार के भोगों में या संसार के पदार्थों में नहीं, फिर भी उनको छोड़ कर असली और सदैव आनंद की प्राप्ति के मार्ग पर चलने को तैयार नहीं। गुरु साहिब भी बाणी के द्वारा हमें यही उपदेश दे रहे हैं–

साधो इहु जगु भरम भुलाना॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना॥ १॥ रहाउ॥
मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना॥१॥

(अंग ६८५)

जो किछु करी सु तेरा ताणु॥
तूं मेरी ओट तूंहै दीबाणु॥

श्रद्धा की आठवीं निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :
उसको एकांत में जुड़ने की भूख लगनी आरंभ हो जाती है।

जैसे एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला में एकांत में बैठ कर, अपने मन, दिमाग, शारीरिक और मानसिक बल को प्रयोग करने में लीन करके कोई न कोई नई खोज कर लेता है, इसी तरह परमात्मा की प्राप्ति के लिए भी एकांत की अत्यावश्यकता है। परमात्मा की प्राप्ति के लिए नाम जपना अत्यंत जरूरी है। नाम परमात्मा के देश जाने वाली गाड़ी है, सीढ़ी है। चाहे नाम किसी भी स्थान पर किसी भी वक्त जपा जा सकता है, परंतु किसी एकांत स्थान में दुनिया के शोर से दूर वृत्ति शांत करके जपना अत्यंत लाभकारी होता है। एकांत किसको कहते हैं, जहां एक आप हो, एक गुरु नानक हो। अपने भीतर जरूर दृष्टि डालो, कुछ समय एकांत में गुरु के लिए लगाते हो कि नहीं। एकांत में जुड़ना प्रेम का चिन्ह है। बाणी वही है, वाहिगुरु शब्द वही है, मूलमंत्र वही है, जिसको जपकर कई तो परमात्मा की प्राप्ति कर लेते हैं, जबकि कईयों को कई-कई वर्ष बीत जाते हैं, पढ़ते और जपते परंतु प्राप्ति नहीं होती। एक बात जान लेना कि प्राप्ति उनको ही होती है जो एकाग्रचित होकर जुड़ते हैं और एकाग्रता के लिए एकांत अत्यावश्यक है। यत्न किया करो कि जो भी समय नितनेम, सुखमनी साहिब बैठ कर सिमरन में गुरु नानक को देते हो, वह एकांत में दो, एक मन एक चित, जिसके बारे में गुरु साहिब की ओर से सुखमनी साहिब की बाणी द्वारा ही संकेत मिलता है–

प्रभ की उसतति करहु संत मीत॥ सावधान एकागर चीत॥

(अंग २६५)

आप कभी विचार करना, संसारिक कार्य हम कितने ध्यान से, मन लगाकर, एकाग्रचित होकर करते हैं। कोई लिखने-पढ़ने का कार्य हो, कोई हिसाब-किताब मिलाना हो तो कहते हैं कि बहुत ध्यान से करें नहीं तो जोड़ में अंतर आ जाएगा, इसलिए बच्चों से अलग होकर ऐसा कार्य करते हैं। बस ऐसा ही ध्यान, ऐसी ही एकाग्रता बाणी पढ़ने, कीर्तन सुनने, सिमरन करते वक्त रखा करो। शोर से दूर किसी एकांत में बैठा जाए। कई तो सोफे पर बैठ कर ही या बिस्तरों पर बैठ कर ही बाणी पढ़ते जाते हैं और बाणी पढ़ते वक्त एक दूसरे से ही बातें किए जाते हैं। बच्चों को भी आवाज़ें दिए जाते हैं, डांटते भी रहते हैं। लाभ तो इसका भी मिलेगा परंतु सिर्फ 5-10 पैसे, परंतु अगर हम चाहते हैं 100 पैसे महातम लेना, अगर हम चाहते हैं प्राप्ति करना, फिर यह जरूरी है कि एकाग्रचित होकर बाणी पढ़ी जाए, सिमरन किया जाए, परंतु यह संभव तो ही है, अगर एकांत में जुड़ोगे जब इस तरह ध्यान लगाकर, एकाग्र मन होकर एकांत में जुड़ोगे, तो गुरु से बातें भी हो जाएंगी, जिसको कहते हैं–

हरि नावै नालि गला
हरि नावै नालि मसलति
हरि नामु हमारी करदा नित सारा॥

(अंग ५६२)

एकांत में जाने से गुरु के समीप हो जाओगे, गुरु अंग संग महसूस होने लग जाएगा, गुरु मित्र बन जाएगा, प्राप्ति हो जाएगी। गुरु को एकाग्रता वाला समय दो, जब शांति का वक्त है। अमृत वेले से ज़्यादा और एकांत कहीं नहीं मिल सकता। इस समय बिल्कुल शांत वातावरण होता है। इस समय दुनिया भर के अभ्यासी सज्जन अपने-अपने आसनों पर बैठ कर सिमरन कर रहे होते हैं और उनकी ओर से जपे जा रहे नाम सिमरन की लहरें पूरे ब्रह्माण्ड

में फैल जाती हैं। आप भी अमृत वेले जिस स्थान पर बैठ कर बाणी पढ़ रहे होते हो, नाम ले रहे होते हो, वहां भी लहरें पहुंच रही होती हैं, जिस कारण मन स्वयं ही जुड़ जाता है अमृत वेले पूरे ब्रह्माण्ड में पूर्ण शांति और खामोशी होती है। इस वक्त को ब्रह्ममुहूर्त भी कहते हैं। इसका बहुत ज़्यादा महातम है। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि जो सूर्योदय से 'डेढ़ पहर' भाव साढ़े चार घंटे पहले उठकर स्नान करके परमेश्वर से जुड़ता है, उसको सवा मन सोना दान करने का लाभ मिलता है। जो सूर्योदय से तीन घंटे पहले भाव 'एक पहर' पहले उठकर जुड़ता है, उसको सवा मन चांदी दान करने का महातम मिलता है। जो आधा पहर भाव सूर्य चढ़ने से डेढ़ घंटा पहले जाग कर जुड़ता है, उसको सवा मन तांबा दान करने का और जो सूर्य चढ़ने के समय जाग कर जुड़ता है, उसको सवा मन दूध दान करने का महातम मिलता है। जो सूर्य चढ़ने के बाद जागे, वह जितना जुड़ेगा उतने ही स्वयं के पापों को धो लेगा। भाव कि अमृत वेले जाग कर स्नान करके जुड़ने का अपना ही एक बहुत बड़ा महातम है।

अमृत वेले के अलावा एकांत आबादी से दूर किसी झील या नदी के किनारे, किसी बाग-बगीचे या सुनसान जंगल, पर्वतों की चोटियों और गुफाओं में भी मिल सकती है। प्राकृतिक दृश्य, पानी का किनारा, पर्वत का दामन, इतने स्थानों पर भी नाम जपना बहुत लाभदायक सिद्ध होता है, परंतु हमारा धर्म गृहस्थ प्रधान है। ऐसे एकांत हम थोड़े वक्त के लिए तो ले सकते हैं, परंतु एक गृहस्थी के लिए यह रोज़ाना तो संभव नहीं कि इतने स्थानों पर जाकर समाधि लीन हो जाए। एक गृहस्थी के लिए यही उत्तम मार्ग है कि वह अपने घर में ही एक ऐसा अलग कमरा रखे जहां भजन-बंदगी की जा सके। इस कमरे में अगर गुरु साहिब का प्रकाश हो सके तो सबसे बढ़िया है और अगर किसी कारण न संभव हो तो चाहे शुद्ध चादर का आसन बिछा कर गुरु साहिब का स्वरूप ही रख सरब लोह के शस्त्र का आसन लगा लो। परंतु एक बात का ध्यान रखो कि इस कमरे में पूजा-पाठ, बंदगी-सिमरन के अलावा दूसरा

कुछ न हो। जब भी सिमरन की कामना हो या एक विशेष निश्चित समय पर उस कमरे में बैठ कर बाणी पढ़ो, सिमरन करो। आप स्वयं यह चीज़ महसूस करोगे कि जब इस तरह एक विशेष कमरे में नाम जपने से आपका कुछ समय व्यतीत हो जाएगा तो फिर उस कमरे में जब आप शामिल होंगे, आपके मन को शांति मिलेगी। दास ने रघुबीर सिंघ का इस बारे में अनुभव पढ़ा है।

इसका ज़िक्र उन्होंने 'बंदगीनामा' पुस्तक में किया है। वे लिखते हैं कि मुझे अपने पूजा के कमरे में एक अदभुत-सी कशिश महसूस होती है। मुझे यह कमरा घर के सभी कमरों से अच्छा और प्यारा लगता है। वह अपना अनुभव लिखते हैं कि मेरी बड़ी मुश्किल और परेशानी इस कमरे में दाखिल होते या फिर कुछ वक्त बैठने के बाद गायब हो जाती है। वह तो यहां तक लिखते हैं कि मैं तो इस कमरे को 'तीर्थ' समझता हूं, जहां रोज़ मेरे मन की मैल उतरती है और मन को आत्मिक रंग चढ़ता है।

पक्की बात है कि कोई बंदगी वाला स्थान हो तो वहां मन ज़्यादा जुड़ता है। पाऊंटा साहिब अगर आप गए हो और शायद वहां दर्शन किए हों। अगर नहीं तो कभी जाओ और अवश्य दर्शन करो। वहां पाऊंटा साहिब में एक स्थान है 'कृपाल शिला'। गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय एक तपीश्वर हुआ है, उसने उस शिला (पत्थर) पर बैठ कर बहुत बंदगी की थी। इतनी ज्यादा बंदगी कि जिस पत्थर पर बैठ कर उसने तपस्या की, उस पत्थर पर उसकी चौंकड़ी और घुटनों के चिन्ह हैं। वहां नीचे जाकर यह एक बहुत बड़ा पत्थर है। उस स्थान पर आप जाकर पांच मिनट भी बैठ जाओ, मन नहीं करेगा उठने का, पापी से पापी मन भी यही कहेगा कि मन नहीं करता उठने का। दास का यह ज़िक्र से भाव है कि जिस स्थान पर जितनी ज्यादा बंदगी की जाए, वहां मन बहुत जुड़ता है, रंग चढ़ता है नाम का। हरिमंदिर साहिब में थड़ा साहिब जाते हो, वहां जो नीचे भोरा साहिब बना है, कभी बैठ कर देखो पांच मिनट, मन को कितनी शांति मिलती है, क्योंकि जहां एकांत है, वहां मन शांत होगा।

दास को एक बार किसी ने प्रश्न किया कि अमृत वेला कितने बजे होता है? अब अगर समय के अनुसार देखें तो यह कहेंगे कि रात्रि के 1-2-3-4 बजे परंतु यहां एक बात याद रखो, अमृत वेले उठने के साथ जुड़ना भी आवश्यक है। मान लो अगर कोई 3-4 बजे अमृत वेले दरबार साहिब गया, परंतु भीतर बैठकर कीर्तन में जुड़ने की बजाए अगर वह अपना कीमती वक्त बाहरी बातें करने में या चाय पीने में गंवा रहा है तो उसका अमृत वेला भी उसके लिए अमृत वेला नहीं बन सका क्योंकि वह अमृत वेले एकांत में नहीं जुड़ा। अमृत वेला तो ही सफल है, अगर एकांत में जुड़ेगा। जो गुरु का लाल दिन में भी एकांत में जुड़ जाए, उसके लिए वह वक्त भी अमृत वेला बन जाता है। एकांत में सुरति शीघ्र शब्द में लवलीन हो जाती है। दास गुरु की कृपा से एकांत में जुड़ने के विषय पर लिख रहा है कि अगर कुछ समय एकांत में गुरु पर लगाओ तो तुम्हारी झोली में बहुत बड़ी प्राप्तियां पड़ेंगी, तुम पर गुरु की बहुत बख्शिशें होंगी, शायद बख्शिश बांटने वाले भी बन जाओ।

ऐसे भी कई शरीर होते हैं, बहुत बड़े प्रधान बने बैठे हैं परंतु एकांत में जुड़ने की कमाई उनकी छोटे पैसे की नहीं। प्रधान बन कर जो कुछ करते हैं, सब लोगों के दिखावे के लिए, अपनी वाह-वाह के लिए। दास को एक बार ऐसा भी एक शरीर मिला, खुली दाढ़ी, सफेद कुर्ता-पजामा डाला हुआ, शक्ल सूरत से, लिबास से बड़ा ज्ञानी लगे। दास को कहता है कि हम वर्ष में चार बार कीर्तन दरबार करवाते हैं। चार गुरुपर्व मनाते हैं। दास ने कहा मुबारक है, गुरु साहिबों के पर्व मनाने बहुत अच्छी बात है, बहुत हिम्मत है तेरी। नगर-नगर में जाकर धन इकट्ठा करना, रागी जत्थों का इन्तज़ाम करना और भी कई तरह के इन्तज़ाम करने सजावट इत्यादि भी करवानी, संगतों की सुविधाओं के लिए कई तरह के इन्तज़ाम करने, भाई बहुत हिम्मत का और प्रशंसा का कार्य है। परंतु एक बात गुरु साहिब को साक्षी मानकर सच बताना क्या तू जिनके पर्व मनाता है और उनके चरणों में अकेला बैठ कर भी जुड़ता है? रोज़ाना नियम में कितना वक्त एकांत में गुरु साहिब

के नाम लगाता है? गुरु प्यारो! वह प्रधान बहुत हैरान होकर दास के मुंह की ओर देखने लगा और कहता है कि अकेले जुड़ना क्या होता है? दास ने कहा अगर तू अकेले बैठकर गुरु के चरणों से नहीं जुड़ता तो तू अभी नर्सरी कक्षा में बैठा है। तेरी भक्ति एक लोक दिखावा है। यह जो वर्ष में बहुत बड़े कीर्तन दरबार मनाते हो, यह सिर्फ अपनी वाह-वाह की खातिर, शोभा की खातिर, बड़ाई की खातिर करते हो। जब अकेले बैठ कर एकांत में कमाई करेगा, गुरु के चरणों से जुड़ेगा, रोज़ एकांत में कुछ समय गुरु के लिए लगाएगा तो तेरे गुरुपर्व मनाने को भी रंग लग जाएगा। नौवें पातशाह गुरु तेग बहादुर जी दीवानों में जाते रहे, समूह में जाते रहे, प्रचार करते रहे, वहां लगभग 26 वर्ष भौंरों में बैठ कर एकांत में कमाइयां भी कीं। अब आप सोचो कि कोई कीर्तनिया या कथा-वाचक स्वयं कमाई न करे, अमृत वेला न बनाए, जप-तप, बंदगी न करे, एकांत में न जुड़े तो लोगों को कथा-कीर्तन द्वारा ऐसा करने के लिए उपदेश करता जाए, फिर तो यह बात बन जाएगी—

अवर उपदेसै आपि न करै॥
आवत जावत जनमै मरै॥ (अंग २६६)

अब कोई कीर्तनिया बाजे पर बैठ कर शब्द पढ़ता जाए—

अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु॥ (अंग २)

या पढ़ता जाए—

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना॥ (अंग ६११)

तो क्या बात बन जाएगी? अगर वह स्वयं कभी अमृत वेले उठकर स्नान करके सिमरन में, नाम में, बड़ाई में जुड़ता हो तो बात बनेगी।

दास का इस विचार से भाव है कि हमारी भक्ति निरा दिखावा न हो, हमारी भक्ति में कुछ ऐसा भी रंग हो जिसको कहते हैं 'छुपा हुआ एकांत'। दीवानों में जाकर कीर्तन करना, कथा-कीर्तन सुनना यह भी भक्ति है, परंतु कुछ समय एकांत में गुरु के नाम लगाना अत्यंत जरूरी है। अपने पिता गुरु तेग बहादुर साहिब जी का कहीं

जीवन पढ़ो। उन्होंने जमीन के नीचे भौंरे बनवाए, उसके पीछे यही कारण था कि वहां दुनिया का शोर नहीं होता। दुनिया के शोर में जुड़ना मुश्किल है। भौंरे बनाने का यह मकसद है कि दुनिया का शोर न हो, एकांत में, शांत वातावरण में निरंकार से जुड़ा जा सके।

बाबा नंद सिंघ जी के कई संगियों ने एकांत ढूंढने के लिए अपने घरों में ही भौंरे बनवाए हैं। दास यह नहीं कहता कि आप भी भौंरे बनवाओ परंतु इतना जरूर यत्न करो कि गुरु साहिब के कमरे में कुछ समय एकांत में गुरु के नाम लगाओ, यह प्रेम की निशानी है। बाबा नंद सिंघ जी का जीवन पढ़ें तो पता लगता है कि वे भी एकांत में जुड़ते थे। बाबा जी ने रात्रिकाल सवा बारह बजे स्नान करना, साढ़े पांच बजे तक एकांत में भीतर भौंरे में जुड़ना। कील को अगर एक चोट लगाए तो हाथ से ही उखड़ जाता है, हाथ से कोई भी निकाल सकता है, परंतु अगर कील को अत्यंत चोटें लग जाए तो कील पक्का जो जाता है, इसलिए दास कुछ और उदाहरणें दे रहा है तांकि हमें ज्ञान हो जाए कि एकांत कितनी बड़ी खुराक है, एकांत में जुड़ना कितना जरूरी है। पढ़ो इतिहास। फरीद की मां ने फरीद को बंदगी करने के लिए 12 वर्ष जंगल में एकांत में भक्ति करने के लिए भेजा था। भक्त ध्रुव को भी उसकी माता ने जंगल में जाकर एकांत में भक्ति करने के लिए कहा था, जब उसने अपनी मां को राज प्राप्त करने का मार्ग पूछा था। हम गुरु साहिबों की, महांपुरुषों की, भक्तों की बराबरी तो नहीं कर सकते परंतु उनका जीवन पढ़कर उससे अपने लिए शिक्षा तो ले सकते हैं, मार्ग तो ले सकते हैं। दास का इतना इशारा है कि कुछ समय एकांत में जुड़ना बहुत जरूरी है, जहां एक आप हो और एक गुरु नानक।

भाई गुरदास जी की बाणी जिसको श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की कुंजी कहा जाता है, उसमें ऐसी ही खुशबू मिलती है—

गुरबाणी तिन्हां गुरसिखा पिछल राती उठि बहंदे।
कुरबाणी तिन्हां गुरसिखां होइ इक मनि गुर जापु जपंदे।

(वार १२, पउड़ी २)

अगर बेणी भक्त का जीवन पढ़ो तो उनके जीवन में भी एकांत

में जुड़ने का रंग था। भाई गुरदास जी की इस बारे पंक्तियां भी हैं—

गुरमुख बेणि भगति करि
जाइ इकांतु बहै लिव लावै।

(वार १०, पउड़ी १४)

पढ़ो बेणी भक्त का जीवन। बेणी भक्त के घर में बहुत गरीबी थी। एक दिन कोई शुभ कर्म ऊपर आ गया। नाम में लीन हुए पूर्ण महांपुरुष की संगत मिल गई। जैसे कि बाणी में भी लिखा है—

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी॥

(अंग २०४)

बेणी ने महांपुरुषों को निवेदन किया कि मेरे घर में बहुत निर्धनता है, कृपा करो, मुझे कोई मार्ग दो। महांपुरुषों ने वचन किया, 'एकांत में बैठ कर परमेश्वर की भक्ति किया कर। वह परमेश्वर सब को रिजक देता है, तुझ पर भी कृपा करेगा।' स्वयं अंदाज़ा लगा लो कि एकांत कितना जरूरी है। महापुरुष यह भी तो कह सकते थे कि भक्ति किया कर परंतु नहीं, उन्होंने एकांत में भक्ति करने के लिए कहा, क्योंकि एकांत में जुड़ना परमेश्वर के समीप होने का, परमेश्वर की प्राप्ति का साधन है। बेणी ने महापुरुषों का वचन कमाया। गुरु की ओर मुख करके, एकांत में बैठकर वाहिगुरु की बंदगी करनी आरंभ कर दी। एकांत में जुड़ने के कारण, एक दिन परमेश्वर ने स्वयं राजा के नौकर का रूप धारण कर उसके घर गाड़ियां भर कर सामान की पहुंचा दीं और एकांत में जुड़े बैठे भगत को प्रत्यक्ष दर्शन भी दिए। उसके सिर पर अपना रहम भरा हाथ रखा और कहा, तेरी तपस्या, तेरी भक्ति सफल हो गई है। इशारा लेना, एकांत में बंदगी करने के कारण माया भी मिल गई और परमेश्वर के प्रत्यक्ष दर्शनों की प्राप्ति भी हो गई।

संत बाबा अतर सिंघ जी मस्तुआने वाले पहले फौज में नौकरी करते थे। फौज की नौकरी के साथ-साथ उनका नेम था अमृत वेले

2 बजे स्नान करके मूलमंत्र का जाप करना। एक बार ऐसा मन जुड़ा कि पता ही न लगा कब दोपहर हो गई। नौकरी में भी सुबह की परेड में शामिल न हो सके। सोचा कि आज जरूर ही नौकरी से जवाब मिल जाएगा या कोई कठोर दंड मिलेगा परंतु जब हाज़िरी के रजिस्टर में अपने हस्ताक्षर देखे तो समझ गए, कलगियों वाले पिता ने स्वयं उनके स्थान पर आकर उनका मान रखा है, अब उसकी ही नौकरी करनी है। फिर क्या था? नौकरी छोड़ कर, हर प्रकार के झंझटों से आज़ाद होकर वहां ही गोदावरी के किनारे एकांत में बंदगी में जुट गए। चार-चार, पांच-पांच दिन वहां एकांत में समाधि में लीन रहना। वहां नदी के किनारे एकांत में बैठ कर सवा-सवा लाख जपुजी साहिब के दो बार पाठ किए और गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रत्यक्ष दर्शनों की प्राप्ति भी हुई।

भक्त रामानंद जी का भी रोज़ का नेम था। अमृत वेले उठकर गंगा पर स्नान करना और एकांत में परमेश्वर के चरणों में लीन होना। साईं मियां मीर जी ने भी जहां जनसमूह में नमाज़ अदा करनी, वहां साथ ही एकांत में भी अल्लाह के सिमरन में जुड़े होने के दौरान अगर किसी ने अपनी मुश्किल के हल के लिए उनका दरवाज़ा खटखटाना तो उसको दरवाज़ा खोल कर कहना—

नेक इंसान! तू मेरा दरवाज़ा खटखटा रहा है और मैं भी किसी का दरवाज़ा खटखटा रहा हूं, रुक कर आना।

यह दास ने गुरु साहिब की कृपा से कुछ भक्तों, महापुरुषों के प्रसंग इसलिए लिखे हैं, जिनको प्राप्तियां हुईं, एकांत में बैठ कर परमेश्वर का नाम जपने के कारण।

इसलिए अगर आप चाहते हो प्राप्ति तो जरूर एकांत में कुछ समय जुटा करो। यहां एक बात याद रखो, जो एकांत में कुछ समय रोज़ नियम से गुरु के नाम लगाए फिर एकांत में जुड़ना उनका आहार बन जाता है, उनको एकांत में जुड़ने की भूख लग जाती है। यहां तक कि किसी कारण उनका एकांत भंग हो जाए तो उनके भीतर बैचेनी आरंभ हो जाती है।

बाबा नंद सिंघ जी का इतिहास पढ़ो। 1000 से भी ज्यादा ऐसे

स्थानों पर उन्होंने रहना पसंद किया है जहां शोर न हो। जहां आजकल नानकसर है, यह भी स्थान पहले बहुत वीरान था। चारों ओर सांपों की बिलें थीं। जमीन कांटों से भरी हुई थीं। यहां भूतों-प्रेतों का वास था। लोग डरते हुए इस स्थान के समीप नहीं आते थे। बाबा जी ने यह देखकर यहां आवास किया था कि यहां हमें पूर्ण तौर पर एकांत मिल सकेगा परंतु एक बात याद रखो, जहां गुड़ पड़ा हो मक्खियां वहां पर पहुंच ही जाती हैं, जहां चश्मा निकल रहा हो, प्यास से व्याकुल इंसान वहां पहुंच ही जाता है अपनी प्यास को शांत करने के लिए, इसलिए जहां कहीं पूर्ण महांपुरुष विराजमान हों, दुखी लोग वहां पहुंच ही जाते हैं। इसी कारण बाबा जी चाहे कितने भी एकांत स्थान पर जाते, कुछ समय बाद उनकी सुगंधि दुनिया को अपनी ओर खींच कर ले ही जाती थी।

एक बात याद रखो, जो सच्चा साधु है, वह अगर मिट्‌टी के ढेर पर भी आसन लगा लेगा, वहां ही स्थान बन जाएगा, डेरा बन जाएगा। जहां कमाई हो, सच्चाई हो, वहां यह साधारण बात है। 'जंगल में मंगल' भरा मेला छोड़ना कोई आसान नहीं परंतु एक पूर्ण महांपुरुष के लिए, सत्यपुरुष के लिए एकांत इतना बड़ा आहार है कि वह सब कुछ छोड़ कर एकांत की खोज में निकल जाते हैं।

रायकोट में एक संत गुरमेल सिंघ जी हुए हैं। एक बार उनके डेरे में कीर्तनिए ने आसा दी वार का गान किया। बहुत आनंद आया। उनकी आवाज़ में बहुत मिठास थी। जिस ढंग से प्रमाण दिए, कीर्तन करने की शैली ऐसी कि बहुत आनंद आया। कीर्तन की समाप्ति के बाद आनंद साहिब शुरु हुआ, देग बांटी। संत गुरमेल सिंघ जी अपने कमरे में आए और आकर अपने आसन पर बैठ गए। कुछ समय बाद लंगर ग्रहण करके वह कीर्तनिया महापुरुष के दर्शन करके वापिस लौटने की इजाजत लेने के लिए आया। जब उसने महांपुरुष को फतह बुलाई तो महांपुरुष जो मुख्य बीच वाला कीर्तनिया था, उसको कहने लगे, 'गुरु नानक साहिब की तुझ पर कृपा है। कीर्तन सुन कर बहुत ही रस आया, बहुत ही आनंद बना, इतनी बात कह कर साथ ही वे अपने स्थान से उठ पड़े और

उसको कहते हैं कि थोड़े समय के लिए यहां हमारे स्थान पर बैठ, हमने कहीं जाना है और जब तक हम तुझे फोन न करें, तूने इस स्थान से नहीं उठना। उसको अपने स्थान पर बिठा कर महांपुरुष स्वयं अपने जोड़े पहनकर डेरे से बाहर निकल गए। कुछ समय बाद उस को पी.सी.ओ. पर जाकर फोन करके कहते हैं कि जहां तू बैठा है, तेरे पीछे एक अलमारी है, उसमें चाबियां हैं। आज से हम सारा डेरा तुझे सौंप रहे हैं, इसको संभालने की जिम्मेदारी आज से तेरी है, क्योंकि तू हमें बहुत अच्छा लगा है, तेरे कीर्तन करने में बहुत रस है, यह डेरा अब तूने संभालना है, लिखित रूप में जो कार्रवाई है, वह हम तुम्हें कुछ समय तक भिजवा देंगे। वह कीर्तनिया पूछने लगा, आप कहां से बोल रहे हो और यह डेरा क्यों छोड़ रहे हो? महापुरुषों ने प्रत्युत्तर दिया कि हमने यह डेरा संगत की दसवंध रूपी माया में से बनवाया था, पर यहां अब आना जाना बहुत हो गया है, जिससे हमारा एकांत खत्म हो गया है, इसलिए हम कहीं और जा रहे हैं एकांत में पर हमने तुम्हें यह नहीं बताना कि हम कहां जा रहे हैं, क्योंकि जब बात फैल जाएगी तो हम जहाँ जाएंगे संगत वहां हमारे पीछे आ जाएगी। जिस मकसद के लिए हम यह डेरा छोड़ रहे हैं, वह फिर पूर्ण नहीं हो सकेगा। नोट करना, हम ऐसी बराबरी नहीं कर सकते परंतु ऐसे शरीर भी हैं एकांत की खुराक के लिए इतना बड़ा त्याग करने वाले।

संत अतर सिंघ जी जिन्होंने 16 लाख प्राणियों को अमृतपान करवा कर कलगियों वाले के जहाज़ में बिठाया, टोलियों में कीर्तन किया करते थे तांकि प्रत्येक की समझ में आ जाए। उन्होंने भी जहां देखना कि लोग ज्यादा आने आरंभ हो गए हैं, वहां से अगले नगर के लिए चल पड़ते।

दास ने बाबा नंद सिंघ जी का एक जिक्र पढ़ा। यह उस समय की बात है जब बाबा जी अभी प्रकट नहीं हुए थे। बाबा जी ने एक बार एक गांव के बाहर छोटी-सी झोंपड़ी बनवा कर भौंरा बनवाया। (बाबा जी पक्का स्थान नहीं बनवाते थे, उन्होंने पूरी जिंदगी पक्की ईंट नहीं लगवाई, कच्चा ही कार्य करते थे) 7-8 दिन ही बीते होंगे

वहां बैठ कर समाधि में लीन हुए कि वहां पास ही चार साधु आकर रहने लग पड़े। बाबा जी ने तीन दिन नहीं काटे। एक दिन दोपहर को जब वे साधु आराम कर रहे थे, बाबा जी चुपचाप वहां से निकल गए और 4–5 मील आगे जाकर एक पेड़ के नीचे डेरा लगा लिया। जब गांव के प्रबंधकों ने देखा कि बाबा जी अपने स्थान में विराजमान नहीं हैं तो उनको ढूंढते-ढूंढते वहां पहुंच गए जहां बाबा जी विराजमान थे। वह बाबा जी को पूछने लगे, क्या हमसे कोई भूल हो गई है, आप गांव छोड़कर यहां आ गए हो? बाबा जी कहते हैं कि वहां 4 साधु रहने के लिए आ गए हैं। अब अगर हम उनके सामने आसन लगाकर लीन होते हैं तो हमारी भक्ति प्रकट होती है। उनके आने से हमारा एकांत समाप्त हो गया था, इसलिए हम वह स्थान छोड़ कर यहां आ गए हैं।

यह है श्रद्धा की आठवीं निशानी। एकांत में जुड़ने की भूख लगनी आरंभ हो जाएगी। यहां एक ध्यान रखना, जो सत्संगत है, वह भी जी भरकर करनी है और अंतिम श्वासों तक करनी है और सत्संगत में बैठ कर अपने एकांत रूपी गुण का आनंद लेना है। मन पर अवश्य दृष्टि डालो कि आपको 24 घंटों में से कुछ समय एकांत में जुड़ने की भूख लगती है कि नहीं। अगर नहीं लगती तो समझ लेना प्रेम की दात, श्रद्धा की दात अभी आपसे दूर है।

संगत की एक बेटी दास को कहती है कि मेरे घर में कुछ मुश्किल चल रही है, आप कुछ समय के लिए मेरे घर आओ। पुराने संगी थे, नज़दीकी थी, घर चले गए। जब जाकर उसकी सास को पूछा, बताइए क्या मुश्किल है? क्या बेटी की ओर से कोई शिकायत है? वह कहने लगी, हमें तो इससे कोई शिकायत नहीं, सारा घर का काम करती है, सभी सदस्यों से प्रेम करती है, मेहमानों की सेवा भी करती है, हम सब इससे बहुत खुश हैं। जब उस बेटी से पूछा, क्या तुम्हें कोई मुश्किल है? वह बेटी कहने लगी, मुझे कार्य करने से कोई शिकायत नहीं, न ही मुझे माया से कोई परेशानी है, न ही घर के सदस्यों के स्वभाव से कोई मुश्किल है, परंतु यहां बहुत बड़ी परेशानी आ रही है कि यहां बहुत मेहमान आते

हैं, मुझे उनकी सेवा करने में मेहमानों की खातिरदारी करने में कोई घबराहट नहीं, परंतु मुश्किल यह है कि ज़्यादातर मेहमान रात्रि के बारह-एक बजे तक बैठे रहते हैं और रात्रि देर तक रसोई का कार्य चलता रहता है, जिस कारण मुझसे प्रातःकाल उठा नहीं जाता। मैं चाहती हूं कि रात्रि 10 बजे तक आराम कर सकूं ताकि मैं अमृत वेले उठकर अपनी आत्मा को एकांत में खुराक दे सकूं। घर में मेहमान आने अच्छी बात है, उनकी सेवा करना, उनको भोजन खिलाना यह भी अच्छी बात है परंतु जहां रोज़ाना यह बात हो और 12-1 बज जाएं तो उस कारण अमृत वेला और उसका एकांत टूटता है तो उसका अंतःकरण दुखी होता है। मेरा उसकी मांग देख कर शीश झुक गया कि घर विनती कर दो रात्रि को आराम करने की रूटीन 2 घंटे पहले हो जाए।

कितनी भूख है अमृत वेले और एकांत की। मन पर नजर डालो कि हमें भी एकांत में जुड़ने की भूख लगती है कि नहीं। जब हमारा एकांत टूटता है तो हमें दुख होता है कि नहीं? अगर नहीं तो अरदास करो गुरु साहिब के चरणों में कि हमारी झोली में एकांत में जुड़ने की अमूल्य दात प्रदान करो, जिस दात के मिले बिना परमेश्वर की प्राप्ति संभव ही नहीं। यह है श्रद्धा की आठवीं निशानी एकांत में 'जुड़ने' की भूख लगना। एक बात याद रखो 'एकांत में रहना और एकांत में जुड़ना' इन दोनों बातों में बहुत अंतर है, ज़मीन आसमान का फर्क है। जिसका कोई नुक्सान हो जाए माया का, या घर-परिवार से कोई तंग हो, अत्यधिक दुख में हो या हर तरफ से निराश हुआ इंसान भी एकांत में रहना चाहता है। किसी मानसिक परेशानी में घिरा हुआ इंसान एकांत चाहता है और वह भी कहता है कि मुझे कोई न बुलाए। वह भी एकांत ढूंढता है। परंतु गुरु प्यारो! 'जुड़ना' लफ़्ज़ पर गौर करना। एकांत में 'जुड़ना' है।

☆☆☆

जो शरधा कर सेंवदे

श्रद्धा की नौवीं निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए:
वह अपने प्यारे के वैराग्य में रहता है।

गुरु पर श्रद्धा, गुरु प्रेम इतनी बड़ी दात है कि बड़े-बड़े ज्योतिषी भी हाथ खड़े कर देते हैं। जो यह कहते हैं कि हम देखकर बता सकते हैं कि यह तेरे कर्म में है, तेरे साथ इस तरह होना है। पर प्रेम करने वाले की, श्रद्धा वाले की, जब लकीरें बदलती हैं, ज्योतिषी भी दंग रह जाते हैं। हाथ खड़े कर देते हैं। जहां कोई गुरु से प्रेम करने वाला हो, वहां हमारा बताया भी गलत हो जाता है। डाक्टर भी हाथ खड़े कर देते हैं कि हमने कहा था, इसने बचना नहीं। इसने श्रद्धा से किसी को मनाया है कि बीमारी ही नहीं रही। बाणी से और गुरु से प्रेम इतनी बड़ी नियामत है, ऐसा प्रेम जो डाक्टरों को भी हैरान कर दे, ज्योतिषियों को भी विस्मित कर दे। हमें अभी हुआ है कि नहीं, इसकी कुछ निशानियां हैं, जिन में से आठ निशानियों की सेवा दास से महाराज ने लिखवा ली हैं। नौवीं निशानी लिखने की गुरु साहिब सेवा लें।

श्रद्धा की नौवीं निशानी है कि श्रद्धा वाला अपने प्यारे के वैराग्य में रहता है।

सभी ध्यान दो, जिंदगी में वैराग्य आया है कि नहीं। बाबा नंद सिंघ जी के वचन हैं— गुरु नानक साहिब 'भक्ति का स्वरूप हुए हैं। गुरु अंगद साहिब हुक्म मानने का स्वरूप हुए हैं। गुरु अमरदास जी सेवा का स्वरूप हुए हैं और गुरु रामदास जी वैराग्य का स्वरूप हुए हैं, जिनका शब्द भी आप पढ़ते हो—

हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा
मै नीरु वहे वहि चलै जीउ॥ (अंग ६४)

श्रद्धा की नौवीं निशानी

नौवीं निशानी श्रद्धा की प्यारे के वैराग्य में रहना। वैराग्य दो तरह का होता है, एक है वियोग का वैराग्य, एक शुक्रिया का वैराग्य। यह दोनों आपकी जिंदगी में हों। यदि अमृत वेला टूट गया है, अन्दर वैराग्य हो, आज वियोग हो गया है, अन्दर वैराग्य में रहना। यदि 2-3 बजे अमृत वेले वैराग्य में जाग गए हो तो शुक्रिया का वैराग्य हो कि मुझ गरीब को सोए हुए को जगा दिया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी पढ़ो। आपको दोनों वैराग्य मिलेंगे। यदि गुरु रामदास को गुरु अमरदास जी ने चंदोए के नीचे तख्त पर बैठा दिया, दुनिया प्रणाम करती है। कितना वैराग्य आ गया शुक्रिया का। क्या कहते हैं–

हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता
गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे॥

(अंग १६७)

मैं तो कीट था, आपने मुझे स्थापित कर दिया है। गुरु के सिक्ख को शुक्रिया में भी वैराग्य आ जाता है। यदि कोई प्राप्ति नहीं हुई, वियोग के वैराग्य में मन कहे कि मेरी बारी कब आएगी।

यदि मिल गया कुछ और शुक्रिया का वैराग्य कि मैं तेरा दिया कैसे लौटाऊं, इस तरह अहम् जन्म नहीं लेता, यदि शुक्रिया का वैराग्य रहे। जालंधर का एक शरीर, तीन लड़कियों के बाद उसके घर लड़का हुआ। दास से टैलीफोन पर बात करे और रोता जाए। मैंने कहा, लड़का हुआ है, खुश हो, तू रो रहा है। कहता है रो नहीं रहा, शुक्रिया निकल रहा है कि गुरु ने मेरी लाज रख ली है। वह कहने लगा, मेरी पत्नी कहती थी कि अलट्रासाऊंड करवा कर चैक करवाना है और मैं कहता था कि चैक नहीं करवाना। यह है शुक्रिया का वैराग्य। आज एक शुक्रिया निकल रहा है कि गुरु ने मेरी लाज रख ली। एक माई हुई है गुरु हरिराय साहिब जी के समय, उसको बड़ा चाव था कि मेरी रसोई का खाना गुरु साहिब जी रसना को लगाएं। हर वक्त वैराग्य में रहना कि मेरी भी कभी बारी आएगी। दो-चार सौ शूरवीर हर वक्त उनके साथ रहते थे। वह माई बहुत

निर्धन थी। कहती है, मैं इतने जनों का खाना नहीं कर सकती। एक दिन बड़ा वैराग्य आया, दो प्रसादे बनाए, ऊपर शक्कर रख ली। रुमाल में बांध लिए। प्यार सच्चा था। अरदास करके निकली थी। उधर से गुरु हरिराय साहिब जी घोड़े पर आ रहे थे। आप हाथ बढ़ाकर कहते हैं माई भूख लगी है। घोड़े से उतरे और हाथ पर ही लेकर खाना खाने लग गए। सेवादार ने विनती की, सच्चे पातशाह! आपकी मर्यादा है कि केवल अपने रसोईए के हाथ का बना खाना ही खाना है। गुरु साहिब जी ने कहा, जहां प्रेम हो, मैं मना कैसे करूँ। सतिगुरु भोजन कर रहे थे और माई सतिगुरु के चरण दबाने लग पड़ी कि मुझ निर्धन की भावना पूरी की और साथ ही साथ कहती जाए, 'आप पापी मैं पतित पावन।' आप पापी मैं पतित पावन।' पास से एक सिक्ख चिल्ला कर कहने लगा, अरी माई! यह क्या कह रही है। गुरु साहिब जी सिक्ख को कहते हैं, हे सिक्ख ! बड़ा आनंद आ रहा था क्योंकि बाहर से चाहे गलत बोल रही थी पर अंतर्मन से भोली है, अच्छी है। गुरु को अंदर से सच्चा अच्छा लगता है।

जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे॥
हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे॥

(अंग ४५०)

यह चाहे लफ़्ज़ गलत भी बोल रही थी, पर शुक्रिया के तौर पर बोल रही थी, शुक्रिया की भक्ति में बोल रही थी। चाहे बाहरी लफ्ज गलत भी थे, पर मुझे बहुत अच्छी लग रही थी। यह है शुक्रिया का वैराग्य। भोजन की भावना पूरी हुई माई की और शुक्रिया में वैराग्य आ गया।

एक है वियोग का वैराग्य। आया है कि नहीं। संत अतर सिंघ जी को वैराग्य आया। कहते हैं, सवा लाख पाठ जपुजी साहिब का, सिर पर हाथ रख कर, सेवा लो गुरु गोबिंद सिंघ जी, पर वियोग दूर कर दो। सिर्फ बातें नहीं, कुछ दिया भी। आपके दिल की बात आप जानते हो या गुरु। निद्रा ने वियोग डाला है कि गरीबी ने,

कि घर के किसी सदस्य ने, कि बहुत अमीरी ने। आओ अरदास करें–

करमहीण धन करै बिनंती कदि नानक आवै वारी॥
सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी॥

(अंग ६५६)

भगत धन्ना जी ने एक पत्थर को ठाकुर समझकर कैसा वैराग्य किया और क्या कहा–

हउ भी मुंह न जुठालसा तूं रुठा मैं क्यों ना सुखावै
रोटी खाइ छाहि मुंह लावे भोला भाउ गोबिंद मिलावे।

नामदेव जी ने वियोग का वैराग्य किया है–

दूधु कटोरै गडवै पानी॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी॥१॥
दूधु पीउ गोबिंदे राइ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ॥
नाही त घर को बापु रिसाइ॥१॥ रहाउ॥
सुोइन कटोरी अंम्रित भरी॥ लै नामै हरि आगै धरी॥ २॥
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै॥ नामे देखि नराइनु हसै॥३॥
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ॥ नामै हरि का दरसनु भइआ॥ ४॥ ३॥

(अंग ११६३-६४)

फरीद का वैराग्य तो सिर से ही पार हो गया, इतना वैराग्य

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु॥
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस॥

(अंग १३८२)

भाई नंद लाल जी ने भी हद ही कर दी। इतना वैराग्य! भाई नंद लाल जी कहते हैं–

बुड्ढा होइआ जोबन खोइआ बैठ उमर दे मंदर।

शरीर को उम्र का मंदिर कहा है, कहते हैं उम्र के मंदिर में मैं बूढ़ा हो गया हूं।

अच्छी रही सोई गुर मेरे जिहड़ी बीती चरनां अंदर।

शेष तो काली रातें हैं। जो समय संगत में व्यतीत होगा वही दरगाही, शेष तो काली रातें। जो समय टी.वी. के आगे व्यतीत करोगे, वह काली रातें, जहां रब नहीं कोई अन्य याद आए। यह भी भाई नंद लाल जी की ही पंक्तियां हैं–

जवानी गई बुढ़ेपा आइआ उमरा लगी किनारे।
जिहड़े बीते नाल तुहाडे सोई भले दिहाड़े।

बुल्ले शाह ने भी वैराग्य किया है। कहते हैं–

मैं कमली नूं लोड़ जगत तमाशे आइआ।

कोई संगत में आता है कि गुरु नानक मुझे तेरी जरूरत है। कई अभी नीचे की अवस्था है, तमाशा है। जिसको प्रेम आ जाए, वैराग्य में रहता है। कश्मीर में रहने वाली माता भागभरी कैसा वैराग्य था कि मैं चोला बना रही हूं, छठे पातशाह स्वयं धारण करें। एक इतना वैराग्य वियोग का कहां ले गया। अन्तिम समय छठे पातशाह ने स्वयं संभाला माता भागभरी का। कितनी ताकत है वैराग्य में। वैराग्य को सुलतान भक्ति कहा है–

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु॥

(अंग १३७६)

सुलतान भक्ति बहुत बड़ी भक्ति है। कोई जानकर आँखों में पानी न लाए। वाकई ही प्यारे के वैराग्य में आएं आंखों में आंसू पता नहीं आपके कितने कर्म धो देता है।

वैराग्य ही आया था, कलगियों वाले के समय भाई सैदे को। हमारे जैसा ही मेहनती था। काम करता था, बेड़ी चलाने का। पहले बहुत पकड़ थी माया की, कृपालुओं की संगत बेड़ी में हुई तो पकड़ निकल गई। कोई पकड़ नहीं अंदर माया की। कोई पैसे दे गया तो भी, नहीं दे गया तो भी कोई बात नहीं। वैराग्य आ गया, मेरे बेड़े में सतिगुरु जी कब बैठेंगे। दिन-रात वैराग्य। वैराग्य ने

आकर्षित किया। सतिगुरु जी को पहुंचना पड़ा बेड़े में। कितनी ताकत है वैराग्य में। गुरु जी कहते हैं भाई दया सिंघ, किराया दे इसको। भाई सैदा कहता है किराया नहीं लेना, सौदा बदलना है। हमारा धंधा एक-सा है। जिनका धंधा एक-सा हो, वह परस्पर कई बार सौदा बदल लेते हैं। (दास का कापियों का काम है, कई अन्य कापियों वालों से प्रेम है, कई बार सौदा बदल लिया जाता है। हमारे पास अंग्रेज़ी की कापी है, खानों वाली नहीं, यह 100 ले लो वह 100 दे दो।) भाई सैदा भी गुरु जी को कहता है, मैंने किराया नहीं लेना, सौदा बदलना है, हमारा धंधा एक-सा है। मैं लोगों को पानी का सागर पार करवाता हूं, आप भवसागर पार करवाते हो धंधा एक-सा है। मैंने आपको पानी का सागर पार करवाया है, आप मुझे भवसागर से पार करवा दो। देख लो वैराग्य में कितनी ताकत है, सच्चे वैराग्य में। सतिगुरु प्रसन्नता में आ गए, कहते हैं, फिर तुझे एक को क्या भवसागर से पार करना है। भाई दया सिंघ, गिनती कर कितने सिंघ हैं? दया सिंघ ने गिनती करके कहा जी 21 सिंघ। सतिगुरु कहते हैं, तूने मेरे 21 सिंघों को पानी का सागर पार करवाया है, मैं तेरी 21 कुलों को तार दूंगा। वैराग्य में इतनी ताकत है। गुरु प्यारो! वैराग्य अवश्य आए हमारी ज़िंदगी में। जरूर ध्यान देना आया है कि नहीं।

संत मीहां सिंघ जी हुए हैं, 17–18 वर्ष की आयु, जब अभी संत पदवी को प्राप्त नहीं थे हुए। बाबा नंद सिंघ जी से संपर्क हुआ। कोई शुभ कर्म आगे आया। संत मीहां सिंघ जी ने बाबा नंद सिंघ जी को विनती की, महापुरुषो ! कृपा करो मुझे गुरु नानक का सिक्ख बना दो। बाबा जी ने कहा, यदि गुरु नानक का सिक्ख बनना है, तो रात को दो बजे उठना पड़ेगा। संत मीहां सिंघ जी ने जब सत्यवचन कहा तो बाबा नंद सिंघ जी ने नेम दिया कि दो बजे उठकर स्नान करके श्री जपु जी साहिब का पाठ करके, इतना समय सिमरन में रहना है युक्ति दी जुड़ने की। पुराना समय था। उस समय सामान्य घड़ी नहीं होती थी। वह लुधियाना से एक अलार्म वाली घड़ी खरीद कर ले गए और अपने गांव अपने घर

जाकर अपनी दादी को और अपनी माता को भी कहा कि मुझे रात दो बजे उठा देना क्योंकि मैंने गुरु नानक का सिक्ख बनना है। अलार्म भी लगाया। पर महंगा सौदा है, अमृत वेले का जागना, ईश्वर की नियति ऐसी हुई कि न दादी की नींद खुली और न ही माता की, अलार्म भी बज कर बंद हो गया, वह भी सुनाई न दिया। जब नींद खुली और घड़ी पर देखा तो सुबह के 6 बज गए थे। बात बहुत दिल को लगी। बहुत दुखी हुए कि पहले ही दिन महापुरुष का वचन नहीं कमाया जा सका। अब ध्यान देना दास जो बात बताना चाहता है कि कोई नेम न बने, कोई अगली सीढ़ी रब के घर की न मिले, अफसोस तो अनेकों को होता है, पर बातों तक अफसोस तो बहुत सारे करते हैं, इस बात का दुख तो अधिकांश शरीर प्रगट करते हैं कि क्या किया जाए, ज़ोर लगाकर थक गए, कई यत्न करते हैं, पर अमृत वेला नहीं बन रहा। ध्यान देना, यह सिर्फ बातों का वैराग्य है, असली वैराग्य, सच्चा वैराग्य कुछ अन्य है। वह है अपने पर कोई सजा लगाना जो संत मीहां सिंघ जी ने किया। संत मीहां सिंघ जी अपनी ओर संकेत करके कहते हैं, हे शरीर! आज तू उठा नहीं अमृत वेले, आज तुझे सजा है, तुझे पूरा दिन आज कुछ खाने को नहीं देना, पर कुदरत की नियति ऐसी कि दूसरी रात फिर किसी की भी दो बजे नींद न खुली। कलियुग ने अपनी चादर डालकर सुला दिया।

आज संत मीहां सिंघ का वैराग्य और बढ़ गया। अंदर सच्ची तड़प थी। सजा और सख्त कर दी। उन्होंने कहा, हे शरीर! आज तुझे पूरा दिन खाने को तो क्या पीने को भी कुछ नहीं देना। देख लो यह सच्ची आशिकी, सच्चा वैराग्य। अब दादी को भी और माता को भी फिक्र हो गई कि पहले खाना छोड़ा, अब दूसरे दिन पानी पीना भी छोड़ दिया और यदि आज भी न उठा गया और पता नहीं लड़का और क्या कर बैठे। उम्र अभी जवानी की थी। दादी ने कहा, मैं आज रात दो बजे तक वाहिगुरु-वाहिगुरु जपती और चरखा कातती रहूँगी। दो बजे का नेम बन गया। ऐसी कृपा हुई कि नेम हमेशा के लिए बना रहा। बहुत बड़ी अवस्था को प्राप्त हुए संत मीहां सिंघ जी।

गुरु भी कृपा करता है जब सच्चा वैराग्य हो। संत अतर सिंघ जी, वियोग का वैराग्य, गोदावरी के किनारे सवा लाख पाठ जपुजी साहिब जी के करने का प्रण लिया। तेरा वियोग है, कलगियों वाले तेरे दर्शन हों। एक किताब है उनकी 'विश्व शांति' उसमें ज़िक्र मिलता है। एक रागी हुए हैं सुध सिंघ, संत अतर सिंघ जी बैठे थे और रागी सुध सिंघ जी चरण दबाने की सेवा कर रहे थे। दबाते-दबाते कहते हैं, बाबा जी ! आप गुस्सा मत करना अंदर एक बात चल रही है, यदि कहो तो मैं पूछ लूं। संत अतर सिंघ जी कहते हैं, पूछ लो। वह कहने लगा, आपने दो बार सवा लाख पाठ किए कि गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन हों क्या दर्शन हुए आपको ? यह बताओ कैसा रूप था ? प्रश्न बहुत बड़ा पूछ लिया, कोई क्या बताए, ऐसा प्रश्न भी कोई हिम्मत वाला ही पूछ सकता है, पर उस चीज़ को कोई क्या बताए।

बुल्ले शाह ने भी लिखा है—

जब इशक निमाज़ जा कीती आ,
सब भुल गए मंदर मसीती आ।
जदों यार ने आण दीदार दिता,
गल्ल कहिणी नहीं जो बीती आ।

उस चीज को कोई क्या बताए। गुरुद्वारा नगीना घाट, वहां महापुरुषों को प्राप्ति हुई, फिर जिम्मेदारी लगी, 16 लाख प्राणियों को अमृतपान करवाया। उसने यह सवाल किया, संत अतर सिंघ जी के चेहरे पर नूर आ गया। सुध सिंघ की दाढ़ी अपने हाथ में लेकर कहते हैं कि कलगियों वाला अब भी तेरे साथ ही है, अब कहां गया है। खालसे का रूप, कलगियों वाला आप है। खालसे की दाढ़ी कलगियों वाले की दाढ़ी है। रंग में आ गए संत अतर सिंघ जी और सारा शब्द पढ़ा —

खालसा मेरो रूप है खास.....

उस समय सुध सिंघ जी ने कहा, जो मेरे भीतर चला, मैं भी नहीं बता सकता जो मेरे साथ बीती। श्रद्धा की नौवीं निशानी प्यारे

के वैराग्य में रहना। जरूर ध्यान देना कि आया वैराग्य हमारी जिंदगी में कि नहीं? यदि नहीं आया तो झोली फैलाओ। जिनको मिली है दात वैराग्य की, वे भी हाथ पर हाथ धर कर मत बैठना। नेम बढ़ा कर अरदास करना, सच्चे पातशाह! मेरा वैराग्य नकली न रहे, करनी का वैराग्य बने।

☆☆☆

हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै
जन नानक के प्रभ समरथे॥

श्रद्धा की दसवीं निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए :

उसको गुरु की समर्था पर विश्वास आ जाता है।

गुरु सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है। कोई ऐसा स्थान नहीं जहां वह मौजूद न हो। कोई ऐसा कार्य नहीं जो वह करने में समर्थ न हो। कोई भी ऐसी घटना या ऐसी बात नहीं जो उसके नियंत्रण से बाहर हो।

कादरे हरि कार गुर गोबिंद सिंघ।

सतिगुरु सम्पूर्ण सृष्टि के कर्ता भी हैं और पालक भी हैं। निःसंदेह वे हमारे माता-पिता हैं, हमेशा से हम सब जीवों का पालन कर रहे हैं, रक्षा कर रहें है, अनेक नियामतें दे रहे हैं। इस बात में भी कोई संदेह नहीं कि इंसान को दुख-सुख उसके अपने किए कर्मानुसार मिलने हैं, मनुष्य जो बोता है। पूर्व जन्मों का कुछ हिसाब इस जन्म में भोगना पड़ता है और इस जन्म में बोया कुछ यहां भोगना पड़ता है और कुछ अगले जन्मों में, इस प्रकार यह एक बात जान लेना कि हमारा गुरु पूर्ण है, सर्वकला समर्थ है, हमारा बोया स्वप्न में कट सकता है। वे हमारे हर प्रकार के बंधन लोक और परलोक के काटने की समर्था रखता है। हमारे हर प्रकार के बुरे कर्मों को मिटाने का, उलटे भाग्य को सीधा करने में समर्थ है।

गुरु-परमेश्वर कृपालु है, दयालु है, निर्वेर है। जैसे सूर्य निकलने पर उसकी धूप की गर्मी, उसकी रोशनी सभी के लिए एक समान होती है, इसी तरह गुरु की कृपा सभी के लिए एक समान होती है। परंतु अगर कोई अपने घर के भीतर जाकर खिड़कियां

दरवाजे बंद कर ले तो सूर्य की धूप, सूर्य की रौशनी होते हुए भी उस तक नहीं पहुंच सकती। ठीक इसी प्रकार जो मनुष्य अपने जीवन में गुरु के प्रति अविश्वास की, अप्रेम की, शक की, संदेह की दीवार खड़ी कर लेते हैं, वे गुरु की कृपा से वंचित रह जाते हैं। हमारे और गुरु के बीच एक बहुत ही सूक्ष्म-सा रिश्ता है, जो कि शक, संदेह, अविश्वास रूपी पत्थर से बंद हो जाता है और हमारी अरदासों, हमारी विनती को गुरु तक पहुंचने नहीं देता, इसलिए एक बात पक्की जान लेना कि अगर हमारी कोई कामना पूर्ण नहीं होती या हमारा कोई दुख दूर नहीं होता तो उसमें गुरु का कोई कसूर नहीं क्योंकि वह तो हमेशा ही पूर्ण है। अगर कसूर है तो हमारी अपनी अज्ञानता का, हमारे अविश्वास का। उसके घर में कोई कमी नहीं है। मांगने वाले याचक को हर 'पर्याप्त दात' मिल सकती है, हर 'जायज़ मांग' पूर्ण हो सकती है परंतु इसके लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हमें अपने गुरु की समर्था पर पूर्ण विश्वास हो। उदाहरण के तौर पर अगर किसी को लाइलाज बीमारी लगी हो, बहुत सारे बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों ने जवाब दे दिया हो और गुरु के आगे अपनी उस बीमारी के इलाज के लिए विनती करते समय उसके मन में यह जगह बनी हो कि उसकी बीमारी लाइलाज है, यह ठीक हो ही नहीं सकती तो फिर याद रखना, उसकी बीमारी को परमेश्वर भी ठीक नहीं कर सकता। जब भी अपने किसी दुख के लिए गुरु के आगे विनती करो, तुम्हारे भीतर यह दृढ़-विश्वास हो कि मेरा गुरु मेरे दुख को काटने में समर्थ है, चाहे वह दुख कितना बड़ा और लाईलाज क्यों न हो। गुरु साहिब के चरणों में अपने दुख की विनती करते समय तुम्हारा गुरु की समर्था पर समुद्र की चट्टान की तरह दृढ़-निश्चय हो।

गुरु अर्जुन देव जी अपने एक शब्द द्वारा हमें गुरु की समर्था के बारे में बता कर हमारे विश्वास को दृढ़ करते हुए बताते हैं कि हमारा गुरु कितना समर्थ है, हमारा अपने गुरु की समर्था पर ऐसा विश्वास बने—

जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न बिआपै॥
जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै॥

(अंग ११४२)

यह बात तो हम सब भलीभांति जानते हैं कि हम किसी से वही चीज मांगते हैं, जिसके पास वह चीज हो भाव जिसके पास हज़ार है, उससे लाख की मांग तो नहीं की जा सकती। परमात्मा के हाथ में सब कुछ है, इसलिए कुछ भी मांगा जा सकता है परंतु उस सर्वकला समर्थ दाता से कोई भी चीज को प्राप्त करने की विनती करने से पहले हमारे भीतर यह पूर्ण विश्वास होना जरूरी है कि वह दाता उस दात को देने के, उस मांग को पूर्ण करने, उस दुख को काटने में पूर्ण समर्थ है। जब तक हमारे भीतर गुरु की समर्था पर विश्वास नहीं तब तक बात नहीं बन सकती। उदाहरण के तौर पर माता सुलखनी पहली बार जब गई और गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के चरणों में विनती की पुत्र-वर के लिए तो सतिगुरु सच्चे पातशाह ने मस्तक की ओर देख कर कह दिया– बेटी तेरे कर्मों में नहीं लिखा, हम कहां से दे दें। खाली रह गई, परन्तु जब किसी ऐसे श्रद्धा वाले गुरसिक्ख से मेल हो गया जिसको गुरु की समर्था पर विश्वास था, उसने माता सुलखनी जी के भीतर भी उस विश्वास का अंश भर दिया और कहा– माता जी, गुरु साहिब समर्थ हैं, उनसे इस ढंग से विनती करो कि सतिगुरु सच्चे पातशाह जी, कृपा करो, यहां भी लिखने वाले आप और वहां भी लिखने वाले आप, कलम आपके हाथ में है करो कृपा। अगर मेरे कर्मों के कारण ऊपर नहीं लिखा गया तो अपने बख्शिश के खाते में से अब लिख दो। आप जी पूरा ही इतिहास जानते हो। बताओ कि फिर माता सुलखनी खाली रही? जब गुरु साहिब ने देखा कि अब किसी श्रद्धा वाले की संगत का सदका गुरु की समर्था पर विश्वास आ गया है, तो अब इसको बख्शिश देनी ही होगी। अब इसको खाली नहीं भेजा जा सकता। 7 पुत्रों की बख्शिश झोली में डाली। माता सुलखनी की साखी हमारे लिए बहुत बड़ी शिक्षा है, एक उदाहरण है, हमारे लिए एक प्रकाश स्तंभ है कि गुरु से

बख्शिश प्राप्त करने के लिए गुरु की समर्था पर विश्वास होना अनिवार्य है।

भाई आदम के घर भी कोई औलाद नहीं थी। उसने कोई पीर-फकीर नहीं छोड़ा था। कई द्वारों पर गया परंतु कहीं से भी खैर नहीं मिली। जब किसी श्रद्धा वाले गुरसिक्ख का मेल हो गया तो उसने कहा कि लगता है आप ने गुरु नानक के घर का दरवाजा नहीं खटखटाया जहां से कोई खाली नहीं जाता। उसने मार्ग दिया और कहा इस वक्त गुरु रामदास जी गुरु नानक की गद्दी के मालिक हैं, जो कि अमृतसर में हैं। उनके दर पर जाकर सेवा, सिमरन करो, बर्तन साफ करो, झाड़ू दो, गुरु साहिब आपकी सेवा सिमरन से खुश होकर स्वयं प्रसन्न होकर तुम्हारी झोली भरेंगे। (यह भी तरीका है गुरु को प्रसन्न करने का) दास जो बातें बताना चाहता है कि भाई आदम की सेवा से प्रसन्न होकर जब गुरु साहिब ने प्रसन्नता में आकर पुत्र का वर दिया तो भाई आदम को तो विश्वास हो गया कि अगर गुरु साहिब ने वचन कर दिया है, पुत्र होगा और जरूर हमारी झोली में खैर पड़ेगी, हमारी मुराद जरूर पूरी होगी, परन्तु आदम की पत्नी के भीतर दरार थी। मन में विश्वास नहीं बना गुरु के वचन पर। सोचती है कि क्या पता पुत्र होगा भी कि नहीं। आगे भी कई पीरों-फकीरों ने धीरज दिया था कि होगा परंतु हमारी झोली खाली की खाली रही है। कुर्बान जाए, गुरु रामदास जी से जिन्होंने आदम की पत्नी के भीतर की अंतरात्मा पढ़ ली और स्वयं आवाज़ देकर दरार भरी, क्योंकि वे जानते थे कि अगर भीतर की दरार रह गई तो फिर बात नहीं बनेगी। (यह हमारे लिए शिक्षाएं हैं) गुरु साहिब कहते हैं कि साधारण तौर पर यह रीत है कि लोग बच्चे के जन्म के बाद उसका नामकरण करते हैं परंतु हमने जो तुझे पुत्र की बख्शिश का वचन दिया है, हम उसका नाम भी पहले ही रखते हैं, उस पुत्र का नाम 'भगतु' रखना, बहुत भक्ति वाला, नाम प्राप्ति वाला होगा और कईयों का उद्धार करेगा। अब भाई आदम की पत्नी की दरार भर गई। भीतर भरोसा हो गया कि अब तो गुरु साहिब ने नाम भी दे दिया है। अब तो अवश्य ही पुत्र होगा।

यह हमारे लिए बहुत बड़ी शिक्षा है। दरार झोली नहीं भरने देती, यह गुरु से दूर ले जाती है। गुरु की समर्था पर विश्वास की बख्शिश मिल जाना यह बहुत बड़ी बख्शिश है। सिक्खी भावना पर खड़ी है। भाग्य भावना को लगते हैं। अगर मन में दरार है तो अमृत भी पानी है और अगर भावना बन जाए तो, तो दास गुरु की कृपा से लिख रहा है, तुम्हारे घर में दरबार साहिब का अमृत पड़ा हो, किसी बीमार को या किसी को कोई दुख-तकलीफ आने पर उसको पिलाते वक्त अगर मन में यह विचार भी बन जाए कि यह तो पानी है, यह कैसे दुख दूर कर सकता है, फिर यह पक्की बात जान लेना कि अगर ऐसी दरार आ गई फिर वह पानी ही रहेगा। अमृत का प्रभाव भी तब ही होगा अगर श्रद्धा है कि अमृत है।

स्वाभाविक दास को गुरु तेग बहादुर जी के समय की एक बात याद आ गई। दास व्यक्त करे- एक बार गुरु साहिब दुनिया का उद्धार करते हंडियाले नगर गए। अभी नगर के बाहर ही खड़े थे कि एक बुजुर्ग पर दृष्टि पड़ी, जो कि बहुत तेज बुखार की स्थिति में बेहोश पलंग पर पड़ा हुआ था। उसके पास ही उसके परिवार के कुछ सदस्य भी खड़े थे। सतिगुरु सच्चे पातशाह दया के सागर ने पूछ लिया कि यह आपके बुजुर्ग जी को क्या हो गया है जो इस प्रकार नगर से बाहर लाकर पलंग पर लिटाया, है, घर में नहीं रखा। पास खड़े शरीर कहने लगे, इस बुजुर्ग को एक भयानक बीमारी ने जकड़ लिया है, जिस कारण गांव वालों ने इसको गांव से बाहर रखने का आदेश दे दिया है तांकि यह बीमारी कहीं किसी दूसरे को न हो जाए, बाकी गांव में न फैल जाए। सतिगुरु की मौज आई, दया आ गई। बुजुर्ग की दयनीय स्थिति देखकर जैसे कहा है बाणी में—

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥........
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै॥

(अंग ११०६)

सतिगुरु की मौज ! उसके पास ही एक दूषित पानी का तालाब था। कहने लगे, इस बुजुर्ग को इस तालाब में स्नान करा दो,

तंदरुस्त हो जाएगा। अब देखो! जो ज़िक्र चल रहा था कि अगर श्रद्धा नहीं है तो अमृत भी पानी, सतिगुरु की यह अदभुत बात सुन कर जो तो श्रद्धाहीन थे, कहने लगे कि डाक्टर ने तो कहा है कि इसको स्नान बिल्कुल नहीं करवाना, फिर ऊपर से पानी भी इतना दूषित, परंतु बीच में कोई श्रद्धा वाला भी खड़ा था, कहने लगा कि यह गुरु नानक पातशाह की गद्दी के नौवें मालिक हैं, बड़े जाहरा पीर हैं, पूर्ण श्रद्धा से यह जैसे कहते हैं, इनका वचन मान लो। आज तो हमारे उत्तम भाग्य हैं जो हमारे गांव में नौवें पातशाह आए हैं। जिनके हुकम में सब कुछ है। वह चाहे तो दूषित पानी को भी हुकम करके दूसरों को स्वस्थ करने वाला औषधि रूप अमृत बना सकते हैं। इतिहास साक्षी है कि उस तन को स्नान कराया तो पूर्णतया शरीर स्वस्थ हो गया। यहां अब सरोवर भी है। गुरु कृपा करे, हमारी भी श्रद्धा यहां उत्पन्न हो, दरार न आए क्योंकि अगर दरार आ जाए फिर दात नहीं मिलती, फिर गुरु की बख्शिश प्राप्त नहीं होती।

एक बात अपने मन में पक्की तरह बसा लो कि अगर आप ने गुरु नानक के चरण पकड़े हैं, फिर आपको कहीं और भटकने की जरूरत नहीं। अगर चाहते हो अपना लोक भी और परलोक भी सुधारना है तो गुरु नानक के बन जाओ। गुरु नानक से दूर कुछ नहीं है, क्योंकि गुरु नानक साहिब का रूप धारण कर स्वयं निरंकार धरती पर आए। अगर आपके मन में कहीं यह भी ख्याल बना हो कि गुरु नानक और है परमात्मा और है तो यह भी दरार है, देखो, कहीं यह विचार भी न बने। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि जिसके अंतःकरण में गुरु के प्रति दरार आ जाए, उस जैसा कंगाल कोई नहीं।

कुछ समय पहले की बात है, 'दास' के पास एक बहन भलाई केंद्र आई, कहने लगी– शरीर स्वस्थ नहीं रहता, कोई नेम दो। दास ने उसको 'सुखों की मणि' सुखमनी साहिब का एक पाठ रोज़ देह आरोग्य के लिए करने को कहा। कोई महीने बाद वह दोबारा आई। दास ने स्वाभाविक पूछ लिया कि अब तुम्हारी सेहत कैसी

है? उस महिला ने जो आगे से जवाब दिया, वह दास लिख रहा है। वह कहने लगी 'जब सुखमनी साहिब का पाठ नहीं करती थी तो मैं कुछ ठीक रहती थी परंतु जब से श्री सुखमनी साहिब का पाठ का नेम आरंभ किया है, मेरी तो तबीयत और ज्यादा खराब रहने लग गई है। मैं तो यही आप से पूछने के लिए आई थी कि सुखमनी साहिब का नेम बंद कर दूं?' इशारा लेना 'यह है दरार'। दास हैरान हो गया कि इतनी बख्शिशों भरी बाणी के प्रति इतनी बड़ी दरार। दास ने कहा– तेरी तबीयत ठीक नहीं, यह दुख है, क्योंकि बाणी में भी जहां 4 बड़े दुखों का वर्णन है, उस में तन के दुख का भी वर्णन आता है–

दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख॥
इकु दुखु सकतवार जमदूत॥
इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ॥
वैद न भोले दारू लाइ॥

(अंग १२५६)

तीसरी पंक्ति में तन के दुख के बारे में लिखा है। दास ने उस महिला को कहा, तेरे तन को दुख है, तेरे लिए यह बहुत बड़ा दुख है (क्योंकि जिसका तन दुखी हो, रोता हो, इस दुख को वही जानता है) परंतु अगर तू दास की दृष्टि से देखे तो तन के दुख से बड़ा दुख यह है जो तेरे भीतर 'सुखमनी साहिब' की बाणी के प्रति दरार आ गई है, वह बाणी जिसमें गुरु अर्जुन साहिब ने दुखी दुनिया के दुखों का निवारण करने के लिए बख्शिश और कितनी कमाई भरी है। दास ने विनती की कि इस महान बाणी के प्रति दरार लाकर पापों की गठरी अपने सिर पर न उठाओ, बाणी कभी भी दुख को नहीं बढ़ाती, यह तो गुरु ही जानता है कि तुम्हारी कितनी तकलीफ बढ़नी थी और गुरु साहिब की बख्शिश से कितना नियंत्रण हुआ है, अपने भीतर से दरार निकाल कर बाणी का नेम न छोड़ो।

दरार का ज़िक्र चल रहा है। दास को पंडित लाल चंद की

बात याद आ गई। उसके मन में भी दरार आ गई थी। गुरु हरिकृष्ण साहिब जी के दर्शन करके कि यह 5-6 वर्ष की अल्पायु का बालक, जिसको सभी सिक्ख संगतें ईश्वर का अवतार कह रही हैं, इसका नाम तो द्वापर के अवतार 'कृष्ण' से भी बड़ा है 'श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब' परंतु क्या यह छोटा-सा बालक गीता के अर्थ कर सकता है। दरार थी मन में। सतिगुरु की आयु देखकर वह दृष्टि नहीं थी मिली—

तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु॥

(अंग १४०६)

इसलिए रहा नहीं गया और दरार रसना पर आ गई, कह दिया, मैं तभी आपको ईश्वर का अवतार मानूंगा अगर गीता के अर्थ करके सुनाओ। अब अगर सतिगुरु अर्थ कर देते तो फिर वह स्वाद नहीं था क्योंकि जो टिप्पणी की थी उसका जवाब उतना ही तो फिर वह स्वाद नहीं। छठे पातशाह भी जब कश्मीर गए थे, इतना ही किसी शरीर को पूछ लिया था कि यहां स्वच्छ पानी कहां से मिलेगा ? उस शरीर ने आगे से आक्षेप कर कहा था कि तुम्हारे सिक्ख तो कहते हैं कि आप ईश्वर का अवतार हो, अगर ऐसा है तो फिर स्वयं ही देखकर ढूंढ लो, ईश्वर से क्या छिपा है। सतिगुरु कहते हैं, नेक इंसान। ढूंढना क्या है, तेरी तसल्ली के लिए यहां ही पानी को बुला लेते हैं। सतिगुरु सच्चे पातशाह ने हाथ में नेजा पकड़ा हुआ था, वह जहां खड़े थे वहां ही धरती में नेजा मारा और उसी वक्त वहां ठंडे मीठे पानी का चश्मा फूट गया, क्योंकि जिस ईश्वर से कुछ नहीं छिपा, उसके सब कुछ आदेश में भी तो है—

भै विचि पवणु वहै सदवाउ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ॥

(अंग ४६४)

श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी की भी मौज आई कि इस पंडित की दरार अच्छी तरह काट कर इसकी पूरी तरह संतुष्टि करवा ही दी जाए। सतिगुरु कहने लगे, 'पंडित जी' हमने अगर अर्थ कर दिए तो हो सकता है फिर भी आपकी श्रद्धा न बने, भीतर दरार

रह जाए। हो सकता है फिर आपके मन में यह आ जाए कि शायद अल्पायु में ही उच्च विद्या पा ली होगी, इसलिए आप अपनी मर्जी का कोई भी इंसान ले आओ, हम उससे अर्थ करवा देंगे। उस पंडित की भी देखो सोच। वह भी एक अनपढ़ छज्जू झीवर, जो कि गूंगा था और मुंह से लारें टपक रही थी, लाकर गुरु साहिब के सामने खड़ा करके कहने लगा, अगर इतने ही समर्थ हो तो फिर इससे अर्थ करवा दो। सतिगुरु सच्चे पातशाह उसकी इतनी हल्की और नीच सोच पर मन ही मन मुस्कुराए परंतु रसना से कुछ नहीं कहा और उस गूंगे झीवर के सिर पर अपने हाथ में पकड़ी हुई छड़ी रखी। छड़ी सिर पर रखने की देर थी कि वह अनपढ़ गूंगा झीवर 14 प्रकार की विद्या का ज्ञाता हो गया। सतिगुरु ने ऐसी दया-दृष्टि की कि उसने गीता के ऐसे भावपूर्ण अर्थ किए जिनको सुनकर पंडित दंग रह गया। (बाबा जी भी वचन करते थे कि माया से किताब खरीदी जा सकती है परंतु ज्ञान मूल्य से नहीं मिलता, यह गुरु की बख्शिश से मिलता है) यह आश्चर्यजनक चमत्कार देखकर पंडित गुरु साहिब के चरणों में गिर गया और कहने लगा, कृपा करके मुझे बख्श दो। मेरे मन में आपकी समर्था के प्रति दरार थी परंतु आपने दया करके मेरी दरार काट दी है, अब मेरी आंखें खुल गई हैं कृपा करो, मुझे भी अपना सिख बना लो।

अनेकों की श्रद्धा यहां तक ही सीमित होती है कि गुरु साहिब ने एक अनपढ़ गूंगे झीवर के सिर पर छड़ी रखकर अपनी बख्शिश से उससे गीता के अर्थ करवा दिए परंतु इससे बड़ी बात है कि हमारी श्रद्धा कहीं यहां न रुक जाए। हमारा गुरु तो इतना समर्थ है कि जिस स्थान पर यह घटना घटित हुई, उस स्थान पर हमेशा के लिए ऐसी बख्शिश कर दी कि आज भी उस स्थान पर जिसका नाम 'गुरुद्वारा पंजोखरा साहिब' है, लाखों-करोड़ों की गणना में लोग अपने बच्चों के लिए विद्या का दान लेते हैं। अंबाला के पास मेन रोडं से 7-8 मील सड़क है, पैदल जाना पड़ता है। आज भी लोग उस सरोवर में स्वयं भी स्नान करते हैं और अपने बच्चों को भी कराते हैं। मंदबुद्धि, सदबुद्धि बनती है, प्रत्यक्ष झोलियां भरती

हैं। आज भी सतिगुरु की निरंतर बख्शिश जारी है। अगर एक बीमार पर कृपा-दृष्टि की तो वह ठीक हो गया। पंजोखरा साहिब गुरुद्वारे के बाहर कहीं कापी पैन लेकर खड़े हो जाओ और संगतों को पूछो कि तुम्हें यहां से क्या मिला है, दास दावे से लिख रहा है, गुरु की कृपा, गुरु की बख्शिश वहां इतनी हो रही है कि रोज़ाना कई किताबें छप जाएंगी। आज भी श्रद्धा भावना वालों के वहां जाकर दुख दूर होते हैं। दास का लिखने से भाव है कि हमारी ऐसी श्रद्धा, विश्वास हो जाए कि गुरु साहिब कहीं गए नहीं, आज भी शब्द रूप में शामिल हैं और प्रत्यक्ष झोलियां भर रहे हैं, बख्शिशें कर रहे हैं। दृष्टि डालो, कहीं हमारे भीतर भी अपने गुरु साहिब के प्रति या बाणी के प्रति दरार तो नहीं। कहीं तुम्हारे मन की भी यह अवस्था तो नहीं बनती कि मैंने सुखमनी साहिब के बहुत पाठ किए परंतु कुछ मिला तो है नहीं। कहीं तुम्हारे मन में भी यह विचार तो नहीं बनते, कहीं तुम्हारे हृदय के भीतर भी कोई यह छुपा हुआ ख्याल तो नहीं बना कि अगर मेरी कोई मांग पूर्ण नहीं हुई, मेरा अमुक दुख नहीं गया, मेरी झोली नहीं भरी, मुझे अमुक सांसारिक या आध्यात्मिक दात प्राप्त नहीं हुई, लगता है मेरा गुरु पूर्ण नहीं। मेरे गुरु में इतनी समर्था नहीं अगर ऐसा है तो दास की विनती है हाथ जोड़ कर कि ऐसी दरारें अपने भीतर से निकाल कर बाहर फैंक दो क्योंकि यह दरारें ही हैं, जो झोली नहीं भरने देतीं। एक बात याद रखो, उसके घर में देर हो सकती है परंतु अंधेर नहीं। जितना गुरु की समर्था पर विश्वास रखोगे उतनी ज्यादा तुम्हें सफलता प्राप्त होगी। सारी बात तुम्हारे अपने विश्वास पर है। शायद किसी की समझ में यह बात न आई हो, दास एक जिक्र करे ताकि बात स्पष्ट हो जाए।

छठे पातशाह के समय, एक पंडित पुराणों की कथा करता था। एक दिन कथा करते जिक्र आया कि जब इंसान मर जाए तो उसको दरगाह में जाते एक वर्ष लगता है। सिक्ख जो दरबार में बैठे कथा सुन रहे हैं, एक सिक्ख उठ कर कहने लगा मैं तो 8 पहर में जा सकता हूं, दूसरा कहने लगा मैं 4 पहर में जा सकता

हूं, तीसरा कहता है मैं 2 पहर में जा सकता हूं, यहां ही बस नहीं हुई, एक सिक्ख और उठा और कहने लगा, मैं अपने गुरु के भरोसे से कहता हूं कि मैं एक पल में दरगाह को पहुंच सकता हूं। हमारा गुरु इतना समर्थ है। सिक्खों की ऐसी बातें सुन कर पंडित ने गुस्से में आकर पोथी बंद कर दी और छठे पातशाह को शिकायत करने लगा कि आपके सिक्ख पुराणों की कथा पर बहस करते हैं। क्या पुराण गलत हैं?

छठे पातशाह ने सोचा कि हो सकता है हमारे समझाने से इसकी संतुष्टि न हो, यह बात इसको कोई पूर्ण गुरसिक्ख ज्यादा ठीक तरह समझा सकेगा, यह सोच कर गुरु जी ने यह मामला अपने पूर्ण सिक्ख भाई गुरदास जी को सौंप दिया (क्योंकि गुरु के प्रेम में रंगे हुए सिक्ख के भीतर अपने गुरु की समर्था पर इतना भरोसा होता है, इतना दृढ़-विश्वास होता है कि वह कई टूटों को भी जोड़ सकता है) भाई गुरदास जी पंडित जी को कहने लगे कि पंडित जी! पुराण भी गलत नहीं हैं, उस में जो ज़िक्र लिखा है कि एक वर्ष लगता है, वह अवश्य लगता है परंतु उन इंसानों को लगता है जो अनेकों का ध्यान करते हैं। उनकी पुरियों में से होकर जाना पड़ता है, परंतु जो एक का ध्यान करते हैं और उसकी समर्था पर उनको जितना विश्वास होता है उतना उनको दरगाह में जाने के लिए समय लगता है। अब जिस सिक्ख को गुरु की समर्था पर थोड़ा विश्वास था उसने 8 पहर कहे, जिसको थोड़ा ज्यादा था, उसने 4 पहर और कुछ और ज्यादा ने 2 पहर का समय कहा। परंतु जिसने यह कहा कि वह एक पल में जा सकता है, उसका हृदय अपने गुरु के प्रेम में भीगा हुआ है। उसको अपने गुरु की समर्था पर पूर्ण विश्वास है, क्योंकि वह अपने गुरु में और परमेश्वर में ज़रा भी भेद नहीं मानता। उसका तो भरोसा यहां टिका है कि मेरा गुरु मेरा परमेश्वर है, सो जैसी भावना वैसा फल।

अब आप स्वयं फैसला कर लो कि आप ने गुरु की समर्था और गुरु पर कैसी भावना रखनी है। अरदास करो कि हमें गुरु की समर्था पर पूर्ण विश्वास और परमेश्वर की भावना की दात

मिले। कहीं पढ़ो इतिहास-सकेत मंडी का राजा जो अपने अधिकारियों के साथ गुरु साहिब के दर्शनों के लिए जा रहा था बहुत श्रद्धा से, शुद्ध मोतियों की थाली हाथ में पकड़ी हुई थी, गुरु साहिब को प्रेम में भेंट करने के लिए, परंतु भीतर दरार आ गई जब रागी सिंघों की रसना से पढ़ी जा रही यह पंक्ति कानों में पड़ गई—

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि॥

(अंग ६३७)

मन में संदेह उत्पन्न हो गया कि अगर भाग्य ही नहीं मिटने तो फिर गुरु की शरण में आने का लाभ ही क्या हुआ। पढ़ो इतिहास, गुरु साहिब ने मन की पट्टी पढ़ ली, पास बुलाया और कहा कि हे राजन! परमेश्वर का लिखा लेख मिट तो नहीं सकता परंतु गुरु की शरण में आने से, गुरु-घर की सेवा करने से, बंदगी करने से, गुरु की प्रसन्नता झोली में पड़ती है और गुरु प्रसन्न होकर सूली का कांटा कर देता है या फिर हमारे बुरे कर्म स्वप्न में ही काट देता है। गुरु साहिब ने उसकी संतुष्टि कराने के लिए उसको तीन दिन अपने पास रखकर सिमरन-बंदगी करने के लिए कहा। एक रात उसको स्वप्न आया कि राज भोगने के बाद उसकी मृत्यु हो गई है और अगला जन्म उसका चंडाल के घर हुआ है, जहां बहुत गरीबी भोगनी पड़ रही है। 12 वर्ष का काल पड़ गया है वृक्ष पर चढ़ कर पीलू खा रहा है। टहनी टूटी वृक्ष की और मृत्यु हो गई। यम लेने आ गए। यह भयानक स्वप्न देखने के बाद जब अगले दिन वह डरा हुआ गुरु साहिब के दर्शनों को गया तो गुरु साहिब जी ने उसको बताया कि जो कुछ तूने रात स्वप्न में देखा है, वह तेरा अगला जन्म होना था। तेरे मन में दरार आ गई थी कि गुरु-घर जाने का क्या लाभ, गुरु को भेंट करने का लाभ ही क्या, गुरु की शरण जाने का लाभ ही क्या, अगर भाग्य ही नहीं मिटना। यह हमने तेरी संतुष्टि के लिए तेरी दरार काटने के लिए और आने वाली पीढ़ी के भीतर विश्वास भरने के लिए यह कौतुक रचा है कि गुरु चाहे तो भाग्य को बदलना बहुत छोटी-सी बात है, वह तो अगले जन्म भी स्वप्न में ही काट सकता है। चौधरी शमीर

की साखी भी इस बात का प्रमाण है, जिसने गुरु गोबिंद जी को कहा था 'मेरी चौरासी काट दो।' सतिगुरु ने उसके कई जन्म उसके स्वप्नों में काट कर उसकी भावना को पूरा किया था।

ध्यान रखने योग्य बात दास व्यक्त करना चाहता है, वह यही कि हमारे भीतर अपने गुरु के प्रति अपने प्यारे के प्रति कभी दरार न आए। यदि हमारे हृदय में भी अपने गुरु, अपने प्यारों के प्रति दरार आई तो हम भी डूब जाएंगे। हमारा पार उतारा नहीं हो सकेगा। छिद्र वाली नाव कभी पार नहीं लग सकती। अगर हम भी चाहते हैं अपनी शरीर रूपी नाव को पार लगाना है तो हमें भी गुरु के प्रति दरार और संदेह रुपी छिद्र बंद करने पड़ेंगे। गुरु कृपा करे, हमारा मन गुरु साहिब के चरणों में ऐसा लीन हो, ऐसा रंगा हो कि किसी तरफ से भी कोई भी गुंजाइश ही न रह जाए दरार की। गुरु रामदास सच्चे पातशाह जी ने भाई आदम की पत्नी की अन्तरात्मा पढ़कर उसके मन की दरार तो भर दी परंतु हम इतने काबिल नहीं, हमारी इतनी कमाई भी नहीं कि गुरु प्रत्यक्ष हमारे सामने प्रकट हो जाएं, इसलिए हमारी यह डयूटी बनती है कि अपना तन, मन, धन सब उस पर अर्पण करके पूर्ण विश्वास और भरोसे से उस समर्थ और दयालु पिता के चरणों में जुड़े रहें, उसके हुक्म में रहें और केवल उसके ही बन कर रहें। हम में से बहुत सारे शरीर ऐसे होंगे जो अपने दुख की गठरी एक के आगे नहीं खोलते। आज एक के साथ अपने दिल की बात करेंगे, सप्ताह, दस दिन बाद जब देखते हैं यहां लाभ नहीं हुआ फिर किसी और के आगे। अगर हमारी ज़िन्दगी में ऐसी कमी है तो समझ लेना कि हमें भी अपने गुरु पिता की समर्था के भरोसे की दात प्राप्त नहीं हुई। ऐसे विश्वास के साथ अपने गुरु-पिता के चरण पकड़ो कि सच्चे पातशाह! दात शीघ्र दे या देर से दे, मैं तेरा हूं, चाहे जैसे मर्जी मुझे रख, मैं तेरा हूं, तेरे अलावा मेरा कोई और है ही नहीं।

एक बात जान लेना, गुरु भी कई बार हमारी भावना को चैक करता है कि यह कहां खड़ा है, इसकी मुझ पर कितनी भावना है, इसकी भावना मुझ पर सिर्फ बातों तक ही सीमित है कि मेरा गुरु

परमेश्वर है या फिर यह भावना इसके रोम-रोम में समाई हुई है कि दुनिया का कोई भी कार्य ऐसा नहीं जो मेरे गुरु की समर्था से बाहर हो या मेरा कोई भी दुख ऐसा नहीं जिसको काटने की मेरे गुरु में समर्था न हो। हमारी अपने गुरु के प्रति ऐसी भावना हो–

तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही॥
तू साहिबु अगमु दइआलु है सभि तुधु धिआही॥

(अंग ३०१-०२)

दास गुरु के भरोसे से, दावे से यह बात लिख रहा है कि जो भी गुरु की समर्था पर भरोसा रखता है, वह कभी खाली नहीं जाता। देर हो सकती है परंतु अंधेर नहीं। हमारी एक ही जिम्मेदारी है कि अगर बख्शिश मिल जाए तो शुक्रिया करें, अगर नहीं मिली, देरी है तो भी रहे अपने गुरु पिता के दायरे में ही, उसके ही बनकर रहें। यह नहीं कि कुछ देर बख्शिश नहीं मिली तो नाव बदल ली, अपने मालिक की नाव में ही रहना है। जब हम अपने गुरु पिता की नाव छोड़ कर किसी दूसरी तरफ कदम बढ़ाते हैं तो हमारे गुरु का ह्रदय भी दुखी होता है। एक बात याद रखो, अगर हमारी कोई मांग पूरी नहीं होती तो इसके पीछे हमारी अपनी ही कमजोरियां होती हैं, क्योंकि हमारा गुरु तो पूर्ण है, हर तरफ से बख्शिशें हैं, हमें चाहिए कि अपनी कमजोरियों को दूर करके गुरु के चरण पकड़ें। अगर कोई मांग पूर्ण नहीं हुई तो कमी स्वयं में देखें। हमारे जपने में कमी हो सकती है, हमारी भावना में कमी हो सकती है, वह तो सर्वकला समर्थ है।

(दास यहां एक बात स्पष्ट कर दे कि कई बार हमारी मांग जायज नहीं होती या कई बार अनजानेपन में हम कोई ऐसी मांग कर रहे होते हैं जो हमारे हित में नहीं होती, जिसको हम तो भला मानते हैं, पर हमारा पिता जानता है कि इस मांग के पूरा होने से हमारा नुक्सान होना है, जैसे कई बार बच्चा नादानी में अग्नि को हाथ लगा रहा होता है परंतु मां बाप उसको ऐसा करने से रोकते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि अग्नि ने उसका नुक्सान करना

है। दास का भाव है कि जो मांग नाजायज़ हो, जिससे हम किसी का बुरा मांग रहे हों या जिसको पूर्ण करने में हमारा कोई नुक्सान या बुरा हो सकता हो, फिर गुरु वह मांग पूरी नहीं करता।)

दास फिर वहां ही आ जाए, जो हमारा विचार चल रहा था कि हमारा गुरु पिता सब कुछ करने की समर्था रखता है। दास यह बात कोई अपनी तरफ से नहीं लिख रहा, बाणी में से भी इस बात की गवाही मिलती है कि जितने भी अवतार हुए हैं, सोलह कला की समर्था रखते थे, जबकि गुरु नानक साहिब अनंत कला लेकर प्रकट हुए–

सोलह कला संपूरन फलिआ ॥ अनत कला होइ ठाकुरु चड़िआ ॥

(अंग १०८१)

गुरु इतिहास में से, हमारे सिक्ख इतिहास में से अनेकों ही ऐसी साखियां मिलती हैं, जिनसे पता लगता है कि हमारा गुरु वास्तव में सर्वकला संपूर्ण है। सभी को तो एकत्र करना नामुमकिन है परंतु दास गुरु की कृपा से कुछ लिखने का प्रयास करेगा तांकि उनको पढ़कर हमें अपने गुरु पिता की समर्था के बारे में पता लग जाए ताकि जो हमारा अपने गुरु पर भरोसा बन जाए और हम इतने बड़े समर्थ पिता को छोड़कर दूसरों के दरवाज़े न खटखटाएं।

प्रेमा कोहड़ी की साखी पढ़कर तो इतना प्रेम आता है गुरु साहिब पर कि हमारा-तुम्हारा गुरु कितना बड़ा है, कितना समर्थ है कि अगर एक कोहड़ी भी उसके दर पर विश्वास रख कर आ गया तो उसने अपनी कृपा-दृष्टि से एक ही दिन में उसके शरीर का कोहड़ भी ठीक कर दिया, मन का कोहड़ भी ठीक कर दिया, अपने गुरसिक्ख की बेटी से उसका आनंद कारज भी कर दिया। केवल यही नहीं, सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह कि इतना समर्थ कि एक कोहड़ी को कईयों को जोड़ने वाला बना दिया। दास के मन में आया कि प्रेमा कोहड़ी की साखी पूर्ण विस्तार से करे तांकि अपने सतिगुरु की समर्था के बारे में पता लग जाए और हम भी उस कोहड़ी की तरह गुरु पर विश्वास कर लें।

यह प्रेमा कोहड़ी गुरु अमरदास जी के समय हुआ है। शरीर पर ऐसा जबरदस्त कोहड़ है कि हर वक्त शरीर से रक्तस्राव होता रहता है। मक्खियां भिनभिनाती हैं। उससे इतनी ज्यादा बदबू आती है कि कोई नज़दीक भी नहीं आता। सच ही कहते हैं सुख में तो सभी साथी बनते हैं परंतु दुख में, मुसीबत में अपने भी साथ छोड़ देते हैं।

जगत मै झूठी देखी प्रीति॥.....
अंति कालि संगि नह कोऊ
इह अचरज है रीति॥१॥ (अंग ५३६)

इस कोहड़ी के घर वालों ने उसकी इस हालत के कारण घर से बाहर निकाल दिया और गली के कोने में बिठा दिया। गांव वालों ने यह देखकर पंचायत बुलाई कि इसके कोहड़ के कारण पूरे गांव में कोहड़ फैल सकता है, इसलिए इस कोहड़ी को गांव से बाहर सड़क के किनारे छोड़ आए। इस कोहड़ी का पता नहीं कितना बुरा कर्म होगा (क्योंकि दुख तो अपने कर्मों के ही होते हैं) हाथ भी कोहड़ से भरे हुए हैं, इतनी दयनीय हालत कि अपने हाथों से अपने मुंह में कुछ डाल भी नहीं सकता। गले में गांव वालों ने 'कलश' डाला हुआ है जिसमें कोई गुजरता राही, उस पर तरस करके कोई रोटी का टुकड़ा या कोई अन्य खाने की वस्तु डाल जाए तो मुंह लगाकर अपने पापी पेट की भूख मिटाता है। बुरे कर्मों के कारण शरीर कोहड़ी हो गया परंतु उस कोहड़ी को कोई अच्छे कर्म के कारण, जिस सड़क के किनारे उसको बिठाया गया, उधर से संगतें टोलियों में गोइंदवाल साहिब को गुरु अमरदास जी के दर्शनों के लिए निकलती हैं। जितनी संगतें उधर से निकलती हैं ढोलकियां, छैनों से गुरु अमरदास जी की प्रशंसा करती और यह पंक्तियां जपती हैं–

निमाणिआं दे माण गुरु अमरदास
निताणिआं दे ताण गुरु अमरदास
निओटियां दी ओट निआसरिआं दा आसरा
निधरिआं दी धिर, निथाविआं दी थां धंन गुरु अमरदास

यह पंक्तियां जब कानों में पड़ती हैं तो मन में यह कोहड़ी सोचता है कि मुझ से बड़ा बेसहारा, बेघर, निमाणा और गरीब दूसरा कौन हो सकता है, जिसको उसके अपने घरवालों ने भी जुल्म किया है, जिस पर उसके सगे-संबंधियों ने भी रहम नहीं किया। यह गुरु अमरदास जी कौन हैं? क्यों न मैं भी उनकी शरण में जाऊँ। इस सोच के आते ही उसने एक दिन दर्शनों के लिए जा रही संगतों से साहस करके पूछ ही लिया कि यह गुरु अमरदास जी कौन हैं और कहां रहते हैं? संगतों ने जब बताया कि गुरु अमरदास जी तीसरे गुरु नानक हैं, गोइंदवाल में विराजमान हैं और दुनिया का उद्धार कर रहे हैं। इतिहास लिखता है कि प्रेमा कोहड़ी अपने मन में पूर्ण श्रद्धा और गुरु साहिब पर विश्वास लेकर रेंगते रेंगते, जैसे-कैसे अपने कोहड़ी शरीर को घसीटता गोइंदवाल साहिब में पहुंच कर गेट के बाहर बैठ गया और साथ अपने मुंह से लफ़्ज़ बोल रहा है–

"गइआ कसोटा लभा शाह"

उसके शरीर की बदबू के कारण, वहां के सेवादार उससे बहुत तंग हो गए और सोचते हैं कि गुरु साहिब से पूछ कर इसको गाड़ी में डालकर कहीं दूर छोड़ आते हैं। जब सेवादारों ने गुरु साहिब को जाकर इस कोहड़ी के बारे में बताया कि सतिगुरु सच्चे पातशाह ! पता नहीं एक कोहड़ी कहां से आकर गेट के बाहर बैठ गया है, जिसके कारण हर तरफ बदबू फैल रही है, वह हर वक्त यह बोल रहा है–

'गइआ कसोटा लभा शाह'

हमें तो समझ नहीं आ रही कि वह क्या कहना चाहता है, अगर आप जी का आदेश हो तो उसको कहीं दूर छोड़ आएं। सतिगुरु सच्चे पातशाह दया के सागर मुस्कुरा कर कहने लगे, ओह नेक इंसानो, वह यह कह रहा है कि मुझे गुरु नानक का घर मिल गया है, अब मेरा कोहड़ दूर हो जाना है। वह गुरु नानक के दर पर विश्वास से आया है और जो भी गुरु नानक के घर प्रतीति व भरोसे से आता है वह खाली नहीं जाता। जाओ और बहुत प्रेम से उसको उठाकर उस 'तलाई' में स्नान करवाकर जिसमें हम रोज़ स्नान करते हैं,

उसको नए वस्त्र पहनाकर हमारे पास लेकर आओ। सेवादार बहुत हैरान। परंतु गुरु साहिब का आदेश मान कर अपने मुंह पर कपड़ा बांधकर और कोहड़ी को उठा कर सतिगुर की तलाई में स्नान कराने के लिए ले गए। देखो! कितना समर्थ पिता, जब गुरु साहिब की तलाई का जल उस कोहड़ी के तन पर पड़ा तो तन का सारा कोहड़ दूर हो गया, तन स्वच्छ हो गया। सेवादार भी बहुत हैरान। अब उन्होंने उसको सतिगुरु के आदेश अनुसार नए सफेद वस्त्र पहनाए, सफेद पगड़ी पहनाई और सतिगुरु के सामने ले गए। जब उस प्रेमा ने जिसका तन अब कोहड़ी नहीं रह गया था, सतिगुरु के पावन दर्शन किए तो तन, मन निहाल हो गया। सतिगुरु की दया-दृष्टि से उसका मन भी कंचन सरीखा हो गया। सतिगुरु प्रेम से कहने लगे, इसका कोहड़ तो दूर हो गया है परंतु फिर भी इसके नाम के साथ कोहड़ी की मोहर लग चुकी है, इसलिए हम इसका नाम 'मुरारी' रख रहे हैं जो कि परमात्मा से संबंधित है तांकि कोई भी इसके नाम के साथ कोहड़ी लफ्ज न लगा सके। वाह मेरे दयालु सतिगुरु! यहां ही बस नहीं, अभी भी प्रसन्न हैं, ऐसी बांह पकड़ी एक कोहड़ी की, ऐसा सहारा बने एक बेसहारे का, संगत में आदेश कर दिया कि कोई सिक्ख उठे और अपनी बेटी का हाथ इस मुरारी को दे, हमने इसका अनंद पढ़वाना है।

इतिहास लिखता है कि 'सीहा उपल खत्री' जिसकी बेटी का नाम 'मथो' था, उसने हाथ जोड़कर यह रिश्ता मंजूर किया। यहां ही बस नहीं, इनका विवाह करवा कर कहा अमुक जगह पर जाकर अपना घर बसाओ और वहां की संगतों को गुरु नानक के घर से जोड़ो। स्वयं भी जुड़ो और दूसरों को भी जोड़ो। कितनी बड़ी कृपा कर दी, कितनी बड़ी और कितने मान और सम्मान वाली जिम्मेदारी सौंप दी। इतिहास लिखता है कि जो 22 मंजिया गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार के लिए चलाई, यह मथो-मुरारी को भी एक मंजी सौंपी। कितना समर्थ! एक कोहड़ी जिसको कोई पसंद नहीं करता, उसको लाखों को जोड़ने वाला बना दिया। संसार में कितना आदर और मान प्रदान कर दिया। जब तक यह संसार है, उसका

नाम सिक्ख इतिहास में अमर कर दिया।

अब आप ही बताओ कि यह साखी पढ़ कर गुरु पर प्रेम आएगा कि नहीं, गुरु पिता पर श्रद्धा बनेगी कि नहीं कि हमारा गुरु कितना समर्थ है कि कोहड़ से बड़ा लाइलाज रोग कौन-सा हो सकता है कि अगर वह उसको ठीक कर सकता है तो क्या वह हमारे रोग नहीं दूर कर सकता? यदि वह एक कोहड़ी की बांह पकड़ सकता है और क्या यदि हम उसके दर पर निमाणे व निताणे बनकर जाएंगे तो क्या वह हमारी बांह नहीं पकड़ेगा? अगर वह एक कोहड़ी के तन का कोहड़ दूर करके उसके भीतर नाम की लहर चला कर उसको दूसरों को जोड़ने वाला बना सकता है तांकि हमारे मन के कोहड़ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, वैर-विरोध को दूर करके हमें नाम का रस नहीं दे सकता? जरूरत है तो केवल और केवल उसका दर संभालने की, पूर्ण विश्वास से उसका बनने की। दास की एक विनती है कि केवल एक मिनट के लिए अपनी आंखों के सामने प्रेमा कोहड़ी की पहली हालत वाला दृश्य लाओ और फिर गुरु साहिब की कृपा के बाद की हालत वाला, दास दावे से लिखता है कि जब ऐसा करोगे तो आप भी अपने गुरु नानक के अलावा कभी सोचोगे भी नहीं किसी और दरवाज़े को खटखटाने के लिए। सोचो ज़रा, एक कोहड़ी दूसरों को जोड़ने वाला बन गया, किसके सदके, केवल और केवल विश्वास के कारण। गुरु के दर पर विश्वास से आया और खुशियां और बख्शिश का पात्र बन गया। हम सभी इस साखी को पढ़ कर गुरु नानक का दामन भरोसे और विश्वास से पकड़ें।

यही नहीं, अगर बिधी चंद का इतिहास पढ़ें, तो उनका पहला जीवन क्या था? परंतु गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने ऐसी बख्शिश की, ऐसी दृष्टि की कि अपनी दया-दृष्टि से कईयों को जोड़ने वाला बना दिया। एक दिन प्रसन्न होकर वचन कर दिया (बिधी चंद छीना-गुरु का सीना) इतिहास लिखता है कि इस बिधी चंद ने हज़ारों सिक्ख मध्यस्थ बनकर बख्शवाए। इतना नजदीक हो गया था गुरु साहिब के।

भाई बहिलो! मज़ारों को पूजने वाला पहले क्या जीवन था—हरे वस्त्र डालने, ढोल बजाने, मीठे पकवान बांटने, मज़ारों को पूजना, ज़िन्दगी में कोई नाम बंदगी नहीं। श्री गुरु अर्जुन साहिब सच्चे पातशाह ने देखो, उसके साथ पिछले किसी जन्म के नाते के कारण उसको स्वयं सिक्खों के द्वारा संदेश भेज कर बुलाया। ऐसी घुंडी डाली, ऐसी बख्शिश की, उसके सिर पर रहम भरा हाथ रखकर उसके भीतर गुरु-घर की सेवा का इतना प्रेम भर दिया कि उसकी सेवा से प्रसन्न होकर एक दिन अपने सीने से लगाकर कहा, 'भाई बहिलो सब तों पहिलो'। कहा भाई बहिलो तू आया तो बाकी सिक्खों से बहुत बाद में पर तुम पर जो बख्शिश हुई है, तुम्हारे भीतर गुरु-घर की सेवा के प्रति इतनी श्रद्धा और प्रेम आ गया है कि उसके कारण तू इतने कम समय में गुरु की दया की बख्शिश का पात्र बन गया है। अब तू दूसरे टूटों को जोड़।

गुरु व निरंकार में कोई अन्तर नहीं। गुरु ही परमेश्वर है। अगर परमेश्वर हर जगह व्यापक है तो इसका भाव है कि गुरु भी हर जगह व्यापक है। अगर परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, हर वक्त हमारे आसपास है तो फिर इसका भाव यह है कि गुरु भी सर्वशक्तिमान है और हर वक्त हमारे आसपास है। वह हमारी हर मुश्किल दूर कर सकता है, हमारे सब कार्य संवार सकता है, दुनिया का कोई भी कार्य ऐसा नहीं जो वह न कर सकता हो।

परंतु एक बात याद रखना गुरु की समर्था से वही लाभ उठा सकता है, जिसके भीतर गुरु की समर्था पर दृढ़-विश्वास हो।

महाराजा रणजीत सिंघ के नाम को कौन नहीं जानता। वह है तो राजा था परंतु था गुरु से अपार प्रेम करने वाला। इतना प्रेम कि जो भी कोई कीमती या सुंदर वस्तु का कहीं से आना तो स्वयं न प्रयोग कर श्री हरिमंदिर साहिब में भेज देना और यह कहना कि सुंदर और कीमती वस्तुएं गुरु के घर में ही शोभा देती हैं। आप बहुत ही धैर्यवान और गुरु की समर्था पर विश्वास रखने वाले थे। उनके धैर्य और विश्वास की एक ऐतिहासिक घटना बहुत ही प्रसिद्ध है। इतिहास लिखता है कि एक बार महाराजा रणजीत सिंघ अपनी

फौजों सहित अटक दरिया के किनारे पहुंचे। अटक दरिया बहुत बहाव वाला था। सेना का जल्दी से जल्दी नदी पार करना बहुत जरूरी था और इतनी जल्दी पुल भी तैयार नहीं हो सकता था। अपनी आंखों के सामने लहरें उठती देखकर दिल दहला नहीं क्योंकि गुरबाणी पर, अपने गुरु की समर्था पर पूर्ण विश्वास था, पंक्ति सामने आ गई—

सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ (अंग ३)

असगाह—कहते हैं समुद्र को। यह पंक्ति सामने आते ही मन और मज़बूत हो गया कि अगर समुद्र हाथ जितना हो सकता है यह तो फिर एक नदी है। पूर्ण विश्वास था महाराजा रणजीत सिंघ के भीतर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर गुरु ग्रंथ साहिब में लिखी बाणी के एक-एक शब्द पर क्योंकि उनका श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को माथा टेकना सिर्फ एक क्रिया नहीं थी, सिर्फ एक दिखावा नहीं था बल्कि हृदय में पूर्ण श्रद्धा और विश्वास था। आप जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को केवल एक पुस्तक या किताब नहीं मानते थे बल्कि गुरु गोबिंद सिंघ जी के आखिरी आदेश के अनुसार ''प्रगट गुरां की देह' मानते थे और इसमें लिखे वचनों को अटल सच्चाई मानते थे। उनका यह विश्वास था कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में जो निरंकार की प्रशंसा और शक्तियों के बारे में लिखा है, वह सच हैं, इसलिए उनका यह अटूट विश्वास था कि अगर गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में यह लिखा है—

नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥

(अंग १४४)

तो यह कोई झूठ नहीं हो सकता। महाराजा रणजीत सिंघ ने केवल बातों का ही विश्वास न किया बल्कि इस पर चल कर दुनिया के लिए एक मिसाल पैदा कर दी। आप अपने घोड़े पर सवार हुए, गुरु साहिब के चरणों पर पूर्ण विश्वास से अरदास करके घोड़े सहित लहराते अटक दरिया में कूद पड़े। उनके विश्वास की, भरोसे की जीत हुई। कुछ ही समय में देखते ही देखते अटक दरिया घोड़ों

की कमर से नीचे तक पहुंच कर महाराजा रणजीत सिंघ जी जैसे धैर्यवान् और भरोसे वाले गुरसिक्ख के पांव चूम रहा था।

बात तो भरोसे की है जहां भरोसा इतना दृढ़ हो फिर परमेश्वर को पहुंचना ही पड़ता है। फिर तो ऐसी आश्चर्य कर देनी वाली घटनाएं हो जाती हैं कि जिनके बारे में कभी सोचा भी नहीं जा सकता कि कभी ऐसा भी हो सकता है।

दास को बाबा नंद सिंघ जी के समय का एक ऐसा ही आश्चर्य कर देने वाला जिक्र याद आ गया। बाबा नंद सिंघ जी जिन्होंने ऐसी प्रेम-भक्ति की कि गुरु ग्रंथ साहिब जी में से प्रत्यक्ष गुरु नानक साहिब के दर्शन प्राप्त किए। घटना उस समय की है जब बाबा जी की सांसारिक आयु अभी छोटी थी और आप जी बढ़ई का काम किया करते थे। काम करते भी बाबा जी का ध्यान गुरु नानक के चरणों में लीन रहता था। काम करते भी मूलमंत्र या गुरमंत्र का जाप जारी रखते थे। ऐसी अवस्था थी–

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि॥
हाथ पाउ करि कामु चीतु निरंजन नालि॥

(अंग १३७५-७६)

एक बार की बात है कि कोई अपने घर में बाबा जी से बढ़ई का कार्य करवा रहा था। शतीर मंगवाए। मापते वक्त गलतफहमी हुई 'शतीर' छोटे आ गए, जिस छत पर फिट करने थे, वह छत बड़ी थी। सब सोच में पड़ गए अब क्या करें। ऐसी आश्चर्यजनक घटना घटी, वह छोटे शतीर ही पूरे आ गए। (आज भी वह शतीर जलालाबाद के समीप गांव है टिंडा वाली वहां मौजूद हैं) ऐसी बातें विश्वास वालों के साथ होती हैं। इसी गांव के लोग एक बार बाबा कुंदन सिंघ जी के पास आकर विनती करने लगे कि इस गांव की छपरी में जहां बाबा जी ने तपस्या की है, कृपा करके वहां सरोवर तैयार करवाओ। बाबा कुंदन सिंघ जी ने अपने सेवादार भाई (बाबा) सुखदेव सिंघ जी की डयूटी लगा दी और कहा कि यहां सरोवर बनाना है और उसे बनाना भी 13 दिन में है। बाबा सुखदेव सिंघ

जी ने स्वयं यह वचन सुनाया। कहते हैं कि छः दिनों में तीनों तरफ से नींव उखाड़ कर पोड़ बना दिए गए, परंतु जब चौथी ओर से नींव उखाड़ना आरंभ किया तो यह कार्य ही न हुआ। जितनी बार नींव को उखाड़ा तो पानी का ऐसा तेज़ बहाव आए कि नींव को ध्वस्त कर दे। 5 दिन इस कार्य में बीत गए, परंतु सफलता नहीं मिली। जिस वक्त सभी तरह के यत्न करके देख लिए, फिर वह पंक्ति याद आई–

जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि॥
छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि॥

(अंग ५१६)

कहते हैं, अब जब देग तैयार करके पूर्ण मर्यादा से पांच प्यारों ने गुरु गोबिंद सिंघ जी के चरणों में पूर्ण भरोसे से अरदास की तो उन्होंने बताया कि उस दिन प्रत्यक्ष कलगीधर पातशाह की शक्ति उपयोग होते देखी। तीन दिन, तीन रातों से जो कार्य नहीं था हो रहा, वह तीन-चार घंटों में ही साकार हो गया और बाबा कुंदन सिंघ जी के हुक्मानुसार सरोवर 13 दिनों से पहले ही तैयार भी हो गया।

दास का एक स्वभाव है कि मैं कभी भी कोई किताब पूरी नहीं पढ़ता, इतना समय नहीं, किताब खोल कर जो पेज़ सामने निकल आए, पढ़ो तो वह अवश्य ही कुछ न कुछ दे जाता है। दास ने रघुबीर सिंघ बीर की लिखी किताब 'सरब रोग का अउखध नाम' में एक गुरु की समर्था और भरोसे वाले का जिक्र पढ़ा, क्योंकि हमारा विषय भी इस समय यही चल रहा है, दास व्यक्त करे। वह अपनी किताब में लिखते हैं कि एक फौजी जिसकी माता बहुत ही विश्वास वाली और गुरबाणी से प्रेम करने वाली गुरमुख महिला थी, वह फौजी प्रथम विश्व युद्ध के समय जितने भी वर्ष युद्धों में भारत से बाहर रहे, उतने ही वर्ष वह महिला अपने पुत्र के सही सलामत घर वापिस आने के लिए गुरु साहिब के चरणों में अरदासें करती रही। सिर्फ अरदासें ही नहीं, साथ ही सारा दिन गुरबाणी पढ़ने, सिमरन करने में गुजारती और साथ ही इस पंक्ति का जाप बहुत

श्रद्धा से करती रहती–

शत्रु अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै॥

(तू प्रसादि सवैये, २४८)

उन्होंने अपनी किताब में लिखा है कि उन्होंने बहुत सारे हमलों में हिस्सा लिया परंतु सतिगुरु ने उनको हमेशा ही सही सलामत रखा और वह कई वर्ष युद्ध में रहने के बाद सही सलामत घर वापिस आए।

यह दास ने गुरु साहिब की कृपा से, इतिहास में से कुछ जिक्र व्यक्त किए हैं तांकि हमें पता लग जाए कि हमारा गुरु कितना बड़ा है, कितना समर्थ है। हमें रौशनी हो जाए कि जिसके हमने चरण पकड़े हैं, वह घर कितना बड़ा है, क्योंकि जब तक ज्ञान न हो कि मेरा मालिक कितना समर्थ है, जब तक पूर्ण भावना नहीं बनती और जब तक भावना अटूट नहीं तब तक कामयाबी नहीं मिल सकती। तब तक बात ठिकाने नहीं लगती। जरा सोचो, भाई लहणा जी के पास क्या था? भाई लहणा जी के पास थी अपने गुरु नानक और अपने मालिक पर पूर्ण भावना। उनका यह विश्वास था कि गुरु नानक के लिए कुछ भी असंभव नहीं, वह सब कुछ से भाव कुछ भी करने के समर्थ हैं।

गुरु नानक साहिब की समर्था की बहुत बड़ी मिसाल है कि जब एक बार संगतों ने कहा, कुछ खिलाओ, बहुत भूख लगी है, तो गुरु नानक ने बार-बार सब को कहा, पेड़ को हिलाओ, उस में से मिठाईयां गिरेंगी, वह संगतों में बांट देना परंतु उनकी भावना नहीं थी, नहीं जानते थे कि गुरु नानक कितनी समर्था के मालिक हैं कि वे चाहे तो सूखे पेड़ से मिठाईयां भी गिरा सकते हैं। वचन मानने की जगह गुरु नानक पर हंसने लगे। कुछ दूसरे मुख्य सिक्खों को कहा तो उन्होंने भी मज़ाक ही बनाया, क्योंकि गुरु नानक की समर्था पर भरोसा नहीं था। परंतु धन्य भाई लहणा जी, जिनको गुरु नानक की समर्था पर अटूट विश्वास था। जब उनको हुक्म किया गया तो उन्होंने झटपट ही चादर बिछाई, पेड़ को

हिलाया। भावना को भाग्य लगे, पेड़ से मिठाईयां गिरीं और संगतों को खिलाई। अब आप स्वयं ही अंदाजा लगा लो कि लहणा जी की गुरु नानक की समर्था पर विश्वास की भावना ने उनको किस पदवी पर पहुंचा दिया। एक दिन गुरु नानक निरंकार का ही रूप हो गए। हम भी अगर गुरु नानक के बने रहेंगे, उस पर विश्वास रखेंगे तो हमें प्रसन्नता और बख्शिशें प्राप्त होंगी। लोक के भी और परलोक के भी सभी सुख हमारी झोली में पड़ेंगे। अगर हम गुरु नानक के दर पर आ गए हैं, फिर हमें किसी दूसरे के दर पर भटकने की ज़रूरत नहीं।

यहां एक बहुत जरूरी ध्यान देने योग्य बात है। इस बात में रती भर भी, किंचित मात्र भी संदेह नहीं कि गुरु नानक का द्वार सबसे बड़ा है। परंतु आप यह अपनी विचारधारा बनाओगे कि गुरु नानक सब कुछ है, मंदिर कुछ नहीं, गिरजाघर कुछ नहीं, मस्जिद कुछ नहीं तो भी आप बहुत भारी गलती पर होंगे। कभी भूल कर भी यह सोच न बना लेना कि बाकी छोटे हैं, बाकी कुछ नहीं, हमारी पढ़ाई नम्रता की है। अपने पिता को जी भरकर बड़ा कहना है, उसकी प्रशंसा में, स्तुति में जुड़ना है, अपनी हर मांग, हर दुख, हर पुकार उसके आगे ही रखनी है, परंतु किसी दूसरे धर्म की निंदा भी नहीं करनी, बुरा भी नहीं कहना। एक बात जान लेना अगर आप दूसरों की निंदा करोगे तो फिर गुरु नानक की भी खुशी तुम्हारी झोली में नहीं पड़ सकेगी।

हमारा भरोसा अपने गुरु नानक पर पर्वत जैसा स्थिर हो। हमारे भीतर यह विश्वास हो कि मेरा गुरु गुरुओं का गुरु है। सर्वकला समर्थ है। हमारी हर पुकार, हमारी हर विनती श्री गुरु नानक, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के चरणों में हो। हमारे हाथ गुरु नानक के दर के अलावा किसी दूसरे का दरवाजा न खटखटाएं। कहीं ऐसा न हो कि कुछ वक्त दुख नहीं गया या कोई बख्शिश नहीं मिली और पहुंच गए किसी दूसरे दरवाजे या पहुंच गए पंडितों के, ज्योतिषों के दर पर। यहां एक बात और जान लेना, पंडित या ज्योतिषी बता सकते हैं कि तुम्हारे कर्मों में क्या लिखा है परंतु

गर्व करो अपने पिता पर, तुम्हारा पिता तो इतना समर्थ है जो कि तुम्हारे कर्म बदलने की भी पूर्ण समर्था रखता है। आप मन बेचो सही उसके आगे, दास गुरु की कृपा से दावे से लिखता है कि वह तुम्हारे बुरे कर्मों को भी मिटा सकता है और जो कर्मों में नहीं लिखा, वह लिख भी सकता है।

यह है श्रद्धा की दसवीं निशानी गुरु की समर्था पर विश्वास। जिसके भीतर अपने गुरु के प्रति श्रद्धा हो, उसको अपने गुरु की समर्था पर पूर्ण भरोसा होता है। उसके ऊपर चाहे कोई बड़े से बड़ा दुख या मुसीबत भी आ जाए, वह कभी नहीं डगमगाता, कभी नहीं घबराता। अगर किसी दुख की आयु ज्यादा लंबी भी हो जाए या कोई बख्शिश काफी समय तक नहीं भी मिले तो भी वह अपने गुरु नानक के दर को छोड़ कर किसी दूसरे के दर पर नहीं भटकता, क्योंकि वह जानता है कि मेरे गुरु के दर पर देर हो सकती है, पर अंधेर नहीं। उसके भीतर यह विश्वास होता है कि अगर मेरी मेरे गुरु से झोली नहीं भरी तो फिर कहीं से भी नहीं भर सकती। बाबा नंद सिंघ जी के भी वचन हैं कि जिसकी गुरु नानक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से पूरी नहीं पड़ी, उसकी कहीं से भी पूरी नहीं पड़ सकती।

एक कोहड़ी जिसके पैर पर कोहड़ था, उसको डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। उनका कहना था कि कोहड़ बहुत बढ़ गया है, तेरा पैर काटना पड़ेगा, परंतु उसके चेहरे पर कोई भय नहीं था, कोई घबराहट नहीं थी। पास ही बैठे किसी डाक्टर ने पूछ लिया तेरा पैर कटने के बारे में कहा है, फिर भी तू खुश है। क्या तुम्हें डर नहीं लगता, कोई दुख नहीं हो रहा? वह गुरमुख जिसको अपने गुरु की समर्था पर पूर्ण विश्वास था, प्रेम में कहने लगा, "अधूरे वाले रोते हैं, पूरे वाले नहीं, मुझे अपने पिता गुरु रामदास जी की बख्शिश पर पूर्ण भरोसा है। उनकी कृपा से, बख्शिश से जिस दुख भंज़नी बेरी के जल से एक कोहड़ी जिसका पूरा शरीर कोहड़ी था, ठीक हो गया था, मेरा तो केवल एक पैर ही कोहड़ी है, उनकी बख्शिश आज भी उस स्थान पर शामिल है और मैं अपने पिता गुरु रामदास जी

के भरोसे से कहता हूं कि वह मेरे पैर का कोहड़ जरूर ठीक करेंगे मुझे पूर्ण विश्वास है इसलिए मुझे कोई घबराहट नहीं।''

अगर किसी गुरु के प्यारे को कोई यह भी कह दे कि तेरे घर औलाद नहीं हो सकती, वह तब भी नहीं डगमगाते। गुरु अर्जुन देव पातशाह द्वारा प्रदान की हुई सुखमनी साहिब का आसरा लेते हैं और अपने सामने भाई आदम, माता सुलखनी जिनके कर्मों में कई जन्मों तक औलाद नहीं लिखी थी, परंतु गुरु साहिब की कृपा से प्राप्ति हुई, उनकी साखियां लाते हैं और अपने गुरु का दामन छोड़ कर धागे-ताबीजों, यंत्रों-मंत्रों, मजारों की पूजा ऐसे उलटे चक्करों में नहीं फंसते।

यह श्रद्धा की दसवीं निशानी गुरु की समर्था पर विश्वास गुरु साहिब ने स्वयं कृपा करके सिर पर अपना दया भरा हाथ रखकर लिखने की सेवा ली है। दास तो नौवीं पास है। दास तो एक अक्षर भी नहीं लिख सकता था। दास यह कोई अहम्‌वश होकर नहीं, बल्कि गुरु के प्रेम में, गुरु के मान में लिख रहा है कि वह सतिगुरु जो गूंगे झीवर के सिर पर अपनी दया की छड़ी रखकर गीता के अर्थ करवा सकता है, यह भी उसे मेरे सतिगुरु प्यारे की कृपा ही है, समर्था ही है जो उसने दास से दया करके लिखवाया है।

जरूर मन पर ध्यान देना कि हमें गुरु पर समर्था की दात प्राप्त हुई है कि नहीं, कहीं हमारे भीतर गुरु के प्रति दरार तो नहीं आती। जरूर करो अरदास, जिंदगी में जितने मर्ज़ी दुख आ जाएं, कोई मांग न पूरी हो, धन की तरफ से गरीब हो जाओ परंतु गुरु के प्रति कभी दरारें न आएं, हम अपने गुरु पिता पर श्रद्धा की ओर से कभी गरीब न हों।

जरूर अरदास करो दास की भी और अपनी भी कि सच्चे पातशाह! कृपा करो हमें यह दृढ़-विश्वास दो कि हमें समर्थ पिता मिला है।

★★★

ना कोई करे न करणै जोगा॥
आपे करहि करावहि सु होइगा॥

श्रद्धा की ग्यारहवीं निशानी

जिसको श्रद्धा की दात मिल जाए:

वह हुक्मी बन जाता है
हुक्म को पहचानने लग पड़ता है।

(मालिक के हुक्म को पहचानने की बात बन जाती है, मालिक के हुक्म को पहचानने लग पड़ता है)

कहने सुनने को 'हुक्म' बहुत ही सरल-सा है। इसका अर्थ है आज्ञा। रज़ा भी हुक्म का ही रूप है, 'भाणा' शब्द भी यही अर्थ रखता है। 'हुक्म, भाणा, रज़ा' के आंतरिक भाव का ध्यानपूर्वक विचार करें तो यह सिद्धांत सामने आता है कि परमात्मा के 'हुक्म' को समझना, उसकी रज़ा में रहना और उसके 'भाणे' को मान लेना। परमात्मा की मर्जी अनुसार जीवन निर्वाह की भावना को सहर्ष स्वीकार करने में ही परम सुख है।

जो कुछ भी संसार में हो रहा है, सब कुछ उस परमपिता परमेश्वर के हुक्मानुसार ही हो रहा है। जिस पर कृपा हो, जिसको उसके हुक्म की समझ आ जाए, वही 'हुक्मी इंसान' बन कर अपनी 'मैं' को छोड़ता है। उसको यह ज्ञान हो जाता है कि हमारे द्वारा करने से कुछ नहीं हो सकता। जो कुछ भी होता है, सब उसके हुक्म में है, हमारे हाथ में कुछ भी नहीं।

कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ॥

(अंग ७३६)

श्रद्धा की ग्यारहवीं निशानी

आपने शायद कभी नोट किया होगा, हम कई बार किसी अन्य दिशा चलने लगते हैं परंतु कुछ ऐसा हो जाता है कि हम उधर चलने की अपेक्षा दूसरी ओर चलने लग पड़ते हैं। हमारे साथ कई बार ऐसा होता है हम तैयार तो कहीं ओर जाने के लिए होते हैं परंतु जब दरवाज़ा बंद करके निकलने लगते हैं, तो कोई आ जाता है और हमें रुकना पड़ता है या फिर उसके साथ किसी दूसरी तरफ जाना पड़ जाता है।

हमें और पूरे संसार को, पूरे ब्रह्माण्ड को चलाने वाला परमेश्वर है। उसके हुक्म में ही मनुष्य, जीव-जंतु सब पैदा होते हैं, मरते हैं। उसके हुक्म में ही हम दुख-सुख भोगते हैं। यह दिन-रात, गर्मी-सर्दी, चांद-सूर्य, ऋतुएं, तारीखें सब कुछ उसके हुक्म की खेल है। यहां तक कि हमारे साथ जो कुछ भी रोज़ होता है, सब उसके हुक्म में ही, जैसे कि बाणी में कहा है–

जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥
जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥

(अंग ५२३)

वही कुछ होता है जो मालिक की इच्छा होती है, चाहे हम अपनी कितनी भी समझदारी प्रयोग करें, उपाय कर लें। हर कोई अपना भला सोचता है, अपनी खुशियों के लिए अनेक उपाय करता है, परंतु होता वही है जो उस मालिक को मंजूर होता है। यह 'हुक्म की खेल' है ही ऐसी कि जो उसको भाता है, अच्छा लगता है, वही करता है। एक बात याद रखो, वह जो भी करता है, भला ही करता है। यह हमारे भ्रम होते हैं कि जब कोई हम पर दुख आता है या हमारी इच्छानुसार नहीं होता तो हम यह सोचते हैं कि यह परमात्मा ने अच्छा नहीं किया, हमारे साथ बहुत बुरा हुआ है, जबकि बाणी कहती है–

बुरा नही सभु भला ही है (अंग १३०२)

इंसान सोचता है कि मेरे साथ बुरा हुआ है, मैं हार गया हूं पर सतिगुरु सच्चे पातशाह हार को भी जीत कहते हैं। वह जो कुछ

भी कर-करा रहा है, उसको भला मानने में ही हमारी भलाई है, क्योंकि वह दयालु है, कृपालु है, हमारा माता-पिता है। वह जो भी करता है, भला करता है। जो हमारे साथ दुख रूप में होता है, वह हमारी भलाई के लिए हो सकता है और जो हमें अच्छा लगता है, वह दुख रूप हो सकता है। उसके किए को बुरा नहीं बल्कि सहर्ष मानें। जो कुछ भी होता है, उसके हुक्म में होता है। हुक्म कुछ तो हमारे पिछले कर्मों की गति से होता है, कुछ उसके अपने रंग होते हैं, जिनकी हमें कोई समझ नहीं, उसका हुक्म सदैव भला होता है। हम उसको समझ नहीं सकते, हमारी समझ से दूर की बात होती है। वह हमारा मित्र है, हमारा माता-पिता की तरह पालन-पोषण करता है, सिर्फ आज्ञाकारी बच्चों को ही नहीं बल्कि एहसान-फरामोशों को भी पालता है। वह ईर्ष्या-द्वेष से रहित है। गुस्से, गिले-शिकवे शिकायत करना भी जायज़ नहीं। उस मालिक की लीला बड़ी अपरम्पार है, हम उसको पहचान नहीं सकते। जितना हमारे बुरे-भले का ख्याल उसको है और किसी को नहीं, परंतु हम इस बात को नहीं समझ पाते।

जो हुक्म की खेल है, इसमें दो चीजें हैं। एक तो कर्मों की खेल होती है, एक बार कुछ देने के लिए, हमारे भले के लिए लीला करता है। जहां कर्मों की खेल है, वहां पर अरदास करें कि सतिगुरु बख्शिश करो, रहम करो परंतु अगर हमें कुछ देने के लिए लीला करे, नियम ऊपर नीचे करे, अरदास करो, सतिगुरु ! कृपा कर हुक्म को पहचानने का अंश हमारी झोली में डाल। कृपा कर, सहज स्वभाव जो कुछ स्वयं कर रहा है, हम उसको पहचान सकें। साथ ही यह अरदास अवश्य किया करो, सतिगुरु ! कृपा करो परीक्षा में मत डालना। जो तेरी लीला है हम उसमें ठीक रह सकें, प्रसन्नता से उसको स्वीकार कर सकें, उसको पहचान सकें, यह समझें कि तेरे किए में जरूर हमारा कोई भला छिपा हुआ है।

दास का एक मित्र था, उसने **Electrician** की शिक्षा के पेपर दिए पर कुदरत का कर्म, परमात्मा की इच्छा, फेल हो गया। पहले तो उसके मन में आया कि मैंने इतने पाठ भी किए, अरदासें भी

की परंतु मैं फिर भी फेल हो गया। दुख तो था फिर भी उसने गुरु का और बाणी का साथ नहीं छोड़ा। (यह एक बहुत बड़ी और समझने वाली बात है, साधारण तौर पर इंसान पर जब बाणी पढ़ने के बाद या अरदास करने के बाद दुख की घड़ी आ जाती है तो उसका निश्चय टूट जाता है। वह बाणी का, गुरु का साथ छोड़ देता है। यह हमारी बहुत बड़ी भूल होती है, सुख आए, दुख आए, परमात्मा का साथ कभी नहीं छोड़ना।)

जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे॥

(अंग २०६)

कुछ समय बाद उसने घर के सदस्यों से सलाह की कि अगर **Electrician** बनने की सफलता नहीं मिली, तो क्या पता मेरे गुरु पिता को मेरे लिए यह लाइन न अच्छी लगी हो। वह मुझे किसी अन्य रास्ते में डालना चाहता हो। यह विचार आने पर उसने अपना रास्ता बदल लिया। अब उसने जज के पद की पढ़ाई आरंभ कर दी। आज वह गुरमुख प्यारा बहुत बड़ा जज का ओहदा प्राप्त कर चुका है। उस शरीर ने स्वयं दास को वचन सुनाया कि सच में हमारा पिता बहुत ही बेअंत है। हम उसकी लीला को समझ नहीं सकते। वह जो भी करता है, हमारे भले के लिए ही करता है। अगर उस समय मैं बिजली के विभाग की पढ़ाई में से पास हो गया होता तो मैंने एक साधारण-सा बिजली का कर्मचारी बना होना था। अगर मैं फेल न होता तो इस ओर चलना ही नहीं था। फेल होने के कारण अपना स्थान बदला और आज मैं जज की कुर्सी पर बैठा हूं। आज मेरा सब तरफ मान है, सम्मान है, मेरा हुक्म चलता है। दास का यह उदाहरण देने से भाव है कि उसकी कौन-सी लीला में क्या छिपा है, कोई क्या जाने। गुरु कृपा करे, जो कुछ हो रहा है, उसमें उसके हुक्म को पहचानने की बख्शिश मिल जाए, पर्दा न पड़े।

संगत का ही एक प्रेमी है, उसकी लड़की का रिश्ता हुआ। विवाह को केवल 10 दिन रह गए थे कि उनको कहीं से लड़के वालों के बारे में कुछ बातें पता लगी कि बहुत लालची लोग हैं, लड़का

शराब भी बहुत पीता है। इस प्रकार की कुछ अन्य भी, जिस कारण उन्होंने अपनी बेटी का रिश्ता वहां से तोड़ दिया। जब वह दास से मिला, बहुत ही उदास। कहने लगा, मन बहुत ही खराब हो गया है। 10 दिन विवाह को रह गए थे और रिश्ता तोड़ना पड़ा। दास ने विनती की कि हुक्म पहचानो। शायद हुक्म पहचानो तो यह सोच बन जाए कि गुरु साहिब ने कृपा की जो लड़के वालों की पोल पहले ही खुल गई। उनकी सच्चाई पहले ही सामने आ गई, नहीं तो ऐसे घर में अगर बेटी विवाह कर चली जाती तो उसकी पूरी जिंदगी बर्बाद हो जानी थी। भाव है तो थोड़ा मुश्किल परंतु हुक्म पहचानने की दात मिल जाए तो शिकायत शुक्रिया बन सकती है।

एक महिला हिंदू धर्म की महांपुरुष हैं। गुरमत के नाते उनसे मेल है, कोई रिश्तेदारी नहीं। बहुत रंगी हुई आत्मा है, बहुत कृपा है। जब कथा करते हैं 50,000 के करीब शरीर उनके वचनों को ग्रहण करने के लिए दीवान में बैठा होता है। एक बार उनसे मेल हुआ तो उन्होंने वचन सुनाया कि जो मेरे 'गुरु जी' हैं, इतने परमेश्वर के प्रेम रंग में लीन हैं कि बड़े से बड़ा दुख भी उनको महसूस नहीं होता, कोई दुख की घड़ी भी बन जाए, उसमें से भी कोई न कोई परमेश्वर का गुण ढूंढ कर उसके प्रेम में मग्न रहते हैं।

हमारे सिक्खों के लिए गुरु गोबिंद सिंघ जी के पवित्र हुक्म अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ही गुरु हैं, किसी देहधारी को गुरु धारण करने का हुक्म नहीं, परंतु हिंदू धर्म में देहधारी को, इंसान को गुरु धारण करते हैं। उन्होंने वचन सुनाया। कहते हैं कि जिनको मैंने अपना गुरु धारण किया है, वह भी महिला है। 18 वर्ष बीत गए थे, उनके दर्शन करने नहीं गई थी। एक दिन बैठे-बैठे मन में बहुत तड़प उठी उनके दर्शनों की। जब दर्शन करने उनके स्थान पर गई तो देखा कि उनकी तबीयत बहुत खराब थी। आयु ज्यादा हो गई थी, पलंग पर लेटे हुए थे। उनसे प्रेम करने वाले जो वहां थे, उनसे ही पता चला कि उनकी स्थिति इतनी बिगड़ी हुई है कि मल-मूत्र भी पलंग पर लेट कर होता है, बिल्कुल भी नहीं उठ सकते। यह सब देख सुनकर जब मैंने उनको कहा कि आप इतना

कष्ट सहन कर रहे हो, आपकी तो बहुत बुरी स्थिति हो गई है, आप तो मल-मूत्र भी पलंग पर ही कर रहे हो। बहुत मुश्किल है। उन्होंने बताया कि मेरे गुरु जी ने जो उत्तर दिया, मैं वह सुन कर दंग हो गई। अपने गुरु की इतनी ऊंची अवस्था और सोच देख कर शीश झुक गया। उन्होंने कहा—मुझे तो कोई कष्ट नहीं, कोई मुश्किल नहीं हो रही, कौन कहता है मेरी स्थिति बुरी है बल्कि मैं तो बहुत खुश हूं कि मेरे मालिक ने, परमेश्वर ने मुझे फिर से छोटा-सा बच्चा बना दिया है, मैं तो एक बार फिर से अपना बचपन जी रही हूं, अपनी बाल्यावस्था का आनंद ले रही हूं। जैसे छोटा बच्चा बिस्तर पर लेटा हुआ ही मल-मूत्र करता है, उसको कोई चिंता नहीं होती, उसकी मां, दादी, बड़े-बुजुर्ग स्वयं ही उसको संभालते हैं, उसकी हर तरह की चिंता रखते हैं, ठीक उस प्रकार ही मुझे भी संगत के शरीर, मेरे प्यारे मुझे संभाल रहे हैं, मेरी हर तरह की चिंता कर रहे हैं। ध्यान देना— दास जो बात कह रहा है कि जो हुक्म के सिद्धांत को समझते हैं, दुख आने पर भी सहज में रहते हैं, उस दुख में भी मालिक का, परमेश्वर का कोई न कोई गुण ही देखते हैं।

दास एक और जिक्र व्यक्त करे तांकि अच्छी तरह समझ में आ जाए। अमृतसर के दो शरीरों का फिरोज़पुर तबादला हो गया। एक कृषि के कार्यालय में था और दूसरा बैंक में। एक से जब मेल हुआ तो कहता है कि बहुत दुखी हूँ। अच्छा भला पहले अमृतसर था, फिरोज़पुर तबादला हो जाने के कारण बहुत मुश्किल बन गई है। रोज़ाना आने-जाने से बहुत दिमाग खराब होता है, बहुत समय खराब होता है। अचानक कुछ दिन बाद दूसरे शरीर से मिलाप हुआ। दास ने सोचा यह भी शिकायत करेगा कि बाहर तबादला हो गया है पहले आराम था अब बहुत मुश्किल है, परंतु उसकी बात सुनकर दास को बहुत प्रसन्नता हुई। वह कहने लगा, जब से फिरोज़पुर तबादला हो गया है, आनंद बन गया है। मैं तो बहुत प्रसन्न हूं। दो घंटे वहां जाने में लगते हैं और दो घंटे वापिस अमृतसर आने में, मेरा तो कितना ही नितनेम बढ़ गया है। दास

ने हैरान होकर पूछा कि कैसे? घर बैठ कर भी तो उतना समय नेम किया ही जा सकता है। फिर यात्रा के दौरान ज्यादा आनंद की बात कैसे बन गई? वह कहने लगा, यात्रा के दौरान न किसी मिलने वाले ने आना है। न बच्चों ने तंग करना है, न कोई पत्नी ने कार्य कहना है। न किसी ने पाठ करते वक्त बुलाना है। जब बस चलती है बहुत आराम से, अपनी सीट पर गुटका साहिब लेकर बैठ जाता हूं और गुरु के चरणों में ध्यान जोड़ कर आराम से टिक कर पाठ करता रहता हूं, कोई चिंता नहीं होती। अब दोनों उदाहरणें देख कर समझ लो कि एक परमात्मा के हुक्म को दोष दे रहा है, दुखी है और दूसरे ने उस हुक्म में खुशी ढूंढ ली है।

जो बच्चे पिता की आज्ञा में रहें, पिता से प्रेम करें, उनको पिता की खुशी, पिता का प्रेम प्राप्त होता है। अगर हम उसके आज्ञाकारी बन कर रहेंगे, फिर हमें उसके घर से खुशियां और बख्शिशें अवश्य प्राप्त होंगी। परमेश्वर के हुक्म को मीठा मान कर मानना एक कुंजी है जो उसके दरबार के दरवाजे खुलने में सहायक होता है।

हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥
खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥
ता दरगह पैधा जाइसी ॥ (अंग ४७१)

किसी की भी खुशी प्राप्त करने के लिए उसके हुक्मानुसार चलना जरूरी होता है। एक नौकर अपने मालिक की आज्ञा में रहकर, एक विद्यार्थी अपने अध्यापक की आज्ञा में रहकर, औलाद अपने माता-पिता की आज्ञा में रहकर, उनका दिल जीत कर, उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार अगर हम चाहते हैं दीन-दुनिया के मालिक की प्रसन्नता प्राप्त करना, जगत-पिता का प्रेम प्राप्त करना, उसका दिल जीतना तो उसके लिए यह बहुत जरूरी है कि उस परमपिता के हुक्म में चलें।

साधारण इंसान परमात्मा का आधा हुक्म मानता है, आधा नहीं, भाव कि उसको परमेश्वर द्वारा दिए हुए सुख तो कबूल हैं परंतु

दुख नहीं। हर कोई सुख चाहता है परंतु फिर भी दुख आ ही जाते हैं। जो गुरमुख प्यारे गुरु की कृपा से दुखों को भी परमात्मा का हुक्म मान कर खुशी-खुशी कबूल करते हैं, क्योंकि उनका अपने मालिक के प्रति यह विचार दृढ़ होता है कि वह हमारा मित्र, वह कभी भी हमारा बुरा नहीं कर सकता। अगर उसने कोई दुख भेजा भी है तो भी उसके पीछे अवश्य ही कोई हमारी ही भलाई छुपी हुई है या फिर यह कि सच्चा पिता वाहिगुरु इस तरह करके जरूर ही हमारा कोई पिछला कर्ज उतार रहा है। उसकी रज़ा में चलना है तो बहुत ही मुश्किल, पर जिसको पूरा गुरु मिल जाए और वह स्वयं प्रसन्न होकर जिस पर कृपा कर दे फिर उसका मन इतना बलवान हो जाता है कि उसको दुख महसूस नहीं होता, दुख भी सुख दिखने लगता है। जिस पर मालिक आप कृपा करे उसको ही अपने हुक्म में चलाता है और संसार-समुद्र से पार कर देता है।

हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ॥
हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होई॥

(अंग ५१०)

एक बार भाई लहना जी ने गुरु नानक साहिब से पूछा था, सच्चे पातशाह! परमेश्वर की प्राप्ति कैसे हो, झूठ की दीवार कैसे टूटे-

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि॥ (अंग १)

गुरु नानक साहिब कहने लगे, हे पुरुष! जो गुरु के हुक्म में चलता है, गुरु की रज़ा में आ जाता है, उसकी झूठ की दीवार अथवा अज्ञानता का अंधकार दूर हो जाता है।

इसके विपरीत जो हुक्म को नहीं मानते, वे हर वक्त रोते रहते हैं, चिंता में रहते हैं। है तो सब कुछ उस परमेश्वर के हुक्म में, सब में वही निवास करता है। होना तो वही कुछ है जो परमेश्वर को मंजूर हो, उसको भाता हो, मनुष्य के चाहने या ना चाहने से कोई फर्क नहीं पड़ सकता। मनुष्य ने तो अब यह देखना है कि चाहे तो वह परमेश्वर की रज़ा में रहकर अपना जीवन सफल कर

ले और चाहे तो उसके हुक्म पर किन्तु परन्तु करके अपने मन को दुखी कर ले। उसके हुक्म को बदल तो कोई नहीं सकता। बड़े-बड़े बादशाह, धनवान, बलवान सब को उसके हुक्मानुसार चलना ही पड़ता है। इसलिए समझदारी इसी में है कि मनुष्य उस कार्य को अच्छा, भला मान ले जो उसको भाता है। श्री गुरु अंगद साहिब जो स्वयं भी हुक्म मानने का रूप हुए हैं, यही उपदेश करते हैं कि एक सच्चे जिज्ञासु के लिए जो एक परमेश्वर का प्रेम पाना चाहता है, उसके लिए यह जरूरी है कि वह अपने अहंकार को छोड़ कर परमेश्वर की रज़ा में रह कर चले।

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ॥
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा॥

(अंग ८३)

परमेश्वर की रज़ा में रहना, भाणे को मीठा मानना, यह शिखर की अवस्था है। रज़ा की अवस्था उस गुरमुख पर आती है जिसकी आत्मिक कमाई पूर्णता पर पहुंच जाए। जैसे एम.ए. की डिग्री सांसारिक विश्वविद्यालयों में अंतिम कक्षा के विद्यार्थियों को मिलती है, वैसे ही रज़ा की अवस्था की डिग्री उन आत्मिक विद्यार्थियों को मिलती है जिनकी नीचे की विद्या संपूर्ण हो चुकी हो। चौथी-पांचवी के विद्यार्थियों की समझ में एम.ए. की शिक्षा नहीं आ सकती; वैसे ही आत्मिक अवस्था की निम्न अवस्थाओं पर चलने वाले की समझ में रज़ा की पढ़ाई नहीं आ सकती। साधारण गुरसिक्ख अगर स्वयं को रज़ा की अवस्था के योग्य न समझे तो उनको निराश नहीं होना चाहिए। यह रज़ा में चलने की अवस्था बहुत धीरे-धीरे पैदा होती है, इसके लिए हरेक को स्वयं को रज़ा की अवस्था का पात्र नहीं समझना चाहिए। यहां दास एक बात स्पष्ट कर दे हम में से कई शरीर जब किसी मुसीबत में फंस जाते हैं या जिस दुख में से निकलने का रास्ता नहीं नजर आता तो उस लाचारी को रज़ा का नाम दे देते हैं और कहते हैं 'जैसे प्रभु की रज़ा' पर वास्तव में यह रज़ा में पहुँचने की अवस्था नहीं अपितु मजबूरी है।

कोई निचली सीढ़ी पर खड़ा इंसान अगर ऊपर पहुंचना चाहता है, अंतिम सीढ़ी पर पहुंचना चाहता है तो वह कदम-ब-कदम, एक-एक सीढ़ी चढ़ कर ही अंतिम सीढ़ी पर पहुंच सकता है। रज़ा की अवस्था के पात्र बनना इंसान के आत्मिक अनुभव का अंतिम शिखर है। रज़ा की अवस्था गुरमुख की अंतिम अवस्था है जिसमें तब ही खेला जा सकता है, जब गुरमुख पहली सब आत्मिक अवस्थाओं में खेल ले।

संत अतर सिंघ जी ने एक बार अपने सेवादारों को पूछा था 'गुरु नानक के घर की नर्सरी कक्षा कौन-सी है और अंतिम कक्षा डबल एम.ए. कौन सी है? सेवक कहने लगे कि हमारी बुद्धि तुच्छ है। आप स्वयं ही कृपा करके बताओ। संत अतर सिंघ जी कहते हैं कि अगर हमने ही बता दिया तो क्या फायदा। फिर कहते हैं, चलो एक हम बता देते हैं, दूसरी आप बता दो। उन्होंने वचन किया कि गुरु नानक के घर की नर्सरी कक्षा है-'रिदै गरीबी आवे'। सेवादारों को कहते हैं, अब आप अंतिम बताओ। बाकी तो सारे सेवक सोच में पड़ गए परंतु एक सेवादार जिन्होंने उनके बाद संप्रदा की सेवा संभाली, वह कहने लगे, जी समझ तो नहीं परंतु आपकी कृपा से आपसे प्राप्त हुई सुमति अनुसार यह ख्याल बनता है कि गुरु नानक के घर की अंतिम कक्षा है—

भाणा मीठा कर के मानना व रज़ा में खुश रहना॥

'भाणे' के अक्षरी अर्थ हैं—भाना या पसंद आना। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सिक्ख को रज़ा में रहने की हिदायत है। गुरु साहिब ने रज़ा में आने वाले सिक्ख को 'सखा, बंधप कह कर बड़ाई दी है :

सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै॥
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै॥

(अंग ६०१)

रज़ा मानने से भाव है कि सिक्ख अपने जीवन को इस तरह व्यतीत करे जैसे सतिगुरु को अच्छा लगे। हम वे कार्य करें जो

उसको पसंद हैं। वास्तव में सिक्ख की भलाई भी उसमें होती है जिसमें सतिगुरु को सिक्ख की भलाई दिखे। इस भेद को समझने वाला गुरसिक्ख वाहिगुरु के सहारे, इंसानी जीवन की विषम से विषम घटना में से भी निकल कर परम सुखी हो सकता है परंतु ऐसी कृपा किसी विरले पर होती है। रज़ा की अवस्था वह उच्चावस्था होती है जिसमें गुरमुख अपनी या अपने मिशन की भलाई के लिए या किसी उच्च आत्मिक सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए, अपने मालिक के सहारे खेलता है। रज़ा की अवस्था तब पैदा होती है जब मालिक के सेवक किसी गहरी आत्मिक सच्चाई को सिद्ध करना चाहते हैं। इस अवस्था के आसार मालिक तब ही पैदा करता है जब सेवक को इसके योग्य देखता है। (हो सकता है यह बातें किसी विरले गुरमुख की समझ में आए) रज़ा की अवस्था में खेलने के लिए बड़ी आत्मिक तैयारी की ज़रूरत है। रज़ा की अरशी पाल में विचरन के लिए बड़ी मजबूत आत्मिक बुनियाद की जरूरत है। रज़ा की उच्चावस्था में वही खेल सकता है जिसको वाहिगुरु के स्वभाव का पूरा ज्ञान हो, जिसको वाहिगुरु पर पूरा भरोसा हो। रज़ा में रहने के लिए सर्वप्रथम तो यह भरोसा हो कि मेरा मालिक, मेरा वाहिगुरु, मेरा सतिगुरु मेरा मित्र है, मेरा शुभचिन्तक है, मेरा हमदर्द है। मुझे अपने भले, बुरे की उतनी समझ नहीं जितनी मेरे मालिक को है, इसलिए मेरी भलाई उसी में है कि मैं उस बात को ही भला मानूं जो मेरे मालिक को अच्छी लगती है। मेरे मालिक को वह बात अच्छी लग ही नहीं सकती जो मेरे लिए नुक्सानदायक हो। उसको वही अच्छा लगेगा जिसमें उसको मेरा भला नज़र आएगा। वही बात अच्छी लगेगी जो मेरे लिए लाभदायक होगी। मेरा मालिक हर वक्त मेरे अंग-संग है और हर वक्त उसको मेरी चिंता है, वह मुझे सुखी और खुश देखना चाहता है।

आओ, इस बात को जरा विचार करने की कोशिश करें। मान लो एक पिता के तीन पुत्र हैं। पिता बहुत बड़ा साहूकार है, करोड़पति है, उसके लिए अपने तीनों पुत्र एक समान हैं। वह तीनों को बराबर हिस्सा देना चाहता है। वह तीनों पुत्रों को एक-एक करोड़

रुपए देकर कहता है, मैं चाहता हूं आप सुखी रहो, तुम्हारे सुखी रहने में ही मेरी खुशी है। आप इस दौलत के साथ स्वयं को जिस तरह भी खुश रख सकते हो, सुखी रख सकते हो, उस तरीके से इस दौलत का प्रयोग भी कर सकते हो। यह दौलत अब आपकी है, पर हाँ यदि आप चाहो तो मेरी सलाह ले सकते हो। अगर आप ठीक समझो तो मैं तुम्हें युक्ति बता सकता हूं, जिससे आप ज्यादा से ज्यादा सुखी और खुशियां प्राप्त कर सको। अब दो पुत्र तो यह सोचते हैं कि अगर यह दौलत हमारी है तो फिर हम अपनी मर्जी और बुद्धि के अनुसार इसका इस्तेमाल करें। अगर हम पिता की आज्ञानुसार चले तो हमारी स्वतंत्रता, हमारी खुशी छीन ली जाएगी। परंतु जो तीसरा पुत्र है, वह सोचता है कि मेरा अनुभव बहुत कम है, जबकि मेरे पिता का अनुभव बहुत ज्यादा है, क्योंकि मैं छोटा हूं और मेरा पिता बड़ा है, उसको अपनी जिंदगी का बहुत अनुभव है। इसलिए मुझे चाहिए कि मैं अपने पिता से सलाह लेकर, उसके अनुभव का लाभ उठा लूं। अब एक पुत्र ने अपनी उस दौलत से खूब ऐश करनी आरंभ कर दी। शराब और व्यभिचार में रुपए खर्च करने आरंभ कर दिए और सोचता है कि मैं इतना सुखी हूं और आनंददायक जीवन व्यतीत कर रहा हूं। परंतु कुछ समय बाद शराब और व्यभिचार के कारण सेहत भी और दौलत भी दोनों ही बर्बाद हो गए, घर परिवार भी नष्ट हो गया। दूसरे पुत्र ने सट्टेबाजी, रेसों और लाटरियों में सारी दौलत खर्च कर दी और कुछ समय बाद वह भी कंगाल हो गया। तीसरे पुत्र ने अपने पिता की सलाह से अपना छोटा-सा व्यापार आरंभ किया। उस व्यापार द्वारा उसको जो लाभ हुआ, उससे अपने परिवार का बहुत अच्छी तरह निर्वाह करता। अपने पिता की सलाह अनुसार अपना फालतू समय शराबों में और बेकार दोस्तों के साथ नहीं बिताता, अपने परिवार के साथ बिताता, जिससे उसका परिवार भी और वह भी बहुत खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगे। अब आप यह पढ़ कर आप ही सोचो कि कौन-सा पुत्र सुखी है? अपनी मर्जी से चलने वाला या अपने पिता की रज़ा में चलने वाला?

परमात्मा भी हमारा पिता है। वह हमें सुखी और खुश देखना चाहता है और हम भी सुखी और खुश तो ही रह सकते हैं, अगर उसकी रज़ा में चलते हैं। अपनी मर्जी अनुसार चलने वाले दर-दर भटकते हैं, दुखी होते हैं, परमात्मा से टूट जाते हैं। जो हो रहा है उसमें देखना कि इसमें मेरा कौन-सा भला है। उसकी रज़ा में हमें अपनी रज़ा को मिलाना आ जाए। अगर कोई कार्य सफल हो जाए तो समझो मालिक की मर्जी थी तो ही हो गया। अगर न हुआ तो मालिक की मर्जी नहीं थी, इसमें कोई भला ही होगा। बाबा नंद सिंघ जी की तरह पहचाना करो। बाबा जी ने पूरी जिंदगी नींव नहीं रखी। (कोई मकान इत्यादि बनवाना हो तो साधारण तौर पर महापुरुषों से अरदास करवा कर नींव रखवाई जाती है) बात कुछ इस तरह हुई कि एक बार किसी गुरुद्वारे के प्रबंधकों के कहने पर गुः साहिब की नींव रखी और जब अरदास करके ईंट रखी तो मिस्त्री ने उठा कर अपने हिसाब से ठीकठाक करके रख दिया। (यह भी एक मर्यादा होती है कि महापुरुष अरदास करके जो ईंट रख दे, उसको छेड़ते नहीं, मिस्त्री उसी तरह ही उस पर मसाला डाल देता है) जब मिस्त्री ने नासमझी के कारण ईंट ठीक करके रखी तो बाबा जी पहले तो थोड़ा बीर रस में आए और कहते हैं, मिस्त्री! यह क्या किया? अरदास करके रखी ईंट को तूने क्यों छेड़ा? यह कह कर साथ ही तुरंत हुक्म पहचानने की बात में आ गए और कहते हैं, 'तेरा कसूर नहीं, गुरु नानक पातशाह को हमारी ईंट रखी अच्छी नहीं लगी।' (बहुत सूक्ष्म अवस्था है) हुक्म पहचानने की बात जब दिमाग में आई तो साथ ही कहते हैं कि आज रखी है, आगे से कभी नहीं रखेंगे, क्योंकि हमारे मालिक को हमारा यह कार्य करना पसंद नहीं आया। भाव हुक्म को पहचाना। इस तरह हमारे साथ रोज़ाना जिंदगी में कई छोटी-छोटी बातें होती हैं, अगर कहीं हुक्म पहचानने की बात बन जाए तो मन परेशान नहीं होगा, क्लेश नहीं आएगा।

एक बार दास बहुत थका हुआ था और अपने लड़के को पांव दबाने के लिए कहा। उसने अभी पांव दबाना आरंभ ही किए थे

तो कोई दो-चार मिनट ही हुए होंगे कि साथ ही दरवाजा खटक गया। दास ने कहा—देख जरा कौन आया है। उसने बताया कि आपसे कोई मिलने आया है। पहले दास के मुंह में से एकदम यह लफ़्ज़ निकले 'इसने भी अभी आना था, बहुत थकावट थी, तू पांव दबा रहा था, बहुत आराम मिल रहा था, परंतु दूसरी ओर हुक्म पहचानने वाली बात बन गई। (दास यह कोई अहंकार से नहीं लिख रहा, केवल यह बात हमारी समझ में आ जाए कि हुक्म पहचानने से क्या भाव है) अब यह विचार बन गया कि सतिगुरु, तुझे नहीं अच्छा लगा कि मैं पांव दबवा लूं, सेवा करवा लूं, इसलिए रोकने के लिए तूने किसी को भेज दिया है मिलने के लिए। एक है मन का परेशानी में जाना, एक है उसकी लीला देखना कि तुझे यह बात अच्छी नहीं लगी। बहुत बारीकी है, परीक्षा भी न पड़ जाए, डर कर भी रहना है। हम परीक्षा भी नहीं सह सकते परंतु अगर कहीं थोड़ा-थोड़ा पहचानो, बहुत शांति रहती है।

जैसे एक गाथा भी है। कोई राजकुमार और राजकुमारी समुद्र में नाव पर बैठ कर जा रहे थे कि अचानक आंधी आ गई, तूफान आ गया, नाव डगमगाने लगी। राजकुमार के चेहरे पर कोई घबराहट के चिन्ह न देख कर राजकुमारी आश्चर्यचकित होकर पूछने लगी, इतना तेज तूफान आ रहा है, मुझे तो बहुत डर लग रहा है कि अभी डूबी कि डूबी, परंतु आप बहुत शांत बैठे हो जैसे आपको कोई परवाह ही नहीं, कोई डर, कोई भय ही नहीं। राजकुमार ने तुरंत अपनी म्यान में से तलवार निकाली और नग्न चमकती तलवार राजकुमारी के गले पर इस तरह रखी जैसे उसका गला काटने लगा हो। यह देख कर राजकुमारी हंसने लग पड़ी। राजकुमार कहने लगा, मैंने तेरे गले पर नग्न तलवार रखी है परंतु तू आगे से हंस रही है, क्या तुझे डर नहीं लग रहा? आगे से राजकुमारी कहने लगी, यह तलवार अगर किसी शत्रु के हाथ में होती तो मैं अवश्य डरती परंतु यह तलवार तो मेरे प्रीतम, मेरे मालिक, मेरे सिर के साईं के हाथ में है। मेरा मालिक, मेरा साईं मेरा बुरा नहीं कर सकता। राजकुमारी का यह उत्तर सुनकर

राजकुमार ने कहा, यही तेरी बात का जवाब है। मुझे भी इतने तूफान में भी इसलिए घबराहट नहीं हो रही, इसलिए कोई चिंता नहीं हो रही, क्योंकि मुझे भी विश्वास है कि मेरी जिंदगी की डोर मेरे मालिक, मेरे प्रीतम, मेरे परमेश्वर के हाथ में है और वह कभी भी मेरा बुरा नहीं कर सकता। राजकुमारी कहती है, परंतु अगर नाव डूब गई, हम डूब कर मर गए, क्या तब भी आप यही कहोगे कि प्रीतम ने बुरा नहीं किया? राजकुमार जो पूर्ण श्रद्धा और विश्वास वाला था, कहता है कि चाहे नाव डूब जाए, मेरी मृत्यु हो जाए फिर भी यह समझूंगा कि मेरे प्रीतम ने अच्छा किया। उसने मुझे इस जन्म में से निकाल कर किसी दूसरे अच्छे घर, किसी गुरमुख के घर जन्म देना होगा तो ही वह मेरा यह जन्म तुरंत समाप्त कर रहा है।

यह अवस्था बहुत ऊंची है हुक्मी बनना, अरदास करो कि कोई परीक्षा न आए और थोड़ा-थोड़ा हुक्म पहचानने की बख्शिश मिले।

कोई शरीर गया और किसी महात्मा के पास जाकर कहने लगा, महात्मा जी! मैं बहुत दुखी हूं, सुखी होने का कोई मार्ग बताओ। महात्मा बहुत सूझवान थे। उन्होंने सोचा कि इसको किस ढंग से समझाया जाए, क्योंकि इस संसार में कोई ऐसा है ही नहीं जिसको कोई दुख न हो। सतिगुरु ने भी बाणी में लिखा है–

नानक दुखीआ सभु संसार॥

(अंग ९५४)

महात्मा जी कहने लगे–अगर तू मुझे किसी सुखी इंसान की चप्पल लाकर दे तो मैं तुम्हें सुखी होने का मार्ग बता सकता हूं। वह शरीर सोचता है कि यह कौन-सा मुश्किल कार्य है। किसी अच्छे धनवान के पास जाकर उसकी चप्पल ले आता हूं क्योंकि साधारण इंसान की यही सोच होती है कि जो धनवान है वह सुखी है। उसने जब एक धनवान के पास जाकर उसकी चप्पल मांगी और बताया कि मुझे किसी महात्मा ने कहा है कि अगर तू किसी सुखी इंसान की चप्पल लाकर दे तो तू सुखी हो सकता है। वह धनवान कहने

लगा, तू मेरी चप्पल बेशक ले जा, मुझे कोई एतराज नहीं परंतु मुझे सुखी न समझ लेना, क्योंकि मैं धनवान होने के कारण, दुनिया के लोगों को बहुत सुख और आराम की जिंदगी व्यतीत करता नजर आ रहा हूं परंतु वास्तव में मेरा शरीर रोगी है। मुझे कई तरह के रोग लगे हुए हैं, जिस कारण मुझे मीठा खाना मना है, नमक खाना मना है, तली हुई चीजें खाना मना है, जिस कारण मैं बहुत दुखी हूं।

वह शरीर एक नेता के पास गया। सोचता है यह अवश्य सुखी होगा। हर तरफ इसका हुक्म चलता है। जब सड़क पर जाता है तो आगे-पीछे गाड़ियां होती हैं। जब उस शरीर ने नेता को जाकर अपनी व्यथा बता कर चप्पल की मांग की तो वह कहने लगा कि मेरा हुक्म जरूर चलता है परंतु अगर तू यह सोच रहा है कि मैं सुखी हूं तो यह तेरी बहुत बड़ी भूल है। मेरी विरोधी पार्टियों ने मुझ पर पांच केस किये हुए हैं जिनमें से 2 में तो मैं बिल्कुल निर्दोष हूं परंतु तीन केस मुझ पर असली हैं, जिस कारण मैं बहुत दुखी हूं, परेशान हूं। अब वह सुखी इंसान की तलाश में चलता-चलता एक बाग में पहुंच गया, जहां कोई शरीर बहुत बेफिक्र होकर निश्चिंत होकर विश्राम कर रहा था। जब उस इंसान के नजदीक पहुंचा चप्पल मांगने के ख्याल से तो देखा कि वह तो वही महात्मा हैं। उसने महात्मा को बताया कि मैं एक धनवान के पास गया तो वह कहने लगा, मुझे कई रोग लगे हुए हैं, जिस कारण मैं दुखी हूं। फिर एक नेता के पास गया। वह कहने लगा, मुझ पर 5 केस चल रहे हैं जिस कारण मैं दुखी हूं। महात्मा कहने लगे, हरेक शरीर को कोई न कोई दुख लगा ही हुआ है परंतु जो इंसान अपने मन को बदल ले, दुख में से सुख ढूंढ ले तो वह सुखी हो सकता है। जिस इंसान को मीठा खाना, नमक खाना, तला हुआ खाना मना है, वह अगर फीके पदार्थ नाम के रस में आकर खाए तो उसमें भी रस भर जाएगा। मन की वृत्ति बना लो कि शुक्र है मालिक रोगों के बहाने स्वादिष्ट पदार्थों से मुझे हटाना चाहता है। नेता भी सुखी हो सकता है अगर यह सोच ले कि अगर मुझ पर केस न चलते तो मुझे दूसरे गलत कार्य करने का हौंसला मिल जाना था और

जो उस पर झूठे केस दर्ज हैं, उनके लिए अपने मालिक पर परमेश्वर पर विश्वास रखे कि उनमें से उसको बरी करवा कर, उनका और सम्मान बढ़ाएगा। भाव कि अगर सुखी होना है तो अपने मन की सोच बदल लो।

एक दिन दास को एक महिला मिली और कहने लगी कि आप कहते हो कि प्रीतम कभी हमारा बुरा नहीं करता, दुख में भी कोई न कोई सुख छिपा होता है। मेरी टांगें दर्द होती हैं। मैं कहीं जाने योग्य नहीं रही। न मुझसे गुरुद्वारे जाया जाता है, न मैं उठ कर घर का कोई कार्य कर सकती हूं, बताओ इसमें क्या सुख छिपा है, मेरा कौन-सा भला छिपा है? दास ने कहा, इस दुख में भी सुख छिपा है, तेरा भला छिपा है परंतु तूने ढूंढने की कोशिश नहीं की। वह बहुत हैरान होकर कहने लगी, वह कैसे? मेरा गुरुद्वारे जाना ही छूट गया और घर का कार्य भी, इसमें मेरा क्या भला है? दास ने कहा, अगर श्रद्धा के नेत्र से देखोगे तो भला ही भला है। तुझे अब टांगें दर्द होने के कारण घर का कोई कार्य नहीं करना पड़ेगा। अपने आप बेटी करेगी या बहू करेगी या कोई नौकर-नौकरानी रखेगी। इससे तुझे ज्यादा नितनेम करने का, परमेश्वर की बंदगी करने का ज्यादा वक्त मिल सकेगा और जो कहती है गुरुद्वारे जाने का नेम टूट गया है, वह गुरु साहिब तुझे अगली सीढ़ी चढ़ाना चाहते हैं ऊंची अवस्था पर पहुंचाना चाहते हैं जिसके लिए बाणी में पंक्तियां भी हैं—

हिरदै नामु वसाइहु॥ घरि बैठे गुरू धिआइहु॥

(अंग ६२१)

भक्त रामानंद जी की भी पंक्तियां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं जो यही भाव प्रकट करती हैं—

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु॥

(अंग ११९५)

यहां दास एक बात स्पष्ट कर दे। दास का यह भाव न समझ लेना कि अगर कोई दुख आ गया है तो उसके लिए अरदास नहीं

करनी या उसके लिए इलाज़ नहीं करना, दवाई नहीं खानी। दवाई भी लेनी है, दुख की अरदास भी करनी है परंतु मन को परेशानी में नहीं डालना। जिसकी यह घुंडी खुल गई फिर शांति है, जिसकी घुंडी नहीं खुली, वह हर वक्त परेशानी में फंसा रहता है, दुख को हृदय से लगाकर बैठ जाता है।

दास का अमृतसर का एक मित्र है जो कीर्तनिया है। एक बार उसके गले में सूजन हो गई। डाक्टरों ने कहा कि तूने दो माह कीर्तन नहीं करना। गले को आराम देना है। वह बहुत दुखी, बहुत परेशान। कहने लगा, मेरे साथ बहुत बुरा हुआ है, कीर्तन तो मेरी खुराक है, मेरे जीवन का आधार है। मुझे किसी दिन रोटी न मिले मेरा गुजारा हो सकता है परंतु कीर्तन बिना नहीं। अब बताओ इसमें मेरा क्या भला छिपा है जो मुझसे मेरी आत्मा का आहार ही छीन लिया, गुरु की प्रशंसा की, गुरु के कीर्तन की बख्शिश ही छीनी गई। जिस चीज़ के बिना मेरा एक दिन भी गुजारा नहीं, दो माह कैसे बिताऊंगा।

कहने लगा, कीर्तन करने वाले को कीर्तन करने का प्रतिबंध लग जाए तो इसमें क्या भला छिपा है। गुरु साहिब ने तो स्वयं बाणी में कई पंक्तियों द्वारा कीर्तन करने के लिए हिदायत की है। दास ने कहा, रागी की अगली सीढ़ी है संत की। गुरु साहिब ने तेरा गला खराब करके तुझे यह प्रकाश दिया है कि तू 2 माह भीतर बैठ कर सिमरन की प्राप्ति करके अगली सीढ़ी हासिल कर ले, कोई ऊंची अवस्था की प्राप्ति कर ले। गुरु तेग बहादुर जी ने भी जहां प्रचार किया है, वहां एकांत में बैठकर सिमरन की कमाई भी की है। यह हमारे लिए मिसाल है। कीर्तन द्वारा, कथा द्वारा दूसरों को उपदेश करने से पहले कीर्तनिए की अपनी कमाई भी अत्यंत जरूरी है। आप स्वयं सोचो कि कोई कीर्तनिया स्वयं कमाई न करे, प्रातः काल न उठे, जप, तप करे न, अपनी समाधि न हो, भजन बंदगी स्वयं न करे और उपदेश करता रहे। पूरी रात्रि चैन की नींद सोता हो और बाजे पर बैठ कर शब्द पढ़ता जाए—

मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी॥
मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी॥

(अंग २४४)

बताओ बात कैसे बनेगी? चार-चार, पांच-पांच रोटियां खाता हो और पंक्ति पढ़ता जाए 'भावै अंनु न पाणी'।

कीर्तन का असली रस तभी है अगर भीतर वह बात हो भी, अगर नहीं तो फिर कीर्तन भक्ति रूप न होकर पाखंड रूप हो जाए। संपूर्ण भक्ति तो ही है अगर भीतर की बात बन जाए। दास ने उस कीर्तनिए से विनती की कि यह दो माह गले की जो सूजन हुई है, इसमें सुख ढूंढो, सतिगुरु तुम्हें अगली अवस्था देना चाहते हैं। यह बहुत प्यारी अवस्था है, हुक्म पहचानने की कहीं समझ आ जाए।

दास का यह विचार करने से भाव कि जब दुख में भी सुख ढूंढोगे तो मन परेशानी में नहीं पड़ेगा। भीतर शांति आ जाएगी। उसके हर कार्य में मिठास ढूंढो, जरूर मिलेगी। सहज स्वभाव जो कुछ भी जिंदगी में हो रहा है, उसमें कभी थोड़ा-सा खोजने का यत्न करोगे तो दुख में से भी सुख मिलना आरंभ हो जाएगा। हम अनेक बातों को दुख का कारण बना लेते हैं और मन को परेशानी में डाल कर रखते हैं। साधारण इंसान दुखों में रोता है, परेशान होता है परंतु जिसकी गुरु पर श्रद्धा है, उसको परमेश्वर की हर लीला में कुछ छिपा नजर आता है। (यहां एक बात का ध्यान रखना। हौंसला न छोड़ना। अरदास करनी है कि सच्चे पातशाह! कृपा करो, मेरी यह अवस्था बना दो कि मैं तेरे कार्य में से सुख ढूंढ सकूं; परीक्षा में मत डालना।)

दास का अमेरिका में एक मित्र है, उसका एक्सीडैंट हो गया और दाएं बाजू की हड्डी करैक हो गई। उससे जब फोन पर बात हुई तो वह कहता है कि जब से मेरी बाजू टूटी है, मेरे भीतर से तो शुक्रिया निकल रहा है, कहने लगा, मेरी नौकरी ऐसी है कि मुझे प्रातः काल 5 बजे नौकरी के लिए घर से निकलना पड़ता था, सारा दिन बहुत व्यस्त रहता था, शाम को भी 7-8 बजे मैं घर वापिस

आता था। न तो प्रातः काल गुरु के लिए लगाया जाता था और सारा दिन भी कार्य की इतनी व्यस्तता होने के कारण नितनेम के लिए कोई समय नहीं निकलता था। अब जब से बाजू टूटी है, आराम से घर बैठा हूं और ज्यादा से ज्यादा नितनेम करके गुरु के लिए समय लगा रहा हूं। कंपनी की ओर से आधी तनख्वाह तो मिल जानी है।

इशारा समझो, है दुख ही, परंतु जिसकी गुरु पर श्रद्धा है वह सोचता है दुख में कोई सुख छिपा है, इसलिए वह दुखों में मालिक को दोष नहीं देता, मालिक को छोड़ता नहीं, मन को परेशानी में नहीं डालता, परंतु जिसके भीतर श्रद्धा नहीं, अपने मालिक पर विश्वास नहीं, वह दुखों में, मुसीबतों में मालिक को दोष देता है, परेशान होता है तो इस तरह करने से मालिक की खुशी प्राप्त नहीं कर पाता बल्कि उससे दूर हो जाता है। यहां तक कि कई अनजानेपन में मालिक को छोड़ ही देते हैं, गुरु से विमुख हो जाते हैं। स्वयं ही सोचो, जो अपने गुरु से विमुख ही हो गया तो उसको फिर कहां स्थान मिलेगा, उसको तो नरक भी सहन नहीं करेगा। इसलिए कभी भी किसी भी दुख को दिमाग का बोझ मत बनाओ। हमें नज़र आता है कि दुख वाली बात बन गई है परंतु उसके पीछे छिपे हुए भले को हमारी आंख देख नहीं सकती। अरदास करनी है सच्चे पातशाह! कृपा कर, इम्तिहान मत डालना। हमारी यह अवस्था बना कि हमें तेरे किए में सुख ढूंढने का तरीका आ जाए, हम तेरे बने रहें, तेरे चरणों से, तेरी बाणी से हमेशा जुड़े रहें। गुरु भी इंतजार करता है कि मेरा सिक्ख, मेरा बेटा इस अवस्था को प्राप्त करके बेगमपुरा शहर में पहुंच जाए। हमारी यह भावना बन जाए–

जन कउ प्रभ अपने का ताणु॥
जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु॥

(अंग ६७७)

यह है श्रद्धा की ग्यारहवीं निशानी जो गुरु साहिब की कृपा

से सांझी हुई है। उसके हुक्म को पहचानना, जो कुछ वह कर रहा है, उसमें कोई मिठास ढूंढना, जो हो रहा है उसमें भला ढूंढने की कोशिश करना। यह बहुत बड़ी खेल है परंतु अगर गुरु साहिब की कृपा से यह बख्शिश मिल जाए तो जिंदगी में से रोना भी निकल जाता है।

जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा ॥

(अंग ५२३)

दास आप सभी के चरणों की धूल है, परंतु गुरु साहिब ने स्वयं कृपा करके शीश पर अपना रहम और बख्शिश भरा हाथ रख कर जो यह श्रद्धा की निशानियां विस्तारपूर्वक लिखने की सेवा ली है, विनती है कि यह सभी निशानियों को बार-बार पढ़ना, पढ़कर विचार करना और अपने अंतः करण से तौलना कि कौन-सी निशानी हमारी जिंदगी में आई है और कौन-सी नहीं, हम कहां खड़े हैं। इन निशानियों को पढ़ने का लाभ तो ही होगा अगर विचार करेंगे। विचार करने के बाद अपने अंतः करण को तौलने के बाद जहां कमी हो, समर्थ पिता के आगे झोली फैला कर अरदास करना। अरदास करना दास की भी और अपनी भी, सतिगुरु कृपा करें, हमारे भीतर यह रंग भर दें–

गुरू गुरू गुरु करि मनि मोर गुरू बिना मै नाही होर ॥

(अंग ८६४)

गुरु कृपा करें, हमारी अपने चरणों से प्रेम की गांठें डाल ले। प्रेम ही सब कुछ है।

☆☆☆